स्वाधीनता संघर्ष में बुन्देलखण्ड (उ० प्र०) के क्रांतिकारियों का योगदान (१८५७-१९४७)
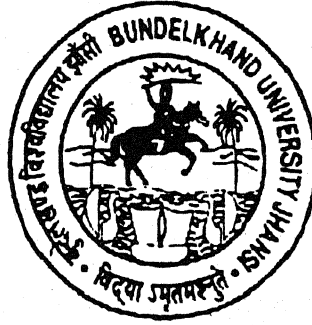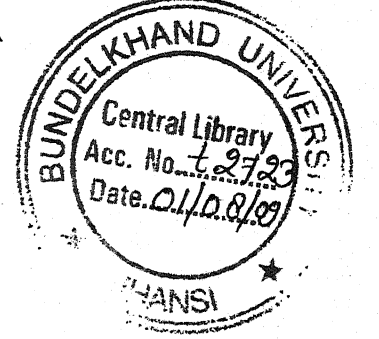
राजनीति विज्ञान विषय में पी–एच0 डी0 की उपाधि हेतु बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी में प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध
२००७

शोध निर्देशक
डॉ० भवानीदीन
रीडर-राजनीति विज्ञान
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हमीरपुर, उ०प्र०

गवेषक
Raj Kumar
राजकुमार

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय
झांसी

डॉ0 भवानीदीन
रीडर – राजनीति विज्ञान

9415170202
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हमीरपुर

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री राजकुमार ने राजनीति विज्ञान विषय में पी–एच0 डी0 उपाधि हेतु मेरे निर्देशन में B. U. के पत्रांक शोध/2003/8850–52 दिनाँक 06–10–2003 द्वारा पंजीकरण कराया था , इनके शोध का शीर्षक " स्वाधीनता संघर्ष में बुन्देलखण्ड (उ0 प्र0) के क्रांतिकारियों का योगदान (1857–1947)" था। श्री राजकुमार मेरे निर्देशन में आर्डिनेन्स द्वारा वांछित अवधि तक शोध केन्द्र में उपस्थित रही/रहें। इन्होंने शोध के सभी चरणों को अच्छी तरह परिश्रमपूर्वक सम्पन्न किया है।

मैं इस शोध प्रबन्ध को राजनीति विज्ञान विषय में पी–एच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत करने की सबल संस्तुति करता हूँ।

डॉ0 भवानीदीन
शोध निदेशक
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हमीरपुर (उ0 प्र0)

घोषणा

मैं घोषणा करती/करता हूँ कि बु0 वि0 वि0 , झांसी के अन्तर्गत राजनीति विज्ञान विषय में पी–एच0 डी0 की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध स्वाधीनता संघर्ष में बुन्देलखण्ड (उ0 प्र0) के क्रांतिकारियों का योगदान (1857–1947) मेरा मौलिक कार्य है। मेरे संज्ञान में प्रस्तुत शोध का अल्पांश अथवा पूर्णाश किसी भी वि0 वि0 में शोध प्रबन्ध अथवा अन्य किसी भी उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है ।

Raj Kumar

राजकुमार

द्वारा श्री मूलचन्द्र जाटव

II वि0 वि0 आवासीय परिसर

झांसी

आमुख

स्वातन्त्र्य परिवेश प्रगति के पथ को निरापद करता है। स्वाधीनता नागरिक विकास की पहली आवश्यकता है। स्वतंत्रता का संबल ही राष्ट्र निर्माण का आधार होता है। राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता ही इसकी रक्षा के प्रमुख उपक्रम होते है। अन्तः विद्रोह , आपसी मनोमालिन्य तथा स्वार्थलिप्सा किसी भी देश की आजादी के अवसान के अपकारक माने जाते है , इन्ही कारणों से भारत को लगभग दो सदियों तक ब्रिटिश साम्राज्य के संत्रास को सहना पड़ा।

अनीति एवं अधर्म से दमित , त्रसित एवं थकित जनता गुलामी के बंधन को काटने के लिए क्रान्तिधर्मी संघर्ष का ताना–बाना बुनने लगी। स्वातन्त्र्य चेतना की इसी भावभूमि में भारत के भावी संघर्ष की आवश्यक जमीन तैयार होने लगी। देश के हर कोने के स्वातन्त्र्य वीरों ने अपने – अपने दायित्व को समझा और यथा संभव आत्मोत्सर्ग के लिए तैयार हो गया।

कुछ समय बाद सारा राष्ट्र संघर्षी सोंच से संपृक्त हो उठा। भारत के इस मुक्ति संग्राम में उ0प्र0 के हर मण्डल की जुझारू सहभागिता रही। भारत के हृदय प्रदेश के रूप में विश्रुत बुन्देलखण्ड (उ0प्र0) का अतीत वैभवशाली रहा है। पुरातन से अधुनातन तक इसके इतिहास का हर पृष्ठ अविस्मरणीय आयुधी अवदान को अन्तस्थ किए हुए है। हर कालखण्ड में इसका क्रान्तिधर्मी अनुदाय सराहनीय रहा है।

बुन्देलखण्ड के सातों जनपदों का क्रांतिकारी आन्दोलन में सहभाग सराहनीय रहा है किन्तु बुन्देलखण्ड के क्रांतिधर्मी प्रतिभाग का यथेष्ट रेखाँकन नहीं हुआ है , 1857 से लेकर 1947 तक अनेक क्रांतिकारियों के सामरिक –अनुदाय का अन्वेषण अभी भी शेष है , प्रस्तुत शोध प्रबन्ध इसी अभाव की पूर्ति का एक प्रयास है , इसीलिए मैंने अपने शोध प्रबन्ध हेतु " स्वाधीनता संघर्ष में बुन्देलखण्ड (उ0प्र0) के क्रांतिकारियों का योगदान " नामक शीर्षक का चयन किया है।

शोध प्रबन्ध के अध्ययन में मौलिक रचनाओं एवं सहायक ग्रंथों के अध्ययन का सहारा लिया गया है। इसमें तत्कालीन तथा अर्वाचीन जर्नल्स , पत्रिकाओं तथा समाचारपत्रों का भी अध्ययन कर संदर्भ प्रस्तुत किए गये है। यह शोध प्रबन्ध साक्षात्कार एवं पुस्तकालय अध्ययन – पद्धति पर आधारित है। पूरे शोध को नौ अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय प्रस्तावना में क्रांतिकारी आन्दोलन की पूर्व पीठिका को रेखांकित किया गया है। इस अध्याय में क्रांतिकारी संघर्ष के माहात्म्य को स्पष्ट किया गया है। भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष कई चरणों से होकर गुजरा है। स्वातन्त्र्य संग्राम में क्रांतिकारी अनुदाय को नकारा नहीं जा सकता है।

दूसरे अध्याय में 1857 के स्वातन्त्र्य समर में हमीरपुर के क्रांतिकारियों की सहभागिता का उल्लेख किया गया है।

हमीरपुर जनपद के निकटवर्ती उरई जालौन तथा झांसी में जब 1857 की क्रांति का निनाद हुआ था , उसी समय हमीरपुर की धरती ने भी सत्तावनी क्रांति में धमाल किया था , यहाँ पर 13 जून 1857 को क्रांतिकारियों ने क्रांति का श्री गणेश किया था। हमीरपुर की कचहरी में अंग्रेज अधिकारियों का काम – तमाम कर दिया गया था। इस तरह से कहा जा सकता है कि 1857 के संग्राम में हमीरपुर जनपद पीछे नहीं रहा। सत्तावन के संग्राम के बाद आजादी प्राप्ति तक यहाँ के कई क्रांतिकारियों ने स्वातन्त्र्य समर में बढ़–चढ़कर भाग लिया , जिनमें से लोक विश्रुत महान क्रांतिकारी पं0 परमानंद , दीवान शत्रुघ्न सिंह , श्रीपति सहाय रावत , स्वामी ब्रम्हानंद एवं बिवाँर(हमीरपुर) के मिश्र बन्धुओं तथा रानी राजेन्द्र कुमारी का नाम उल्लेखनीय है।

तीसरे अध्याय में स्वाधीनता संघर्ष में महोबा के रणबाकुँडों का उल्लेख है। 1857 के समर में महोबा जनपद का प्रभावी प्रतिभाग रहा है। यहाँ के दिमान देशपत बुन्देला , नन्हे दिमान , रघुनाथ सिंह , कुंजल शाह और फत्तमवीर जैसी वीरांगनों का योगदान स्वातन्त्र्य संघर्ष के इतिहास के उज्जवल पृष्ठ है , दिमान देशपत बुन्देलखण्ड में 1857 के संघर्ष की लगभग एक दशक तक अलख जगाये रहे , यदि दिमान देशपत के साथ भितरघात न होता तो शायद बुन्देलखण्ड में अंग्रेजों का आधिपत्य नौ दशक पहले ही समाप्त हो गया होता , महोबा के सत्तावनी शूरों में देशपत के अतिरिक्त रघुनाथ सिंह और नन्हे दिमान का भी स्मरणीय सहभाग रहा। ये सभी बुन्देला वीर अंग्रेजों के लिए भय के प्रतीक बन चुके थे।

चतुर्थ अध्याय में भारत की आजादी की लड़ाई में बांदा के नर नाहरो का विवेचन किया गया है। 1857 के युद्ध में बांदा के बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय का प्रतिभाग कम महत्वपूर्ण नहीं रहा। बांदा के बागी नवाब ने अंग्रेजों का डट कर मुकाबला किया था। नवाब के अतिरिक्त बांदा की विद्रोही महिला वीरांगनाए भी पीछे नहीं रही। बांदा की शीला नामक जांबाज महिला का शौर्य बांदा की धरती में आज भी विश्रुत है। 1857 के स्वातन्त्र्य संग्राम में लगभग सौ महिला शूरों ने अपनी प्राणों की बाजी लगायी। बांदा के सत्तावनेत्तर शूरों में पं0 लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री , कुँवर हर प्रसाद सिंह , मिथला शरण , राजाराम रूपौलिया , महादेव भाई , गोकुल भाई एवं रामसेवक खरे जैसे अनेक क्रांतिकारी हुए है , जिन्होंने बांदा के गौरव को बढ़ाने में अहम् भूमिका निभायी।

पंचम् अध्याय में भारत के मुक्ति संग्राम में चित्रकूट(कर्वी) के क्रांतिधर्मी वीरों का विवेचन है। चित्रकूट (कर्वी) पहले बांदा का ही एक भाग था। कर्वी के पेशवा नारायण राव तथा माधव राव ने सत्तावन के समर में स्वातन्त्र्य संग्राम में सहभाग करने में कोई कोर कसर उठा नहीं रखी , उन्होंने गोरी सेना के सेनापतियों का जमकर मुकाबला किया। यहाँ के क्रांतिकारियों में करवरिया परिवार का भी सराहनीय योगदान रहा है।

षष्ठम् अध्याय में आजादी के संघर्ष में जालौन (उरई) के जीवट जवानों का विवेचन किया गया है। बुन्देलखण्ड के जनपदों में झांसी को छोड़कर ऐसा अन्य कोई जनपद नहीं रहा है।

जहाँ के शूरों ने क्रांतिधर्मी संघर्ष में उरई जालौन का मुकाबला किया हो। उरई के सत्तावनी शूरों में बिलायां के ठाकुर बरजोर सिंह , मोती गूजर , ताईबाई और भदेख नरेश परीक्षित का आयुधी ग्राफ सबसे ऊँचा रहा है। ठाकुर बरजोर सिंह उरई का एक ऐसा पुरोधा था , जिसने सत्तावन के युद्ध में अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया था। गोरों ने लाख कोशिश की किन्तु बरजोर सिंह को जीवित नहीं पकड़ सके , वह लगभग एक दशक तक बुन्देलखण्ड में क्रांति के ज्वाल को बढ़ाये रखा।

सप्तम् अध्याय में स्वाधीनता संग्राम में झांसी जैसे अग्निधर्मा धरती के पुरोधाओं का उल्लेख किया गया है। आजादी की लड़ाई में वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई के वीरत्व से कौन अपरिचित है। रानी लक्ष्मीबाई तत्कालीन संघर्षी इतिहास की एक मात्र ऐसी वीरनेत्री रही है , जिन्होंने उन्नीसवीं सदी के पाँचवे दशक में स्त्री सेना का गठन कर बड़े – बड़े समर विशारदों को भी सकते में डाल दिया था , यदि उनके साथ भी पीर अली और दीवान दुल्हाजु जैसे देशद्रोही भितरघात न करते तो शायद सत्तावन के युद्ध का परिणाम ही कुछ और होता , साथ ही देश नौ दशक पहले ही आजाद हो गया होता। झांसी के सत्तावनेत्तर क्रांतिकारियों में मास्टर रुद्रनारायण , भगवान दास माहौर , सदाशिव राव मलकापुरकर , विश्वनाथ वैशम्पायन एवं रणपति सिंह का नाम उल्लेखनीय है।

अष्टम् अध्याय में आजादी की लड़ाई में ललितपुर के क्रांतिवीरों का उल्लेख है। यहाँ के सत्तावनी समर के शूरों में बानपुर के शासक मर्दन सिंह का प्रतिभाग विवेचनीय है। इस महान योद्धा ने 1857 के संघर्षी मुकाबले में गोरों को कई बार छठी का दूध याद दिलाया। इस महान वीर के सुझावों को बुन्देलखण्ड के रियासती नरेशों ने नहीं माना , यह महान पुरोधा भी महान वीरांगना लक्ष्मीबाई की तरह सहयोग के अभाव का शिकार हुआ।

नवम् अध्याय में निष्कर्ष रूप में बुन्देलखण्ड के सातों जनपदों के क्रांतिकारियों के अनुदाय के विवेचन के बाद उनके माहात्म्य को रेखाँकित किया गया है। 1857 से 1947 तक के नौ दशकों के अर्न्तगत इन जनपदों के क्रांतिकारियों का सामरिक सहभाग का लेखा – जोखा सिलसिले वार स्पष्ट किया गया है।

शोध प्रबन्ध के सम्पूर्ण कलेवर तथा पूर्णता के लिए मैं सर्वप्रथम अपने शोध निदेशक , डा0 भवानीदीन , रीडर राजनीति विज्ञान , राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हमीरपुर का हृदयानवत हूँ , जिनके सुलभ समुचित एवं गुणात्मक निर्देशन में शोध जैसा दुरूह कार्य पूर्ण हुआ , तत्पश्चात् मै अपने पिता श्री रतीराम जाटव , तथा माँ स्वं0 श्रीमती भगवती देवी का कृतज्ञ हूँ , जिनके शुभाशीष का आलम्ब मेरे साथ सदैव रहा।

मैं अपने चाचा श्री मूलचन्द्र जाटव , वरिष्ठ सहायक , बुन्देलखण्ड वि0 वि0 झांसी का हृदय से कृतज्ञ हूँ , जिनके समुचित एवं सतत् सहयोग से मैं अपने खोजी कार्य को अन्तिम लक्ष्य तक ले जा सका। मैं अपनी जीवनसंगिनी श्रीमती मीरा जाटव का भी उपकृत हूँ , जिन्होंने मुझे समय दान कर मेरे इस महती कार्य में अपना अभीष्ट योगदान प्रदान किया।

मैं राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली , उ0 प्र0 राज्य अभिलेखागार लखनऊ , शहीद शोध संस्थान , लखनऊ एवं हिन्दी भवन के पुस्तकालयाध्यक्षों एवं अन्य सहकर्मियों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ , जिन्होंने मुझे शोध –सामग्री के अध्ययन की सुविधा प्राप्त करायी। अन्त में प्रेरणा कम्प्यूटर्स , कुछेछा हमीरपुर के टंकक प्रखर पथिक का भी आभारी हूँ , जिन्होंने समय पर शोध सामग्री का टंकण कर शोध प्रबन्ध को पूरा करने में प्रभावी योगदान प्रदान किया।

Raj Kumar

राजकुमार

अनुक्रम

परिशिष्ट

प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

1

प्रस्तावना

कोई भी देश दासता की दहलीज में तब तक नहीं पहुँचता जब तक उसके देशवासी आपसी राग – द्वेष के दौर्बल्य से देश को दुर्बल नहीं बनाते। इतिहास गवाह है कि जब भी कोई देश गुलाम हुआ है तो उसके पार्श्व में पौरुष का पलायन रहा है और एकता एवं अखण्डता का अवरोहण। भारत वर्ष के सन्दर्भ में भी इस सातत्य को झुठलाया नहीं जा सकता कि जब तक भारत एकता के सूत्र में बंधा रहा है तब तक उसे आक्रान्ताओं का प्राबल्य भी परास्त नहीं कर सका।

अतीत से आँग्ल आधिपत्य तक भारत पर एक दृष्टिपात करने से यह तथ्य सुस्पष्ट होता है कि भारत तब तक भूमिसात नहीं हुआ जब तक देशद्रोही भारतीयों का राष्ट्र के प्रति भितरघात नहीं हुआ। बाह्य शक्तियों की जिजीविषा तब तक जीवन्त नहीं हो सकी जब तक भारतीयों के राष्ट्रप्रेम की भित्तियों को भेदा नहीं गया।

16 वीं सदी का भारत वाणिज्यिक उत्कर्ष की दृष्टि से अपना कोई सानी नहीं रखता था , साथ ही सभ्यता एवं शिष्टता के क्षेत्र में लंदन से अग्रगामी था , भारत की आर्थिक सम्पन्नता को वैदेशिक नजर लग गयी। बस फिर क्या था , पुर्तगाल , हालैण्ड , फ्रांस और ब्रिटिश कम्पनियों का रुख भारत की ओर मुड़ गया। उन्होने दूर दृष्टि पक्का इरादा को आत्मसातकर भारत में व्यापार करने की दृष्टि से यहाँ की धरती पर पैर रखा।

पुर्तगालियों के लगभग एक सदी तक तिजारत करने के बाद डचों ने भारत में प्रवेश किया , वे पुर्तगाली सत्ता को समाप्त कर स्वयं व्यापार में काबिज हुए , भारतीय नरेशों ने डचों का भी स्वागत किया।

डचों ने पुर्तगालियों की भरपूर निंदा कर भारतीय नरेशों का नेह प्राप्त किया । मुगल सम्राट ने उन्हे व्यापार के लिए कोठियाँ बनाने तथा रक्षार्थ किले बंदी करने की अनुमति प्रदान कर दी।

इसी बीच अंग्रेजों का भी भारत में आगमन हुआ , डचों का गोरों से मुकाबला हुआ। चतुर गोरों ने उन्हे टिकने नहीं दिया और 1805 तक अंग्रेजों ने डचों का भारत से बोरिया – बिस्तर बंधवा दिया।

16 वीं सदी में महारानी एलिजाबेथ ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना की जो उन आँग्ल व्यापारियों की एक कम्पनी थी जो भारत में व्यापार करने के अभिलाषु थे। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इस कम्पनी में ऐसे लोगों का बाहुल्य था जो धनोपार्जन के सच–झूठ , न्याय–अन्याय , बेईमानी इत्यादि सभी गुरु जानते थे , जिन्हे साहसी लोगों की मण्डली के नाम से जाना जाता था (society of Adventurous) , कम्पनी के डायरेक्टरों ने पूर्व में ही यह निश्चय कर लिया था कि कम्पनी में किसी भी जिम्मेदारी के पद पर शरीफ आदमी की नियुक्ति नहीं करेगे। भारत में दो सदियों से भी अधिक समय तक व्यापार एवं राज करने वाली इस कम्पनी की नीति की यहीं मूलभूत कुंजी थी।

---

1. सुन्दर लाल , भारत में अंग्रेजी राज , नई दिल्ली , सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय , प्रकाशन विभाग , 1982 , पृ0 सं0 – 115 ।

2. वही , पृ0 सं0 –116 ।

हाकिन्स पहला अंग्रेज था , जिसने भारत में 1608 में पहला कदम रखा , ब्रिटिश सम्राट जेम्स प्रथम का भारतीय मुगल सम्राट जहाँगीर के नाम वह एक खत भी लाया था , उस समय भारत के मुगल सम्राट जहाँगीर के समक्ष अग्रेंज सम्राट की तुलना बौनी थी , मुगल सम्राट हर क्षेत्र में अतुलनीय था।

यह कोई सोच भी नहीं सकता था कि दूर पश्चिम की निर्बल जाति का एक दूत जहाँगीर – दरबार में दोजानू होकर जो जमीन चूम रहा है। उसी के वंशज कालान्तर में सदियों तक भारत में राज करेंगे।

6 फरवरी 1613 को सम्राट जंहागीर ने एक शाही फरमान जारी कर अगेंजों को सूरत में तिजारत के लिए एक कोठी – निर्माण की अनुमति प्रदान कर दी और मुगल – दरबार में एलची के रहने की इजाजत। सर टामस पहला अंगेज था जो मुगल – दरबार में ब्रिटिश सम्राट की तरफ पहला एलची नियुक्त हुआ। वह भारत में 1615 में पहुँचा। उसने अपने मृदुल व्यवहार से गोरो – के लिए व्यापार में कई रियायतें प्राप्त की। 1624 के पूर्व तक गोरो के अपराध के लिए भारतीय अदालतों में ही सुनवाई होती थी और वही उन्हें सजा भी देती थी। 1624 को एक शाही फरमान द्वारा अंग्रेजों को यह अधिकार मिल गया कि गोरों के अपराध करने पर उन्हे अंग्रेज स्वयं दण्डित कर सकते हैं। 1.

जहाँगीर के बाद शाहजहाँ का समय आया। उसने भी 1639 में अंग्रेजों को व्यापार के लिए मद्रास में एक कोठी बनाने की अनुमति प्रदान कर दी।

---

1. सुन्दरलाल , भारत में अंगरेजी राज , नई दिल्ली , सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय , भारत सरकार , 1882 , पृ0 सं0 116।

उसके बाद 1640 में शाहजहाँ की बीमार लड़की को अंग्रेज डाक्टर द्वारा ठीक कर देने पर गोरों को कलकत्ते में कोठी बनाने तथा बंगाल भर में चुंगी न लगने की सुविधा मिल गयी।

उसके बाद औरंगजेब का शासन काल आया , उसके समय में शिवाजी की शक्ति का विस्तार होने लगा , जिस पर अंग्रेजों ने मुगल सम्राट को शिवाजी के विरुद्ध सहयोग का आश्वासन दिया। इससे खुश होकर औरंगजेब ने भी गोरों को कई नई रियायतें प्रदान की।

अंग्रेज – व्यापारियों का चरित्र स्तरीय नहीं था , किसी भी दूसरी कौम का माल से लदे जहाज को आनन – फानन पकड़ कर लूट लेना उनके लिए साधारण सा काम था।

धीरे–धीरे गोरों की पकड़ केवल व्यापार में ही बढ़ती नहीं गयी अपितु वे भारत में शासकीय शिकंजा कसने का ताना – बाना भी बुनने लगे। इसके अतिरिक्त अंग्रेज अत्याचार के क्षेत्र में भी आगे बढ़ने लगे।

उनका भारतीयों के प्रति व्यवहार बहुत ही घटिया स्तर का होता था। अंग्रेज बंगाल में अपने झगड़ालू स्वभाव के कारण सुर्खियों में आ गये। कुछ दिनों में ही गोरे सौदागरों का भारतीयों के प्रति दमन चक्र तेज हो गया। भारतीयों के प्रति अंग्रेजों के जुल्म की चर्चाए एवं आवाजें मुगल सम्राट औरंगजेब तक पहुँची। इस पर सम्राट द्वारा उनकी कोठियाँ जब्त कर ली गयी , सूरत एवं अन्य शहरों से गोरो को निकाल दिया गया किन्तु गोरे बहुत चतुर थे। 1.

---

1. सुन्दरलाल , भारत में अंगरेजी राज , नई दिल्ली , सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय , भारत सरकार , 1882 , पृ0 सं0 119।

वे समय को भाँपने में माहिर थे। अंग्रेज औरंगजेब दरबार में जाकर अपने अपराध अंगीकार कर लिए और क्षमा माँगते हुए भविष्य में ऐसा कोई भी कार्य न करने का वचन दिया , जिससे किसी भी शिकायत का अवसर आये। उदारमना औरंगजेब ने गोरों को बख्श ही नहीं दिया अपितु नई–नई कोठियाँ बनाने तथ सुरक्षा के लिए किले बंदी करने की अनुमति भी प्रदान कर दी। उसी समय फोर्ट विलियम किले की नींव पड़ी।

औरंगजेब से इस किले को रोकने की अपील की गयी किन्तु उन्होने फिरंगियों को गरीब परदेशी मानकर उसमें दखल नहीं दिया। मुगल सम्राटों की यही भूलें आगे चलकर भारत की सत्ता के लिए भूचालें सिद्ध हुई। अग्रेजो के बाद भारत में फ्रांसीसी कौम का आगमन हुआ।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी का व्यापार भारत में पूर्व तथा पश्चिमी तटों तक फैल गया , अंग्रेज सौदागर तथा कम्पनी के पत्तीदार भारतीय धन से मालामाल हो गए। फ्रांसिसियों ने भी ईस्ट इण्डिया की तर्ज पर भारत के दक्षिण पश्चिम में कोठियाँ बनवायीं।

फ्रांसीसी भी कम चतुर नहीं थे। वे भारतीय शासकों की प्रशंसा करके उन्हें अपने पक्ष में करने की कोशिश करते थे। इसी बीच कर्नाटक के सूबेदार पर मराठों ने आक्रमण कर दिया , पाण्डिचेरी के फ्रांसीसी मुखिया टूमास की कर्नाटक के नवाब दोस्त अली खाँ से खूब पटती थी। उसने नवाब को मदद देने की पेशकश की ।

---

1. सुन्दरलाल , भारत में अंगरेजी राज , नई दिल्ली , सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय , भारत सरकार , 1882 , पृ0 सं0 121।

टूमास ने पाण्डिचेरी में किलेबंदी कर 1200 यूरोपियनो तथा पाँच हजार भारतीय सेना को उसमें एकत्र कर लिया , यह पहला अवसर था जब किसी यूरोपवासी के हाथों भारतीय सैन्य का नेतृत्व था , टूमास की नीति काम कर गयी। मराठे कर्नाटक विजय नहीं कर पाये।

टूमास से नवाब तथा दिल्ली सम्राट दोनों बहुत प्रसन्न हुए। उसे नवाब के खिताब से नवाजा गया। उसे दो हजार सवारों का सेनापति नियुक्त कर दिया गया। पाण्डिचेरी के सारे क्षेत्र में फ्रांसीसियों का कब्जा हो गया। 1741 में दूमास के स्थान पर डुप्ले पाण्डिचेरी का हाकिम नियुक्त हुआ। वह पहला यूरोपवासी था, जिसके मन में भारत में यूरोपियन साम्राज्य स्थापित करने की महत्वाकाँक्षा जागी थी। वह भारत की कमजोरियों से परिचित था , जिसका उसने पूरा लाभ भी उठाया। डुप्ले भारत की कमियों में नरेशों से सम्बन्धित पहली कमी को जानता था कि राजाओं का आपसी रागद्वैष उनका एक बहुत बड़ा दोष है। दूसरा यूरोप से सेना लाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि भारतीय बल, वीरता और साहस में यूरोपीयों से कम नहीं हैं।

यूरोप में उस समय फ्रांस और ब्रिटेन एक दूसरे के शत्रु बन चुके थे , कुछ ही दिनों बाद दोनों के मध्य युद्ध शुरू हो गया , कर्नाटक लगभग शताधिक वर्षों से गोरों के अधिकार में था , कर्नाटक उस समय भारतीय व्यापार का प्रमुख केन्द्र था , डुप्ले ने मद्रास को अंग्रेजों से हथिया लेने का मन बनाया। अनबरूद्दीन उस समस कर्नाटक का नवाब था। डुप्ले ने गोरो के खिलाफ नवाब को खूब उकसाया।

लाबुर दौने नामक फ्रांसीसी सैन्य अधिकारी के नेतृत्व में मद्रास में अंग्रेजों से युद्ध हुआ , जिसमें अंग्रेज पराजित हुए। डुप्ले ने नवाब से वादा किया था कि मद्रास पुनः आपके अधीन कर दिया जायेगा। लाबूर दौने ने अंग्रेजों से चालीस हजार पौण्ड नकद लेकर पुनः मद्रास को हस्तगत कराने का आश्वासन दे दिया। इधर डुप्ले ने न तो मद्रास नवाब को दिया और न ही लाबूर दौने ने अंग्रेजों को दिया अपना वचन पूरा किया।

नवाब जब डुप्ले की छल योजना से अवगत हुआ तो उसने सेना लेकर मद्रास की ओर प्रस्थान कर दिया , उधर डुप्ले भी नवाब को रोकने के लिए आगे बढ़ा , 4 नवम्बर 1746 को मद्रास के निकट डुप्ले तथा नवाब के बीच सामरिक मुठभेड हुयी , डुप्ले की सेना में अधिकतर भारतीय सैनिक थे , डुप्ले अपने तोपखानों तथा भारतीयों के बल पर नवाब को हरा दिया। इतिहास में यह पहला अवसर था जब किसी यूरोपियन ने भारतीय शासन के विरुद्ध फतह हासिल की। अंग्रेजों और नवाब कर्नाटक दोनों को डुप्ले धोखा दे चुका था , फलतः नवाब तथा अंग्रेज दोनों फ्रांसीसियों के विरुद्ध एकजुट हो गये।

गोरी सेना ने 1748 में पाण्डिचेरी पर आक्रमण किया , इस बार भी गोरों को डुप्ले के हाथों पराजय मिली। इसी बीच अंग्रेजों तथा फ्रांसीसियों के मध्य संधि हो गयी , संधि – अनुसार मद्रास पुनः गोरों के अधीन हो गया। इस तरह कर्नाटक से अंग्रेजों को निकालने की डुप्ले – नीति निरर्थक हो गयी किन्तु डुप्ले ने हार नहीं मानी , वह सियासी साजिश करता ही रहा।

दक्षिण भारत में राजनैतिक स्थिति क्षीण थी , कर्नाटक , तंजौर और तिरूच्चिरापली पर आपसी सत्ता संघर्ष चल रहा था। नाजिर जंग , मुजफ्फरजंग , अनवरूद्दीन साहूजी , प्रतापसिंह , चंदासाहब और मोहम्मद अली जैसे सभी सत्ता जिज्ञासु सभी प्रकार के हथकण्डे अपना रहे थे। डुप्ले तथा गोरें भारतीय शासको की कमियों का पूरा फायदा उठा रहे थे। तिरुच्चिरापल्ली संग्राम फ्रांसीसी सत्ता – ताबूत में अन्तिम कील सिद्ध हुई , फ्रांस की भारी पराजय हुयी , 1754 में फ्रांस सरकार ने डुप्ले को वापस बुला लिया। उसके बाद फ्रांस ने भारत में राजनैतिक झगड़ों में तटस्थ रहना ही हितकर माना। फांसीसी तथा ब्रिटिश कम्पनी में संधि हो गयी। 1769 में फ्रांसीसी कम्पनी तोड़ दी गयी। उसके बाद मात्र एक या दो स्थानों पर ही फ्रांसीसी काबिज रहे।

पुर्तगालियों , डचों तथा फ्रांसीसियों में से किसी की भी सत्ता भारत में स्थापित न रह सकी। तत्पश्चात् केवल गोरों ने भारत में राजनैतिक प्रभुत्व कायम करने के लिए चालबाजी की चौपर में सियासी गोटें बिछानी शुरु कर दी।

अंग्रेजों ने सबसे पहले बंगाल लूटने योजना बनायी। अंग्रेजों की साजिश का पहला मोहरा एक मालदार व्यापारी अमीचन्द बना। षडयंत्रकारी गोरों में एक खास नाम कर्नल स्काट था। स्काट ने अमीचन्द के साथ मिलकर कई राजाओं और रईसों को अपनी तरफ मिला लिया , 10 अप्रैल 1756 को सिराजुद्दौला बंगाल का नवाब बना।

ईस्ट इण्डिया की साजिशे धीरे – धीरे पकड़ मजबूत कर रही थी , गोरों ने सिराजुद्दौला को हर तरफ से घेरना शुरू किया।

उन्होनों उसे अपमानित भी करना प्रारम्भ कर दिया। सिराजुद्दौला के नवाब बनने पर परम्परानुसार नवाब दरबार में नजराना पेश न करके गोरों ने नवाब का पहला अपमान किया। उसके बाद उसके मातहतों को अपनी ओर फोड़ना शुरू किया।

इन सब हालातों से मजबूर होकर सिराजुद्दौला ने 24 मई 1756 को कासिम बाजार की अंगरेजी कोठी पर आक्रमण कर दिया , जिसमें अंग्रेजों की हार हुई , वाटसन ने पराजय मान ली , सिराजुद्दौला एक शांतिप्रिय नवाब था , वह चाहता तो अंग्रेजों का काम तमाम कर सकता था किन्तु उसने ऐसा नहीं किया। उसने अंग्रेजों से षड्यत्र बंद करने और सही आचरण करने का प्रस्ताव रखा किन्तु भला गोरे कब मानने वाले थे , वे तो सिराजुद्दौला को बरबाद करने का मन बना चुके थे।

ईमानदारी के संघर्ष में गोरे नवाब को हरा नहीं सकते थे । उन्होंने अपनी साजिशों एवं कुत्सित चालों के माध्यम से नवाब के आदमियों तथा सैनिको को अपनी तरफ मिलाना शुरु किया , जिस वाट्स को नवाब ने क्षमा कर दिया था , वह वाट्स नवाब दरबार में सियासी – सेंध लगा रहा था , कलकत्ते के अंग्रेजों का व्यवहार उन भारतीयों के प्रति भी सही नहीं था , जिन्होंने गोरों की मदद की थी ।

गोरों के प्रति सबसे अधिक वफादार अमीचंद , उसका साला हजारीमल तथा दीवान राजवल्लभ के पुत्र राजा किशनदास को भी गोरों का विश्वास प्राप्त नहीं था। अंग्रेज इन तीनों को कैद कर रखना चाहते थे।

---

18 जून 1756 को पुनः सिराजुद्दौला ने कलकत्ते में कम्पनी की सेना को पराजित किया , सिराजुद्दौला ने पराजित ब्रिटिश सैन्य प्रमुखों तथा सैनिकों के प्रति पुनः उदारता दिखायी।

इस पराजय के बाद गोरे बंगाल से बाहर हो गए। बंगाल उस समय सबसे अधिक उपजाऊ एवं खुशहाल प्रान्त था। सिराजुद्दौला ने कलकत्ते का नाम बदलकर अलीनगर कर दिया और एक हिन्दू दीवान राजा मानिकचन्द को उसका प्रमुख नियुक्त कर दिया।

गोरों द्वारा कलकत्ते की कोठी में एक ब्लैकहोल या अंधकूप का निर्माण कराया गया था , जो 18 फीट लम्बा था। उसमें गोरे भारतीय अपराधियों या कर्जदारों को कैद करके रखते थे। गोरों ने नवाब के चरित्र को कलंकित करने के लिए यह मन गढ़न्त आरोप लगाया कि उस ब्लैकहोल में नवाब के आदेश से गोरों को बंद कर दिया गया था , जिसमें से केवल 23 जिंदा बचे थें।

अंग्रेज यह समझ चुके थे कि बाहुबल के द्वारा सिराजुद्दौला को शिकस्त नहीं दी जा सकती , फलतः उनहोंने नवाब–दरबार में साजिशों का ताना–बाना बुनकर नवाब को नेस्तनाबूद करने की चालाकी भरी चौपड़ बिछानी शुरु कर दी थी। मानिकचंद की दगाबाजी ने गोरों की मुश्किलों को आसान कर दिया। वे कलकत्ता में पुनः काबिज हो गये। गोरों ने हुगली को लूट लिया और नवाब को छल द्वारा खत्म करने की राजनीति को अन्तिम रूप देने में जुट गये।लार्ड क्लाइव वाट्सन की तुलना में कहीं अधिक धूर्त एवं चालाक था। उसने नवाब के सेनापति मीरजाकर एवं मंत्रियों तथा अन्य दरबारियों को अपनी तरफ मोड़ लिया।

आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि षड्यत्रों के संजाल फैलाने में रिश्वती मदद भी भारतीय ही दे रहे थे। सिराजुद्दौला को देशद्रोहियों ने अपनी विश्वासघाती वीथिका में उलझा दिया।

शांति प्रिय , उदार एवं भोले–भाले नवाब सिराजुद्दौला गोरों की काली करतूतों को समझ नहीं पा रहे थे और उनके जाल–व्यूह में फंसते चले जा रहे थे ।वाट्स ने मुर्शिदाबाद में साजिशों का जाल बिछा दिया था। मीरजाफर ने गुप्त रूप से 4 जून 1757 को गोरों के साथ एक संधि कर ली थी।

मुर्शिदाबाद से 20 मील दूर पलाश के वृक्षों का एक घना वन था , जिसे पलाशी बाग भी कहते थे , उसी वन में प्लासी के मैदान में 23 जून 1757 को सिराजुद्दौला और लार्ड क्लाइव के बीच युद्व हुआ , उसकी सेना में मीरजाफर के अतिरिक्त तीन और मुख्य सेनापति थे – यार लुफ्त खाँ , राजा दुर्लभराम और मीर मुमउद्दीन , जिसे मीरमदन भी कहते थे। नवाब के तीन सेनापतियों मीरजाफर , यार लुफ्त खाँ और दुर्लभराम के पास पैंतालिस हजार सेना थी और मीरमदन के अधीन बारह हजार सैनिक थे। प्लासी के युद्व में जब क्लाइव की कायरता एवं किंकर्तव्यविमूढ़ता दिखायी पड़ने लगी और नवाब की विजय सन्निकट थी। उसी समय मीर जाफर का व्यवहार बदला हुआ दिखायी दिया।

मीरजाफर नवाब की पगड़ी से भी प्रभावित नहीं हुआ

सिराजुद्दौला को जब यह आभास होने लगा कि मीरजाफर दगा कर सकता है तो उसने उसे पास बुलाकर अपने एवं नाना अलीवरदी खाँ के सम्बन्धों की उसे याद दिलायी।

नवाब ने अपनी पगड़ी उतार कर मीरजाफर के सामने रख दी और कहा कि इस पगड़ी की लाज तुम्हारें हाथ में है।

इस पर मीरजाफर ने गंभीरता का स्वांग भरते हुए विनम्र भाव से नवाब को अपनी वफादारी का पूरा भरोसा दिलाया किन्तु जैसे ही वह सिराजुद्दौला के सामने से हटा , उसने तुरन्त एक पत्र द्वारा क्लाइव को घटना की जानकारी दी।

नवाब की सेना में केवल मीरजाफर ही विश्वासघाती नहीं था अपितु उनकी आयुधी आस्तीन में अनेकों सैनिक – सांप छिपे थे। उनकी पूरी सेना में भितरघातियों का जाल बिछा हुआ था। प्लासी के युद्व में जब विजय नवाब को मिलने ही वाली थी कि उसी समय मीरजाफर अपनी पैतालींस हजार सेना के साथ क्लाइव से जा मिला।

कुछ समय तक नवाब का निष्ठावान सेनापति मीरमदन गोरों की सेना के दांत खट्टे करता रहा , उसके जीते जी आँग्ल सेना कुछ नहीं कर सकी , उसके शहीद हो जाने के बाद नवाब विवश हो गया , मीरजाफर ने नवाब की पगड़ी की लाज नहीं रखी। भारतीय इतिहास का एक पृष्ठ मीरजाफर की षड़यंत्र–स्याही से स्याह हो गया।

23 जून 1757 को शाम को नवाब को प्लासी के मैदान से भागना पड़ा । लार्ड क्लाइव की चालाकी रंग लायी , वह प्लासी – विजय का नायक एवं आँग्ल साम्राज्य का संस्थापक बन गया।

---

1. सुन्दरलाल , भारत में अंगरेजी राज , नई दिल्ली , सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय , भारत सरकार , 1882 , पृ0 सं0 156।

प्लासी की पराजय की खबर पूरे देश में बिजली की तरह फैल चुकी थी। सिराजुद्दौला 24 जून 1757 को मुर्शिदाबाद पहुँचा , उसके पास राजकोष पर्याप्त था , उसने धन पानी की तरह बहाकर पुनः सैन्य संगठन को खड़ा करने का भरसक प्रयत्न किया किन्तु ढलते सूरज को कौन सलाम करता है ? उसका किसी ने साथ नहीं दिया। मीरजाफर नवाब का लगातार पीछा कर रहा था। नवाब को विवश होकर मुर्शिदाबाद भी छोड़ना पड़ा।

मीरजाफर को नवाबी एवं मुर्शिदाबाद की लूट

उस समय तक मुर्शिदाबाद की जनता को लार्ड क्लाइव की चालों की जानकारी नहीं हो पायी थी। उसे यह पता नहीं था कि क्लाइव भारत की आजादी को हड़पने का षड़यंत्र रच रहा है , अन्यथा उनकी बगावत भारतीय इतिहास का रुख ही बदल देती। 29 जून 1757 को मीरजाफर बंगाल का नवाब बना। गोरों ने मुर्शिदाबाद को जमकर लूटा। अमीचन्द ने भारत के साथ जो भितरघात किया था , उसका प्रतिफल उसे कुछ दिनों में प्राप्त हो गया था , उसे गोरों ने जो सब्ज बाग दिखाया था , वह सब कोरा साबित हुआ , अमीचन्द के साथ दगा किसी का सगा नहीं सिद्व हुआ , उसे भारी आघात पहुँचा, क्लाइव ने उसे तीर्थ यात्रा की सलाह दी , वह सदमें को सहन नहीं कर पाया और डेढ़ साल के भीतर उसकी मृत्यु हो गयी।

कुछ दिनों बाद सिराजुद्दौला को राजमहल नामक स्थान पर कैद कर लिया गया , कम्पनी ने उसके साथ वीरोचित व्यवहार नहीं किया , उसे मुर्शिदाबाद लाया गया।

---

1. सुन्दरलाल , भारत में अंगरेजी राज , नई दिल्ली , सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय , भारत सरकार , 1882 , पृ0 सं0 159।

छल से मोहम्मद बेग नामक व्यक्ति द्वारा उसका कत्ल कर दिया गया। मीरजाफर उसे नजरबन्द रखना चाहता था किन्तु उसकी अपने पुत्र मीरन व क्लाइव के सामने एक न चली।

क्लाइव तथा उसके मित्रों ने सिराजुद्दौला के चरित्र को कलंकित करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी किन्तु नवाब का वीरता , सच्चाई और ईमानदारी में कोई सानी नहीं था। उसके राजकोष में अकूत धन था , जो गोरों के लालच के लिए पर्याप्त था , यही सम्पन्नता उसके विनाश का कारण बनी। सिराजुद्दौला का सबसे बड़ा दोष था कि गोरों द्वारा बार–बार दगा करने पर भी उनके प्रति अटूट विश्वास तथा दोस्ती के लिए हाथ बढ़ाना , साथ ही उन्हें हर बार क्षमा करना।

सिराजुद्दौला के व्यक्तिगत दोष , भारतीय जनता में राजनैतिक जाग्रति तथा राष्ट्रीयता का अभाव एवं अभिजात वर्गीय भारतीयों का चिन्तनीय चरित्र ने ही नवाब को नेस्तनाबूद किया । सिराजुद्दौला के बाद मीरजाफर , मीर कासिम एवं अन्य नवाब भी आँग्ल कूटनीति के शिकार हुए।

भारत में प्लासी – विजय के बाद अंग्रेज भारतीयों के प्रति दमन के नित नये उपाय खोजतें रहें , भारतीय जनता के संत्रास का ग्राफ या आरेख बहुत ऊँचा हो गया। अन्यायों के अतिरेक ने जन सोच को भी झकझोर दिया।

धीरे – धीरे जनचेतना राष्ट्रोंन्मुखी हुयी , प्लासी – पराजय के प्रतिरोध ने राष्ट्रीय पौरुष की नयी पूर्व पीठिका तैयार की।

एक सदी के शोषण एवं संत्रास ने भारतीय एकजुटता को नया आयाम प्रदान किया जो 1857 के प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष के रूप में प्राकट्य हुआ। 1857 के प्रथम स्वातन्त्र्य को आँग्ल इतिहासकारों एवं कुछ क्रीत भारतीय इतिहासविदों ने मात्र सिपाही विद्रोह या गदर के रूप में विवेचित किया है , जो किसी भी रूप में समीचीन नहीं है। सत्तावनी समर यथार्थ में भारतीय पौरुष का लौह संघर्ष था , जिसने आँग्ल साम्राज्य की चूलें हिलाकर रख दी थी , यह संग्राम कपितय कारणों से भले ही साफल्य प्राप्त न कर सका हो किन्तु अपने नेपथ्य में वह रणाह्वान छोड़ गया , जो 90 वर्षों के सतत् समर के रूप में तब तक नहीं थमा जब तक 1947 का प्राप्य (आजादी) प्राप्त नहीं हो गया।

सत्तावन के संघर्ष के बाद भारतीय रणबाँकुरों की राष्ट्रीय परतंत्रता के पटाक्षेप की जिज्ञासा और तीव्र हो गयी , 20वी सदी का 6वाँ , 7वाँ और 8वाँ दशक देशवासियों के लिए – शुभ सिद्ध हुआ , उदारवादी , उग्रवादी एवं क्रांतिधर्मी आन्दोलन के अगुवाकारों ने इन्हीं दशकों में देश से दासता के दमन हेतु देह धारण किया। गोपाल कृष्ण गोखले , बालगंगाधर तिलक , लाला लाजपत राय , दयानंद सरस्वती , स्वामी विवेकानंद , गांधी एवं सरदार वल्लभ भाई पटेल जैसे नररत्न इन्हीं दशकों की देन है। पुनर्जागरण के प्रतिनिधि भी इसी काल में अवतरित हुए।

इसके अतिरिक्त 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के जन्म ने राष्ट्रवादियों के मिशन में एक अध्याय और जोड़ दिया। स्वातन्त्र्य संघर्ष को कांग्रेस के रूप में एक बैनर मिल गया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के बाद आजादी का संघर्ष एक व्यवस्थित रूप में चलने लगा किन्तु आजादी के अभीष्ट का अग्रसारण अलग – अलग प्रकार का रहा , उदारवादी , उग्रवादी एवं गांधीवादी अगुवायी के अतिरिक्त एक और विचारधारा रहीं है , जिसके प्रभावी अनुदाय को भुलाया नहीं जा सकता।

वह विचारधारा थी क्रांतिकारी। क्रांतिकारी आन्दोलन ही एक ऐसा संघर्ष था , जिसने ऑग्लवादी ईटों का जवाब अपने पौरुष के पत्थरों से दिया। गोरों के अमानवीय व्यवहारो के प्रतिकार स्वरूप प्लासी – पराजय के बाद देश में कहीं न कहीं विरोध तो होते ही रहे। विद्रोहों की श्रृंखला में प्लासी – युद्ध के बाद 1767 का जंगल महाल का , 1772 का सन्यासी , 1798 का चुआड़ , 1806 का वेल्लोर , 1831 का वहाबी एवं 1855 के संथाल विद्रोह उल्लेखनीय हैं। भारत में सशस्त्र संघर्ष की पूर्व पीठिका में के रूप में इन्हें बगावती – बीज कहा जा सकता है , जो कालान्तर में सत्तावनी समर, गदर संघर्ष , लोक युद्ध एवं 1897 से 1942 तक के क्रांतिकारी के रूप में पुष्पित , पल्लवित एवं विकसित युद्ध होते हुए देखा जा सकता है।

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन किसी एक विभूति या विचारधारा पर अवलम्बित नहीं रहा , इसे एक ओर जहाँ उदारवादी , उग्रवादी एवं गांधीवादी अवदानों की आधार भूमि प्राप्त रही है , वहीं इसके साथ ही भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष को एक ऐसा दुर्धर्ष आलम्ब प्राप्त रहा है , जिसने कई अवसरों पर गोरों की शठता का करारा जवाब दिया है , साथ ही उन्हें यह भी आभास कराया है कि भारतीयों की धमनियों में उष्ण रक्त का संचार हो रहा है , समय पड़ने पर भारतीय देश के लिए सब कुछ कुर्बान करने को तैयार रहते हैं।

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन को सशक्त एवं प्रभावी आधार प्रदान करने वाली कोई और विचारधारा नहीं अपितु वह क्रांतिधर्मी भूमिका रही है , जिसने समय – समय पर गोरों के दमन के लिए दधीचि की भूमिका निभायी है। क्रांतिकारी आन्दोलन का भी एक प्रभावी समय रहा है।

जहाँ तक भारत में आजादी हेतु सशस्त्र संघर्षों का प्रश्न है , उसके सम्बन्ध में इतिहासकारों में मतवैभिन्न है किन्तु मोटे रूप में मराठा धरती को क्रांतिकारी संघर्ष की बीज – भूमि माना जाता है।

जहाँ पर प्लेग जैसी महामारी के समय मराठी जनता के प्रति गोरों की अमानवीयता पर चाफेकर बन्धुओं ने प्लेग कमिश्नर मि० रैण्ड एवं लेफ्टिनेण्ट एयर्स्ट को गोली मार कर क्रांति का श्री गणेश किया था ।

भारत के मुक्ति संग्राम में देश के हर क्षेत्र का यथाशक्य योगदान रहा है , किन्तु – संयुक्त प्रान्त (अब उ० प्र०) के बुन्देल क्षेत्र का क्षात्रधर्म अपना एक अलग महत्व रखता है , बुन्देलखण्ड के सातों जनपदों का क्रांतिकारी आन्दोलन में सहभाग सराहनीय रहा है किन्तु बुन्देलखण्ड के क्रांतिधर्मी प्रतिभाग का यथेष्ट रेखाँकन नहीं हुआ है , 1857 से लेकर 1947 तक अनेक क्रांतिकारियों के सामरिक – अनुदाय का अन्वेषण अभी भी शेष है , प्रस्तुत शोध प्रबन्ध इसी अभाव की पूर्ति का एक प्रयास है , इसीलिए मैने अपने शोध प्रबन्ध हेतु "स्वाधीनता संघर्ष में बुन्देलखण्ड (उ० प्र०) के क्रांतिकारियों का योगदान " नामक शीर्षक का चयन किया है।

---

1. अयोध्या सिंह , भारत का मुक्ति संग्राम , दिल्ली , मैकमिलन इण्डिया लि० , 1987 , पृ०सं० – 45 , 46

द्वितीय अध्याय

स्वाधीनता संघर्ष और हमीरपुर के क्रांतिकारी

2

स्वाधीनता संघर्ष और हमीरपुर के क्रांतिकारी

प्रथम स्वातन्त्र्य समर के बाद 1858 में नवगठित झांसी मण्डल में चार जनपदों को रखा गया , जिनमें से एक हमीरपुर जनपद भी था । इस जिले के नामकरण को लेकर विद्वानों में मत भिन्नता पायी जाती है , इस जनपद की विकास – यात्रा कई चरणों से होकर गुजरी है , जिला गजेटियर में यह अंकित है कि 11 वीं सदी में कलचुरी राजपूत हम्मीर देव ने इसे बसाया था , उसी के नाम पर इस जनपद का नाम हमीरपुर पड़ा । 1. वासुदेव चौरसिया का यह मानना है कि यह जिला चन्देल काल में अस्तित्व में आया । उनके अनुसार चन्देल नरेश हम्मीर वर्मन (1289—1309)में इसे बसाया था। 2.

खंगार क्षत्रिय इतिहास के पक्ष पोषक मुरली मनोहर राय खंगार का विचार है कि खेतसिंह नामक खंगार नरेश ने हम्मीर सिंह तथा सुमेर सिंह नाम खंगारों को इस क्षेत्र का दृग्पाल नियुक्त किया था , जिन्होंने क्रमशः हमीरपुर तथा सुमेरपुर को बसाया। इन सभी तर्कों पर दृष्टिपात करने पर यह विचार अधिक समीचीन प्रतीत होता है कि जिला गजेटियर अधिक प्रामाणिक एवं मान्य है । 11 वीं सदी में कलचुरी राजपूत हम्मीरदेव के द्वारा हमीरपुर को बसाये जाने का उल्लेख अधिक सच प्रतीत होता है ।

---

1. बलवन्त सिंह (राज्य संपादक) , उ0 प्र0 डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स हमीरपुर , लखनऊ , 1988 ,पृ0 सं0 – 01।
2. वासुदेव चौरसिया , चन्देलकालीन महोबा और जनपद हमीरपुर के पुरावशेष , महोबा , 1994 , पृ0 सं0 – 121।

हमीरपुर का विकासेतिहास कम रुचिकर नहीं है । अयोध्या के राजा सगर तथा चेदि राजा सुबाहु का भी इस भूभाग पर शासन रहा है । इस जनपद के कुछ भाग महाभारत काल में भी अस्तित्व में रहे हैं । इस जिले की तहसील राठ को ही विराट नगरी माना गया है , ऐसी मान्यता है कि भीम ने यहीं पर कीचक का वध किया था। 1. चन्देरी चन्देलों की राजधानी रही है, कृष्ण समकालीन चेदि राजा शिशुपाल यहीं के थे , इन्हीं के वंशज आगे चलकर चेदि एवं कलचूरी कहलाये ।

18 वीं सदी के प्रथम दशक में यह जनपद आँग्ल सत्ता के अधीन हो गया। पहले इस जिले का मुख्यालय कालपी था , बाद में 1821 में हमीरपुर हो गया , 1863 में इसे इलाहाबाद मण्डल से जोड़ा गया , 1911 में पुनः हमीरपुर को झांसी मण्डल से संश्लिष्ट कर दिया गया । 11 फरवरी 1995 को हमीरपुर को विभाजित कर दिया गया , महोबा एक नये जिले के रूप में अस्तित्व में आया । वर्तमान में हमीरपुर जनपद में हमीरपुर , मौदहा , राठ एवं सरीला नामक चार तहसीले हैं। 2.

शूरों की धरती : हमीरपुर

18 वीं सदी के प्रथम दशक में जब सारा बुन्देल क्षेत्र गोरी सत्ता के अधीन हो गया और बुन्देलखण्ड में जब आँग्लों के विरूद्ध बगावत का बिगुल बजा , तभी से बुन्देल धरा के इस जनपद ने सामरिक संघर्ष छेड़ दिया था ।

---

1. श्रीपति सहाय रावत , समर गाथा , महोबा , बंसत प्रकाशन , 1995 , पृ0 सं0 – 17।
2. डॉ0 अयोध्या प्रसाद पाण्डेय , चन्देल कालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास , प्रयाग , हिन्दी साहित्य सम्मेलन , 1968 , पृ0 सं0 – 05।

१८५७ की क्रांति और हमीरपुर

प्लासी – पराजय के बाद गोरों ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव रखी , उसके बाद से भारत में उनका केवल व्यापारिक क्षेत्र में ही प्रभुत्व नहीं बढ़ा , अपितु शासकीय क्षेत्र में भी वे अपने आधिपत्य को बढ़ाने में कोई कोर – कसर छोड़ना नहीं चाहते थे । भारतीयों के प्रति उनके दमन की नीति निरन्तर बढ़ती गयी , फलतः एक सदी के उत्पीड़न ने 1857 की क्रांति को जन्म दिया , सत्तावन का समर कई दृष्टियों से बहुत महत्वपूर्ण था , सारे भारत में गोरों के प्रति भारतीय एक जुटता देखते ही बनती थी । 1857 के स्वातन्त्र्य संघर्ष में उ0 प्र0 के बुन्देलखण्ड के जनपदों की भी सहभागिता सराहनीय रही ।

जिला मुख्यालय हमीरपुर , जहाँ आजकल कलेक्ट्रेट अवस्थित है , वह परिसर आज भी हमीरपुर के शूरों का साक्षी है । उस समय हमीरपुर मे टी0 के0 लायड अंग्रेज कलेक्टर थे । हमीरपुर की 56 वीं देशी सैन्य टुकड़ी भी अपने विरोधी स्वर मुखरित कर रही थी , जून 1857 के प्रथम सप्ताह में रमेड़ी के ग्रामीणों तथा देश भक्तों ने एक गोपनीय बैठक की , उसमें पूरे मनोयोग से सहभाग करने का निश्चय किया , 13 जून 1857 को हमीरपुर मुख्यालय में सत्तावनी संघर्ष शुरू हुआ । उस समय सरकारी कोष का सुरक्षा प्रहरी भी विद्रोहियों के साथ प्रतिभाग करता हुआ कलेक्टर निवास की तरफ चल पड़ा था । स्वाधीनता वीरों ने जेल पर आक्रमण कर दिया । 1.

विद्रोहियों ने कैदियों को जेल से आजाद करा लिया , तत्कालीन जिलाधीश एवं संयुक्त न्यायाधीश डोनाल्ड ग्रांट सरसो के खेत में धुस गये।

---

1. डॉ0 भवानीदीन , वैभव बहे बेतवा धार , कानपुर , गिलिस बाजार , साहित्य रत्नालय , 1998 , पृ0 सं0 – 06, 07।

वे अपने प्राण बजाते हुए संगम तक पहुँच गए , जहाँ वे पाँच दिनों तक छिपे रहे , उधर विद्रोही उनकी तेजी के साथ खोज कर रहे थे , 18 जून 1857 को दोनों को पकड़कर क्रांतिवीरों ने कचहरी में काम तमाम कर दिया । उसके बाद हमीरपुर की 56 वीं देशी सैन्य टुकड़ी नाना साहब के साथ कानपुर प्रस्थान कर गयी । इस तरह यह स्पष्ट हो जाता है कि 1857 के प्रथम स्वातन्त्रय् संघर्ष में हमीरपुर नगर की प्रभावी एवं प्रशंसनीय पहल रही । 1.

सत्तावन के समर के पश्चात क्रांति वीर शान्त नहीं बैठे , वे अपनी रणनीति बनाते रहे । उग्रवादी आन्दोलन के प्रमुख प्रणेता बाल गंगाधर तिलक ने मराठा धरती में शिवाजी एवं गणेश उत्सव के माध्यम से युवाओं में नवजागरण का स्पन्दन कर रहे थे । उसी बीच महाराष्ट्र में प्लेग जैसे महामारी ने दस्तक दी , जिसमें बहुत से लोग काल कवलित हो गये । गोरों का महामारी काल में मानवोचित व्यवहार नहीं रहा , जिससे आक्रोशित होकर चाफेकर बन्धुओं ने मि0 रैण्ड तथा एयर्स्ट की हत्या कर क्रांति का शुभारम्भ किया , तत्पश्चात् क्रांति वीरों का सिलसिला पुनः प्रारम्भ हो गया । 2. हमीरपुर जनपद का क्रांतिकारी आंदोलन में प्रतिभाग पीछे नहीं रहा। यहाँ क्रांति शिरोमणि , पॅ0 परमानंद , दीवान शत्रुघ्न सिंह , रानी राजेन्द्र कुमारी , मन्नीलाल गुरूदेव एवं श्रीपति सहमत राव जैसे अनेक क्रांति वीरों का सराहनीय योगदान रहा । यहाँ के बहुत से युवाओं ने क्रांति के प्रमुख पुरोधा पं0 परमानंद से प्रभावित होकर स्वातन्त्र्य संघर्ष में प्रतिभाग करने के लिए क्रांतिकारी उपायों में जुट गये। पूरे हमीरपुर जनपद में कई गाँवों तथा कस्बों में क्रांतिकारी संगठन बने।

---

1. डॉ0 भवानीदीन , वैभव बहे बेतवा धार , पूर्व उल्लिखित , पृ0 सं0 – 07 ।
2. मन्मथनाथ , भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास , पूर्व उल्लिखत , पृ0 सं0 – 131

क्रांतिकारी आन्दोलन और पं० परमानंद

बुन्देलखण्ड के क्षात्र धर्म को किसी के परिचय की आवश्कता नहीं है , शूरता और वीरता के क्षेत्र में इस भू–भाग की अपनी एक अलग पहचान रही है। अवसर आने पर यहाँ के हर गाँव ने गोरी – सत्ता को कर्म के कुरुक्षेत्र में गांडीव धारी बन अपने त्याग के तूणीर से तरस्विता के तीर चलाकर तहस – नहस किया है। 1. बुन्देलखण्ड एक नर–रत्न प्रसूता क्षेत्र है , यहाँ पर उन नरपुँगवों का जन्म हुआ है , जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बल पर बुन्देल क्षेत्र के कीर्ति–कोष को एक नयी पहचान प्रदान की है। इस वैशिष्ट धरा में एक ऐसा दुर्धर्ष योद्धा पैदा हुआ , जिसने अपने पुरुषार्थ की तूलिका से दुनिया के मानचित्र में हम्मीर धरा के लिए सम्मान का रंग सदैव के लिए भर दिया। उस महान क्रांतिवीर का नाम था – परमानंद।

कुक्ष – क्रांति

पं0 परमानंद की माँ सगुनाबाई एक धर्म परायण महिला थी। रामचरितमानस और गीता उनके आदर्श ग्रंथ थे। वे आल्हा – ऊदल के पुरोधत्व से बहुत प्रभावित थीं। परमानंद के जन्म के नौ दिन पूर्व घटी एक घटना से यह स्पष्ट होता है कि परमानंद को ईश्वर ने धरती पर दूसरे निमित्त ही भेजा था। 3. पं0 परमानंद की माँ एवं भाभी एक अटारी के नीचे खाना पका रही थीं।

---

1. डॉ0 भवानीदीन , प्राचीरे बोलती हैं , भरूवा सुमेरपुर , सन्दर्शिता , 2001 , पृ0 सं0 – 34 ।
2. राजेन्द्र सिंह , स्वाधीनता संघर्ष और पं0 परमानंद एक अनुशीलन , बु0 वि0 वि0 , झांसी , 2002 , पृ0 सं0 – 04 ।

अचानक कड़ाही के नीचे की दो कड़ी टूटीं और वे दोनों नीचे गिर गयीं , उनके ऊपर कई मन मिट्टी गिरी , देखने वालों को यह विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वे दोनों जीवित बची होंगी। भीड़ ने उन दोनों को मिट्टी से निकाला , सगुनाबाई के शरीर में सूजन आ गयी थी , उनका वैद्य से उपचार कराया गया। उनकी सूजन कुछ कम हुयी , अन्ततः वह घड़ी आ गयी , जिसे माँ भारती के मुक्ति – मिशन के लिए एक नर – नाहर की दरकार थी। 06 जून 1892 को सांय पाँच बजे उस शिशु का जन्म हुआ , जिसने कालान्तर में मातृभूमि के मुक्ति संग्राम में अपने पुरोधत्व धर्म के बल पर एक नया इतिहास रच दिया। वह नौनिहाल और कोई नहीं पं0 परमानंद थे। उनका कोख के अन्दर का यह संघर्ष स्मरणीय था। 1.

पं0 परमानंद अपने भाईयों में सबसे छोटे थे। पाँच वर्ष की उम्र होने पर सबसे पहले माँ ने ही उन्हें शिक्षा देनी प्रारम्भ की। वे जब 6 वर्ष के हुए तो उन्हें सिकरौधा से दो मील दूर रिहुँटा गाँव के स्कूल में भेज दिया गया। परमानंद ने रिहुँटा की पाठशाला में चार दर्जे तक शिक्षा ग्रहण की। परमानंद पढ़ने में तेज नहीं थे। वे एकान्त प्रेमी थे। पं0 परमानंद बचपन से ही स्वाभिमानी थे। पं0 परमानंद के बड़े भाई बल्देव प्रसाद खरे अमीन के पद पर प्रोन्नत होकर इलाहाबाद पहुँच गये। 2.

प्रथम राजनैतिक गुरू

पं0 परमानंद को बाल्पकाल में माँ , भाभियों तथा बहनों ने सांस्कृतिक इतिहास से अवगत कराया था । इन्हें 09 वर्ष की अवस्था में माँ ने सत्तावनी – समर से परिचित कराया था ।

---

1. राजेन्द्र सिंह , स्वाधीनता संघर्ष और पं0 परमानंद , बु0 वि0 वि0 , झांसी , पृ0 सं0 – 04।
2. पं0 परमानंद , आत्मकथा , हस्तलिखित , पृ0 सं0 – 13।

इनके अग्रज बल्देव प्रसाद खरे समाचार पत्रों , सत्यार्थ प्रकाश नामक कृति तथा तिलक एवं अरविंद घोष के विचारों के मुरीद थे। बल्देव प्रसाद एक कवि , चिन्तक तथा इतिहास विद् थे। 1.

बल्देव प्रसाद खरे ने ही इनकी मनो भूमि में पड़े राष्ट्रप्रेम के बीज को राष्ट्रानुराग अम्बु से अभिसिंचित कर उसे अंकुरित किया था। इस तरह से यह स्पष्ट होता है कि पं0 परमानंद के अग्रज बल्देव प्रसाद खरे ही उनके प्रथम राजनैतिक गुरू थे। पं0 परमानंद को प्रयाग में ही मुंशी कालीचरण , ठाकुर गिरेन्द्र सिंह , लाला रामनारायण लाल बुकसेलर एवं प्रमुख देशभक्त सुन्दरलाल का सामीप्य मिला। यहीं पर उनकी सेठ दामोदर स्वरूप से भेंट हुई। ये वही दामोदर थे , जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन देशहित में अर्पित कर सर्वाधिक जेल भोगी बने थे। 2. इस तरह से यह सुस्पष्ट होता है कि प्रयाग – प्रवास में ही पं0 परमानंद संघर्षी के जीवन का शिलान्यास हुआ था।

देशानुराग का आरोह

प्रयाग –प्रवास में ही परमानंद के भावी जीवन की आधार भूमि तैयार हो गयी थी , वे राष्ट्रप्रेम के पथ के पथिक बन चुके थे। 1906 – 07 में परमानंद ने एक रात्रि में दस बजे तक तरूण शहीद खुदीराम बोस के 500 चित्र विभिन्न बोर्डिगों में बांटकर अपने को खतरे का खिलाड़ी सिद्ध कर दिया था। इतना ही नहीं उन्होंने अपने घर में दो बम भी बनाये थे , असावधनीवश वे बम फट गये थे , जिससे परमानंद घायल भी हुए थे , जिस पर कर्मवीर पं0 सुन्दरलाल ने उन्हें बहुत डांटा था। 1907 में मांडले जेल से रिहा होने के बाद लाला लाजपत राय का प्रयाग में एक अभिनन्दन समारोह हुआ था , वहाँ पर परमानंद उपस्थित थे।

---

1. पं0 परमानंद , आत्मकथा , हस्तलिखित , पृ0 सं0 – 18 ।

2. वही , पृ0 सं0 – 20 ।

लाला लाजपत राय के ओजस्वी विचार परमानंद को घर कर गये थे। उनकी गवर्नर सर जान मिस्टन के सचिव से उनके दंभी आचरण के कारण बहस भी हो गयी थी।

इन घटनाओं के बाद परमानंद आँग्लवाद के विरूद्ध और मुखरित हो गये , इसके साथ ही एक – दो घटनायें और की , जिसके कारण वे पुलिस की नजर में चढ़ गये। परमानंद के अग्रेंज विरोधी होने कारण उनके भाई बल्देव प्रसाद खरे दुविधा की स्थिति में पड़ गये। परमानंद के अग्रज स्वयं देश भक्त थे किन्तु उनके मार्ग में सरकारी सेवा सबसे बड़ा अवरोध थी। 1.

परमानंद का धर्म संकट

एक दिन उनके अग्रज ने परमानंद से अपने मित्रों के सामने गायत्री मंत्र की शपथ लेकर आँग्ल विरोधी आचरण न करने का प्रस्ताव रखा , जिसे परमानंद ने बहुत की संकोच के साथ गायत्री मंत्र का उच्चारण तो किया किन्तु आधे–अधूरे मन से। एक दिन ऐसा भी आया कि भाई के प्रेम तथा राष्ट्रधर्म जैसे दो मुद्दों में से वे किसे अपना मुरीद माने।

परमानंद के समक्ष दो मे से एक के चयन का गंभीर धर्म संकट था , उन्होंने राष्ट्रप्रेम को चुना और नवम्बर 1908 में प्रयाग छोड़कर सांस्कृतिक नगरी बनारस की राह पकड़ी , जहाँ पर उन्हें उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द , कई क्रांतिवीरों तथा महामना मालवीय जी का सानिध्य मिला और वे पूरी तरह राष्ट्र प्रेम के रंग में रंग गये।

---

1. पं0 परमानंद , आत्मकथा , हस्तलिखित , पृ0 सं0 – 21 ।

उग्रवाद के क्षेत्र में

1906 से 1920 तक का काल उग्रवाद के नाम से जाना जाता है । स्वदेशी , बहिस्कार , राष्ट्रीय शिक्षा और स्वराज्य उग्रवादियों के राष्ट्रीय आन्दोलन के संचलन के प्रमुख आधार थे । माण्डले जेल से छूटकर लाला लाजपत राय जब प्रयाग भूमि में पहुँचे तो उनके दो – ढाई घण्टे के समारोह में लाला जी के प्रवचन ने परमानंद की जीवन धारा को ही बदल दिया । 1.

परमानंद के अग्रज बल्देव प्रसाद खरे शिक्षाकाल में केवल एक मेधावी छात्र ही नहीं रहे अपितु वे एक उच्चकोटि के कवि , साहित्यकार और इतिहास विद् भी थे। वे छात्र काल में ही अपने पैतृक गाँव सिकरौधा में वेंकटेश्वर नामक समाचार पत्र मँगाते थे और गाँव वालों को तत्कालीन घटनाओं से अवगत कराते थे। वे आर्य समाजी थे। उन्होंने पं0 परमानंद को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने को दी थी , बल्देव प्रसाद खरे तिलक प्रेमी थे , वे तिलक के विचारों से परमानंद को अवगत कराते रहते थे। बल्देव प्रसाद खरे ने ही परमानंद को राजनीति का पहला पाठ पढ़ाया था। 2.

ठाकुर गिरेन्द्र सिंह और पं० परमानंद

ठाकुर गिरेन्द्र सिंह पं0 परमानंद के अग्रज बल्देव प्रसाद के जिगरी दोस्त थे , उनका प्रयाग में एक नाइट स्कूल चलता था , जिसमें युवाओं को आर्य समाज के सिद्धान्तों की शिक्षा दी जाती थी। आर्य समाज के सिद्धान्तों से युवा मानसिकता को नया आयाम मिला , प्रयाग में अवस्थित आर्य समाज में बहुत सारे युवा स्वतः जाने लगे।

---

1. पं0 परमानंद , आत्मकथा , हस्तलिखित , पृ0 सं0 – 17
2. वही , पृ0 सं0 – 16

उस क्लब का एक भजन था –

अब तो जागियो रे कैसे सोये भारतवासी ।

गऊ कन्या अनाथ और करें तुम्हारी आस ।

तुमको कुछ मालूम नहीं है भारत उजड़ा जाय ।

जो परमानंद के अन्तस में रच – बस गया था। परमानंद इस भजन को अधिकांशतः गाते रहते थे। 1.

कर्मवीर पं० सुन्दरलाल का सानिध्य

प्रयाग में पं0 परमानंद को पूज्यवर पं0 सुन्दरलाल जी के दशर्नों का भी सुयोग मिला। उनके मर्मस्पर्शी विचारों ने परमानंद को सर्वाधिक प्रभावित किया। पं0 सुन्दरलाल के चिन्तन से परमानंद के जीवन को एक नया आयाम मिला। उस समय प्रयाग से स्वराज्य नामक एक पत्र निकलता था , जिसके संपादक पं0 शांति नारायण थे किन्तु ब्रिटिश विरोधी लेख के कारण जब उन्हें तीन वर्ष की सजा मिली तो उस पर पं0 सुन्दरलाल बहुत दुःखी हुए।
स्वराज्य पत्र के लिए संपादकों की कमी नहीं हुई , इसमें क्रमशः हरीराम , नंदगोपाल और लट्ठाराम संपादक हुए , सरकार संपादकों को सात – सात वर्ष की कड़ी सजा दे रही थी , इन पर मुकदमे चल रहे थे , ये संपादकगण जब निकलते थे तो पं0 परमानंद तथा उनके अभिन्न मित्र सतीशचन्द्र उन पर फूलों की वर्षा किया करते थे और वंदेमातरम् का जयघोष करते थे। 2. पं0 सुन्दरलाल ने स्वराज्य प्रेस में एक आटा चक्की गड़वा दी थी , ताकि जेल जाने से पूर्व संपादकगण चक्की पीसने का अभ्यास कर लें और उन्हें जेल में परेशानी न हो। प्रयाग के बरूआ घाट में सुन्दरलाल जी के प्रवचन होते थे।

---

1. पं0 परमानंद , आत्मकथा , हस्तलिखित , पृ0 सं0 – 20 ।

2. वही , पृ0 सं0 – 21 ।

उधर 'स्वराज्य' पत्र गोरों के खिलाफ जहर उगलता था। स्वराज्य पत्र का सारा शहर मुरीद था। 1906 – 07 में पं0 सुन्दरलाल का आवास शिक्षार्थियों के लिए एक तीर्थ बन गया था।

गवर्नर के सचिव को दो टूक जवाब

प्रयाग में लाला लाजपत राय का सम्मान समारोह आयोजित हुआ था। समारोह से जनता वापस लौट रही थी , काफी भीड़ थी। गवर्नर और उनके सचिव सैर कर रहे थे। गवर्नर की गाड़ी धीरे–धीरे चल रही थी , सचिव साइकिल में सवार होकर शनैः – शनैः उनके साथ चल रहा था , लोगों को मार्ग से निकलने में दिक्कत महसूस हो रही थी , इस पर पं0 परमानंद ने मोटर के निकट पहुँच कर गवर्नर से कहा कि आप अपनी मोटर थोड़े समय के लिए हटा लीजिए , भीड़ हट जाने पर आप घूमते रहियेगा।

पं0 परमानंद के इतने कहने पर गवर्नर का सचिव बड़बड़ाने लगा , उसने परमानंद को डराया भी , स्वाभिमानी और साहसी परमानंद भला वह सब क्यों सहन करते। उनके साथ सैकड़ो छात्र थे। वे सब परमानंद के प्रति आदर–भाव रखते थे। सचिव के व्यवहार का दो टूक जवाब देते हुए परमानंद ने कहा कि " तू सुअर का बच्चा है। " यह सुनकर सचिव आग बबूला हो गया। वह साइकिल से उतरकर अंधेरे में परमानंद को खोजने लगा। 1. अनेकों छात्रों के बीच में हाने के कारण वह परमानंद को पहचान न सका। थोड़ी देर बाद पं0 परमानंद स्वयं उसके सामने आकर कहा कि मैंने तुम्हें गाली दी है , तुमसे जो करते बने , कर लेना।

---

1. उदयनारायण सिंह , अमर क्रांतिकारी , इलाहाबाद , मोतीलाल नेहरू नगर , 1997 , पृ0 सं0 – 64 ।

उनके मित्रों ने जब यह जाना कि गाड़ी गवर्नर की है तो उनके एक मित्र ने उन्हें बगीचे से होकर भाग जाने की सलाह दी , पं0 परमानंद को जब यह पता चला कि वे जिसे गालियाँ दे रहे थे , वह गवर्नर का सचिव है तो वे थोड़ा भयभीत भी हुए।

स्कूल से निष्कासन

परमानंद के कुछ साथियों ने गवर्नर के सचिव से हुयी तकरार की सूचना उनके भाई को भी दे दी , साथ ही उनके कुछ मित्रों ने यह सूचना स्कूल के हेडमास्टर मुंशी गनेशी लाल को दे दी , इस पर मुंशी जी ने परमानंद को बुलाकर कहा कि तुम गवर्नर के सचिव से झगड़ते हो , तुम बहुत बदमाश हो , मैं तुम्हें सुन्दरलाल की तरह स्कूल से निकाल दूँगा , तुमको सजा मिलेगी। पं0 सुन्दरलाल स्वराज्य के संपादक है और लाला लाजपत राय तो पागल हैं। ये हमारे छात्रों को दिशाहीन कर रहे हैं , यदि कोई छात्र उनकी बात करेगा तो मैं उसे स्कूल से निकाल दूँगा। हेडमास्टर के इस उत्तर से परमानंद को बहुत बड़ा आघात लगा किन्तु वे कक्षा में शान्त बैठे रहे , उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया। इस तरह से प्रयाग में उनका शिक्षाकाल समाप्त हुआ। गवर्नर के सचिव के साथ परमानंद के विरोध को लेकर उनके कुछ साथियों ने परमानंद के अग्रज को भड़काया भी। 1.

परमानंद के प्रति अग्रज की सोच

परमानंद के भाई को जब परमानंद के प्रति भड़काया गया तो वे उनके सुधार के उपाय सोचने लगे। बल्देव प्रसाद खरे खुद गोरी सत्ता के दुश्मन थे , उनके घर खुदीराम बोस का चित्र टंगा था।

---

1. राजेन्द्र सिंह स्वाधीनता संघर्ष और पं0 परमानंद : एक अनुशीलन बु0 वि0 वि0 , झांसी , 2002 , पृ0 सं0 – 20।

वे तिलक तथा क्रोपाटकिन के भक्त थे। उन्होंने परमानंद से कहा कि मैं चाहता हूँ कि तुम एम0 ए0 उत्तीर्ण कर लो फिर राष्ट्र सेवा में लगो , इस पर परमानंद बोले कि मै चाहता हूँ कि हवाई जहाज चलाना सीख लूँ , उसके बाद उसी से बकिंघम पैलेस को नष्ट करके अपने को होम कर दूँ। इस पर उनके अग्रज ने कहा कि एक हिन्दू लड़के का यही अभीष्ट होना चाहिए। इस तरह से यदि देखा जाय तो बल्देव प्रसाद के अन्दर राष्ट्रप्रेम कूट–कूटकर भरा हुआ था किन्तु ब्रिटिश सरकार के अधीन अमीन होने एवं पारिवारिक जिम्मेदारी के चलते वे विवश एवं बाध्य थे। 1.

बल्देव प्रसाद खरे अग्रज होने के नाते परमानंद को बहुत समझाते थे। वे कहते थे कि यदि तुम्हें पढ़ना है तो स्कूल में शांतिपूर्वक पढ़ो , इधर –उधर बेकार मत घूमो , यदि पुलिस ने तुम्हें पकड़ लिया तो वह सीधे ले जाकर जेल में ठूस देगी , अपने घर पर सतीश चन्द्र को न बुलाओ , घर में विस्फोटक पदार्थ न लाओ , सी0 आई0 डी0 इन्सपेक्टर जाहिर सिंह तो मानो तुम्हारे लिए ही यहाँ पर पड़ा है। इस तरह अब परमानंद पर उनके भाई तथा पुलिस दोनों नजर रहने लगी। परमानंद की भाभी तथा भतीजी रमा सदैव उनका ही साथ देती थीं। अवसर पड़ने पर परमानंद का ही पक्ष लेती थीं।

गृह त्याग का निर्णय

बड़े भाई के दबाव एवं गायत्री मंत्र को साक्षी मानकर सरकार के विरूद्ध कोई कदम न उठाने को प्रतिज्ञाबद्ध हो जाने पर परमानंद धर्मसंकट में अवश्य फँस गये थे किन्तु उनके मन में रह–रहकर अनेक प्रकार के विचार उठ रहे थे।

---

1. राजेन्द्र सिंह , स्वाधीनता संघर्ष और पं0 परमानंद , बु0 वि0 वि0 , झांसी , 2002 , पृ0 सं0 – 20 , 21 ।

वे विचारों की भूल–भूलैया में भटक ही रहे थे कि उन्हें अचानक पं0 सुन्दरलाल द्वारा प्रदत्त कुछ ग्रंथों की घटनायें याद आ गयी , जो उनके लिए दिशा सूचक सिद्ध हुई। परमानंद को गुरु गोविंद सिंह तथा हकीकत राय के पुत्रों के रूपक याद आये , जिन्होंने परमानंद को व्यर्थ के विचार वारिधि में डूबने से बचाया। उनके स्मृति पटल पर यह स्मरित हुआ कि गुरू जी ने देखा कि लड़का समर भूमि से वापस क्यों आ रहा हैं ? उसने कहा कि पिता जी प्यास लगी है , इसलिए पानी पीने आया हूँ , इस पर गुरु जी ने पुत्र को पानी उपलबध नहीं कराया , प्रत्युत्तर में यह कहा कि योद्धाओं के लिए पानी युद्ध भूमि में ही मिलता है , तुम भी वापस वहीं पहुँचों , जहाँ पर समर भूमि में तुम्हारे भाई अपनी निष्ठा का निर्वाह कर रहें है , तुम भी वहीं जाकर मृत्युरुपी अमृत का पान करों। इस वैचारिक प्रसंग ने परमानंद को विचार – व्यूह से बाहर निकाला। 1.

पं0 परमानंद को अपने पूर्वजों के पुरूषार्थ तथा सांस्कृतिक संस्कारों ने झकझोरा। उन्हें आत्मग्लानि हुई। उनके मन में यह विचार आया कि थोड़े से स्वार्थ के वशीभूत होकर राष्ट्र सेवा से वंचित हो जाना उपयुक्त नहीं है। उन्होंने अपने को व्यर्थ के अन्तर्द्वन्द्व से बाहर निकाला और तितीक्षित होने के लिए अपने को तैयार कर स्वदेश के लिए उदात्त भावना को आत्मसात कर गृह त्याग का दृढ़ निश्चय किया। 2.

सांस्कृतिक नगरी और पं० परमानंद

पं0 परमानंद एक दिन रामजी लाल शर्मा के पास पहुँचे और उनसे परामर्श किया कि संस्कृत पढ़ना कहाँ पर श्रेयस्कर रहेगा ?

---

1. पं0 परमानंद , आत्मकथा , हस्तलिखित , पृ0 सं0 – 27 ।
2. वही , पृ0 सं0 – 28 ।

इस पर शर्मा जी ने काशी में संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करने की उन्हें सलाह दी। उन्होंने यह भी कहा कि मैं तुम्हें वहाँ के संस्कृत के विद्वान केशव देव शास्त्री के नाम एक पत्र लिख कर दे दूँगा , जिससे तुम्हें बड़ी मदद मिलेगी।

पं0 परमानंद को शर्मा जी का यह प्रस्ताव बहुत पसन्द आया , साथ ही कुछ शांति भी मिली । वे पं0 रामजी लाल शर्मा से शास्त्री जी के नाम पत्र लेकर दो – तीन दिनों बाद काशी जाने का मन बना लिया। उन्होंने भाभी से कुछ रूपयें माँगे , जिस पर वे इस डर से रुपये नहीं दिए कि कहीं परमानंद बाहर न चले जायं। पं0 परमानंद का मर्यादित जीवन था। वे अपने अग्रज का बहुत सम्मान करते थे , उनके सामने खुलकर विचार नहीं रखते थे। परमानंद जब घर छोड़ने लगे तो वे अपनी भाभी तथा भतीजी को एकटक देखते रहे , क्यों कि उन्हें मालूम था कि मैं इन्हें हमेशा के लिए छोड़ रहा हूँ। 1.

नवम्बर 1908 का समय था , सायं चार बजे उन्होंने एक कमीज पहनी , पैर तथा सिर नंगे थे। ठंड का समय था। उनके पास न तो कपड़े थे और न ही रुपये , उनके पास यदि कुछ था तो वह केवल राष्ट्रप्रेम की पूँजी , साथ ही गोरों के प्रति प्रतिकार की भावना। वे इन्हीं विचारों के साथ शास्त्री के नाम एक पत्र लेकर प्रयाग स्टेशन की ओर बढ़े। गाड़ी आने में कुछ विलम्ब था। वे स्टेशन में इधर – उधर टहलने लगे। 2. परमानंद की गांठ में पैसे नहीं थे , वे सोच रहे थे कि काशी – यात्रा कैसे पूरी होगी , इतने में गाड़ी आ गयी। वे ज्यों ही टिकट घर की तरफ बढ़े , वैसे ही उन पर पं0 उमादयाल मिश्र की नजर पड़ गयी।

---

1. श्रीपति सहाय रावत , समरगाथा , महोबा , बंसत प्रकाशन , 1995 , पृ0 सं0 – 21।
2. पं0 परमानंद , आत्मकथा , हस्तलिखित , पृ0 सं0 – 28।

वे परमानंद के भाई के मित्र तथा कालपी – निवासी थे। उन्होंने परमानंद से पूँछा कि कहाँ जा रहे हो , इस पर परमानंद ने कहा कि संस्कृत पढ़ने काशी जा रहा हूँ। मिश्र जी ने कहा किं बिना सामान के बनारस जा रहे हो , इस प्रश्न के उत्तर में परमानंद ने कहा कि दिल तो है , सारा सामान उसी के अन्दर रहता है। वे परमानंद को भली–भाँति जानते थे। उन्होंने कहा कि लगता है कि बड़े भाई से नाराज होकर आये हो , मिश्र जी ने कहा कि टिकट खरीदा है या नहीं , परमानंद बोले कि भाभी से रुपये माँगे थे किन्तु उन्होंने रुपये दिए नहीं , इस कारण मैं बिना पैसों के ही चला आया हूँ। 1.

मिश्र जी ने परमानंद के लिए न केवल टिकट खरीदा अपितु उन्हें अपने निकट सेकेण्ड क्लास में बैठाया भी। वे उनसे जंघई स्टेशन तक बातें करते रहे , मिश्र जी ने परमानंद को कुछ रुपयें देने के साथ यह विश्वास व्यक्त किया कि विद्वान बनकर वापस आना। पं0 परमानंद ने मिश्र जी द्वारा यह उपकार करने पर ईश्वर के प्रति आभार व्यक्त किया। परमानंद साढ़े नौ बजे बनारस पहुँच गये , वे गाड़ी से उतरकर पुल पार करते हुए प्लेटफार्म पहुँच गये , उन्होंने पूड़ी खायी , ठंड अधिक थी , वे भट्ठी के सामने कुछ देर और रुकना चाहते थे , रात्रि के ग्यारह बज रहे थे। उसी समय एक यात्री उनके पास आया और पूँछा कि बेटे तुम कहाँ से आये हो ? परमानंद ने कहा कि इलाहाबाद से आया हूँ। यात्री ने पुनः कहा कि लगता है कि तुम घर से नाराज होकर आये हो, बिना सामान के हो। परमानंद ने यात्री को जवाब दिया कि मैं यहाँ पढ़ने आया हूँ। मुसाफिर ने उनसे फिर पूँछा कि तुम यहाँ किसी को जानते हो। उन्होंने कहा कि मैं केशव देव शास्त्री को जानता हूँ।

---

1. राजेन्द्र सिंह , स्वाधीनता –संघर्ष और पं0 परमानंद , एक अनुशीलन बु0 वि0 वि0 , झांसी , 2002 , पृ0 सं0 24।

यात्री ने परमानंद को अपने पास बैठाया और अपनी लड़की से उन्हें निकट ही सुलाने के लिए कहा , परमानंद उन्हीं के बिस्तर पर उनसे 12 बजे तक वार्ता करते रहे उन्हीं के बिस्तर पर सो गये , प्रातः देर तक सोते रहे। 1.

परमानंद से सारी जानकारियाँ प्राप्त करने के बाद वे बहुत हँसे और अपनी पुत्री से कहा कि बेटी देखो यह लड़का कितना अनासक्त है , इसे केवल विद्यार्जन करना है , इसे शेष किसी वस्तु से प्रेम नहीं है , हम लोग जब पुनः काशी आयेंगे तो इससे मिलने शास्त्री जी के यहाँ जरूर पहुँचेंगे। उन्होंने परमानंद के लिए दशास्वमेघ हेतु तांगा कर दिया , किराये के छः पैसे तांगा वाले को देते हुए समझाया कि इसे दशास्वमेघ घाट के फाटक पर उतार देना। परमानंद ने चलते समय उनका आभार व्यक्त किया। उन्होंने परमानंद को आशीष वचन कहे। 2.

परमानंद थोड़े समय बाद दशास्वमेघ घाट पहुँच गये। वहाँ के बोर्ड पर कविराज केशवदास शास्त्री का नाम लिखा था। उन्होंने पहुँच कर शास्त्री जी को पत्र दिया , जिसे पढ़कर वे बहुत हँसे। उस समय उनके निकट मद्रास के हिन्दू कालेज के छात्र बैठे हुए थे। उन्होंने उन शिक्षार्थियों से कहा कि देखिये इस लड़के को , जिसने देश के लिए सर्वस्व न्योछावर कर दिया है । (Look here is young boy who has left every thing for the country) शास्त्री परमानंद को देखकर बड़े खुश हुए। शास्त्री जी मामूरगंज के डाक्टर छन्नूलाल के बंगले में रहते थे।

---

1. राजेन्द्र सिंह , स्वाधीनता –संघर्ष और पं0 परमानंद – एवं अनुशीलन , 2006 , बु0 वि0 वि0 , झांसी , पृ0 सं0 – 26 ।

2. वही पृ0 सं0 – 26 ।

शास्त्री जी ने परमांनद को उन्हीं के मकान पर छोड़ दिया , इनका शाम को पं० रामनायाराण मिश्र एवं अन्य महाशयों से परिचय कराया गया , शास्त्री जी ने जब परमानंद को अच्छी तरह से समझ लिया तो उन्हें अपने औषधालय में रखकर सारी जिम्मेदारी सौंप दी। वे ' नवजीवन ' तथा ब्रम्हचारी पत्र नामक दो पत्र निकालते थे , साथ ही एक अच्छे वैद्य भी थे। ' ब्रम्हचारी ' पत्र तो अधिक दिनों तक नहीं चला किन्तु ' नवजीवन ' नामक पत्र उच्चकोटि का था और वैचारिक क्षेत्र में क्रांति मचा रहा था। 1.

परमानंद प्रातः काशीनाथ पाठशाला में पं० रामवधी जी के यहाँ संस्कृत पढ़कर शेष पूरे दिन शास्त्री के कार्यालय में रहते थे। परमानंद जी का बाबू श्याम सुन्दर दास , पं० रामनायाराण मिश्र , पं० केशवदेव शास्त्री , बाबू शिव प्रसाद गुप्त और बाबू गौरीशंकर प्रसाद जैसे शहर के नामी – गिरामी लोगों से परिचय हो गया था , वे सभी सभाओं तथा कार्यक्रमों में सहभागिता करते थे। परमानंद जी को बाबू शिवप्रसाद गुप्त का पूरा आर्थिक सहयोग रहता था , मुंशी प्रेमचन्द्र , कृष्णदास और जयशंकर प्रसाद उनके मित्र थे। परमानंद जी की बनारस में ही नरेन्द्र देव से भेंट हुई थी। परमानंद जी के परिचय का दायरा बनारस में बहुत बढ़ गया। पुलिस उन पर कड़ी निगरानी रखती थी , परमानंद जी का जालपा प्रसाद और बाबू इन्द्रजीत सिंह से प्रगाढ़ सम्बन्ध था। 2.

परमानंद का क्रांति चिन्तन

परमानंद का बनारस में ही क्रांति दल के युवाओं से परिचय हुआ। उन्होंने परमानंद से क्रांतिदल में सरीक होने का अनुरोध किया।

---

1. राजेन्द्र सिंह , स्वाधीनता – संघर्ष और पं० परमानंद : एक अनुशीलन , 2002 , झांसी , बु० वि० वि० , पृ० सं० – 30, 31।
2. वही , पृ० सं० – 31।

परमानंद जी का बनारस में युवा क्रांतिवीरो से अच्छा सम्पर्क हो गया था। युवा क्रांतिकारियों ने उनसे क्रांतिदल की सदस्यता ग्रहण करने की प्रार्थना भी की थी किन्तु उन्होंने उस समय सदस्यता का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया था किन्तु वे तरूण वीरों को कभी भी हतोत्साहित नहीं करते थे। परमानंद जी इन युवावीरों से सदैव मिलते रहते थे किन्तु उनकी सोच थी कि क्रांति के क्षेत्र में गहनता , गंम्भीरता एवं गरूता बहुत जरूरी है। उनका मानना था कि क्रांति के क्षेत्र में अपरिपक्व युवाओं को नहीं कूदना चाहिए। उनका विचार था कि चौबीस वर्ष से पूर्व इस क्षेत्र में युवाओं का प्रवेश नहीं होना चाहिए और न ही उन्हें गुप्त भेदों से अवगत कराना चाहिए। परमानंद का विचार था कि चंचल , अमर्यादित एवं अवयस्क क्रांतिकारी एक अनुशासित सैनिक नहीं हो सकता। वे युवा क्रांतिकारी को जो अपने नायक को तर्क की कसौटी पर कसने के पक्ष पर हों , उनकों कभी दल के लिए वफादार नहीं समझते थे। 1.

परमानंद जी ने 1911–12 तक सिद्धान्त कौमुदी एवं अष्टाध्यायी का अध्ययन पूर्ण कर लिया था। उन्हें संस्कृत मुक्तावली तथा किरात महाकाव्य जैसे ग्रंथों का गहन अध्ययन था। इस तरह यह सुस्पष्ट हो जाता है कि काशी–नगरी में उन्हें अध्ययन एवं आयुध का मणि – कांचन योग प्राप्त हो गया था । वे एक गंभीर चिंतक , प्रखर वक्ता तथा महान क्रांतिदर्शी बन चुके थे। परमानंद के प्रयाग तथा काशी – प्रवास ने ही उनके भावी जीवन की पूर्व पीठिका बनायी थी। परमानंद गृहत्याग के हर क्षेत्र में साफल्य के सोपान पार कर रहे थे। 2.

---

1. पं० परमानंद , आत्मकथा , हस्तलिखित , पृ० सं० – 31 ।
2. पं० बनारसीदास चतुर्वेदी (प्रधान संपादक) , अभिनंदन – ग्रंथ , महान क्रांतिकारी पं० परमानंद , 1969 , राठ(हमीरपुर) , जी० आर० वी० इण्टर कालेज , पृ० सं० – 28 ।

परमानंद का जीवन अकलुष एवं निश्छल था , वे चरित्र के मामले में धनी थे। उन्हे विरासत तथा सियासत में श्रेष्ठ संस्कार प्राप्त हुए थे। परमानंद को हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों का बोध था किन्तु उनकी संस्कृत में पकड़ अच्छी थी। परमानंद को कई ऐसे अवसर मिले , जिसमें वे फिसल या बहक सकते थे किन्तु ऐसा हुआ नहीं। उन पर चारित्रिक लांछन भी लगा किन्तु उनका चरित्र तो ध्रुव की तरह अटल एवं अडिग था। अन्ततः उनकी चारित्रिक विजय हुई। भूतनाथ की नगरी काशी में उनके साथ कई खेल खेले गए किन्तु वे हारे नहीं।

परमानंद जी ने एक बार दीवान शत्रुघ्न सिंह के घर पर भीष्म प्रतिज्ञा की थी कि मैं आजन्म ब्रम्हचारी रहूँगा। देश जब तक आजाद नहीं हो जाता तब तक मैं विवाह या व्यभिचार नहीं करूँगा। उनको कई अवसरों पर उस देवव्रती प्रतिज्ञा ने मदद की और वे हर बार अपने को बचा ले गए। 1.

परमानंद का विदेश गमन

परमानंद जी दीवान शत्रुघ्न सिंह की शादी में सहभागी होने के बाद अपने भाई , भाभियों तथा बहनों से घर जाकर मिले , उनसे विदा लेकर वे पुनः काशी पहुँच गये। इधर कुछ परिचित लोग उन्हें रिश्तों की रस्सी में बाँधना चाहते थे किन्तु देवव्रती परमानंद को प्रणयपाश में नहीं बांधा जा सका। वे शास्त्री जी तथा बाबू शिवप्रसाद से मिले , वे दोनों विदेश जा रहे थे। उन्होंने शास्त्री जी से कहा कि मैं अमरीका जाना चाहता हूँ , बताइये , वहाँ कैसे पहुँचूगा ? इस पर शास्त्री जी ने परमानंद से कहा कि अमरीका पहुँचन के बाद मैं लाला हरदयाल से मिलकर तुम्हारा प्रबन्ध करा दूँगा।

---

1. सुविद्या खरे , पं0 परमानंद की जीवन झांकी इलाहाबाद , पुष्पाजंलि , 23 लेन , पृ0 सं0 – 23 ।

तुम्हें पासपोर्ट प्राप्त हो जायेगा फिर तुम अमरीका आ जाना। परमानंद शास्त्री जी से मिलने के बाद बाबू शिवप्रसाद गुप्त से मिले , वे परमानंद को देखते ही बोल पड़े , आप भी अमरीका जायेंगे। इस पर परमानंद ने कहा कि आप ही रास्ता बतायें कि मैं अमरीका कैसे पहुँचूँ। बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने कहा कि मैं तुम्हें एक पत्र देता हूँ , हमारी एक कोठी कलकत्ते में है , वहाँ पर रह रहे बाबू बैजनाथ सिंह को तुम यह पत्र दे देना , कुछ दिनों तक तुम वहीं ठहर जाना , वे तुम्हारी व्यवस्था कर देंगे। वे उनका पत्र लेकर कलकत्ता रवाना हो गये।

परमानंद का बुन्देलखण्ड की उस सोंधी माटी में जन्म हुआ था , जिससे शूरता – सुवासित होती थी। वे आल्हा – ऊदल के शौर्य के कायल थे। परमानंद मैथिलीशरण गुप्त की इन पक्तियों के प्रेमी थे –

संसार यह समर स्थली है , धीरता धारण करों ,
चले हुए जिस इष्ट पथ पर , संकटों से मत डरों ।

वे 13 फरवरी 1913 को कलकत्ता पहुँच गये , वहाँ पर लगभग एक माह रहे। कुछ दिनों बाद गुप्त भी कलकत्ते पहुँच गये। वे परमानंदजी के अमरीका गमन हेतु व्यवस्था में जुट गये। इसी बीच एक दिन बाबू मंगला प्रसाद कलकत्ते पहुँच गये। उन्होंने परमानंद जी से पूँछा कि आप अमरीका जा रहे हैं ? उन्होंने कहा कि जा तो रहा हूँ। मंगला प्रसाद जी ने कहा कि यदि गुप्त जी तुम्हारी व्यवस्था न कर पा रहे हों तो मैं तुम्हारा प्रबन्ध कर दूँ। 2.परमानंद जी ने कहा कि मैं तो अमरीका जाना चाहता हूँ मुझे वहाँ कोई भी भेज दे , इसी बीच गोविंद दास आ गये। वे परमानंद को देखकर हँसे और बोले कि आप शास्त्री जी के साथ अमरीका नहीं पहुँचे।

---

1. पं० परमानंद , आत्मकथा , हस्तलिखित , पृ० सं० – 66।

2. वही , पृ० सं० – 67 ।

इस पर परमानंद ने कहा कि उनकी तो सेठ कालूराम ने सहायता की थी , उनके पास धन कहाँ था ? गोविंद दास जी ने कहा कि बाबू शिवप्रसाद गुप्त जी किसी आवश्यक कार्य में व्यस्त हैं , उन्हें कष्ट न दें। हम आपके अमरीका पहुँचने का प्रबन्ध कर देते हैं। जापानी कम्पनी से बातचीत होने के बाद कल या परसों तक आपकी व्यवस्था हो जायेगी। गोविंद दास जी ने अपने एक कारिन्दे के माध्यम से परमानंद के लिए एक जहाज की व्यवस्था कर दी। उन्हें यात्रा के लिए आवश्यक सामग्री भी उपलब्ध करा दी। जहाज के कैप्टन से कह दिया गया कि परमानंद जी का ध्यान रखियेगा। गोविंद दास जी परमानंद से कहा कि हम आपकी सिंगापुर तक की व्यवस्था कर देते हैं। आप उसके आगे अपने पुरूषार्थ से पथ प्रशस्त कर लेना। 1.

उन्होंने कहा कि अकर्मण्य लोगों के लिए अर्थाभाव प्रमुख होता है , पुरुषार्थियों के लिए नहीं। आप कभी भी अर्थादि के चक्कर में न रहना , इससे जीवन मूल्य खत्म हो जाते हैं। उनके सहायक परमानंद जी को लेकर शाम को जहाज पहुँचे , उन्हें उस पर बैठाया। कैप्टन से उनके बारे में बातचीत की। वे चलते समय बाबू शिवप्रसाद जी से मिले और कहा कि मुझे मंगला प्रसाद जी भेज रहे हैं , आप फिक्र न करियेगा। 2. बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने परमानंद जी को अपना लंदन का पता दिया और कहा कि आप चीन , जापान और अमरीका में जहाँ भी रहें , मुझे सूचित करते रहियेगा , यदि आपको कोई परेशानी हो तो मुझे बताइयेगा , मैं आपको चार्ट बैंक से रुपये भेज दूँगा। उन्होंने परमानंद को पचास रुपये दिए ,

---

1. राजेन्द्र सिंह , स्वाधीनता –संघर्ष और पं0 परमानंद : एक अनुशीलन , 2002 , झांसी , बु0 वि0 वि0 , पृ0 सं0 – 45 , 46।
2. वही पृ0 सं0 – 46।

इस प्रकार से यह स्पष्ट होता है कि परमानंद के विदेश प्रवास के वे एक प्रमुख सहायक थे। मंगला प्रसाद जी ने परमानंद का तीन सिक्ख मित्रों से परिचय करा दिया था। वे तीनों ब्राजील जा रहे थे। उन्होंने भी परमानंद को पचास रूपये दिए थे। मंगला प्रसाद जी ने कहा कि मुझे विश्वास है कि आप वहाँ से कुछ बनकर लौटेंगे। परमानंद ने जहाज के संचलन के समय उन्हें अभिवादित किया। परमानंद अभी तक समुद्र के सम्बन्ध में सैद्वान्तिक संज्ञानी थे , आज वे व्यावहारिक होकर वारिधि से साक्षात्कार कर रहे थे। वे वर्षो समुद्र में विचरते रहे। उन्होंने दुनिया के कई देशों की सामुद्रिक मार्ग से यात्रायें की थी। उन्होंने चलते समय मातृभूमि को प्रणाम किया। वे अपना वतन छोड़ते समय भाव विह्वल हो गये थे , वे अश्रुओं के सालिल्य में डूब चुके थे। वे विदेश प्रवास में इसलिए निकले थे ताकि उन्हें मातृभूमि के वह आयुधी–औषधि मिल जाय , जिसके उपचार से वह दासता के रोग से मुक्त हो जाय और स्वाधीनता–स्वास्थ्य का लाभ उठा सके। 1.

परमानंद जब विदेशी धरती में पैर रखने के लिए निकले , उस समय वे बीस बसंत बिता चुके थे अर्थात बीस –इक्कीस वर्ष की आयु में वे विदेशी वसुधा में पैर रख रहे थे। उनकी भावनाओं का जलपोत माँ–बहनों के अश्रुओं के समुद्र में तैर कर आगे बढ़ रहा था। वे राष्ट्र – पीड़ा को समझ रहे थे। उन्हें वेदनाओं का संज्ञान था। उनके जलपोत ने गंगासागर में 290 मील की यात्रा तय की। परमानंद को प्रचुर सालिल्य के दर्शन हुए। उनका जहाज 17 फरवरी 1913 को रंगून पहुँचा। वे वहाँ पर तीन दिनों तक एक सिक्ख गुरुद्वारे में ठहरे। तत्पश्चात् वे रंगून से पीनांग , पीनांग से सिंगापुर , सिंगापुर से हांगकांग तथा हांगकांग से केल्टन पहुँचे। 2.

---

1. पं0 परमानंद , आत्मकथा हस्तलिखित , पृ0 सं0 – 68 ।
2. वही , पृ0 सं0 – 69 ।

उसके बाद परमानंद जापान गये , फिर वे अमरीका पहुँचे। वे विदेशों में जहाँ–जहाँ रहे , सभी स्थानों पर प्रवासी भारतीयों से मुलाकात की लेकिन , उनकी दृष्टि वहाँ सैन्य स्थानों पर रही। वे जिस अभीष्ट को लेकर विदेश–प्रवास पर निकले ,उसे पूरे मनायोग से सम्पन्न करने में कोई कोर–कसर नहीं रखी। 1.

गदर दल और पं० परमानंद

भारत के मुक्ति संग्राम में तीन ऐसे सशस्त्र संघर्ष हुए हैं , जिन्हें स्वातन्त्र्य क्षेत्र के अग्नि धर्मा आयुध कहा जा सकता है। वे तीन थे– 1857 का प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष , 21 फरवरी 1915 का गदर समर और 1942 का लोक युद्ध। सत्तावनी समर ने जहाँ भारतीय चेतनाग्नि को चिंगारी दी , वहीं 1915 के गदर–विद्रोह से वह प्रज्ज्वलित हो उठी और 1942 में वह जीवटता के ज्वालामुखी का रूप धारण कर लिया। 2.

गदर का आशय

अंग्रेजी भाषा के म्युटिनी (Mutiny) शब्द का हिन्दी रूपान्तर गदर है , यह शब्द सेना के भीतर विद्रोह के पर्यायवाची के रूप में माना जाता है। युवा अप्रवासी भारतीय सैनिक तो नहीं थे किन्तु उन्होंने अपने इस सामरिक आह्वान का नाम गदर रखा था क्यों कि इस शब्द के अर्थ बोध में किसी भी जाति के राष्ट्रधर्मी को समझने में कोई आपत्ति नहीं थी। अप्रवासी भारतीय गदरी युवा इस तथ्य से अच्छी तरह से वाकिफ थे , उनका मुकाबला किसी साधारण शक्ति से नहीं है, उन्हें मालूम था वह सामर्थ्य साम्राज्यिक है। गदरी वीर सैन्य भावनाओं को उद्वैलित कर भारत में राष्ट्रव्यापी सैन्य विद्रोह कराना चाहते थे। इन सब बिन्दुओं पर भली–भाँति विचार करके उन्होंने अपने संग्राम का नाम गदर रखा था।

---

1. पं0 परमानंद , आत्मकथा , हस्तलिखित , पृ0 सं0 – 70 ।

2. वही , पृ0 सं0 – 70 ।

गदर आन्दोलन में देश के कई प्रान्तों के राष्ट्रवीरों ने अपना – अपना यथाशक्य सहयोग उपलब्ध कराया था , 1915 के सैन्य विद्रोह अर्थात गदर की आधार भूमि तैयार करने में बुन्देलखण्ड के महान सपूत पं0 परमानंद की प्रभावी भूमिका रही। वे 1913 में सिंगापुर पहुँचे थे। उन्होंने वहाँ पर खास तौर से सैन्य स्थलों को देखा , उनकी वहाँ पर जालौन निवासी मंगल सिंह से मुलाकात हुई थी। उनके पुत्रों ने परमानंद की मदद की , सिंह पाल्यों के माध्यम से ही वहाँ पर परमानंद ने अपने प्रभावी विचार व्यक्त किए थे। उनका मर्मस्पर्शी उदबोधन प्रवासी भारतीयों में घर कर गया। भारतीय श्रोताओं ने परमानंद की शानदार आवभगत की और हांगकांग का पास बनवा दिया। परमानंद की हांगकांग में भाई बलवन्त सिंह से भेंट हुई। वे पंजाब के जालंधर – निवासी थे। 1.

बलवन्त सिंह मिडिल तक पढ़ चुके थे। वे दस वर्षों तक फौज में रहे। कनाडा में प्रवासी भारतीयों को इसी इमीग्रेशन बिल की मार झेलनी पड़ी थी। इस आव्रजन विधेयक के अनुसार भारतीयों पर यह प्रतिबन्ध लगा दिया गया था कि वे अपने घरों को रुपये नहीं भेज सकते थे। बलवन्त सिंह एवं उनके साथियों ने इस बिल के खिलाफ संघर्ष किया। अन्ततः इंगलैण्ड के इमीग्रेशन विभाग को झुकना पड़ा। ब्रिटिश सरकार बलवन्त सिंह को एक खतरनाक क्रांतिकारी मानती थी। बलवन्त सिंह को लाहौर षड़यंत्र के रूप में फांसी की सजा मिली थी। इन्होंने बैंकाक में सैन्य विद्रोह के लिए सांगठनिक कार्य किए।

1908 तक कनाडा में प्रवासी भारतीयों की संख्या बढ़कर 2613 हो गयी थी , जब कि 1905 में यह संख्या मात्र 45 थी।

---

1. पं0 बनारसीदास चतुर्वेदी (प्र0 संपादक) पं0 परमानंद का अभिनन्दन ग्रंथ , राठ जी0 आर0 वी0 इण्टर कालेज , 1969 , पृ0 सं0 – 31।

भारत की तुलना में कनाडा में मजदूरी पचास गुना अधिक थी। कनाडा में ऑग्ल तथा फ्रांसीसियों की संख्या अधिक थी। सिक्ख तथा अन्य भारतीय वहाँ पर अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के दृष्टिकोण से पहुँचे थे। कनाडा में वहाँ के श्रमिकों के हितार्थ 1912 इमीग्रेशन बिल पारित किया गया था। इस बिल के अनुसार प्रवासी भारतीयों पर तिहरे प्रतिबन्ध का प्राविधान किया गया था। ये प्रतिबन्ध थे–कनाडा तथा अमरीका में भारतीयों के प्रवेश पर रोक , घरों को रुपये प्रेषित करने पर प्रतिबन्ध तथा भारत कनाड़ा पुनः पर प्रतिबन्ध। इस बिल के विरोध में पं0 परमानंद एवं बाबा गुरुदत्त सिंह की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

पं0 परमानंद हांग कांग से जापान गये , जहाँ पर वे स्वतन्त्रता के पुजारी एवं राष्ट्रीय चीन के गुरु डॉ0 सनयात सेन से मिलना चाहते थे। उन्होंने जापानी सम्यता एवं संस्कृति को निकट से देखा। जापान में उनकी एक और प्रमुख देशभक्त मौलवी बरकत उल्ला से भी भेंट हुई।1.

परमानंद ने जापान – प्रवास में जापानी भाषा भी सीख ली थी। वे जापानियों की राष्ट्रनिष्ठा एवं ध्वजप्रेम से बहुत प्रभावित हुए थे। परमानंद 1913 में जापान से अमरीका पहुँचे थे। उनकी वहाँ पर लाला हरदयाल एवं भाई परमानंद से भेंट हुई , कामागाटा मारू जहाज काण्ड ने गदर दल के उद्भव के लिए आवश्यक जमीन तैयार की थी। वह जहाज बैकोंवर बन्दरगाह से वापस याकोहामा , हांगकांग होता हुआ कलकत्ता से 26 मील दूर कुलबी पहुँचा , 29 सितम्बर 1914 को उसे बजबज लाया गया। 2.

---

1. रविशंकर श्रीवास्तव , महान क्रांतिकारी पं0 परमानंद : एक ऐतिहासिक अध्ययन , छतरपुर , महाराजा कालेज , 1989 , पृ0 सं0 – 52 ।
2. कमलादत्त पाण्डेय (प्र0 संपादक) हिन्दू पंच , बलिदान अंक , दिल्ली , 1997 पृ0 सं0 – 266 , 270 ।

पं० परमानंद की गदर सोच

पं0 परमानंद ने शचीन्द्रनाथ सान्याल , विष्णु गणेश पिंगले तथा करतार सिंह के साथ मिलकर गदर की भावी रूपरेखा बनायी। उन्होंने जब गदर कार्यक्रम बनाया तो उनके पास अपने अनुभव के अतिरिक्त भारतीय सैन्य मानचित्र भी था , जो उनकी एक नवीन सोच का साक्षी था। परमानंद का यह मत था कि यदि इस नक्शे के आधार पर योजना क्रियान्वित हो जाय तो गोरी सत्ता का सफाया हो जायेगा। उन्होंने अपने मित्रों को फोटोग्रीफी दिखायी , साथ ही महत्वपर्णू स्थान भी बताये , देश की सभी 22 सैन्य छावनियों में एक ही बार में अधिकार कर लेने योजना बनायी गयी थी। 1.

मानचित्र में इन सैन्य छाविनयों को लाल स्याही से रेखाकिंत किया गया था। देश के 12 चुनिंदा पुलो को उड़ाने के लिए पं0 परमानंद तथा डॉ0 मथुरा सिंह ने दो दर्जन बड़े बम बनाये थे , तारों को काटने के लिए अस्त्र तथा रबड़ के ग्लोब खरीदे गए थे , लगभग 26 हजार गदरी युवा तैयार किये गए थे। प्रमुख छावनियों के फौजियों को ' गदर की गूँज ' तथा नीम हकीम खतरे जान नामक छोटी – छोटी पुस्तकें बांटी गयी थी। 22 छावनियों के 22 ध्वज तैयार किये गये थे , जिसमें भारत का मानचित्र था। 21 फरवरी 1915 को सारे देश में एक साथ गदर करने की तिथि निश्चित की गयी थी। कार्ययोजना को अमली जामा पहनाने की दृष्टि से प्रमुख गदरी नेताओं को अलग – अगल स्थान बांटे गये थे। पं0 परमानंद को पंजाब प्रान्त मिला था।

---

1. पं0 बनारसीदास चतुर्वेदी (प्र0 संपादक) पं0 परमानंद का अभिनन्दन ग्रंथ , राठ जी0 आर0 वी0 इण्टर कालेज , 1969 , पृ0 सं0 – 43 ।

जहाज के यात्रियों को जहाज से उतरकर पंजाब रवाना होने वाली गाड़ी पर बैठने के आदेश दिए गये। बाबा गुरुदत्त सिंह इस दल के नायक थे। बाबा गुरुदत्तसिंह के कहने पर यात्री गाड़ी पर सवार होकर बजबज स्टेशन पहुँचे। सभी यात्री भूखे , प्यासे एवं थके थे। वहाँ पर कोई गाड़ी नहीं थी। उन्हें पुनः जहाज पर बैठने के आदेश दिए गये। पुलिस बाबा को गिरफ्तार करना चाहती थी किन्तु वे यात्री – साथियों से घिरे हुए थे। गुरुदत्त सिंह कीर्तन गाने लगे , पुलिस उन्हें अपमानित करना चाहती थी। इस पर यात्रियों के धैर्य की सीमा टूट गयी। इन्द्रसिंह नाम के यात्री ने पुलिस उपनिरीक्षक से लाठी छीन ली , उस पुलिस वाले ने गोलियाँ दाग दी , मुन्शा सिंह ने पुलिस से पिस्तौल छीन लिया , उसे वही पर ढेर कर दिया। 1.

दोनों ओर से संघर्ष शुरू हो गया। पुलिस ने अंधाधुन्ध गोलियाँ बरसायीं। कामागाटा मारू काण्ड में 19 यात्री मारे गए , 23 घायल हुए। कुछ को गोली मार दी गयी। कुछ क्रांतिकारी आन्दोलन में कूद पड़े। उस जहाज में 321 यात्री सवार थे। इस जहाज काण्ड ने प्रवासी भारतीयों के अन्तस को झकझोर कर रख दिया। क्रूर आँग्लवादी नीति ने उन्हें बागी बनने के लिए बाध्य कर दिया। इस तरह कामागाटा मारू काण्ड , भाई भगवान सिंह की गिरफ्तारी , प्रवासी भारतीयों के प्रति वैदेशिक विद्वेष , अपमान एवं सौतेले व्यवहार ने प्रवासी भारतीयों की संघर्षी सोच का शिलान्यास किया एवं गदर दल की पूर्व पीठिका बनी। सोहन सिंह भकना गदर दल के पहले अध्यक्ष थे , हिन्दी एसोसियेशन ही आगे चलकर गदर दल के रूप में विख्यात हुआ। 2.

---

1. प्रीतम सिंह पंछी , गदर की गूंज और कामागाटामारू का रोमांच , नई दिल्ली , राजधानी ग्रंथागार , 1985 , पृ0 सं0 – 84।

2. पं0 बनारसी दास चतुर्वेदी (प्र0 संपादक) पूर्व उल्लिखित , पृ0 सं0 – 36।

गदर दल की स्थापना के बाद उसमें प्रवेश पाने वाले सदस्यों की संख्या बढ़कर दस हजार तक हो गयी थी। गदर दल के उदे्श्य , नियम और उपनियम थे। उसका आदर्श था – स्वतंत्रता तथा समानता।

भाई सोहन सिंह , करतार सिंह , पं0 जगतराम , पं0 परमानंद , सरदार पृथ्वी सिंह एवं अन्य गदरवादियों ने लाला हरदयाल से मिलकर कैलीफोर्निया में 'युगान्तर' आश्रम या कार्यालय की स्थापना की , वहीं पर एक प्रेस खोला। लाला हरदयाल के कारण वह युगान्तर आश्रम बहुत विश्रुत हुआ। गदर का कार्यालय सानफ्रांसिस्कों में रखा गया , क्योंकि लाला हरदयाल वहीं पर रहते थे। कैलीफोर्निया में भारतीय बहुतायत में थे। लाला हरदयाल की देख–रेख में ही गदर पत्र का प्रकाशन 01 नवम्बर 1913 से प्रारम्भ हुआ। वे ही गदर पत्र के जन्मदाता थे। करतार सिंह सराबा एक तरूण वीर था , उसका गदर पत्र के प्रकाशन में केन्द्रीय योगदान था। उसे अमरीका में अध्ययन के लिए घर से जो दो हजार डालर की राशि मिली थी , उसने वह धनराशि लाला हरदयाल को दे दी ताकि पत्र – प्रकाशन में असुविधा न हो। 1.

गदर का पहला अंक साइक्लोस्टाइल मशीन पर उर्दू भाषा में प्रकाशित हुआ। 1914 से वह पंजाबी भाषा में भी छपने लगा। सान फ्रांसिस्को में गदर प्रेस स्थापित हुआ था। लाला हरदयाल गदर के पहले अंक के संपादक थे। दिसम्बर 1913 से रामचन्द्र भी गदर पत्र में कार्य करने लगे। गदर के प्रथम अंक से लेकर मार्च 1914 तक लाला हरदयाल पत्र का सारा दायित्व निभाते रहे। लाला जी के बाद गदर पत्र में सर्वाधिक सहयोग रामचन्द्र पेशावरी का रहा। उन्हें ' इण्डिया ' तथा ' आकाश ' पत्र के संपादन का अनुभव था।

---

1. प्रीतम सिंह पंछी , गदर की गूंज और कामागाटामारू का रोमांच , नई दिल्ली , राजधानी ग्रंथागार , 1985 , पृ0 सं0 – 68।

' गदर ' एक साप्ताहिक पत्र था। इस पत्र के हजारों पाठक थे , यह चार भाषाओं में छपता था। यह निःशुल्क वितरित होता था , गदर को रोकने की ब्रिटिश सरकार ने बहुत कोशिश की किन्तु भारत के अतिरिक्त शेष स्थानों पर विफल रही। गदर पत्र ने भारतीय जन मानस को उद्वेलित किया। सरदार केशर सिंह ने अपनी सारी सम्पत्ति गदर पत्र को भेंट कर दी थी। गदर पत्र के अलावा गद दल भी आये दिन सभायें आयोजित करता था। 10 मई 1914 को गदरपार्टी ने सानफ्रांससिस्को में एक सभा आयोजित की , जिसमें पं0 परमानंद ने उपस्थित भारी भीड़ के सामने ऐतिहासिक भाषण दिया। उनका उद्रबोधन लोगों के अंदर घर कर गया। गदर पत्र का मूल मंत्र था – गोरों को भारत से भगाना। 1.

पं0 परमानंद लाला हरदयाल के विश्वस्त साथियों में से एक थे। उन्होंने पं0 परमानंद के सहयोग से आठ हजार स्वयं सेवकों को प्रशिक्षित किया। , हथियारों को भी पर्याप्त मात्रा में जुटा लिया था। पं0 परमानंद शस्त्र लेने जर्मनी गए थे। उन्होंने वहाँ से एक लाख राइफलें लेकर उन्हें सुमित्रा द्वीप की राजधानी में मौजूद क्रांतिकारियों को भेंज दी थी। गदर दल ने भारतीय क्रांतिकारी दलों की सहायता से भारतीय सैन्य छावनियों में गदर करने की एक व्यापक योजना बनायी थी। उन दिनों भारत में कई क्रांतिकारी दल कार्य कर रहे थे , जिनमें से वीर सावरकर का अभिनव भारत तथा रासबिहारी बोस की ' अनुशीलन समिति ' प्रमुख थे। पं0 परमानंद ने गदर समर के साफल्य के लिए स्वयं को व्यवहार परक बनने की योजना बनायी थी। उन्होंने जापान तथा जर्मनी के सेना नायकों से सम्पर्क किया था। वे भारत में गदर के क्रियान्वयन के लिए भारत रवाना हुए।

---

1. पं0 बनारसीदास चतुर्वेदी (प्र0 संपादक) पं0 परमानंद का अभिनन्दन ग्रंथ रा0 जी0 आर0 वी0 इण्टर कालेज , 1969 , पृ0 सं0 – 38 ।

जहाँ पर उन्होंने भाई निदान सिंह के साथ सभी जिलों का दौरा किया था। सराबा के बंगाल में असफल हो जाने पर वे बंगाल भी गये थे। पं0 परमानंद ने गदर दल की बैठक की। अमृतसर की गुलाब सिंह धर्मशाला में गदर दल की एक बैठक हुई , जिसमें शीर्ष गदरी नेता शामिल हुए। इस बैठक में प्रमुख गदरी भाईयों को अलग – अलग सैन्य छावनियों का दायित्व सौंपा गया था। पं0 परमानंद को इलाहाबाद , झांसी तथा कानपुर की छावनियाँ मिली थी। गदर दल की योजना थी कि 21 फरवरी 1915 को सारे देश की फौजी छावनियों में क्रांति का निनाद किया जाय और फौजियों के साथ मिलकर गोरी – सत्ता को विनष्ट कर दिया जाय। रावलपिंडी जो पश्चिमी हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी फौजी छावनी थी , पं0 परमानंद वहाँ पर भी गए। हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा आर्सनल रावलपिंडी में था। पूना दूसरी बड़ी सैन्य छावनी थी। पं0 परमानंद देश की कई प्रमुख छावनियों में सफलता पूर्वक भ्रमण करके अपने निर्धारित स्थान में वापस लौट आये। 1.

सारे देश की छावनियों में गदरीवीर घुसे हुए थे। छब्बीस हजार फौज साथ देने को तैयार थी , अमरीका तथा अन्य देशों से वापस आये गदरी शूर अपने को आयुधी – अनुष्ठान में होम कर देने को तैयार थे। 15 फरवरी 1915 को गदर दल की बैठक में सभी गदरी वीरों को अपने – अपने निर्धारित स्थानों में 18 फरवरी को पहुँच जाने के निर्देश दिए गये और यह भी कहा गया 19 फरवरी को सारे देश के आर्सनलों को अपने कब्जे में कर लिया जाय किन्तु देश का दुर्भाग्य था कि कृपाल सिंह तथा अमर सिंह नामक दो भितर घातियों के कारण यह वैशिष्ट गदर–योजना सफल न हो सकी।

---

1. पं0 बनारसी दास चतुर्वेदी (प्र0 संपादक) परमानंद का अभिनन्दन ग्रंथ , राठ , जी0आर0वी0 इण्टर कालेज , 1969 , पृ0 सं0 – 49 ।

सिंगापुर - विद्रोह और पं० परमानंद

सिंगापुर 54 छोटे द्वीपों से सश्लिष्ट होकर बना है। पं0 परमानंद का सिंगापुर में दो बार प्रवास रहा। 1913 में वह विदेश भ्रमण पर निकले थे तो उनका जलपोत पिनांग होते हुए तीसरे दिन सिंगापुर पहुँचा था।

परमानंद को सिंगापुर के प्रथम – प्रवास में जालौन निवासी मंगल सिंह के पाल्यों के माध्यम से वहाँ पर गीता पर प्रवचन करने को मिला था। उनके सारगर्भित एवं मर्मस्पर्शी भाषण से लोग प्रभावित हो गये थे। भारत में गदर – योजना के कर्यान्वयन को लेकर जब बहुत से प्रवासी भारतीय देश के लिए रवाना हुए तो पं0 परमानंद ने स्वदेश की ओर प्रस्थान किया। उनका कोरिया जहाज मनीला होता हुआ सिंगापुर पहुँचा। वे सिंगापुर पहुँच कर अपने पुराने मित्रों से मिले , उन्होंने ' गदर की गूंज ' जैसी कुछ और महत्वपूर्ण पुस्तके तथा गदर अखबार अपने दोस्तों में बांटी। 1.

सिंगापुर सिटी में एक सभा का आयोजन किया गया , जिसमें कुछ अधिकारी तथा सैनिक भी थे। पंडित जी का उनके सिंगापुर के प्रथम प्रवास में गीता पर एक प्रभावी प्रवचन हो चुका था , जिसके कारण उनसे लोग वहाँ पूर्व परिचित थे। पं0 परमानंद ने प्रथम प्रवास में गीता पर तीन आख्यान दिए थे। उस सभा में परमानंद के तीन सौ मित्र , कुछ दूसरे यात्री तथा दो सौ के लगभग फौजी सिपाही व देशी अफसर थे। 2.

---

1. पं0 बनारसी दास चतुर्वेदी (प्र0 संपादक) पं0 परमानंद का अभिनन्दन ग्रंथ , राठ , जी0आर0वी0 इण्टर कालेज , 1969 , पृ0 सं0 – 38।
2. प्रीतम सिंह पंछी , गदर की गूंज और कामगाटामारू जहाज का रोमांच , नई दिल्ली , राजधानी ग्रंथागार , 1985 , पृ0 सं0 – 169।

पं0 परमानंद समझते थे कि फौज के सामने भाषण करने का अर्थ है फाँसी या गोली खाना। पं0 परमानंद के भाषण ने सिंगापुर को रक्त रंजित कर दिया। सिंगापुर में दो माह इक्कीस दिनों के लिए गोरी सत्ता को उखाड़ कर फेंक दिया गया , वहाँ भारतीय ध्वज फहराया गया। पं0 परमानंद के भाषण से फौजियों में विद्रोहाग्नि भड़क उठी थी। गदर के समय बंदरगाह में केवल एक छोटा जंगी जहाज था। 15 फरवरी को सिंगापुर के कमाण्डर जनरल डी0 रीडयूड द्वारा जहाज में चढ़ने से पहले देशी पल्टनों के निरीक्षण के समय विद्रोह हो गया।

विद्रोही तीन टोलियों में बट गये , पहली टोली जर्मन नजर बंदियों के शिविर में तैनात सुरक्षा कर्मियों को अपने अधीन करने गयी, दूसरी टोली कर्नल के घर आक्रमण करने एवं तीसरी टोली सिंगापुर आने वाली मदद को रोकने गयी , कुछ अन्य टोलियाँ यूरोपियनों को मारने निकाली। मेजर जनरल रीडयूड मोटर पर सवार होकर सिंगापुर की ओर गया , ले0 माण्ट गुमरी मारा गया , विद्रोहियों ने शिविर पर धावा बोल दिया , जिसमें तीन अधिकारी , सात छोटे अधिकारी तथा कैंप कपाण्डर मारा गया , एक जर्मन कैदी तथा जौहर रियासत का एक फौजी मारा गया। 1.

विद्राहियों ने जर्मन कैदियों से अपने साथ आने को कहा किन्तु वे विद्रोहियों के साथ नहीं हुए। विद्रोही निराश होकर लौट आये , दूसरी टोली कर्नल मार्टिन के यहाँ आक्रमण करने में सफल न हो सकी , तीसरी टोली ने सड़क पर मिलने वाले यूरोपियन को मार दिया। सिंगापुर विद्रोह में 08 यूरोपियन अफसर , 01 महिला , 09 फौजी सिपाही एवं 16 नागरिक मारे गये थे। २.

---

1. प्रीतम सिंह पंछी , गदर की गूंज और कामागाटामारू जहाज रोमांच , नई दिल्ली , राजधानी ग्रंथागार , 1985 , पृ0 सं0 – 141।

2. वही , पृ0 सं0 – 141।

विद्रोह का दमन

सिंगापुर विद्रोह को एक नियोजन तथा एक नायक के अभाव एवं शक्तिशाली गोरों सेना के समक्ष दमित होना पड़ा। जनरल रीडयूड एवं कर्नल मार्टिन ने चिन्तन–मनन के बाद एक जापानी तथा फ्रांसीसी जंगी जहाज बुलाया , उनके आह्वान पर जौहर सुल्तान भी 150 सैनिको के साथ आ धमका , बहुत से और यूरोपियन आ गये। दूसरे दिन एडमिरल हुग्यू अट जंगी जहाज में 170 सैनिक , 76 जापानी एवं मशीन गनों के साथ आ गया।

इसी बीच गश्ती दलों ने विद्रोहियों पर अधिकार करना शुरू कर दिया , विद्रोही गिरफ्तार कर लिए गये। इस गदर में मृत सैनिकों की संख्या का कुछ पता नहीं चला। ब्रिटिश सरकार ने कोर्ट मार्शल में 41 फौजियों को सजाए मौत तथा 125 सैनिको को अन्य सजाए दीं।

प्रथम लाहौर षडयंत्र केस और पं० परमानंद

भारतीय स्वातन्त्र्य के सशस्त्र समर में 21 फरवरी 1915 की तिथि एक निर्णायक तारीख सिद्ध होती क्योंकि गदरी वीरों ने विदेशी धरती में स्वातन्त्र्य संघर्ष की रणनीति बनाकर उसे देश में प्रभावी रूप देने का लौह उपक्रम किया था , वह वस्तुतः प्रवासी पुरोधत्व का जीवन्त उदाहरण था , किन्तु भारत में भितरघात की पुरातन परम्परा रही है। भारत जब भी साफल्य के शिखर पर आरूढ़ होने को हुआ है , तब–तब उसका सुखद भविष्य किसी न किसी देशद्रोह की भेंट अवश्य चढ़ गया है। 1.

---

1. विश्वमित्र उपाध्याय , शचीन्द्र नाथ सान्याल और उनका युग , नई दिल्ली , प्रगतिशील जन प्रकाशन , 1983 , पृ0 सं0 – 68।

1915 की गदर योजना के साथ भी ऐसा ही हुआ , जब भितरघाती कृपालसिंह भारत के इस महान मिशन में सबसे बड़ा मानवी अवरोध बना। जेलदार बेलासिंह के माध्यम से कृपाल सिंह पुलिस से मिल गया , उसने 21 फरवरी 1915 की गदर योजना की तिथि तथा तैयारी दोनों की पूलिस को पूरी जानकारी दे दी। कृपालसिंह 15 फरवरी 1915 को लाहौर गया। उसने वहाँ पर मोची दरवाजे वाले घर में करतार सिंह सराबा , निधान सिंह , पं0 परमानंद , पिंगले तथा रामबिहारी बोस सहित अनेक क्रांतिवीरों को देखा। उसने अमृतसर पुलिस को सूचना दे दी। 1.

जहाँ निधान सिंह की संस्तुति पर ही कृपाल सिंह को क्रांतिदल में स्थान दिया गया था , वहीं निधान सिंह को ही उस पर सबसे पहले शक हुआ था। गदरी नेताओं को कृपाल सिंह की मुखबिरी के बारे में पता चलने पर उन्होंने गदर की तिथि 19 फरवरी कर दी। कृपाल सिंह ने पुलिस यह भी सूचित कर दिया था कि 18 फरवरी को मोची वाले घर में क्रांतिकारियों की एक बैठक होगी। इतना ही नहीं एक क्रांतिवीर को , जिसे कृपाल सिंह पर शक नहीं था , उसने उसे गदर की परिवर्तित तिथि 19 फरवरी के बारे में भी जानकारी दे दी थी। इस तरह भेदियों को 19 फरवरी के बारे में भी पता चल गया था। 2.

क्रांतिकारियों को कृपाल की मुखबिरी के बारे में पता चल गया था किन्तु यदि उसे मार देते तो गोरी सरकार का शक और मजबूत हो जाता। कृपाल सिंह भी जानता था कि मुझे खतरा है।

---

1. विश्वमित्र उपाध्याय , शचीन्द्र नाथ सान्याल और उनका युग , नई दिल्ली , प्रगतिशील जन प्रकाशन , 1983 , पृ0 सं0 – 69।

2. प्रीतम सिंह पंछी , गदर की गूंज और कामागाटामारू जहाज का रोमांच , नई दिल्ली , राजधानी ग्रंथागार , 1985 , पृ0 सं0 – 130 ।

उसने पुलिस सी0 आई0 डी0 को गदर की नयी तारीख की भी सूचना दे दी। गदरी वीर उसे जाने से मारनां चाहते थे किन्तु वह पेशाब करने के बहाने छत पर चढ़ गया और पुलिस को इशारे से हालात से अवगत करा दिया। पुलिस ने वहाँ पर छापा मार कर गदरी युवाओं को पकड़ लिया। इस तरह गदरी सैनिकों के केन्द्र को भारी क्षति पहुँची। सरकार के कान खड़े हो गये। गदर – योजना साफल्य प्राप्त न कर सकी।

गदरी नेताओं की उस स्थान पर गिरफ्तारी नहीं हो सकी क्योंकि वे वहाँ पर नहीं थे। प्रमुख गदरी नेताओं ने गदर की जो रूप रेखा बनायी थी , वह सचमुच उनके दिमाग के चातुर्य की प्रतीक थी , योजना यह थी कि अंग्रेजों को मारकर अफसरों को बंगलों में कैद कर लें , अपने अपने यहाँ की सरकारों को अपने आधिपत्य में लेकर गर्वनरों को बंदी बना लें , हर प्रान्त में नवयुवाओं की भर्ती कर चार – पाँच लाख की सेना तैयार कर भारत के समुद्र तट पर रोक लें , देशभक्त राजाओं के साथ मिलकर अमरीकी तर्ज पर प्रजातांत्रिक सरकार की घोषणा करें। 1.

गदरी नेताओं को जर्मनी ने भी प्रशिक्षित कैप्टन देने का आश्वासन दिया था। पं0 परमानंद निधान सिंह के साथ रावलपिड़ी से 18 फरवरी को पेशावर गये , उन्होंने वहाँ पर सुखदेव से भेंट की। पेशावर छावनी की ब्राम्हण सेना को सूबेदार से मिलकर सेना को तार कटर तथा मानचित्र उपलब्ध कराये , सभी लोगों के हाथ में गीता रखकर शपथ दिलायी गयी। ब्राम्हण तथा राजपूत पल्टन का हर फौज गदर के लिए तैयार था।

---

1. पं0 बनारसी दास चतुर्वेदी (प्र0 संपादक) पं0 परमानंद का अभिनन्दन ग्रंथ ,राठ जी0 आर0 वी0 इण्टर कालेज , 1969, पृ0 सं0 – 50।

पं0 परमानंद पेशावर छावनी में जब अपनी कार्य – योजना को कार्यान्वित करने में लगे थे कि उसी बीच एक कर्नल गोरी सेना के साथ वहाँ आ धमका।

कर्नल ने सूबेदार से छावनी में क्रांतिकारी के उपस्थित होने की पुष्टि करनी चाही। उसने सूबेदार से कहा कि एक क्रांतिकारी ने छावनी में फौजियों को सरकार के विरूद्ध भड़काया है। पं0 परमानंद की खोज होने लगी। वे कुछ फौजी साथियों की मदद से छावनी से बचकर वापस आ गये। वे पेशावर पहुँचकर एक सुन्दर पठान युवती के यहाँ छिप गये। वे युवती की मदद से बचकर 21 फरवरी को लाहौर पहुँचे , पं0 परमानंद को निरंजन दास की दुकान में सज्जन सिंह तथा हरनाम सिंह नामक गदरी भाई मिले। उन्होंने परमानंद से बताया कि फौजें गदर के लिए पूरी तरह से तैयार थी किन्तु गद्दार कृपाल सिंह ने गदर पर पानी फेर दिया। कृपाल सिंह 17 फरवरी को अमृतसर के पुलिस कप्तान तथा पुलिस उपायुक्त को सूचना दे दी थी। 1.

गदर दल के कुछ मित्रों को कृपाल सिंह पर पहले ही शक था। गदरी युवाओं ने उसे खत्म करने की अनुमति पहले ही माँगी थी किन्तु समय को देखते हुए उसे मारने की योजना को साकार नहीं किया जा सका था , हालांकि बाद में कृपाल सिंह गोली का ही शिकार हुआ था। उसके द्वारा पुलिस को सूचना देने पर गदर वीरों की गिरफ्तारियाँ शुरू हो गयी थी।

रासबिहारी को गोरी सरकार गिरफ्तार नहीं कर सकी , पुलिस ने कई गदरी वीरों को कैद कर लिया। पं0 परमानंद को पुलिस ने लाहौर में बंदी बनाया। उस समय उनके पास हिन्दुस्तान का सैनिक नक्शा था।

---

1. पं0 बनारसी दास चतुर्वेदी (प्र0 संपादक) पं0 परमानंद का अभिनन्दन ग्रंथ ,राठ जी0 आर0 वी0 इण्टर कालेज , 1969, पृ0 सं0 – 50।

पुलिस ने अमर सिंह को भी मुखबिर बना लिया , जो गदर दल का एक प्रमुख सदस्य था। उसे हिन्दुस्तान में किए जाने वाले समस्त विद्रोहों तथा योजनाओं की सूचना थी। कृपाल सिंह तथा अमरसिंह दोनों ने गदर योजना के साफल्य की आशा पर तुषारापात कर दिया था , गदरी वीरों की वर्षो की मेहनत पर पानी फिर गया था। दो सौ से अधिक क्रांतिकारियों को बंदी बनाया गया। करतार सिंह सराबा वजीराबाद में गिरफ्तार किए गये , पिंगले को मेरठ तथा पं0 जगतराम को पेशावर में कैद किया गया। 1.

पं0 परमानंद तथा उनके अन्य मित्रो को लाहौर की सेण्ट्रल जेल में 14 नं0 की कोठरियों में बंद कर दिया गया। गोरी सरकार जिन साठ–पैंसठ गदरी वीरों को प्रमुख मानती थी , उन सब को जेल में बंद कर दिया था। जेल में ही 16 नं0 बैरक को न्यायालय बनाया गया था। सेण्ट्रल जेल की सुरक्षा के लिए 500 पुलिस , मद्रासी फौज तथा कुछ अन्य पल्टनों को लगाया गया था। जेल के फाटक पर हर समय 500 पुलिस रहती थी। पुलिस उपायुक्त तथा सेना के कमाण्डर सदैव टेलीफोन द्वारा जेल से जुड़े रहते थे। इस व्यवस्था को बनाने में दो माह लगे। सरकार ने ट्रिब्युनल कोर्ट के लिए आयुक्त नियुक्त कर दिए थे , जिसमें ए0 ए0 अरविन , टी0 पी0 इलिस तथा लाहौर के जाने माने अधिवक्ता पं0 शिवनारायण शर्मा को रखा गया था। 2.

गोरी सरकार ने गदरी सैनिको पर केस चलाने के लिए पंजाब में एक विशेष न्यायालय का गठन किया था।

---

1. रणधीर सिंह , गदर पार्टी के इनकलाबी , दिल्ली , स्वर्ण जयन्ती , कबूनगर , 1998 , पृ0 सं0 – 40।
2. वही , पृ0 सं0 – 41।

गदरी वीरों पर प्रथम लाहौर षडयंत्र केस के नाम से 27 मार्च 1915 को मुकदमा प्रारम्भ हुआ। लाहौर के प्रथम मुकदमे में सरदार सिंह , नंदसिंह , विशुन सिंह , नत्था सिंह और चन्दन सिंह एवं पं0 परमानंद की प्रथम पार्टी के ये देशभक्त फौजी वीर थे। शेष पं0 परमानंद के दल के साथी वीर थे – सरदार सोहन सिंह , केशर सिंह , ज्वाला सिंह , शेर सिंह , धारासिंह , लालसिंह , बलवन्त सिंह , हरनाम सिंह , पृथ्वीसिंह आजाद , विष्णु गणेश पिंगले , करतार सिंह , पं0 जगतराम , जगत सिंह , भाई परमानंद , निधान सिंह और स्वयं पं0 परमानंद। 1.

फौजी छावनियों में कई स्थानों पर कोर्ट मार्शल हुआ , जिसमें सैकड़ों फौजियों को गोली से उड़ा दिया गया। सिंगापुर में दो सौ लोगों का कोर्ट मार्शल हुआ था। 65 अभियुक्तों के लए 09 वकील रखे गये थे , जिनमें एक को छोड़कर शेष को बहुत कम अनुभव था। गदरी अभियुक्तों को तो पहले से ही पता था कि मुकदमा तो केवल एक नाटक है। सरकार की ओर से 400 तथा सफाई की तरफ से 229 गवाह पेश हुए , अभियुक्त केस के सुनवायी काल में अपने आप में मस्त रहे। भारतीय सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत गठित विशेष आयोग ने जब सराबा सहित अन्य क्रांतिकारियों पर गोरी सरकार की सत्ता पलटने का आरोप लगाया , उस पर सराबा ने जो वक्तव्य दिया , वह भारतीय तरूण बलिदानी इतिहास का एक जीवन्त दस्तावेज बन गया। 2.

---

1. पं0 बनारसी दास चतुर्वेदी (प्र0 संपादक) पं0 परमानंद का अभिनन्दन ग्रंथ ,राठ जी0 आर0 वी0 इण्टर कालेज , 1969, पृ0 सं0 – 52।
2. विश्वमित्र उपाध्याय , शचीन्द्र नाथ सान्याल और उनका युग , नई दिल्ली , प्रगतिशील जनप्रकाशन , पृ0 सं0 – 80।

सराबा ने अपने ऐतिहासिक उदगार में कहा कि देश में क्रांति की जो दीपशिखा जल रही है , वह बुझने वाली नहीं हैं , वह ऑग्ल साम्राज्य को भस्मी भूत करके ही बुझेगी। न्यायाधीश सराबा के विचारों में इतना डूब गये कि उन्हें यह याद ही नहीं रहा कि उसने क्या वक्तव्य दिया है।

प्रथम लाहौर षडयंत्र केस की सुनवायी समाप्त होने वाली थी। अभियोगी गदरी वीरों ने एक बैठक कर यह निर्णय लिया कि गदर – क्रांति की सारी जिम्मेदारी केवल सात क्रांतिकारी ले लें , उसी के आधार पर वे अपने बयान जारी करें। इन गदरी योद्धाओं में हर गदरी चाहता था कि सात गदरी वीरों में मेरा नाम भी शामिल हो। क्रांतिकारियों में जिम्मेदारी को लेकर होड़ थी। उन्हें यह पता था कि इन सात गदरी वीरों को सजाये मौत ही मिलेगी। यह सोच गदरी देशभक्तों की उदात्त भावना की जीवन्त रूप थी। 1.

11 सितम्बर 1915 की तिथि भी आखिरकार आ ही गयी। 11 बजे जेल के चारो ओर फौज की कड़ी चौकसी थी। जेल के दरवाजे पर मशीन गन लगी हुई थी। ठीक बारह बजे अदालत की कार्यवाही प्रारम्भ हुई , उसी समय पं0 परमानंद ने करतार सिंह सराबा से गीत गाने की फरमाइश की। सराबा ने गीत गाया –

अभी मैराज का क्या जिक्र यह पहली ही मंजिल है ,
हजारों मंजिले करनी है तय , हमको कठिन पहले । 2.

---

1. रणधीर सिंह , गदर पार्टी के इनकलाबी , दिल्ली , स्वर्ण जयन्ती , कबूनगर , 1998 , पृ0 सं0 – 45।

2. सुविद्या खरे , पं0 परमानंद की जीवन झांकी , इलाहाबाद , पुष्पाजंलि , 23 लेन , पृ0 सं0 – 56 ।

सराबा के गीत के बाद माहौल में एक स्तब्धता सी छा गयी। न्यायाधीश ने उस दिन निर्णय न सुनाकर उसे सुरक्षित कर लिया , अगले दिन उसने आदेश दिया कि पाँच क्रांतिकारियों को हथकड़ी लगाकर न्यायालय में लाया जाय , पाँच – पाँच गदरियों की 13 पार्टी बनी। पं0 परमानंद की पार्टी में पाँच लोग थे – पं0 परमानंद , करतार सिंह , सरदार रुढ़ि सिंह , केहरि सिंह , सेवा सिंह। पं0 परमानंद का चौथा नंबर था। न्यायाधीश ने पं0 परमानंद को देश – विदेश में ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध षड़यत्र करने एवं विभिन्न छावनियों में फौजियों को उकसाने के आरोप में दफा 121 अ, 122 , 121 और 124 अ के अर्न्तगत फाँसी की सजा दी। 1.

पं0 परमानंद अपनी सजा को सुनकर खिलखिलाकर हंस पड़े। वे मृत्यु का नाम सुनते ही विनोदित हो उठे। उनकी हंसी पर सरकारी वकील मि0 पिटमैन ने व्यंग्य करते हुए कहा कि देखिये , ये मौत के साथ मजाक कर रहे हैं (see me lord , they lough at death) , न्यायाधीश केहरि सिंह को आजन्म कारावास की सजा दी , जिस पर उसने कहा कि मुझे आजन्म कारावास नहीं बल्कि फाँसी चाहिए। इस सजा को मैं अपना अपमान समझता हूँ। मुझे मौत का पुरस्कार चाहिए। न्यायाधीश उसके दृढ़ विचार से दंग रह गए।

13 सितम्बर 1915 को गदरियों को सजा सुना दी गयी , जिसमें से 63 में से 26 को फाँसी की सजा सुनायी गयी , 27 को आजन्म कारावास तथा शेष को लम्बी सजाएं सुनायी गयीं। इस निर्णय पर देश में तीखी प्रतिक्रिया हुई , जुलूस निकले तथा सरकार की निंदा की गयी।

---

1. पं0 बनारसी दास चतुर्वेदी (प्र0 संपादक) पं0 परमानंदका अभिनन्दन का ग्रंथ ,रा0 जी0 आर0 वी0 इण्टर कालेज , 1969, पृ0 सं0 – 53।

क्रांतिकारी नेताओं में विष्णू गणेश पिंगले और पं0 जगतराम , भाई परमानंद के प्रथम पंक्ति के शिष्य थे। भाई परमानंद को पं0 परमानंद सबसे अधिक प्यारे थे। पं0 परमानंद जब थोड़ा सा विचलित हुए थे तो भाई परमानंद ने उन्हें पातंजलि दर्शन और भगवान श्रीकृष्ण के योग दर्शन और गीता – उपदेश का स्मरण दिलाया था।

प्रिवी कौंसिल ने अपने निर्णय में 14 नवम्बर 1915 को सात गदरी वीरों को सजाये मौत दी। ये गदरी योद्धा थे – करतार सिंह सराबा , पिंगले , जगत सिंह , हरनाम सिंह , बख्शीश सिंह , सुरेन सिंह तथा सुरेन सिंह द्वितीय। पं0 परमानंद के केस के समय उनके डिंफेस कौंसिल ने पण्डित जी के पक्ष में बहुत ही प्रभावी दलीलें दी थी। डिफेंस वकील ने कहा था कि पं0 परमानंद एक दृढ़ चरित्र के व्यक्ति हैं , उनका छल , कपट एवं प्रलोभन से दूर –दूर तक का सम्बन्ध नहीं है। पं0 परमानंद के पक्ष में रास बिहारी बोस के सन्दर्भ में उनके द्वारा दिया गये एक प्रसंग से न्यायाधीश बहुत प्रभावित भी हुए थे किन्तु उन्होंने पण्डित जी को अन्य गदरियों के साथ फांसी की सजा ही दी थी। 1.

भारत के बलिदानी इतिहास की वह तवारीख भी आ गयी जब राष्ट्र की बलि –वेदी पर सात तारुण्य समिधायें पड़ी , 15 नवम्बर 1915 को ये युवा सप्तशूर देश की दासता के दमन हेतु देहदानी बन गये , जब उन युवा वीरों को फांसी के लिए बैरको से निकाला गया तो उस समय शेष गदरी वीरों ने उनके सम्मान में एक विजयी गीत कहा –

फक्र है भारत को ऐ करतार तू जाता है आज ,
जगत और पिंगले को तू साथ ले जाता है आज।

---

1. रणधीर सिंह , गदर पार्टी के इनकलाबी , दिल्ली , स्वर्ण जयन्ती , कबूनगर , 1998 , पृ0 सं0 – 48।

हम तुम्हारे मिशन को पूरा करेंगे बागियों ,,
कसम हर हिन्दी तुम्हारे खून की खाता है आज।।

15 नवम्बर 1915 को प्रातः छः बजे से नौ बजे के मध्य इन सात वतन परस्तों को फाँसी की सजा दे दी गयी। पं0 परमानंद 1915 में गिरफ्तार होकर लाहौर की सेण्ट्रल जेल से अण्डमान की नारकीय सेलुलर जेल पहुँचे थे। पण्डित जी ने वहाँ पर कुल आठ वर्ष बिताये। अण्डमान जेल में पं0 परमानंद ने कभी भी सिद्धान्तों से समझौता नही किया , जेल में बंदियों के लिए संघर्ष किया। वे गोरी – सत्ता के सामने कभी भी नतमस्तक नहीं हुए। पं0 परमानंद 1922 में सेलुलर जेल से बाहर आये।

पं0 परमानंद पूना तथा साबरमती जेल में रहे। वे सेलुलर जेल सहित देश की बम्बई , मद्रास , पूना , अहमदाबाद , कलकत्ता , बनारस , इलाहाबाद , और लाहौर जेल में रहे। वे कुल 30 वर्षो तक जेल में रहे। पं0 परमानंद का 1942 के लोकयुद्ध या भारत छोड़ो आन्दोलन में प्रभावी सहभाग रहा। उन्हें भारत छोड़ो आन्दोलन के अर्न्तगत गिरफ्तार कर पहले बनारस जेल में रखा गया , फिर उनको सुलतानपुर जेल भेज दिया गया , जहाँ पर वे 1946 तक रहे। पं0 परमानंद ने प्रजामण्डल आन्दोलन में भी अग्रणी भूमिका निभायी। 1.

पं0 परमानंद का जब भी सिकरौधा (जनपद हमीरपुर) आगमन होता , वे नवयुवाओं में राष्ट्रीय भावनाओं का संचार करते। दीवान शत्रुघ्न सिंह का पं0 परमानंद से अभिन्न सम्बन्ध था। जनपद हमीरपुर में क्रांति के सूत्र धार पं0 परमानंद ही थे ।

---

1. रविशंकर श्रीवास्तव , महान क्रांतिकारी पं0 परमानंद , एक ऐतिहासिक अध्ययन , छतरपुर , महाराजा कालेज , 1989 , पृ0 सं0 – 94

स्वाधीनता - संघर्ष और दीवान शत्रुघ्न सिंह

हम्मीरी धरा शौर्यशालिनी स्थिरा है , यहाँ पर एक नहीं कई क्रांतिधर्मी हुए है , जिन्होंने यहाँ के सांस्कृतिक इतिहास में अपने आयुधी –अवदान को अंकित किया है , यहाँ के स्वातन्त्र्य शूरों मे एक दीवान शत्रुघ्न सिंह हुए हैं , जो 16 वर्ष की आयु से स्वातन्त्र्य – समर में कुद पड़े थे।

दीवान शत्रुघ्न सिंह : एक परिचय

शत्रुघ्न सिंह एक नाम नहीं अपितु वह शब्द चित्र है , जिसमें राष्ट्रीयता , रणता , दयालुता , सामाजिकता , समर्थता एक सेवापरायणता को एक साथ देखा जा सकता है।

सुभद्रा का शूर

राठ से उरई मार्ग पर लगभग 17–18 किमी0 दूर पर एक लिंक रोड में वेत्रवती के कूल पर मगरौठ ग्राम अवस्थित है। वहीं पर दीवान सुदर्शन सिंह के घर 25 दिसम्बर 1901 को सुभद्रा देवी के कोख ने एक ऐसे पुत्र को जन्म दिया , जिसने आगे चलकर अपने पुरोधत्व के बल पर क्षेत्र एवं प्रान्त में ही नहीं अपितु देश में बुन्देलखण्ड का नाम रोशन सिंह किया था , वह और कोई नहीं दीवान शत्रुघ्न सिंह ही थे। 1.

---

1. पं0 बनारसी दास चतुर्वेदी (प्र0 संपादक) पं0 परमानंद का अभिनन्दन ग्रंथ ,राठ जी0 आर0 वी0 इण्टर कालेज , 1969, पृ0 सं0 – 10।

सारस्वत के क्षेत्र में

सुदर्शन सिंह की 15–16 गांवों में जमीदारी थी। शत्रुघ्न सिंह तीन या चार वर्ष के रहे होंगे , तभी इन्हें पितृ शोक के रूप में पहला – शैशवाघात लगा। इनके पिता का निधन हो गया , उसके बाद मलहेटा निवासी गुरू बख्श सिंह , जो इन्हीं के वंशज थे , ने पूरी ईमानदारी के साथ स्टेट का दायित्व संभाला। शत्रुघ्न सिंह का मगरौठ में ही पट्टी पूजन प्रारम्भ हुआ। मौलवी मुनौवर खाँ ने शत्रुघ्न सिंह कों उर्दू का ज्ञान प्रदान किया। उन्होंने राठ के एक अंग्रेजी स्कूल में छठी कक्षा तक अध्ययन किया , उस समय तीसरी कक्षा से अंग्रेजी की शिक्षा प्रदान की जाती थी।

विराट नगरी में अध्ययन के बाद शत्रुघ्न सिंह उरई के सरकारी हाई स्कूल में पढ़ने लगे , उन्हें वहाँ पर पाँचवीं कक्षा में प्रवेश दिया गया। वे वहाँ पर दो तक शिक्षा ग्रहण करते रहे।

दाम्पत्य जीवन

जागीरदारी होने तथा रियासतों के मालिक होने के कारण ऑग्ल काल से ही इनके परिवार में दीवान शब्द उपाधि के रूप में संश्लिष्ट हो गया था। इसलिए इनके नाम के साथ भी दीवान शब्द पैतृक परम्परा के आधार पर जुड़ गया। दीवान शत्रुघ्न सिंह जब राठ में पढ़ रहे थे , उन्हें उस बाल–काल में ही वैवाहिक बन्धनों से जकड़ दिया गया था। 1.

---

1. प्रमुख क्रांतिकारी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

उस समय उनकी उम्र 13 वर्ष थी , उनका विवाह फतेहपुर निवासी कुँ0 शिवराज सिंह की पुत्री कौशिल्या देवी (उपनाम कोंसी तथा रानी राजेन्द्र कुमारी) के साथ हुआ था , बाल विवाह के बाद उनका गौना हुआ था , उस समय दीवान शत्रुघ्न सिंह की उम्र 16 वर्ष थी।

पं० परमानंद का मगरौठ में ठहराव

पं0 परमानंद जब भी बाहर से बाते , वे अधिकतर मगरौठ में ही ठहरते थे , इस कारण दीवान साहब को पं0 परमानंद को सर्वाधिक सानिध्य प्राप्त हुआ। पण्डित जी ने ही दीवान साहब की मनोभूमि में सबसे पहले क्रांतिधर्मी विचारों का बीजा रोपण किया। पण्डित परमानंद ने ही दीवान साहब को सबसे पहले क्रांति से दीक्षित किया। इन्हीं से प्रभावित होकर दीवान साहब क्रांति के क्षेत्र में कूदे। पं0 परमानंद की ही क्रांति – शिक्षा इन्हें मिली थी। 1.

प्रेरणा स्त्रोत

दीवान शत्रुघ्न सिंह की तरुण मनोभूमि में मलेहटा निवासी कुँ0 मनोहर सिंह ने जिन भावों के भवन का शिलान्यास किया था , वही कालान्तर में पं0 परमानंद की राष्ट्रहित युवा – निर्माण शैली को पाकर यथा समय उद्घाटित हुआ। दीवान शत्रुघ्न सिंह जिन विभूतियों की भावनाओं की भट्ठी में तपकर क्रांति–कुंदन बने थे , उनमें से प्रमुख थे – पं0 परमानंद , मलेहटा निवासी कुँ0 मनोहर सिंह , राजकीय हाईस्कूल उरई के अध्यापक पं0 रामाधार मिश्र , राजकीय हाईस्कूल बांदा के अध्यापक पं0 लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री।

---

1. प्रमुख क्रांतिकारी श्रीपति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

मलेहठा निवासी मानोहर सिंह जी आर्य समाजी थे , दीवान साहब उन्हें ' बच्चा जू ' कहकर पुकारते थे , वे दीवान साहब को बचपन में उपदेशित करते थे। पं0 रामाधार मिश्र जी सूफी मतावलम्बी एवं आध्यात्मना पुरुष थे। उन्होंने दीवान शत्रुघ्न सिंह को राष्ट्रकवि मैथिलीशरण की एक प्रमुख कृति भारत – भारती पढ़ने की दी थी। उन्होंने एक ही वर्ष में दीवान साहब के जीवन में परिपक्वता ला दी थी , जो वर्षों के प्रयास से भी संभव नहीं थी।

पं0 रामाधार मिश्र जी की आर्थिक प्रलोभन से दूर रहते थे। वे अर्थानुयायी नहीं थे। वे एक त्यागी गुरू थे। व्यास–पद को त्यागना उनके अर्थिक व्यामोह से परांग्मुखता को सिद्ध करता है। पं0 लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री एक त्यागी पुरुष थे। गांधी – आह्वान पर उन्होंने अपनी जीविकोवृत्ति से विरत हो गये थे। वे कांग्रेस में भर्ती होकर राष्ट्रसेवा के कार्य में लग गये थे। वे खादी के अनन्य प्रेमी थे। वे खादी की गट्ठर बांदा से लेकर राठ आते थे , उसकी बिक्री के लिए वे दीवान साहब को अपने साथ लेते थे। राठ का गांधी आश्रम आचार्य कृपलानी , विचित्र भाई और रामाधार मिश्र की प्रेरणा का फल था। 1.

क्रांति का अंकुरण

दीवान साहब को क्रांतिधर्मी क्षेत्र में प्रेरित करने वाले पं0 परमानंद ही थे। वे परमानंद से प्रभावित होकर हमीरपुर में क्रांतिकारी दल के सांगठनिक दिशा की ओर अग्रसर हुए। मझगंवा निवासी पं0 हरीदास ने दीवान शत्रुघ्न सिंह को परामर्श दिया कि इस रुचि के युवा जराखर में ही मिलेंगे। उन्होंने श्रीपति सहाय रावत के नाम एक पत्र लिखकर पं0 हरीदास को दिया।

---

1. पं0 बनारसी दास चतुर्वेदी (प्र0 संपादक) पं0 परमानंद का अभिनन्दन का ग्रंथ ,राठ जी0 आर0 वी0 इण्टर कालेज , 1969, पृ0 सं0 – 11 , 12।

उन्होंने पत्र में लिखा था कि मैं जराखर के युवाओं की से मिलना चाहता हूँ। इस पर उन्हें युवाओं की सहमति मिल गयी। जराखर के युवाओं ने उन्हें संदेश भेजा कि दीवान साहब जराखर पधारें तभी कुछ परामर्श हो सकता है।

दीवान साहब का जराखर आगमन

दीवान सहब के खानदानी दादा राव हरपाल सिंह जराखर में रहते थे। उनकी वहाँ पर थोड़ी सी जमींदारी भी थी। वे वहाँ पर खेती करवाते थे। हरपाल सिंह का वहाँ पर निजी मकान भी था , जो डेरा कहलाता था। वे मलेहटा के निवासी थे। दीवान साहब अपने दादा के घर पधारे , वहीं पर रुक गये। जराखर का युवा दल दीवान साहब से मिला , कुछ विचार–विमर्श किया। 1.

क्रांति-दल का गठन और सम्मेलन

दीवान साहब ने जराखर के प्रमुख क्रांतिवीर श्रीपति सहाय रावत से भेंट की। उसके बाद उन्होंने क्रांतिदल का गठन किया। क्रांतिकारी दल का गठन होने के बाद उन्होंने युवा क्रांतिकारियों का एक सम्मेलन या सभा करने का निश्चय किया। उस समय दीवान शत्रुघ्न सिंह स्वयं 16–17 वर्ष के युवा थे। उन्होंने मगरौठ के पं० भागीरथ को जराखर के युवाओं को लेने के लिए भेजा। पं० भागीरथ युवाओं को लेने जराखर गये। उन्हें लेकर वे चांदनी रात में बेतवा के किनारे सघन वन में पहुँचें।

सघन वन में क्रांति - यज्ञ

मगरौठ से जुड़ा वेत्रवती का पूरा क्षेत्र घने जंगलों से आवेष्टित था।

1. श्री पति सहाय रावत , समरगाथा , महोबा , बसंत प्रकाशन , 1995 , पृ० सं० – 24 , 25।

सघन वन में यज्ञवेदी बनायी गयी। उस वेदी के पास मौजूद हथियारों को भी रखा गया। वेदी के निकट जिस युवा को बुलाया जाता था , उसके चेहरे पर काले वस्त्र का परदा डाल दिया जाता था ताकि कोई किसी को पहचान न सके। यज्ञ वेदी में युवा क्रांतिवीरों ने आहुतियाँ डालीं और मातृ भूमि की रक्षा का वचन दिया। उसके बाद श्रीपति सहाय रावत के परामर्श पर सभी युवाओं ने अपने चेहरों से परदा हटाया और एक दूसरे का परिचय प्राप्त कर आपसे में मिले।

इन वीरों की आदर्श कृति बंकिम बाबू द्वारा प्रणीत राठौर वीर दुर्गा दास नामक कृति थी। उन्होंने अरविन्द घोष , कन्हाई लाल दत्त एवं खुदीराम बोस के मूल्यों को आत्मसात कर अपनी कार्य योजना निश्चित की। दीवान साहब द्वारा गठित क्रांतिकारी दल ने अस्त्र–शस्त्र के संचालन का अभ्यास सत्र प्रारम्भ किया। 1.

अखाड़ों का गठन

युवाओं को प्रशिक्षित करने के लिए दीवान साहब ने अखाड़ों की व्यवस्था करायी ताकि उसमें युवा विभिन्न हथियारों के संचालन का अभ्यास कर सकें। युद्ध कला में विशेषज्ञों को बाहर से जराखर बुलाया जाता था। इन व्यायाम केन्द्रों में युद्ध कला के गुरु सिखाने के लिए कर्नाटक तथा नागपुर के उस्तादों को जराखर बुलाया जाता था। इस कला में सिवैया उस्ताद को अच्छा ज्ञान था , जो अंग्रेजी फौज में रह चुका था। 2.

---

1. प्रमुख क्रांतिकारी श्रीपति सहाय रावत के हस्तलिखित अभिलेख से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

2. उक्त आधार पर ।

अनेक युवा इन व्यायाम केन्द्रों से आकर्षित होकर आने लगे। इन अखाड़ों की प्रसिद्वि उरई , हमीरपुर तथा झांसी तक फैल गयी। अनेक युवा वहाँ पर प्रशिक्षित होने के लिए आने लगे।

परचों का वितरण

इन व्यायाम शालाओं में कुश्ती , लाठी – संचलन एवं अन्य अस्त्रों – शस्त्रों के प्रशिक्षण से सम्बन्धित बहुत से परचे या पम्पलेट छपवाये गये। उन्हें जगह–जगह चस्पा कराया गया। जनता में वितरित करवाया गया। मेलों बाजारों एवं अन्य स्थानों पर भी परचों को बंटवाया गया।

व्यायामशालाओं के प्रचार –प्रसार की जानकारी गोरी सरकार को नहीं थी। क्रांतिकारी संगठन अपनी कार्य योजना में लगा हुआ था , आंग्ल शासन के खिलाफ जनपद में यह दल कार्य कर रहा था।

फांसी और मौत के बीच क्रांति - आराधन

मगरौठ और जराखर में आये दिन क्रांतिदल की बैठक होती थी , कभी–कभार दीवान साहब अकेले ही मगरौठ से चलकर घने जंगल को पारकर जराखर आते थे। कभी–कभी यह कार्य जराखर के युवा लोग करते थे। वे मगरौठ पहुँच जाते थे। क्रांतिकारियों के पास शीटियाँ रहती थीं , जिनके द्वारा एक दूसरे को बुलाया जाता था। उस समय गोरी सत्ता का आतंक था।

इन क्रांतिकारियों को सरकार तथा जनता दोनों से अपने को बचाना पड़ता था। इसलिए कभी – कभी इन क्रांतिपुत्रों को यह लगता था कि फांसी तथा मौत के बीच क्रांति की साधना हो रही है। 1.

---

1. डॉ0 भवानीदीन , प्राचीरे बोलती हैं, सुमेरपुर सन्दर्शिता, 2001 , पृ0सं0 –7।

नाथूराम बया की प्रत्युत्पन्नमति

एक दिन श्रीपति सहाय रावत के घर जराखर में क्रांतिदल की बैठक हो रही थी , रात्रि के लगभग आठ बजे का समय था , दीवान साहब रात्रि को मगरौठ जाना चाहते थे , आठ बजे बैठक खत्म हुई , प्रश्न यह था कि घर से बाहर क्रांतिकारी निकलें कैसे ? इस पर नाथूराम बया ने कहा कि भीड़ को तो मैं अभी हटाता हूँ। वह पेशाब करने के बहाने बाहर गया और थोड़ी देर में चीख उठा। 1.

अरे दौड़ो , बड़ा भारी काला सांप आ रहा है , इतना कहकर बया आगे बढ़ गया , सांप की आवाज सुनकर दरवाजे की सारी भीड़ सांप की ओर दौड़ी , इसी बीच दरवाजा खुला , सभी युवा क्रांतिकारी बया की बुद्धि का कमाल मान गये , वे सब बहुत हँसे और दीवान साहब को मगरौठ के रास्ते तक छोड़ आये। वे रात में ही अकेले तीन – चार घंटे की यात्रा तय कर मगरौठ पहुँचे।

क्रांतिकारी लिपि की खोज

दीवान शत्रुघ्न सिंह ने क्रांतिदल के लिए एक क्रांतिकारी लिपि भी खोज निकाली थी। उस लिपि से दल के सदस्यों को अवगत करा दिया गया था , दल के सभी कार्य यथा – सूचनायें , समाचार इत्यादि उस लिपि में होते थे ताकि किसी अपरिचित व्यक्ति के हाथों यदि वे कागज पड़ भी जायं तो किसी भी प्रकार के अनिष्ट की आशंका नहीं रहती थी , दल की सभी बैठके वन में होती थी , बैठक की सूचना पहले से दी जाती थी किन्तु साथ ही रक्षा के लिए कुछ सशस्त्र युवा कुछ दूरी पर नियुक्त कर दिए जाते थे।

---

1. प्रमुख क्रांतिकारी श्रीपति सहाय रावत के हस्तलिखित अभिलेख से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

ताकि खतरे के समय घंटी बजाकर वे दल को सचेत एवं सुरक्षित कर सकें। दल के प्रथम वार्षिक समारोह के सभी सैनिकों को प्रशिक्षित किया जाने लगा , नये और पुराने शस्त्रों के चलाने का अभ्यास भी कराया गया , जंगली जानवरों के आखेट के प्रशिक्षण से भी उन्हें परिचित कराया गया।

क्रांति दल और विजयदशमी

दीवान शत्रुघ्न सिंह ने सैनिकों के नाम क्रांतिकारी लिपि में एक दस्ती पत्र प्रसारित किया , जिसमें यह कहा गया कि ऐसे विचार सोंचे एवं लिखकर लायें , जिनसे गोरी सरकार को परास्त किया जा सके।

विजय दशमी के दिन श्रीपति सहाय रावत ने एक पुस्तक लिखकर दीवान साहब को दी , जिसमें क्रांति विषयक जानकारी थी। उस कृति में सैन्य संगठन , अस्त्र–शस्त्रों का उल्लेख , सामरिक विवेचन , जिलों पर आधिपत्य , सैन्य छावनियों के विंध्वस , रेलवे पुल , तार एवं टेलीफोन आदि की तोड़ – फोड़ आदि पर विशेष रूप से बल दिया गया था।

बुन्देलखण्ड और अन्य स्थानों के महत्वपूर्ण किले और व्यापारिक महत्व के स्थानों पर काबिज होने के उपायों पर भी प्रकाश डाला गया , बेतवा के तट पर उसी स्थान पर दल के सदस्य एकत्रित होने लगे , सभी लोग समय पर पहुँच गये। दल ने पुनः क्रांतियज्ञ की , यज्ञ–वेदी पर आहुँतियाँ डाली गयीं , प्रतिज्ञायें दोहरायी गयीं , वार्षिक आख्या पड़ी गयी। रावत जी ने अपने द्वारा लिखित पुस्तक पढ़ी। दल ने उस कृति को अपनी स्वीकृति प्रदान की । दीवान साहब ने उसे अपनी फाइल में रख लिया। 1.

---

1. डॉ0 भवानीदीन, प्राचीरें बोलती हैं , सुमेरपुर , सन्दर्शिता , 2001 ,पृ0 सं0–07।

श्री पति सहाय रावत ने उस उत्सव में एक नया प्रस्ताव रखा कि दल का विस्तार किया जाय। उसे राठ तहसील तक सीमित न रखा जाय। प्रान्त तथा राष्ट्र के अन्य नेताओं से सम्पर्क साधा जाय , यह सारा काम दीवान शत्रुघ्न सिंह पर छोड़ दिया गया। दल ने उस प्रस्ताव पर भी अपनी मुहर लगा दी। दीवान साहब को अधिकृत कर दिया गया। 1.

दीवान शत्रुघ्न सिंह ने अन्य क्रांतिकारी दलों से सम्पर्क करने के लिए देश के विभिन्न स्थानों तथा प्रान्तों का भ्रमण किया। दीवान साहब ने गणेश शंकर विद्यार्थी , शचीन्द्र नाथ सान्याल , अर्जुन लाल सेठी एवं बंगाल के अन्य क्रांतिकारियों से भेंट की। इस तरह उनका बंगाल के क्रांतिकारी विद्वानों एवं शक्ति शाली क्रांति–दलों से सम्पर्क हुआ।

दीवान शत्रुघ्न सिंह , गणेश शंकर विद्यार्थी के परामर्श पर भगत सिंह तथा चन्द्रशेखर आजाद से मिलने झांसी गये। अन्तत : मगरौठ क्रांतिकारियों का शरण एवं केन्द्रीय स्थल बन गया था।

दीवान साहब का अहिंसात्मक झुकाव

गवर्नमेण्ट हाई स्कूल बांदा के अध्यापक पं0 लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री का भी दीवान साहब को सानिध्य प्राप्त हुआ। सशस्त्र संघर्ष से दीवान साहब की मनोवृत्ति को परिवर्तित करने का एक प्रथम प्रयास अग्निहोत्री जी का भी था। राष्ट्रीय आन्दोलन में गांधी जी का प्रवेश हो चुका था। उनके असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव कांग्रेस ने स्वीकार कर लिया था। 2.

---

1. डॉ0 भवानीदीन , प्राचीरें बोलती हैं , सुमेरपुर , सन्दर्शिता , 2001 , पृ0 सं0 – 07 ।

2. वहीं , पृ0 सं0 – 07 ।

देश की आँखे गांधी जी पर केन्द्रित हो गयी थी , देश के शिक्षित युवा उनका अनुगमन करने को तैयार थे। बुन्देल धरा के देशभक्त लोग भी गांधी जी की ओर आकर्षित हुए। उनकी ठोस कार्य – योजना प्रभावी थी।

बुन्देल क्षेत्र के प्रभावी नेताओं ने गांधी जी के कार्यक्रम को अनुमोदित कर दिया। यहाँ पर कांग्रेस का सांगठनिक कार्य प्रारम्भ हो गया। झांसी के आत्माराम गोविंद खरे , रघुनाथ विनायक धुलेकर , उरई के पं0 मन्नी लाल पाण्डेय , बेनी माधव तिवारी , कोंच के कृष्ण गोपाल शर्मा , बांदा के कुँवर हरप्रसाद सिंह , महोबा के चुन्नी लाल जैन , शंकर लाल जैन तथा बेनी माधव तिवारी कांग्रेस में शामिल हो गये। दीवान साहब भी गांधी जी के कार्यक्रमों से प्रभावित हुए। उनका कांग्रेस की ओर भी झुकाव हो गया। 1.

क्रांतिदल के विघटन में मतभेद

दीवान शत्रुघ्न सिंह ने मगरौठ में क्रांति–दल की बैठक बुलायी , उसके सामने दीवान साहब ने कांग्रेस में शामिल होने का प्रस्ताव रखा। इस प्रश्न को लेकर क्रांति–दल में मतभिन्नता थी। अन्त में यह तय हुआ कि दल को विघटित न किया जाय , कांग्रेस में शामिल होने में कोई कठिनाई नहीं है , कांग्रेस में रहकर भी गोरी सरकार के विरूद्ध विरोध किया जा सकता है। आवश्यकता पड़ने पर क्रांतिदल की मदद ली जा सकती है , अन्त में यह निश्चित हुआ कि जो कांग्रेस में रूचि रखते हों , वे कांग्रेस में शामिल हो जाय और जो लोग क्रांतिकारी दल में रहना चाहें , वे दल का संचालन करते रहें।

---

1. श्रीपति सहाय रावत , समर गाथा , महोबा , बसंत प्रेस , 1995 , पृ0 सं0 – 26।

क्रांतिदल को बनाये रखने एवं उसके संगठन का दायित्व श्रीपति सहाय रावत को दिया गया।

दीवान साहब का अहिंसात्मक संघर्ष

दीवान शत्रुघ्न सिंह 1916 के बाद 1917 से असहयोग के क्षेत्र में प्रवेश कर चुके थे। उन्होंने सबसे पहले 1917 में सरकार द्वारा चन्दा वसूलने का विरोध किया , जिस पर तहसीलदार ने उनसे कहा कि इसके गम्भीर परिणाम हो सकते हैं , किन्तु दीवान साहब अपने निश्चय पर अटल रहे। उनके इस कदम का राठ के कांग्रेसियों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की। जनता ने उन्हें अपना नेता चुन लिया। दीवान साहब के इस कदम से जिले के अधिकारी सख्त नाराज हो गये।

1921 में पं0 मोतीलाल नेहरू ने कांग्रेस में स्वयंसेवियों के भर्ती होने का आह्वान किया , जिसके परिणाम स्वरूप देश में असंख्य लोगों ने उनके अनुरोध पर कांग्रेस के वालंटियर बनना स्वीकार कर लिया। दीवान साहब भी वालंटियर कोर में भर्ती हो गये। धारा 144 का उल्लंघन करते हुए कांग्रेस के वालंटियर के रूप में भर्ती होने की दीवान साहब की घोषणा पर उनके नाम वारण्ट जारी कर दिया गया। उन्हें साथियों सहित गिरफ्तार कर हमीरपुर जेल में बंद कर दिया गया। यह समाचार पूरे जनपद में विद्युत की तरह फैल गया। उनके मुकदमें के समय हमीरपुर में जन सैलाब उमड़ पड़ा। दीवान साहब की गिरफ्तारी के बाद उनकी पत्नी रानी राजेन्द्र कुमारी ने जिला कांग्रेस के संचालन की अनुमति मांगी। उन्होंने अपने सारे आभूषण उतार कर क्रांतिकारी रावत जी को सौंप दिये ताकि उन्हें बेंचकर प्राप्त धनराशि से कांग्रेस का सांगठनिक कार्य हो सके। 1.

---

1. डॉ0 भवानीदीन , प्राचीरें बोलती हैं , सुमेरपुर , सन्दर्शिता , 2001 , पृ0 सं0 – 07 ।

दीवान साहब ने 1922 से 1945 तक गांधी जी के विभिन्न आन्दोलनों में सक्रिय सहभाग किया। वे प्रान्त की कई जेलों में वर्षों रहे। दीवान साहब ने 1922 में हमीरपुर , लखनऊ की जेल , 1930 में उन्नाव , लखनऊ की सेण्ट्रल जेल , 1932–33 में फतेहगढ़ की सेण्ट्रल जेल , 1940–41 में चुनार सेण्ट्रल जेल तथा 1942–45 में हमीरपुर एवं फतेहगढ़ की सेण्ट्रल जेल में अपना जेल – जीवन बिताया। 1.

आजादी के बाद दीवान साहब के राष्ट्रसेवी अवदान के कारण ही उन्हें बुन्देलखण्ड के गांधी की उपाधि से अलंकृत किया गया। उनको राष्ट्र के चोटी के नेताओं में पं0 नेहरू , पन्त , कृपलानी , शास्त्री एवं विनोबा जैसे नेताओं का सानिध्य प्राप्त था। 1952 में मगरौठ के ग्रामदान में उनका अभीष्ट योगदान रहा। दीवान साहब के प्रयास से कालपी में हिन्दी भवन , राठ में गांधी आश्रम , राठ में ही जी0 आर0 वी0 इण्टर कालेज एवं मगरौठ में पं0 परमानंद इण्टर कालेज की स्थापना हुई।

स्वाधीनता - संघर्ष और श्री पति सहाय रावत

राठ से पश्चिम में 15 किमी0 की दूरी पर बसे जराखर गाँव को यदि वीरों की बस्ती कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसी गाँव के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति खूब चन्द्र रावत के यहाँ 1899 में श्री पति सहाय रावत का जन्म हुआ था।

सांस्कृतिक परिवेश

खूब चन्द्र रावत लोधी राजपूत थे । उनमें कलम और कृपाण दोनों का अद्भुत संगम था।,

---

1. डॉ0 भवानीदीन , प्राचीरें बोलती हैं , सुमेरपुर , सन्दर्शिता , 2001 , पृ0 सं0 – 07 ।

वे एक अच्छे कवि एंव कृतिकार भी थे। उनकी कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित हुयी थीं। वे साहित्य प्रेमी थे। खूबचन्द्र जी के यहाँ ऑग्ल काल में भी पत्र – पत्रिकायें आती थीं। उनके यहाँ केसरी , भारत जीवन , वेकटेंश्वर , शुभचिन्तक , विद्यार्थी , प्रभा और सरस्वती इत्यादि पत्र–पत्रिकायें आती थीं , जो देश के प्रमुख नगरों से प्रकाशित होती थीं।

इसके अतिरिक्त खूब चन्द्र जी के यहाँ साहित्यकारों का समागम होता था , इस तरह शिशु श्रीपति सहाय के मानस में इस सांस्कृतिक परिवेश का प्रभाव अवश्य पड़ा। 1.

शिक्षाकाल

श्रीपति सहाय रावत के गुरु चतुर्भज पाराशर थे। इन्होंने ही श्रीपति सहाय को शिक्षा प्रदान की। पाराशर ही रावत जी के कविता – गुरु थे। पाराशर ने खूब चन्द्र रावत से काव्य – शिक्षा पायी थी। श्रीपति सहाय रावत ने इलाहाबाद से हिन्दी साहित्य सम्मेलन से प्रथमा की परीक्षा उत्तीर्ण की थी । इस तरह रावत के जीवन में पाराशर का अच्छा प्रभाव पड़ा था। 2.

आर्य समाजोत्सव और श्रीपति सहाय रावत

1912 में राठ में आर्य समाज का वार्षिकोत्सव हुआ। उसमें विविध विषयों के विशेयज्ञ आये थे । मुंशीराम आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ता थे।

---

1. पं0 बनारसी दास चतुर्वेदी(प्र0 संपादक) , पं0 परमानंद का अभिनन्दन ग्रंथ , राठ , 1969 , पृ0 सं0 – 184।

2. श्रीपति सहाय रावत , समरगाथा , महोबा , बसंत प्रकाशन , 1995 , पृ0 सं0 – 22

जो बाद में स्वामी श्रद्धानंद के नाम से जाने गये। इन्होंने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी , जिससे पढ़े सुशिक्षित विद्यार्थी विद्यालंकार के नाम से जाने जाते हैं। आर्य समाज का काल पुर्नजागरण का काल था। रावत जी के पिता जी खूबचन्द्र रावत आर्य समाजोत्सव में शामिल होने जराखर से राठ आये , उनके साथ श्रीपति सहाय तथा उनके गुरु चतुर्भज पाराशर भी आये।

पं0 परमानंद के बड़े भाई गोपाल प्रसाद का एक निजी मकान राठ में था। उस मकान में बल्देव प्रसाद तथा रामचरन भी रहते थे। श्रीपति सहाय रावत को राठ में ही पं0 परमानंद एवं उनके बड़े भाईयों के दर्शन हुए । परमानंद का श्रीपति सहाय के प्रति व्यवहार बहुत मृदुल रहा। उन्होंने श्रीपति सहाय को व्यायाम या शारीरिक कसरत की ओर प्रेरित किया। पं0 परमानंद का व्यायाम – विशारद प्रो0 राममूर्ति नयाडु से अच्छा सम्पर्क था। उन्होंने श्रीपति सहाय रावत से कहा कि मैं तुम्हें तुम्हारे गाँव आकर व्यायाम की शिक्षा प्रदान करूँगा। 1.

पं० परमानंद का प्रभाव

आर्य समाज मंदिर में कुछ युवाओं ने पं0 परमानंद के भाषण को सुनने का उत्साह दिखाया , किन्तु पं0 परमानंद के ऑग्ल विरोधी होने के कारण आर्य समाजोत्सव के आयोजक उन्हें भाषण के लिए समय देने में डर रहे थे। एक और प्रमुख आर्य समाजी ओवरसियर पं0 रामप्रसाद ने पं0 परमानंद को भाषण के लिए समय दिलाया। वे भाषण देने मंच पर उपस्थित नहीं हुए , उन्होंने फर्श पर एक दीवाल के पास खड़े होकर भाषण करना शुरू किया। उन्होंने गोरों की काली करतूतों पर प्रकाश डाला। 2.

---

1. प्रमुख क्रांतिकारी श्रीपति सहाय रावत के हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।
2. वही।

• अंग्रेजों ने प्लासी–विजय के बाद भारतीय धरती में अपराध और अपमान का जो नया इतिहास रचा , उसके बारे में पं0 परमानंद खूब मुखरित हुए।

पं० परमानंद का जराखर आगमन

1912 के आर्य समाजोत्सव में ही पं0 परमानंद ने श्री भाई की वैचारिक–वसुधा में बगावती–बीज बो दिया था। वे जराखर पहुँचे। उन्होंने शाम को श्री भाई के घर भोजन करने की बात कही , वे सायंकाल उनके घर गये , जहाँ पर उनके पिताजी भी थे। पं0 परमानंद को देखकर खूबचन्द्र रावत बहुत प्रसन्न हुए। श्री भाई के पिता ने परमानंद जी का स्वागत–सत्कार किया। खूब चन्द्र रावत ने श्री भाई से कहा कि अंदर जाओं और माँ से कहो कि पण्डित जी के लिए भोजन तैयार कर दें। इस पर परमानंद ने कहा कि नहीं , विशेष भोजन की जरूरत नहीं है। मैं वहीं भोजन करूँगा जो आपके यहाँ उपलब्ध है , फलतः परमानंद जी ने खूबचन्द्र के यहाँ चने का हरा साग , नई ज्वार की रोटी एवं धनिया की चटनी का भरपूर स्वाद लिया , एक किसान के घर किसान का भोजन ग्रहण किया। 1.

श्री पति सहाय रावत पर प्रभाव

पं0 परमानंद ने खूबचन्द्र रावत से श्री भाई की मांग की। उन्होंने कहा कि आप अपने पुत्र को दे दीजिए। हम इसे अमरीका में पढ़ायेंगे। आपका बेटा बहुत की होनहार है। श्री भाई के पिता खूबचन्द्र ने कहा कि यह मेरा इकलौता बेटा है।

---

1. श्रीपति सहाय रावत , समर गाथा , महोबा , बसंत प्रकाशन , 1995 , पृ0 सं0 – 22 , 23।

यदि मेरे दो पुत्र होते तो मैं आपकों एक दे देता। इसके बाद पं0 परमानंद श्री भाई के साथ स्कूल चले गये। वहीं पर रूक गये। उन दिनों जराखर में रामलीला हो रही थी। परशुराम – लक्ष्मण संवाद के समय जराखर के गणमान्य नागरिक मौजूद , संवाद बड़ा प्रभावी था , जिस पर परमानंद जी ने टिप्पणी करते हुए कहा कि यदि परशुराम जैसे पुरोधा देश की निःस्वार्थ सेवा में जुट गये जायें या स्वातन्त्र्य समर में कुद पड़े तो मुट्ठी भर अंग्रेज चूहों की तरह भाग खड़े हों। श्री भाई के दिलो – दिमाग में परमानंद जी के विचार उतर गये। कालान्तर में श्री भाई देश के जुझारू स्वातन्त्र्य सेनानी बने। 1.

पं0 परमानंद जराखर में दो दिन रहे और वहाँ के युवा वर्ग की मनोभूमि में क्रांति का बीज बो गये। इसी कारण जराखर क्रांति का केन्द्र बना। जराखर के युवाओं ने व्यायामादि की शिक्षा ग्रहण की। उन्होंने तुलसीदास जी के रामचरित मानस को अपना आदर्श बनाया।

क्रांति-पथ के राही

पं0 परमानंद ने श्रीपति सहाय रावत के ह्रदय–प्रदेश में जो क्रांति – बीज बोया था , वह दीवान शत्रुघ्न सिंह के सानिध्य–सलिल में सिक्त होकर अंकुरित हुआ , जो आगे चलकर पुष्पित–पल्लवित होता हुआ विकसित हुआ। दीवान शत्रुघ्न सिंह से श्री भाई का जराखर में ही साक्षात्कार हुआ था। वहाँ के युवा वर्ग से ही मिलकर दीवान साहब ने जो क्रांति–दल बनाया था , उसमें श्री भाई का विशेष योगदान था।

दीवान साहब के क्रातिधर्मी मित्रों में से श्री भाई एक प्रमुख क्रांतिकारी साथी थे।

---

1. श्रीपति सहाय रावत , समर गाथा , महोबा , बसंत प्रकाशन , 1995 , पृ0 सं0 – 22 , 23।

दीवान साहब द्वारा गठित क्रांति–दल के श्री भाई एक प्रमुख सदस्य थे। श्री भाई की क्रांति– क्षेत्र में विशेष रूचि थी। दीवान साहब ने क्रांति दल का बहुत दिनों तक नेतृत्व किया। उसके बाद दीवान साहब के अहिंसक सेनानी बन जाने के बाद श्री भाई ने ही क्रांति–दल की बागडोर अपने हाथों में ले ली। 1.

श्री पति सहाय रावत ने 1921 से दीवान शत्रुघ्न सिंह के सहयोगी बनकर आन्दोलन में भाग लिया। वे कई बार जेल गये। श्री भाई ने नागपुर झण्डा सत्याग्रह में जनपद का प्रतिनिधित्व किया। वे 1921 से लेकर 1947 के पूर्व तक देश की अनेक जेलों में रहे। जेल में श्री भाई को शास्त्री जी , आर0 बी0 धुलेकर , खरे लाल वर्मा तथा श्री दयाल जी का सामीप्य मिला। 2.

दीवान साहब के गांधीवादी हो जाने पर भी श्री भाई ने आजादी के लिए संघर्ष पर्यन्त उनका साथ निभाया। गहरौली तथा जराखर की राजनीतिक कान्फ्रेंस में श्रीपति सहाय रावत की केन्द्रीय भूमिका रही। आजादी के बाद श्री भाई 10 वर्षों तक विधायक रहे।

दीवान शत्रुघ्न सिंह की पत्नी रानी राजेन्द्रकुमारी ने , जिन्हें बुन्देलखण्ड केसरिणी के नाम से भी जाना जाता है , स्वातन्त्र्य संघर्ष में न केवल दीवान साहब का कदम से कदम मिलाकर साथ दिया अपितु स्वातन्त्र्य आन्दोलन के हर चरण में शानदार भूमिका निभायी। इसके अतिरिक्त हमीरपुर जनपद ने बहुत से जुझारू जवान मातृभूमि को बन्धन मुक्त करने के लिए प्रदान किये। हमीरपुर के गाँवों एवं कस्बों में कुछ ऐसे गाँव व कस्बे रहे हैं , जिन्होंने पुरोधत्व का प्राचुर्य प्रस्तुत किया , वे गाँव थे –

---

1. श्रीपति सहाय रावत के हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

2. वही।

मगरौठ , जराखर , गोहाण्ड , बीरा , इटैलिया बाजा , जमखुरी , धनौरी , राठ , सैदपुर , नौरंगा , खेड़ा सिलाजीत , बण्डवा , इस्लामपुर , पुरैनी , गहरौली , हमीरपुर एवं टेढ़ा , जिन्होंने बहुत से शूर स्वातन्त्र्य संघर्ष के लिए भेजे। 1.

स्वाधीनता संघर्ष और राधेश्याम व श्याम बिहारी मिश्र

हमीरपुर के बिवांर कस्बे के दो ऐसे अग्निधर्मा पुरोधा हुए है , जिन्होंने क्रांतिकारी आन्दोलन में अपनी एक अलग पहचान बनायी है । बिवांर के वे वीर थे– राधेश्याम मिश्र व श्याम बिहारी मिश्र। राधेश्याम मिश्र एक जाने–माने क्रांतिकारी थे। वे पौथिया में अध्यापन कार्य करते थे। इनका दीवान शत्रुघ्न सिंह , मन्नी लाल गुरूदेव एवं बालेन्दु जी से सम्पर्क हुआ। राधेश्याम मिश्र ने 'उन्मन्तमठ' एवं 'हमारा जीवन' नामक दो कृतियाँ रची। राधेश्याम मिश्र का 1925 में चन्द्रशेखर आजाद से परिचय हुआ। ये हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक संघ के सदस्य बन गये।

मिश्र जी ने पौथिया के अध्यापन कार्य को छोड़कर मुरार हाईस्कूल ग्वालियर में पुनः अध्यापन कार्य करने लगे , साथ ही क्रांतिकारी गतिविधियाँ जारी रखी। इनका 1928 में कलकत्ता – कांग्रेस में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस से सम्पर्क हुआ। इन्होंने 1929 में हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की और महोबा आ गये। पुलिस इनको क्रांतिकारी – गतिविधियों में सहभागिता के कारण गिरफ्तार करना चाहती थी। ये फरार हो गये। इनके भाई श्याम बिहारी मिश्र आगरा पहुँचे और वहाँ पर आगरा के सैनिक प्रेस में कार्य करने लगे। इसी बीच मगरौठ में क्रांतिकारियों का एक शिविर लगा , जिसमें चन्द्रशेखर सम्मिलित हुए।

---

1. प्रमुख क्रांतिकारी श्रीपति सहाय रावत के हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

चन्द्रशेखर ने मिश्र को रिवाल्वर का माला पहनाया। श्याम भाई बांदा में 'सत्याग्रही' समाचार पत्र में काम करने लगे , दीवान साहब गिरफ्तार कर लिए गये थे।

इस सन्दर्भ में राधेश्याम मिश्र ने 'सत्याग्रही' तथा 'बुन्देलखण्ड केसरी' में दीवान शत्रुघ्न सिंह कठघरे में नामक शीर्षक से लेख लिखे , जिससे समूचे बुन्देलखण्ड में अभूतपूर्व राजनैतिक चेतना जाग्रत हुयी , तभी से दीवान साहब बुन्देलखण्ड केसरी कहलाने लगे। 1931 एवं बाद में भी पुलिस ने श्याम भाई को गिरफ्तार किया। 1935 में शस्त्रापूर्ति हेतु क्रांतिकारी दल ने इन्दौर तथा धार में डकैती डाली , जिसमें श्याम भाई तथा डॉ0 राजाराम एंव अन्य लोग गिरफ्तार कर लिए गये। राजाराम को सात वर्ष तथा रामगोपाल गुप्त को दो वर्ष का कारावास मिला। जेलकाल में श्याम भाई ने इण्टर की परीक्षा पास की । राधेश्याम मिश्र को धार काण्ड में सात वर्ष की सजा हुई थी। 1.

स्वाधीनता संघर्ष और राजाराम अग्रवाल

राजाराम अग्रवाल का जन्म 1921 ई0 में मुस्करा में हुआ था। इनके पिता का नाम रामदीन था। मथुरा में दयानंद शताब्दी समरोह में इन्होंने सत्यदेव परिब्राजक का भाषण सुना , जो राजाराम अग्रवाल को घर कर गया। इसके अतिरिक्त 'आनंद मठ' बंदी 'जीवन' तथा देवी चौधरानी की कृतियों ने राजाराम को क्रांतिकारी बना दिया। इन्हें दीवान साहब का भी सानिध्य मिला , 1929 में राजाराम ने ग्वालियर से हाईस्कूल की परीक्षा पास की , यहीं पर राजाराम को चन्द्रशेखर आजाद एवं भगवान दास माहेर जैसे क्रांतिवीरों का सामीप्य मिला।

---

1. प्रमुख क्रांतिकारी श्रीपति सहाय रावत के हस्तलिखित अभिलेख के आधार पर।

राधेश्याम मिश्र ने ग्वालियर में क्रांतिकारी दल का गठन किया। राजाराम उस दल के सदस्य बन गये। दल में इन्होंने पूरे मनोयोग से काम किया। 1930 में धार षडयंत्र में गिरफ्तारियाँ प्रारम्भ हुई , जिसमें राजाराम अग्रवाल , राधेश्याम मिश्र रामगोपाल गुप्त एवं मन्नीलाल अग्रवाल भी गिरफ्तार किये गये। इन पर पुलिस ने वायसराय वेलिंगटन की हत्या करने का आरोप लगाया। इस केस में राजाराम अग्रवाल को 10 वर्ष का कारावास एवं पाँच सौ रुपये का आर्थिक दण्ड मिला। 1.

न्यायाधीश ने अपने फैसले में कहा कि राजाराम अग्रवाल ने सारे कार्य का नेतृत्व किया है और इन्हें अपने किये पर पश्चाताप भी नहीं है। 1939 में कांग्रेसी नेताओं के प्रयासों से ये जेल से मुक्त हुए , 1940 में राजाराम अग्रवाल ने डाक्टरी की परीक्षा पास की , सरकारी नौकरी करने लगे किन्तु उ0 प्र0 सरकार ने इन्हें नौकरी से अलग कर दिया। डॉ0 अग्रवाल ने बाद में राठ में निजी चिकित्सालय खोला। ये अन्त तक राष्ट्रसेवी बने रहे।

निष्कर्ष

स्वाधीनता – संघर्ष में हमीरपुर जनपद के सहभाग का आरेख बहुत ऊँचा रहा है। इस जनपद के लगभग 450 स्वातन्त्र्य शूरों ने स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया , जिसमें कम से कम 30–40 महिला सेनानी रही हैं , दीवान शत्रुघ्न सिंह की पत्नी राजी राजेन्द्र कुमारी ने , जिन्हें बुन्देलखण्ड की रानी लक्ष्मीबाई कहा गया , 1930 के कुलपहाड़ में बहिष्कार आन्दोलन का बहुत की वीरता के साथ नेतृत्व किया। उन्हें जनपद का अधिनायक बनाया गया था।

---

1. श्रीपति सहाय रावत , समर गाथा , महोबा , बसंत प्रकाशन , 1995 , पृ0 सं0 – 139 , 140।

पं0 परमानंद ने हमीरपुर , बुन्देल क्षेत्र , प्रान्त एवं राष्ट्र में ही नहीं अपितु विदेशों में भी भारतीय स्वाधीनता – समर के लिए आवश्यक जमीन तैयार की। 1915 के गदर आन्दोलन तथा सिंगापुर विद्रोह में पं0 परमानंद की केन्द्रीय भूमिका थी , जिसे नकारा नहीं जा सकता है। पं0 परमानंद का पुरोधत्व का ग्राफ बहुत ऊँचा था। ये अन्तराष्ट्रीय स्तर के स्वातन्त्र्य शूर थे। पं0 परमानंद ने ही हमीरपुर जनपद में क्रांतिकारी आन्दोलन की आधारशिला रखी थी। पण्डित जी से ही हमीरपुर के युवा क्रांतिकारियों को नव प्रेरणा मिली थी।

पं0 परमानंद ने ही हमीरपुर के दीवान शत्रुघ्न सिंह , श्रीपति सहाय रावत , पं0 राधेश्याम व श्याम बिहारी मिश्र एवं डॉ0 राजाराम अग्रवाल जैसे युवा वीरों को प्रेरित कर पुरोधत्व का अग्निधर्मा पाठ पढ़ाया था। दीवान शत्रुघ्न सिंह ने पं0 परमानंद से ही प्रेरणा प्राप्त कर मगरौठ में क्रांतिदल का गठन किया था , श्री पति सहाय रावत पर भी पण्डित जी का प्रभाव था। वे एक सच्चे क्रांतिकारी थे। हमीरपुर के क्रांतिकारियों का राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य समर में श्रेष्ठ सहभाग रहा , जिसे भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास के पृष्ठ भी स्वीकार करते हैं।

तृतीय अध्याय

स्वाधीनता संघर्ष और महोबा के क्रांतिकारी

स्वाधीनता - संघर्ष और महोबा के क्रांतिकारी

11 फरवरी 1995 के पूर्व महोबा हमीरपुर जनपद का एक अभिन्न अंग था। 1995 से महोबा स्वतंत्र जनपद के रूप में जाना गया । महोबा वीरभूमि के रूप में विश्रुत है । महोबा अपनी बहुआयामी पहचान के कारण आज किसी परिचय का मोहताज नहीं है। इसके पूर्व कि महोबा के क्रांतिकारियों का स्वाधीनता संघर्ष में क्या योगदान रहा था , का उल्लेख किया जाय के पहले महोबा पर एक दृष्टि डालना अधिक प्रासंगिक होगा –

महोबा : एक परिचय

महोबा अपनी स्थापना के पूर्व कई चरणों से होकर गुजरा। पौराणिक मान्यतानुसार महोबा पहले कैकेयपुर तथा पाटनपुर के नाम से जाना गया। यह मध्य काल में गौड़ शासन के आधिपत्य में रहा। हर्षकाल में ब्राम्हण , गहरवार , प्रतिहार तथा चन्देल जैसे राजवंश अस्तित्व में आये। इन राजवंशों में चन्देल काल 1200 वीं सदी तक अस्तित्व में रहा। ये शासक शासन की केन्द्र भूमि अर्थात राजधानी में महोत्सवों का आयोजन करते थे , इसी कारण उन्होंने इसका नाम महोत्सव नगर रखा , अन्य विवेचनों में इसे महोतस तथा महोबक भी कहा ग़या है। 1.

चन्देलकाल में महोबा अपनी अग्निधर्मा पहचान के लिए विख्यात हो गया था, महोबा आज तक अपनी पुरापहचान के कारण प्रसिद्ध है। चंदेल नरेश चन्द्रवर्मन ने इसे 831 ई0 में बसाया था।

---

1. वासुदेव चौरसिया , चन्देल कालीन महोबा और जनपद हमीरपुर के पुरावशेष , महोबा , 1994 , पृ0 सं0 – 01।

चन्देल काल वे तीन सदियों का इतिहास महोबा के कीर्तिकोष की एक अमूल्य धरोहर है। चन्देल शासन का ग्राफ बहुआयामी होने के कारण बहुत ऊँचा रहा है। चन्देल युगीन आल्हा – ऊदल जैसे बनाफर वीरों का जादू आज भी लोककंठ का हार बना हुआ है। उस काल में वीरता का आदर्श प्रमुख था। 1.

वह लोकादर्श इस प्रकार दृष्टव्य था –

मरद बनाये मर जैबे को , खटिया पर के मरै बलाय।
जो मर जैहैं रनखेतनमा , साका चलो अंगारू जाय।।

आल्हा–ऊदल जैसे महान सूरमाओं का शौर्य , उनके अश्वों का आग्नेय आचरण , बारूदी धमाकों की धमक को कौन नहीं जानता , सांग्रामिक , साहित्यिक , सांस्कृतिक एवं सांगीतिक क्षेत्रों में ऐसा कोई क्षेत्र शेष नहीं रहा , जिसमें महोबा ने अपनी पहचान न बनायी हो। 1.

महान बुन्देला पारीछत , उद्भट योद्धा नौने अर्जुन सिंह परमार , महान वीर देशपत बुन्देला , रधुनाथ सिंह , सबदल दौआ , महाराज पारीछत की रानी फत्तमवीर , 20 वीं सदी के भगवानदास बालेन्दु अरजरिया , पं0 बैजनाथ तिवारी , अमर शहीद श्री रामपचौरी एंव पं0 दीन दयाल तिवारी जैसे स्वातन्त्र्य शूर एवं चरखारी रियासत के मानकवि प्रतापशाह , हनुमंत प्रसाद , बिहारीलाल , हरिकेश तथा मोहन लाल मिश्र जैसे स्वनाम धन्य – रचनाधर्मी इसी मेदिनी के अमूल्य मानव – मोती रहे हैं।

---

1. वासुदेव चौरसिया , चन्देल कालीन महोबा और जनपद हमीरपुर के पुरावशेष , महोबा , 1994 , पृ0 सं0 – 06।
1. डॉ0 भवानीदीन , वैभव बहे बेतवा धार , कानपुर साहित्य रत्नालय , 1998 , पृ0 सं0 – 06।

इसके पूर्व कि महोबा जनपद की सत्तावनी भूमिका का उल्लेख किया जाय , यहाँ पर यह बताना अधिक समीचीन होगा कि 1857 के प्रथम स्वातन्त्र्य समर के डेढ़ दशक पूर्व ही 1842 में आँग्ल सत्ता के विरूद्ध बुन्देला – विद्रोह का बिगुल बज चुका था , जिसे स्वातन्त्र्य संघर्ष के इतिहास में बुन्देल क्षेत्र का प्रथम रणाह्वान कहा जा सकता है। बुन्देल क्षेत्र की धरती में जब–जब बाहरी आक्रमण कारियों ने अत्याचारों की आधार शिला रखकर दमन की दीवालें खड़ी करनी चाही , तब–तब यहाँ के हर क्षेत्र से क्षात्रधर्म की लौह–ललकार के लावा के कहर ने बाह्य कुत्सित कार्यों के अरमानों पर पानी फेर दिया। 1.

बुन्देल भूमि में गोरी सत्ता स्थापित होने के बाद जब गोरों के दमन का ग्राफ बढ़ने लगा तो बुढ़वा मंगल के आयोजनों तले जैतपुर के देश प्रेमी नरेश राजा पारीछत ने महोबबी धरती के सूपा गाँव में राजाओं की एक सभा बुलायी , उनसे अंग्रेजों के विरूद्ध एक जुट होकर संग्राम हेतु उनका आह्वान किया।

राजा पारीछत ने दिमान देशपत , चरखारी के सेनापति सबदल दौआ , चिरगाँव के राव बरवत सिंह के साथ मिल कर अंग्रेजों का बिलगाँव , पुरैनी , मुस्करा , अनछोल तथा पनवाड़ी में जमकर मुकाबला किया। पनवाड़ी समर को मोहनलाल मिश्र के शब्द चित्र में इस प्रकार देखा जा सकता है–

धसन न देत धसान की दुधारी धार ,
वारिवर बोर – बोर बैरिन बिदारी की।
अंग – अंग में उमंग जंग की भरी चोप ,,
चाव सी चढ़ी है पनवारी – पनवारी की।।

---

1. डॉ0 भवानीदीन , प्राचीरें बोलती हैं , सुमेरपुर , सन्दर्शिता , 2001 , पृ0 सं0 – 34।

मोहन भनत वीर बाँकुरे बुन्देलन की ,
राखी आन–बान – शान कीरत उजारी की।
वीर पारीछत की रन माह अंग अंगरेजन के ,,
साल हिये में धार कठिन कटारी की।।

महाराज पारीछत के संगियों तथा सैन्यवीरों ने पनवाड़ी में निर्णायक युद्ध किया। महाराज पारीछत के साथियों में राव बरवत सिंह उनके पुत्र तथा अनेक वीरों ने माँ भारती के चरणों में अपने प्राण–प्रसून चढ़ाकर प्रभावी सामरिक साधना की , महाराज पारीछत की जीत हुई। 1.

इस तरह यह स्पष्ट होता है कि महोबबी मेदिनी ने डेढ़ दशक पहले की बुन्देल भूमि में गोरों के विरोध की पूर्व पीठिका तैयार कर ली थी। जब देश दासता के दंश को सहन करने में असमर्थ होने लगा तो उसके अन्दर का पुरोधत्व जाग उठा। उसके बलिदानी वीरों ने 1857 में स्वाधीनता–संघर्ष की आधार शिला रखी , जिसमें सारे देश की संघर्षी सहभागिता सराहनीय रही , जब सारे देश ने आजादी के लिए आयुधी अंगड़ायी ली हो तो भला ऐसे में एक वीर प्रसवा वसुधा (महोबा) कैसे शान्त रहती ? महोबा के सरफरोशों ने भी 1857 के स्वातन्त्र्य समर में अग्रंणी सहयोग प्रदान किया।

१८५७ का स्वातन्त्र्य समर और महोबा

1857 के प्रथम स्वातन्त्र्य समर में महोबबी धरती के जिन शूरों ने प्रभावी भूमिका निभायी , उनमें दिमान देशपत , महाराजा पारीछत की रानी फत्तमवीर , दिमान देशपत का भतीजा रघुनाथ सिंह एवं सबदल दौआ का पुरोधत्व प्रतिभाग उल्लेखनीय रहा।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बुन्देलखण्ड में स्वाधीनता आन्दोलन (1857–1860) भोपाल , शांति प्रकाशन , 1998 , पृ0 सं0 – 2

१८५७ का स्वातन्त्र्य समर और दिमान देशपत

चम्पतराय तथा छत्रसाल के क्षात्रधर्म को नकारा नहीं जा सकता है , जिन्होंने मुगलों का डटकर मुकाबला किया था , इसी वीर वंशज का वीर पुत्र — दिमान देशपत था , जिसे सांस्कृतिक संस्कार विरासत में ही मिले थे। दिमान देशपत का जिस परिवार में जन्म हुआ था। वह परिवार पुरोधत्व का प्रतीक रहा है। महराज छत्रसाल के द्वितीय पुत्र जगतराज के बेटे हरी सिंह के पुत्र थे — अर्जुन सिंह। 1.

अर्जुन सिंह के पाँच पुत्रों में दो ऐसे नाहर पुत्र थे , जिन्होंने गोरी सत्ता के पैरों के नीचे की जमीन खिसका दी थी। ये दोनों पराक्रमी पुत्र थे— दिमान देशपत और नन्हें देशपत। दिमान देशपत की झींझक की जिस जागीरी जमीन में जन्म हुआ था , उस सोधी माटी ने उसे पौरुष की वह बाल घुट्टी पिलायी थी , जिसके ग्रहण करने से उसके तन में तरस्विता का आश्चर्यजनक संचार हुआ था। 2.

बांदा का भू—क्षेत्र जब गोरी सत्ता के आधिपत्य में आया , उस समय शक्तिशाली बुन्देले कुछ कमजोर हो रहे थे। अवसर को भाँपकर अंग्रेजों ने बुन्देलों को केवल झींझन की ही लम्बरदारी दे दी। अर्जुन सिंह जिस समय झींझन तथा टोरिया के लम्बरदार थे , उस समय मोहन चौबे के पूर्वज जमींदार थे , चौबे जमींदार सावक का बेटा था , जो बहुत ही चालाक था। उसने चालबाजी से अर्जुन सिंह से झींझन तथा टोरिया की लम्बरदारी अपने नाम करा ली।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , 1857 का महान क्रांतिकारी , दिमान देशपत बुन्देला , बांदा , बर्ग अकादमी , 2000 , पृ0 सं0 — 12 , 14।
2. वही , पृ0 सं0 — 12 , 14।

अर्जुन सिंह बहुत सरल प्रकृति के पुरुष थे , वे चौबे के झांसे के शिकार हो गये। इतना ही नहीं कुछ समय बाद चौबे का एक चेहरा और सामने आया , जब उसने अर्जुन सिंह से कर वसूलना प्रारम्भ कर दिया , यह बुन्देलों की शान के खिलाफ था , बुन्देला इसे सहन नहीं कर पाये।

अर्जुन सिंह के दो छोटे पुत्र , दिमान देशपत तथा नन्हें दिमान चौबे की चाल को पचा नहीं पाये , उन्होंने उसे खत्म करने का निश्चय कर लिया। एक बार देशपत अपनी ससुराल टटम गया । देशपत ससुराल पत्नी को लेने गये थे। वहाँ के युवाओं ने उस पर कटाक्ष करते हुए कहा कि कहाँ महाराज छत्रसाल और कहाँ देशपत बुन्देला। इन दोनों में कोई बराबरी नहीं है। महाराज छत्रपाल ने बुन्देल भूमि में मुगलों के दाँत खट्टे कर दिए थे। युवाओं के कटाक्षों ने देशपत की कृपाण की कोर को और तेज कर दिया। देशपत ने उनके सामने लौह ललकार रखते हुए यह संकल्प लिया कि जब तक बुन्देल धरा से गोरों को समाप्त नहीं कर दूँगा , तब तक न तो मैं और न मेरी पत्नी टटम आयेगी। 1.

इस तरह दिमान देशपत ने अपने निश्चय को मूर्त रूप देने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी , वे 03 दिसम्बर 1862 तक अनवरत आग्लों से संघर्ष करते रहे। देशपत ने 1847–48 में सबसे पहले चालबाज मोहन चौबे का काम तमाम किया। उसके बाद वह अपने भाई नन्हे दिमान , दिल्लीपत तथा पारीछत एवं अन्य साथियों के साथ जंगल की ओर प्रस्थान किया। इस तरह से यह कहा जा सकता है कि दिमान देशपत एक दशक पूर्व ही सत्तावन के समर में प्रवेश कर चुका था। 2.

---

1. दिमान देशपत के वंशज कृष्ण पाल सिंह , झींझन से किए गये साक्षात्कार के आधार पर।
2. झींझन के मोतीलाल सक्सेना , झींझन से किए गये साक्षात्कार के आधार पर।

इसलिए बुन्देलखण्ड में यदि दिमान देशपत को 1857 के प्रथम स्वातन्त्र्य समर का जनक कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उसने सत्तावनी संघर्ष की नींव रखते हुए अपने गाँव तथा आस–पास के बुन्देलों एवं अन्य देशभक्तों को स्वाधीनता संग्राम में सहभाग के लिए आह्वान किया , जिसका वांछित परिणाम निकला। सारे क्षेत्र के लोग उस पर असीम विश्वास रखते थे।

दिमान देशपत ने पूरे धसान क्षेत्र को अपने मिशन के पहले चरण के रूप में लिया , आस–पास के क्षत्रियों ने भी उत्साहित होकर देशपत को सहयोग किया। दिमान देशपत के वंशज एवं नजदीक के लोगों ने उनका पूरी तरह साथ निभाने का वादा किया। नौगांव की 12 वीं देशी फौज के सिपाहियों का गोरों के खिलाफ भड़काने में देशपत की केन्द्रीय भूमिका थी , देशपत का यह कार्य 1857 की क्रांति के कार्यान्वयन का श्री गणेश था , 1857 के समर की शेरनी रानी लक्ष्मीबाई ने सागर सिंह के माध्यम से देशपत को अपने यहाँ आमंत्रित कर आवश्यक सहायता प्रदान की थी। 1.

नौगांव के पोलिटिकल एजेण्ट मेजर इलियास ने जब पाँच हजार सेना के साथ झांसी पर आक्रमण के लिए झांसी की ओर प्रस्थान किया तो रानी साहिबा ने देशपत को इलियास के आक्रमण को रोकने के लिए भी कहा था , जिसे देशपत ने पूरे मनोयोग से कार्यान्वित किया। देशपत की मार के सामने गोरे अपने प्राण बचाकर भागे। महान योद्धा तात्या टोपे ने जब चरखारी पर धावा बोला तो उस समय भी दिमान देशपत पूरी तैयारी के साथ चरखारी पहुँचे थे।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , 1857 का महान क्रांतिकारी , दिमान देशपत , बांदा , बर्ग अकादमी , 2000 , पृ0 सं0 – 15।
2. भगवान दास श्रीवास्वत , 1857 की क्रांति , नौगांव छावनी से अंग्रेजों का पलायन , शांति प्रकाशन , 2000 , पृ0 सं0 – 13।

दोनों ने मिलकर रियासत के राजा रतन सिंह को पराजित किया था। चरखारी युद्ध में देशपत के साथ छतरपुर रियासत के बहुत से वीर थे , जिन्होंने चरखारी युद्ध में देशपत का खुलकर साथ दिया था। चरखारी संग्राम के बाद देशपत का अभियान निरन्तर अग्रसर रहा।

दिमान देशपत , तात्या टोपे तथा मार्तण्ड राव सूबा के बीच हुए आपसी संवादों तथा पत्राचार से यह विदित होता है कि इन देशभक्त सूरमाओं में देश के प्रति कितना प्यार था। ओरछा के पास तांत्या टोपे तथा देशपत बुन्देला का जनरल ह्यूज के साथ भीषण संग्राम हुआ था , जिसमें तांत्या टोपे को काफी क्षति पहुँची थी , उसके बाद 11 अप्रैल 1858 को झींझन से चार कोस के फासले पर जनरल विटलॉक तथा दिमान देशपत के मध्य भयानक युद्ध हुआ था। 1.

देशपत पूरी सिद्दत के साथ लड़ा किन्तु सत्ता और सैन्य शक्ति के प्राचुर्य के कारण देशपत तथाा उसके साथियों को बहुत हानि उठानी पड़ी। इस संग्राम में लगभग एक सौ क्रांतिकारी शहीद हुए , इसके साथ ही लगभाग 40 सेनानियों को बंदी बना लिया गया। विटलॉक इस हद तक उतर आया कि उसने देशपत के गाँव झींझन को पूरी तरह नष्ट कर दिया। देशपत के पूर्वजों की बनी गढ़ी भी विटलॉक के प्रतिशोध की भेंट चढ़ गयी। झींझन का युद्ध बहुत भीषण रहा किन्तु क्रांतिकारियों ने हार नहीं मानी। देशपत के साथ क्रंतिकारियों की संख्या कम नहीं थी। देशपत तथा उनके साथी झींझन , लटेवरी एंव किशनगढ़ के जंगलों में पनाह लेते थे। 2.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बुन्देलखण्ड में स्वाधीनता आन्दोलन , (1857–1860) , भोपाल , शांति प्रकाशन , 1995 , पृ0 सं0 – 08।
2. दिमान देशपत के वंशज पुष्पराज सिंह झींझन से किए गये साक्षात्कार के आधार पर।

दिमान देशपत दो और स्थानों पर छिपते थे। वे थे राठ और पनवाड़ी के घने जंगल। देशपत का पूरे हमीरपुर में भय था। उसके हमीरपुर के हर गाँव में डाकिया तथा सुरक्षाकर्मी थे। उसके पास समर्पित सेनानी थे। देशपत के पास चार हजार क्रांतिकारी एवं साठ घुड़सवार थे। उसके यहाँ एक रेजीमेण्ट केवल पूर्वी लोगों की थी , गौड़ों की एक डिवीजन भी उसके पास थी , जिसमें तीन हजार सैनिक थे। देशपत की चारो डिवीजनों में लगभग ग्यारह हजार सेनानी थे।

देशपत से गोरे आतंकित थे। उसका सैन्यबल तात्या टोपे का साथ देता था। देशपत बुन्देल क्षेत्र के उत्तरी हिस्से पर अपना अभियान अग्रसर किये था। श्रीनगर , अलीपुर , नौगाँव तथा जैतपुर उसके पश्चिमोत्तर प्रान्त के प्रमुख केन्द्र थे। वह पुजारी और पुरोधा दोनों था। वह छतरपुर के पास एक देवी मंदिर में पूजा – अर्चना करता था। वहाँ के लोग उसका हृदय से स्वागत करते थे। उसकी रक्षा नीति के गोरे भी कायल थे। " मारो और जंगल घाटियों की शरण लो " जैसी छत्रसाली युद्ध नीति का वह नेही था।

देशपत बुन्देला गोरों को पूरी तरह छकाता रहता था। एक बार उसने जनरल विटलॉक को अपने गाँव झींझन में 25 अक्टूबर 1858 को सकते में डाल दिया था। उसने गोरों की अनेक बैलगाड़ियों में आ रही खाद्य सामग्री को लूट लिया था। 1.

गोरे देशपत के पीछे पड़े हुए थे। गोरा कप्तान डिलियर्ड को यह जानकारी मिली कि जैतपुर के निकट बगौरा गाँव में देशपत , छतरसिंह तथा बरवत सिंह शरण लिए हुए हैं।

---

1. झींझन के मोतीलाल सक्सेना से किए गये साक्षात्कार के आधार पर।

वह मद्रास सेना के साथ 05 जनवरी 1859 को कप्तान सावर्स के साथ बगौरा जा पहुँचा , जहाँ पर दोनों ओर से भयानक युद्ध हुआ , जिसमें क्रांतिकारियों को अधिक हानि हुई। इस युद्ध में 30 क्रांतिकारियों को जान गवानी पड़ी तथा अनेक सैनिक घायल हुए। क्रांतिकारियों का बहुत सा सामान अंग्रेजों के हाथ लगा किन्तु वे छतर सिंह , देशपत तथा बरवत सिंह को पकड़ने में असमर्थ रहे।

राजगढ़ जो केन नदी के निकट अवस्थित था , क्रांतिकारियों का एक प्रमुख गढ़ बन चुका था। गढ़ के वीर लोग देशपत का साथ देते थें। कप्तान रिशटन क्रांतिकारियों के सफाये के लिए पन्ना की ओर केन नदी को पार करता हुआ राजगढ़ पहुँचा किन्तु संयोग से वह अपना कुछ सैन्य सामान पन्ना छोड़ आया था , जिसे लेने के लिए उसने एक दल पन्ना भेजा। अंग्रेज दल पर जो सामान ला रहा था , क्रांतिकारियों ने मुराही गाँव के पास हमला बोल दिया , जिसमें 03 गोरे सैनिक मारे गये। क्रांतिकारियों ने उनका सारा सामान लूट लिया।

कप्तान रिशटन को जब इस लूट की जानकारी मिली तो वह एक सैन्य टुकड़ी लेकर मुराही गाँव की ओर चल पड़ा। दो अंग्रेज कप्तान उसका साथ दे रहे थे। उन्होंने योजनाबद्व तरीके से क्रांतिकारियों को घेरने की नीति अपनायी किन्तु पन्ना तथा केन की दुर्गम घाटियाँ तो देशभक्तों के लिए बनी हुयी थीं। उन गोरे कप्तानों ने देशभक्त क्रांतिकारियों का बहुत दूर तक पीछा किया किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। एक प्रमुख क्रांतिकारी मुकुन्द सिंह का साथ देशपत को प्राप्त हो रहा था। 1.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , 1857 का महान क्रांतिकारी , दिमान देशपत , बांदा , बर्ग अकादमी , 2000 , पृ0 सं0 – 29 ।

कप्तान अश्रोप तो मानो हाथ–पैर धोकर मुकुन्द सिंह के पीछे पड़ा था , किन्तु जब वह केन की दुर्जेय घाटियों में पहुँच गया तो गोरे हाथ मलकर रह गये।

गोरे किशनगढ़ के जंगल में देशपत के पीछे पड़े हुए थे क्योंकि वह गोरों की आँख का किरकिरी बना हुआ था। 21 मार्च 1858 को कप्तान टी0 राइट तथा कप्तान जान्सटर्न ने मिलकर इमलियानी गाँव को घेरा , क्रांतिकारियों पर आक्रमण किया। उन्होंने गोरों का डटकर सामना किया किन्तु गोरी तोपों के समक्ष वे ठहर न सके। इस युद्ध में लगभग 50 क्रांतिकारियों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा , अनेक विद्रोही गिरफ्तार कर लिए गये। 1.

मड़ियादो के क्षेत्र घेरी पटोरी गांव में गोरी सेना ने क्रांतिकारियों की घेरा बन्दी की किन्तु वह साफल्य प्राप्त न कर सकी। सिजावरी तथा गोपाल पुरा नामक गाँव पर भी क्रांतिकारियों पर आँग्ल सेना ने आक्रमण किया , जिसमें लगभग 10 क्रांतिकारी मारे गये तथा कई विद्रोही पकड़े गये किन्तु गोरी सेना की वहाँ पर भी पकड़ मजबूत न हो सकी।

उधर बुन्देलखण्ड में देशपत का दबाव निरन्तर बढ़ता जा रहा था। उसके भय का आतंक गोरों के सिर चढ़कर बोल रहा था। ले0 अलेक्जेण्डर , कर्नल प्राइमरोज और कर्नल नाट जैसे कुशल अंग्रेज सैन्य अधिकारी किशन गढ़ के जंगल में देशपत को पकड़ने के लिए पड़ाव डाले हुए थे। 2.

---

1. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ पोलिटिकल प्रोसीडिंग्स 30.15.1859 , भाग – 7 (अनुक्रमांक 1300) के आधार पर।
2. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ पोलिटिकल प्रोसीडिंग्स 30.15.1859 , भाग – 7 (अनुक्रमांक 1270) के आधार पर।

23 अक्टूबर 1859 को किशनगढ़ क्षेत्र के गोपाल पुरा गाँव में कर्नल प्राइमरोज तथा देशपत के मध्य मुकाबला हुआ किन्तु देशपत उनकी पकड़ से बाहर रहा। देशपत किशन गढ़ क्षेत्र में बहुत मजबूत था। बहाँ के हर संभावित स्थान में 50 से लेकर 100 सैनिकों को इसलिए तैनात किया गया था कि अवसर आने पर देशपत मित्रों के साथ भाग सके।

बाजना तथा मड़ियादों का भू–क्षेत्र इतना घना तथा घाटियों से घिरा था कि वहाँ पर कोई भी आसानी से पहुँच नहीं सकता था। क्रांतिकारियों को वहाँ के क्षेत्र की पूरी जानकारी थी , वस्तु स्थिति से भलीभाँति परिचित होने के कारण क्रांतिकारियों को शत्रु पक्ष पर आक्रमण करने में बहुत सुविधा रहती थी। यह स्थान देशपत तथा उसके साथियों के लिए सबसे अधिक महफूज था। इसीलिए उसने इसे अपने मिशन के लिए केन्द्र के रूप में चुना था। 1.

देशपत लुगासी के जागीरदार से नाराज रहता था क्योंकि वह क्रांतिकारियों की सारी सूचना गोरों तक पहुँचा देता था। देशपत ने 21 फरवरी 1859 लुगासी के पाँच गाँवों को लूटकर उन्हें नष्ट कर दिया। गोरी सरकार ने जब छतरपुर सरकार से इस लूटकाण्ड की जानकारी चाही तो इस पर उसने कहा कि लुगासी में कोई लूट नहीं हुई। इसके बावजूद गवर्नर जनरल द्वारा लूटकाण्ड की जाँच–पड़ताल की गयी। 2.

---

1. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ , कन्सलटेशन नं0 178 , दि0 4 नवम्बर 1859 , फारेन पोलिटिकल पत्र क्रंमाक 132 दिनांक 20 नवम्बर 1859 के आधार पर।
2. भगवान दास श्रीवास्तव 1857 का महान क्रांतिकारी दिमान देशपत बुन्देला , बांदा , बर्ग अकादमी , 2000 , पृ0 सं0–46।

गवर्नर जनरल की रिपोर्ट से छतरपुर की सरकार को अवगत कराया गया , जिस पर रानी छतरपुर ने उस मुआवजा की भरपायी कर दी। इस लूट काण्ड से यह स्पष्ट हुआ कि छतरपुर राज्य के क्षत्रिय तथा अधिकारी अप्रत्यक्ष रूप से देशपत का साथ दे रहे थे।

देशपत का भतीजा मार्तण्ड राव तात्या के बैनर के नीचे क्रांति – संचालन कर रहा था , राठ में क्रांतिकारियों का चरखारी रियासत की सेना के साथ मुकाबाला हुआ , चरखारी सैन्य दल का नेतृत्व अर्जुन सिंह कर रहे थे। क्रांतिकारियों के पास मात्र दो छोटी तोंपे थीं और चरखारी सेना के पास तोंपे अधिक थीं। राजा की अधिक तोपों तथा भारी सेना के सामने क्रांतिकारी अधिक समय न टिक सके , क्रांतिकारियों को भारी हानि उठानी पड़ी। इस युद्ध में नायक मार्तण्ड राव तथा लगभग 15 क्रांतिकारी खेत रहे। 1.

बुन्देल क्षेत्र के प्रमुख रणबाँकुरे दिमान देशपत को महाराज छत्रसाल के वंशज लोकपाल सिंह , मुकुन्द सिंह तथा अजय गढ़ के वकील मीर फरजंद अली पूरा सहयोग कर रहे थे , इस कारण देशपत की हौसला आफजायी बनी रही। उसका अभियान कमजोर नहीं पड़ा। जैतपुर से नौगाँव तक पहाड़ियों में देशपत अपने को अधिक सुरक्षित महसूस करता था। 2.

मीरफरजंद अली द्वारा इटबा के रेलकर्मी को मारने के बाद तो मानो गोरे उसके पीछे हाथ–पैर धोकर पड़ गये थे।

---

1. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ , कन्सलटेशन नं0 178 , दि0 4 नवम्बर 1859 ,फारेन पोलिटिकल पत्र क्रंमाक 132 दिनांक 20 नवम्बर 1859 के आधार पर।
2. भगवान दास श्रीवास्तव 1857 का महान क्रांतिकारी दिमान देशपत बुन्देला , बांदा , बर्ग अकादमी , 2000 , पृ0 सं0–46।

देशपत का संघर्षी अभियान किशनगढ़ , बक्सवाहा के अलावा माल क्षेत्र और धमौनी तक फैला हुआ था।

मीरफरजंद अली किशनगढ़ में देशपत को मजबूत करना चाहता था , वह दिमान देशपत पर बहुत अधिक भरोसा करता था। गोरी सरकार ने सियासत की चौपड़ में देशपत के विरूद्ध एक और चाल चली। वह मुकुन्द सिंह को जीवन दान का प्रलोभन देकर उसे देशपत के प्रति द्रोह के लिए उद्वैलित करना चाहती थी किन्तु आँग्ल सरकार को सफलता नहीं मिली। मुकुन्द सिंह ने न तो गोरी सरकार की बात मानी और न ही वह उसके सामने नतमस्तक हुआ। देशपत के पीछे गोरी सरकार ही नहीं लगी हुई थी अपितु गोरी सत्ता के कुछ रियासती वफादार शासक भी उसके पार्श्व में खेल–खेल रहे थे। छतरपुर रियासत की मझली रानी तो देशपत को फूटी आँखों देखना नहीं चाहती थी। मझली रानी न तो देशपत बुन्देला को पकड़ सकी और न ही उसकी कोई चाल कारगर हुई। उस क्षेत्र में देशपत को अनवरत मदद मिल रही थी , यह उसके प्रति जनास्था का जीवन्त रूप था। 1.

देशपत को केवल अंग्रेजों से ही सावधान नहीं रहना पड़ता था अपितु उसे भितरघातियों से भी सचेष्ट रहना होता था , देशपत तथा उसके वफादार वीर मित्र मीर फरजंद अली घेरी तथा पटोरी के नाले में जब आराम कर रहे थे , साथ ही वहाँ पर दिमान लोकपाल सिंह भी अपने सैकड़ो घुड़सवारों बन्दूकधारियों के साथ उपस्थित था तभी देशपत तथा उसके साथियों की सूचना किसी भितरघाती ने आँग्ल सरकार को दे दी , इस द्रोह सूचना पर क्रांतिकारियों को बहुत कुछ झेलना पड़ा।

---

1. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं0 34 , दिनांक 29 अक्टूबर 1858 के आधार पर।

इसी तरह की एक और घटना इन देशभक्तों के साथ घटी। 06 अक्टूबर 1859 को किशनगढ़ क्षेत्र के जंगल की एक पहाड़ी पर क्रांतिवीर अपना डेरा डाले हुए थे , जिनकी उपस्थिति की सूचना एक देशद्रोही ने गोरी सरकार को दे दी , जिस पर देशपत , मुकुन्द सिंह तथा मीर फरजंद अली को अपने सैकड़ों साथियों के साथ अंग्रेजों से मुकाबला करना पड़ा। इस युद्ध में पूर्वी क्षेत्र के बहादुरों ने गोरों पर इतनी भारी फायरिंग की कि गोरी फौज को पीछे हटना पड़ा। इस संग्राम में एक गोरा सैनिक तथा पाँच क्रांतिकारी शहीद हो गए।

अक्टूबर 1859 में देश के अन्य हिस्सों में जब क्रांति धीमी पड़ गयी थी , तब बुन्देल क्षेत्र में सत्तावनी संघर्ष की आग धधक रही थी , जिसके पीछे देशपत के भाई नन्हे दिमान का पुरोधत्व प्रमुख था। इसके साथ ही गोरी सेना का किशनगढ़ के क्षेत्र में दबाव बढ़ता जा रहा था।

अंग्रेजों की देशपत के सफाये की नीति

जनरल विटलॉक और अन्य गोरे सैन्य अधिकारियों का अब एक मात्र अभीष्ट था– देशपत का दमन। 19 अक्टूबर 1959 को जनरल विटलॉक की सेना चरखारी में रूकी हुई थी , उसकी चरखारी से पनवाड़ी पहुँचने की योजना थी , जहाँ पर उसको देशपत को घेरना था। उस काल में देशपत बथा बखत सिंह जैतपुर के पास टोलापातुर में डेरा डाले थे। चरखारी नरेश तो इन देशभक्तों का कट्टर शत्रु था। उसने इन देशप्रेमियों के पीछे कुलपहाड़ में दो हजार फौज तथा तोपों का इंतजाम कर दिया था। 1.

---

1. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ , कन्सलटेशन नं0 112 दिनांक 31 दिसम्बर , 1858 , क्रंमाक 2140 के आधार पर।

एक विवश वीर का भेद भी देशपत को भेद न सका

विजावर रियासत के अधिकारियों ने 24 अक्टूबर 1859 को एक क्रांतिकारी को पकड़ लिया , जिसने मजबूरी में क्रांतिकारियों की कार्य योजना का भेद खोला। उसने देशपत , मुकुन्द सिंह , फिरोजशाह , आदिल मोहम्मद खाँ तथा देशपत के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी दी। इस पर ले0 प्राइम रोज ने देशपत पर आक्रमण की नीति बनायी । उस समय देशपत स्वयं अपने सैन्य बल का नेतृत्व कर रहा था। उस वक्त दिमान देशपत बुन्देला के संग एक हजार क्रांतिकारी तथा दो सौ तिलंगे थे , जो युद्ध कला में प्रवीण थे। 1.

उस समय देशपत के साथ नंदा ढीमर , मुकुन्द सिंह तथा मीरफरजंद अली थे , जो बुन्देला के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चल रह थे। एक अंग्रेज सैन्य प्रमुख अलेक्जेण्डर ने भी देशपत के दमन की योजना बनायी थी , जिसके कार्यान्वयन के लिए उसने किशनगढ़ के किले में अपना डेरा डाला था। उस वक्त किशनगढ़ के क्षेत्र में पाँच सौ क्रांतिवीर थे , जो कुछ पूर्विया थे , जो युद्ध कला में पारंगत थे। यह आँग्ल योजना भी देशपत का कुछ बिगाड़ न पायी।

गोरों की फिक्र

बाँदा नवाब के पलायन तथा बुन्देलभूमि में झांसी की क्रांतिकारिणी रानी लक्ष्मीबाई की शहादत के बाद सत्तावनी क्रांति धीमी तथा शिथिल पड़ गयी थी। जनरल ह्युरोज के सैन्य दल को मध्य भारत से हटा दिया गया था , इसके बाद आँग्ल सरकार का सारा ध्यान देशपत तथा उसके साथियों पर था।

---

1. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ , कन्सलटेशन नं0 91 , दिनांक 22 नवम्बर , 1859 के आधार पर।

उस समय देशपत का मीर फरजंद अली , बखत सिंह , मुकुन्द सिंह राधा गोविंद , बरजोर सिंह तथा दौलत सिंह साथ रहकर सहयोग कर रहे थे। गवर्नर जनरल के एजेण्ट ने जुलाई 1858 में बुन्देलखण्ड के इन क्रांतिकारियों की स्थिति के बारे में अपने एक पत्र के माध्यम से गोरी सरकार को विस्तार से बताया था , उसने उसे कई सुझाव दिए थे , एजेण्ट ने सैन्य प्रबन्धन के सन्दर्भ में भी सूचित किया था , एजेण्ट ने अपने पत्र में सरकार को यह भी बताया था कि दमोह , कोंच , जालौन , मोठ , जगम्मनपुर , उरई , नौगांव , मऊरानीपुर , राठ , पनवाडी तथा जैतपुर में खास तौर पर सैन्य व्यवस्था को प्रभावी रखा जाय तो इन देशभक्त का सफाया किया जा सके। इससे लग रहा था कि गोरों की चिन्ता बढ़ रही है। एजेण्ट ने रानी छतरपुर के खिलाफ भी लिखा था। 1.

देशपत पर तीन तरफा हमला

चिन्तित गोरी सेना ने बुन्देलखण्ड के इस प्रमुख सूरमा पर तीन ओर से हमला करने की कार्य योजना बनायी । पहला हमला चरखारी फौज ने एक हजार बन्दूकधारियों तथा दो तोपों के साथ किया। श्रीनगर किले पर देशपत पर हमला किया गया , जहाँ पर वह साथियों के साथ ठहरा हुआ था। अर्जुन सिंह तथा कमोद सिंह चरखारी सेना का नेतृत्व कर रह थे। यह आमना–सामना भीषण था। क्रांतिवीरों को किले से हटना पड़ा। उन्होंने अपने अगले पड़ाव के लिए राठ का चयन किया , जहाँ पर लगभग तीन हजार क्रांतिकारी थे। देशपत को दूसरा तथा तीसरा आँग्ल–आक्रमण झेलना पड़ा , जिसमें उसे सफलता नहीं मिली। 2.

---

1. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ , कन्सलटेशन नं0 1415 , दिनांक 17 नवम्बर , 1859 के आधार पर।
2. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ , पोलिटिकल प्रोसीडिंग्स दिनांक 13 दिसम्बर , 1858 , पार्ट – 11 , क्रंमाक 2150 के आधार पर।

देशपत का मई 1857 से मई 1858 तक पूरे एक वर्ष झींझन में अधिकार रहा , उसने वहाँ पर अंग्रेजों की एक भी चलने नहीं दी। इसी बीच देशपत ने अपने सैन्य प्रबन्धन में काफी वृद्धि की। देशपत इस बिन्दु पर ध्यान देता था कि वह कहीं पर भी एक स्थान पर पूरे दिन रूकता नहीं था। इसी कारण अंग्रेजों को देशपत के बारे में उसकी अगली रणनीति की जानकारी नहीं हो पाती थी। वह एक दिन तथा रात में अपने ठहरने के कई स्थान बदलता था। वह कहीं पर भी एक स्थान पर अधिक समय तक सोता नहीं था।

देशपत हमीरपुर , राठ , पनवाड़ी , नौगाँव , राजनगर , छतरपुर , गुल्मगंज , विजावर , किशनगढ़ , बक्सवाहा , तथा हीरापुर की सीमाओं तक अपने मिशन का संचालन करता था। वह बहुत ही फुर्तीला एवं सुडौल शरीर वाला था। उसकी स्फुर्ति के गाँव तथा गोरे दोनों कायल थे। देशपत के गाँव झींझन की स्थिति सामरिक दृष्टिकोण से बहुत सशक्त थी। झींझन क्रांतिवीरों के लिए बहुत उपयुक्त स्थान था। झींझन की भौगोलिक स्थिति की जानकारी केवल क्रांतिकारियों को थी , गोरों को नहीं। 1.

गोरों ने यह भी कोशिश की कि रियासत के मालिक या तो विद्रोहियों को पकड़ कर अंग्रेजों को सौंप दे या फिर उन्हें रियासत से बाहर निकाल दें। पश्चिमोत्तर प्रान्त की सरकार के सहायक सचिव ने इस चिन्ता से गोरी सरकार को रूबरू करा दिया था कि यदि देशपत का खात्मा नहीं किया गया तो कालान्तर में स्थिति विकट हो जायेगी। गवर्नर जनरल के एजेण्ट ने अपने पत्र दिनांक 11 सितम्बर 1859 के द्वारा गोरी सरकार को अवगत करा दिया था।

---

1. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ , पोलिटिकल प्रोसीडिंग्स दिनांक 13 दिसम्बर 1858 , पार्ट – 11 , क्रंमाक 03 के आधार पर।

कि क्रांतिकारियों का रियासतों , जागीरों एवं क्षेत्रीय परिवारों पर अच्छा असर है। इसीलिए इन क्षेत्रों में क्रांतिकारी अत्यधिक सक्रिय हैं।

सचिव ने सरकार से यह भी अनुरोध किया कि जनरल विटलॉक द्वारा हटा के उत्तरी भाग में ऐसा सैन्य प्रबन्ध कराया जाय ताकि वहाँ से फरजंद अली और मुकुन्द सिंह हट जांय। सरकार का यह प्रयास था कि प्रमुख विद्रोही एक साथ मिल न सके , अन्यथा बुन्देलखण्ड के दक्षिणी क्षेत्र को बचाना मुश्किल हो जायेगा। देशपत का अभी भी किशनगढ़ एक प्रमुख केन्द्र था। गवर्नर जनरल के एजेण्ट ने लिखा था कि देशपत को पकड़ने के लिए प्रभावी प्रबन्धन की आवश्यकता होगी। उसने विद्रोहियों को पकड़ने के लिए कई सावधानियों का भी अपने पत्र में उल्लेख किया।

किशनगढ़ के जंगल, घाटियों तथा नदी – नाले तो मानो विद्रोहियों की सहायता के लिए सदैव तैयार रहते थी। मुकुन्द सिंह किशनगढ़ के घने जंगल में कुलुआ धोबिया नाला पर अपना पड़ाव डाले हुए था। वह देशपत को सदैव सशक्त करने को उद्दत रहता था। क्रांतिकारी विजावर को भी अपने कार्यों का केन्द्र बनाये रखते थे। गवर्नर जनरल के एजेण्ट की चिन्ता बुन्देलखण्ड व किशनगढ़ के क्षेत्रों को लेकर बढ़ती जा रही थी। गोरी सरकार देशपत को पकड़ने के लिए लगातार प्रयास कर रही थी। गोरी सरकार ने फौजों का जाल बिछाना प्रारम्भ कर दिया था। सरकार की मदद हेतु रियासतों के कुछ राजा तथा जागीरदार आगे आने लगे थे। गोरे अधिकारियों को क्रांतिकारियों के सम्बन्ध में जानकारी तो रहती थी। 1.

---

1. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन 1121 , 30 अक्टूबर 1858 , पत्र संख्या 147 के आधार पर।

किन्तु वे उन पर आक्रमण करके जोखिम उठाना नहीं चाहते थे। गोरी सेना के अधिकारी देशपत को पकड़ने के लिए कई बार प्रयास तो किए किन्तु विफल रहे। ,

विजावर राज्य की फौज तथा आँग्ल सेना ने संयुक्त प्रयास करके भी देशपत तथा मुकुन्द सिंह को पकड़ नहीं पायी। वे लगातार गोरो की पकड़ से बाहर थे।

दिमान देशपत का बलिदान

गोरों ने भारत को बाहुबल से नहीं अपितु भारतीयों की मदद से पराजित किया था। हिन्दुस्तान में भितरघातियों की लम्बी श्रृंखला रही है। बुन्देल क्षेत्र में जब गोरे बुन्देल भूमि के महान देशभक्त एवं वीर शिरोमणि देशपत को नहीं जीत सके तो उन्होंने देशद्रोहियों की सहायता लेनी प्रारम्भ की। उन्होंने भितरघातियों के साथ मिलकर देशपत के विरूद्ध जाल बिछाना प्रारम्भ किया। गोरों ने देशपत के विश्वसनीय साथियों एवं छतरपुर रियासत के राजा जगतराज को प्रलोभन पास में बांधा।

गोरे दिमान देशपत की छत्रसाली समरनीति से बहुत डरे हुए थे। उन्होंने देशपत को पकड़ने के लिए सघन घेराबंदी की योजना बनायी , जिसमें उन्हें रियासतों का सहयोग भी मिल रहा था , चरखारी रियासत के राजा ने देशपत को पकड़ने के एक योजना निर्मित की। उसने पन्ना तथा विजावर से ढाई हजार फौज की मदद मांगी तथा खुद सहयोग का वचन दिया। 1.

1. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ , कन्सलटेशन नं0 190 दिनांक 30 दिसम्बर 1859 के आधार पर।

चरखारी नरेश की योजनानुसार झींझन तथा जैतपुर में देशपत को घेरने के लिए तीन देशी रियासयों की सैन्य शक्ति की आवश्यकता थी , जिस घेराबंदी में देशपत के न बच पाने का नरेश को भरोसा था।

उधर जनरल विटलॉक तो मानो देशपत के पीछे पड़ा हुआ था। विटलॉक ने लुगासी में अप्रैल 1858 को देशपत पर आक्रमण किया , जिसमें 40 विद्रोहियों को अपनी जान गवानी पड़ी , किन्तु देशपत बच गये। इस स्थिति में देशपत ने अपने कार्य क्षेत्र की दिशा बदल दी। गोरों ने देशपत की गिरफ्तारी पर दस हजार के पुरस्कार की घोषणा की थी , पश्चिमोत्तर सरकार ने उस पर एक हजार का इनाम घोषित किया था। 1.

1857 के स्वातन्त्र्य समर का जब भारत में सामाप्य हो रहा था , तब उस समय बुन्देल धरा में बुन्देलवीर देशपत 1857 की क्रांति की ज्योति जलाये हुए था , उसी मध्य महारानी विक्टोरिया ने क्रांतिकारियों के क्षमा की आम घोषणा की , जिसका पूरे भारत में प्रचार–प्रसार कराया गया। एक घोषणा पत्र देशपत के निकट भी प्रेषित कराया गया। देशपत जब श्रीनगर में ठहरा हुआ था , उस समय उसके पास वह घोषणा पहुँची , जिसे उसने चिलम के सुपुर्द खाक कर दिया। जनरल विटलॉक ने आठ – दस व्यक्तियों को घोषणा के प्रचारार्थ कुलपहाड़ भेजा , जिन्हें वहाँ की जनता ने उनका काम तमाम कर दिया। देश में 1857–58 उत्तरार्ध में जब सत्तावन का संघर्ष छीड़ पड़ने लगा था , उस समय देशपत किशनगढ़ के इलाके में घेरी पटौरी को अपना केन्द्र बनाये हुए था।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , 1857 का महान क्रांतिकारी , दिमान देशपत बुन्देला , बांदा , बर्ग अकादमी , 2000 , पृ0 सं0 – 71।

जहाँ पर वह शक्ति को संचित कर गोरों के साथ शठे शाठ्यम समाचरेत् कर रहा था। अंग्रेजों ने उसके दमन की योजना बनायी , जिसमें उसने गवर्नर जनरल के एजेण्ट के द्वारा छतरपुर की रीजेण्ट रानी तथा गर्रोली के जागीरदार से परामर्श कर देशपत के विरूद्ध षड़यंत्र रचा।

कानपुर एवं फतेहपुर से पर्याप्त सेना मंगायी गयी , जैतपुर थाने को मजबुत किया गया , जंगलों को साफ कराया गया , जिससे सेना के आने – जाने में दिक्कत न हो , अंग्रेजों के प्रयास सफल होने लगे , नवम्बर 1859 में बहुत से क्रांतिकारी मारे गये , कुछ कैद कर लिए गये। देशपत के प्रमुख साथियों में जालिम अहीर तथा उमराव खंगार 1860 में पकड़ लिए गये। 1.

भितरघातियों का खूनी खेल

गोरी सरकार दिमान देशपत को खत्म करने के लिए कृत संकल्पित तो थी ही किन्तु उसे देशद्रोहियों के कारनामों ने और भी अधिक मदद प्रदान की। छतरपुर रियासत के दौनी गाँव के मिहीलाल पुरोकित ने माँ भारती के दूध की लाज भी नहीं रखी।

1857 का महान क्रांतिकारी दिमान देशपत जब विश्राम कर रहा था , उस समय मिहीलाल पुरोहित एवं ठा0 विक्रमजीत ने मिलकर दिमान देशपत का काम तमाम कर दिया और भारत को दासता के दाह में डाल दिया , जिस समय उन्होंने देशपत का कत्ल किया। 2.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बुन्देलखण्ड में स्वाधीनता आन्दोलन (1857–1860) भोपाल , शांति प्रकाशन , 1995 , पृ0 सं0 – 19।
2. भगवान दास श्रीवास्तव , 1857 का महान क्रांतिकारी दिमान देशपत बुन्देला , बांदा , बर्ग अकादमी , 2000 , पृ0 सं0 – 73 , 74।

उस समय उनके भाई नन्हें दिमान तथा रघुनाथ सिंह भी दौनी गाँव में थे। दिमान देशपत ने अपने जीवन काल को एक पल के लिए भी बरबाद नहीं किया , वह सदैव मातृभूमि को बन्धन मुक्त करने के लिए ताना–बाना बुनता रहा।

दिमान देशपत 03 दिसम्बर 1863 को भी मातृभूमि के मुक्ति मिशन को धार प्रदान करने के लिए जब चिन्तन कर रहे थे , उसी समय भारत माँ का एक और महान लाल भी देशद्रोह की भेंट चढ़ गया। भितरघातियों ने उसके खून से होली खेल डाली। वह मातृभूमि की मुक्ति – वेदी में अपने को उत्सर्ग कर अमर होता हो गया। उसका देहदान कालान्तर में देहदानियों के लिए देह–बीज हो गया। कुछ समय बाद देश में इतने बलिदानी जन्मे कि गोरे जल्लादों के पास फाँसी के फन्दे भी कम पड़ गये। बुन्देलखण्ड के इस महान शूरमा की शहादत के बाद उनके भाई नन्हें दिमान तथा भतीजे रघुनाथ सिंह ने उनके मिशन – दीप में अपने तरस्विता – तेल को डालकर उसे प्रज्जवलित रखा। वे 1868 तक गोरों की नाक में दम किये रहे। नन्हें दिमान कलुआ अहीर पर बहुत विश्वास करते थे। अंग्रेज नन्हें दिमान से भी डरते थे।

मिहीलाल पुरोहित की दगा के दिमान देशपत शिकार हुए थे , 1867 में उसको उसके किये की सजा मिल गयी , मिहीलाल को देशपत के सगे लोगों ने मौत की नींद सुला दिया। मिहीलाल को मारे जाने में देशपत के भतीजे रघुनाथ सिंह का प्रमुख सहयोग था। 1.

दिमान देशपत के पश्चात् 1857 की क्रांति की बागडोर नन्हे दिमान ने अपने हाथ में ले ली।

---

1. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं0 – 75/80 जुलाई 1868 के आधार पर।

नन्हें दिमान को कलुआ अहीर , नन्हें लोधी , खूब दौआ , गोपाल अहीर और कुन्जल शाह जैसे शूरों का पूरा सहयोग प्राप्त था। इसी सहयोग के बल पर वह 1868 तक गोरी सरकार की आँख की किरकिरी बना रहा। कुन्जलशाह दिमान देशपत की तरह बहादुर एवं बुद्धिमान था। उसके साथ उसके ही चचेरे भाई ने भितरघात किया। कुन्जलशाह गोरों के लिए चुनौती बन चुका था। रघुनाथ सिंह निडर नाहर था। गोरे रघुनाथ सिंह का इतना खौफ मानते थे कि वह एक दिन जब अजनर गाँव के एक सम्मानित व्यक्ति जगन्नाथ के यहाँ जा धमका , उसके यहाँ भोजन भी प्राप्त किया। उसकी इतनी धमक थी कि अंग्रेज इतनी हिम्मत नहीं जुटा सके कि उस पर हमला बोल देते। 1.

रघुनाथ सिंह तथा उसके मित्र महावीर छत्रसाली युद्धनीति में सिद्ध हस्त थे। गोरों ने पूरी ताकत झोंक कर भी इन बहादुरों को पकड़ नहीं सके। रघुनाथ सिंह की संघर्षी सूझ–बूझ उसके समर – सोहागे में सोने का काम करती थी। उसकी सतत सावधानी ने उसे सदैव मुसीबतों से बचाया। गोरों ने जब भी पकड़ने के लिए चालों का जाल बिछाया , तब–तब वह अपने गुप्तचरों के बल पर अपने को सुरक्षित किया और अंग्रेज ठगे से रह गये।

रघुनाथ सिंह का तहसीलदार पर हमला

रघुनाथ सिंह देशपत के बाद स्वातन्त्र्य समर को आगे बढ़ा रहा था किन्तु मऊ के तहसीलदार को वह फूटी आँखों नहीं सुहा रहा था। तहसीलदार उसे अपने चुंगल में फँसाने के लिए कुत्सित चालों की चौपड़ बिछाने लगा। 2.

---

1. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं0 – 118/20 मार्च 1868 के आधार पर।
2. भगवान दास श्रीवास्तव , 1857 का महान क्रांतिकारी दिमान देशपत बुन्देला , बांदा , बर्ग अकादमी , 2000 , पृ0 सं0 – 78, 79।

उसने दौनी गाँव के जमींदार उदयजीत को रघुनाथ सिंह के विरूद्ध षड़यंत्र रचने के लिए तैयार किया , वह रघुनाथ सिंह के खिलाफ जाल बिछाने लगा। उसने कलुआ तेली के द्वारा रघुनाथ सिंह को प्रलोभन – पाश में बाँधने के लिए चुना। कलुआ रघुनाथ सिंह को हर रोज तीन रूपये प्रदान करता था। उधर तहसीलदार दौनी गाँव में जमा हुआ था। उसे तहसीलदार के प्रति कुछ सन्देह हुआ , रघुनाथ सिंह ने उसकी नाक के नीचे 14 जुलाई 1868 को दौनी गाँव को लूट लिया था। तहसीलदार अपने कुछ साथियों के साथ रघुनाथ सिंह से भेंट करने दौनी पहुँचा , उसने रघुनाथ सिंह को तीन रूपये भी दिए। उस समय रघुनाथ सिंह अकेला था और तहसीलदार अपने साथियों के साथ था।

रघुनाथ सिंह तहसीलदार के इरादे को भांप गया। उसने अपने वीर साथियों को अन्दर बुला लिया। उसने तहसीदार पर जोरदार हमला किया , जिसमें तहसीलदार सहित कई मौत के आगोश में समा गये। रघुनाथ सिंह ने उदयजीत पर भी आक्रमण किया किन्तु उसे मरा हुआ समझकर छोड़ दिया था जो घालयावस्था में किसी तरह दौनी गाँव पहुँचा। तहसीलदार के मारे जाने की खबर से आँग्ल सरकार और भी अधिक चिन्तित हो गयी। उसने रघुनाथ सिंह को पकड़ने के लिए पाँच हजार के पुरस्कार की घोषणा भी कर दी , छतरपुर की सरकार और लुगासी – जागीरदार ने भी क्रमशः दो हजार तथा दो सौ रूपयों की और इनाम की घोषणा की। 1.

गोरी सरकार रघुनाथ सिंह से काफी भयभीत हो गयी थी , इससे यह सिद्ध होता है कि रघुनाथ सिंह आँग्ल सत्ता के लिए कितना बड़ा संकट बन चुका था।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , 1857 का महान क्रांतिकारी दिमान देशपत बुन्देला , बांदा , बर्ग अकादमी , 2000 पृ0 सं0 – 79।

देश के शेष हिस्सों में जब 1857 की क्रांति की धीमी पड़ रही थी , उस बुन्देल धरा क्रांति की धमक से धधक रही थी। रघुनाथ सिंह गोरों के लिए भय का पर्याय या दूसरा नाम बन चुका था। कुछ समय बाद उसके कुछ सहयोगी कमजोर पड़ने लगे थे , कुछ ने अपने आप को सरकार के हवाले कर दिया था और कुछ को गिरफ्तार कर लिया गया था। बमनौरा के ठा0 देवी सिंह का गोरों के समक्ष समर्पण रघुनाथ सिंह के लिए चिन्तनीय एवं चोट पहुँचाने वाला बन गया था।

पश्चिमोत्तर प्रान्त के पुलिस महानिरीक्षक ने अपनी रिपोर्ट में सरकार को अवगत कराया था कि रघुनाथ सिंह जब तक जीवित है तब वह अपने मिशन को जैसा चाहेगा वैसा मोड़ सकता है। उसके जीवित रहते सफलता संदिग्ध ही रहेगी। उसे सिआवन के लाड़ले दौआ , विजावर राज्य के बनगाँव के भैरों अहीर तथा कलुआ अहीर का बहुत भरोसा था , ये उसके अति विश्वस्त वीर साथी थे।

देशपत के परिवार के अधिकांश सदस्य सूरमा थे। नन्हें दिमान का पुत्र जंगजीत भी विद्रोही था। वह जब आठ वर्ष का था तभी उस पर से पितृ छाया उठ गयी थी। उसके बाद वह अपनी माँ तथा बहन के साथ खजुराहो जाकर रहने लगा था , जहाँ पर बहुत से वीरों की आवाजाही बनी रहती थी , जो गोरों को अखरती थी। उसने उसे पकड़कर लाहैार भेज दिया। रघुनाथ सिंह का एक और वीर साथी राम सिंह गोरों की पकड़ से बाहर रहा।

रघुनाथ सिंह के अनुयायी आयुधी मित्र किसी भी सूरत में आँग्लों के समक्ष झुकने को तैयार नहीं थे। 1.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , 1857 का महान क्रांतिकारी दिमान देशपत बुन्देला , बांदा , बर्ग अकादमी , 2000 , पृ0 सं0 79।

इसके साथ ही रघुनाथ सिंह का डर भी गोरों को लगातार खाये जा रहा था। छतरपुर , लुगासी तथा सागर के परिक्षेत्र रघुनाथ सिंह की क्रांति के प्रमुख केन्द्र थे। उसके दमन के लिए सरकार ने दबाव की नीति को तेज किया। हमीरपुर की पुलिस रघुनाथ सिंह से बहुत सावधान रहती थी। गोरा कप्तान फ्रेजर ने 10 से 14 फरवरी 1868 को रघुनाथ सिंह को घेरने के लिए कई स्थानों का दौरा किया तथा थाने एवं पुलिस चौकियों को सचेष्ट रहने के लिए आदेशित किया। उसे यह भय था कि कहीं रघुनाथ सिंह हमीरपुर में इस तरफ से आक्रमण न कर दे। 1.

रघुनाथ सिंह भी साजिश की भेंट चढ़ा

पुलिस महानिरीक्षक ने पुलिस को सख्त निर्देश दिये थे कि वह गश्तों को तेज कर दे , उधर गोरी सरकार के लिए रघुनाथ सिंह सिर दर्द तो बन ही चुका था। गवर्नर जनरल के एजेण्ट को 10 अक्टूबर 1868 को यह सूचना मिली कि रघुनाथ सिंह तथा उसका एक क्रांतिकारी सालिगराम विजावर रियासत के खेरी गाँव में एक व्यक्ति के यहाँ ठहरे हुए हैं। डॉ0 स्ट्रेटन तो ऐसे मौके ढूढ़ रहा था। वह तुरन्त तैयार हुआ , वह अपने साथ कुछ आँग्ल सैनिक तथा कुछ छतरपुर रियासत के सैनिको को लेकर बहुत ही गुप्त रूप से अपनी योजना को अमलीजामा पहनाने के लिए गया , उनकी यह योजना इतनी गुप्त रही कि रघुनाथ सिंह के कानो कान खबर ही नहीं लगी।

स्ट्रेटन ने 22 अक्टूबर 1868 को खेरी गाँव का निरीक्षण कर उसके चारो ओर पुलिस का सख्त पहरा लगा दिया। सभी आने – जाने के रास्ते बंद कर दिए।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , 1857 का महान क्रांतिकारी दिमान देशपत बुन्देला , बांदा , बर्ग अकादमी , 2000 , पृ0 सं0 85 , 86।

स्ट्रेटन पुलिस दल को अपने साथ लेकर धीरे–धीरे गाँव की ओर बढ़ा। रघुनाथ सिंह बीमार था। उसे ज्वर था। वह जिस घर में शरण लिए था , उसकी सेवा–सुश्रूषा के लिए वहाँ पर केवल एक मित्र सालिगराम ही था। वे दोनों बिना शस्त्र के थे। डॉ0 स्ट्रेटन ने स्वयं अपने दल का नेतृत्व किया। वह स्वयं घर में घुसा और उन दोनों को दबोच लिया। उन्हें अपने साथ लेकर वह रात को ही छतरपुर चला गया।

इस तरह बुन्देल क्षेत्र का एक और पराक्रमी वीर गोरों की चाल तथा देशद्रोह की भेट चढ गया। देशपत तथा नन्हें दिमान के पश्चात् रघुनाथ सिंह ही बुन्देलखण्ड में गोरों के विरूद्ध बगावत का परचम फहरा रहा था , जिसे भितरघातियों ने भुलुंठित या भूमिसात् करा दिया।

स्वाधीनता -संघर्ष और जैतपुर रानी फत्तमवीर

राजा पारीक्षत को 1842 के बुन्देला विद्रोह का जनक माना जाता है , उसने गोरों को बुन्देल धरा से भगाने में कोई कोर–कसर छोड़ नहीं रखी , राजा पारीछत के पुरोधत्व तथा पराक्रम के गोरे भी कायल थे। उनके बाद रानी ने 1857 में समर को अग्रसर किया। 1.

बुन्देलखण्ड की तीन जैतपुर – रानी फत्तमवीर , जालौन की वीरांगना ताई बाई तथा झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई ने गोरों का जीना हराम कर दिया था। रावबखत सिंह तथा देशपत रानी फत्तमवीर को सबसे अधिक मदद प्रदान करते थे। चरखारी नरेश आँग्ल परास्त था। इसलिए उससे स्वदेशहित की कोई आशा की ही नहीं जा सकती थी।

---

1. राष्ट्रीय अभिलेखागार के सन्दर्भ कन्सलटेशन नं0 39 दिनांक 05 जून 1858 के आधार पर।

गवर्नर जनरल के एजेण्ट ने रानी से कई बार यह कहा कि वह जैतपुर की सीमा न आयें , नहीं तो उसके परिणाम बुरे होंगे किन्तु रानी ने एजेण्ट के प्रस्ताव को नहीं माना। रानी को कई रियासतों के जागीर दारों तथा देशपत का पूरा सहयोग मिल रहा था। रानी को रियासत की जनता बहुत चाहती थी। जागीरदारों ने अपने जागीरों के समाप्त होने की परवाह न करते हुए भी रानी का साथ दिया , जो उस समय अपने आप में एक बड़ा कदम था। रानी ने इन्ही सब के सहयोग से जैतपुर पर अधिकार कर लिया था।

रानी ने सिमरिया तथा मैहर पर अपना अधिकार कर लिया। अंग्रेजों को इन रियासतों पर पुनः अधिकार करने के लिए लोहे के चने चबाने पड़े। जैतपुर रानी फत्तमवीर गोरों से जमकर लोहा लेती रहीं। चरखारी नरेश जैतपुर को हड़पने के लिए बहुत पहले से मन बनाये हुए था। जैतपुर रानी भी अपनों की ही साजिश की शिकार हुई। चरखारी रियासत की सेना ने 20 जुलाई 1857 को फत्तमवीर की भावी फतह को रोक दिया।

चरखारी नरेश की सेना ने जैतपुर रानी को बंदी बना लिया। चरखारी नेरश ने उसे बंदी बनाकर टेहरी रियासत भिजवा दिया। रानी को गढ़ कुण्डार के मजबूत दुर्ग में बंदी बनाकर रखा गया। उसके बाद रानी को जतारा के किले ले जाया गया। उनकी पेंशन को आधा कर दिया गया। सबदल सिंह तथा पृथ्वी सिंह कैद – काल में भी रानी के साथ रहे। अन्ततः यदि गौर किया जाय तो यह स्पष्ट होता है कि रानी भी चरखारी नरेश की दगाबाजी की भेंट न चढ़ गयी होती तो हिन्दुस्तान के ये क्षेत्र एक शताब्दी पहले गोरों से निजात पा गये होते।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , 1857 का महान क्रांतिकारी दिमान देशपत बुन्देला , बांदा , बर्ग अकादमी , 2000 , पृ0 सं0 – 38 , 39।

महोबा जनपद के वीर सपूतों ने केवल सत्तावनी समर में ही रणहुंकार नहीं भरी अपितु उनका सत्तावनी संघर्ष के बाद 20वीं सदी में आजादी के पूर्व भी सांग्रामिक सहभाग सराहनीय रहा—

स्वाधीनता - संघर्ष और रज्जब अली आजाद

स्वतंत्रता — संघर्ष में महोबा के एक और शूर का सराहनीय सहयोग रहा , जिसका नाम था — रज्जब अली आजाद , आजाद का जन्म 1910 में महोबा के पठानपुरा मुहल्ले में हुआ था। रज्जब अली के पिता का नाम करीम बख्श और माँ का नाम सलीमन था। 1. आजाद की धर्मपत्नी कदीरन कभी भी उनके मिशन में मुश्किल पैदा नहीं की। आजाद ने अपना पुश्तैनी व्यापार प्रारम्भ किया।

आजाद का टाल स्वातन्त्र्य वीरों की आवाजाही एवं ठहरने तथा बैठकों का केन्द्र था। आजाद ने चौथी कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की थी , किन्तु कम शिक्षा उनके स्वातन्त्र्य संघर्षी सोच में कहीं पर भी रूकावट नहीं बनी। रज्जब अली आजाद चन्द्रशेखर आजाद की तरह बाल काल से ही मातृभूमि के मुक्ति मिशन हेतु दुढ़ निश्चयी बन चुका था। महोबा का ऐसा कोई राजनैतिक आन्दोलन नहीं था , जिसमें आजाद ने अगुवाई न की हो। 2.

आजाद ने केवल गांधी — आन्दोलनों में ही अग्रणी भूमिका नहीं निभायी अपितु इनका क्रांतिधर्मी आचरण सदैव बहुचर्चित रहा।

---

1. श्रीपति सहाय रावत , समर गाथा , महोबा , बसन्त प्रकाशन , 1995 , पृ0 सं0 — 125।
2. वही , पृ0 सं0 — 125।

थाना और सरकारी खजाना लूटने की योजना

आजाद जब फरार चल रहे थे तो उस समय वे तत्कालीन दस्युराज मंगल सिंह और राजाराम के दल में थे।

रज्जब अली आजाद ने थाना और सरकारी खजाना लूटने की योजना इसलिए बनायी थी ताकि स्वातन्त्र्य संघर्ष के लिए अर्थाभव को दूर किया जा सके। रज्जब अली आजाद के अवदान के मद्दे नजर अपने एक फैसले में न्यायाधीश सुलतान अहमद ने उसे बहुत सक्रिय क्रांतिकारी करार देते हुए कहा था – दफा 87–88 जब्त फौजदारी की कार्यवाही की जाये , रज्जब अली आजाद 15 दिन के अन्दर हाजिर हो , वरना आदेश की अवहेलना पर उनको 07 वर्ष का कठोर कारावास एवं दो सौ रूपयों का जुर्माना होगा।

आजाद को कभी भी घरेलू और आर्थिक बाधा उनके देशप्रेम में अवरोध खड़ा नहीं कर पायी। जेल काल में उनके एक पुत्र का निधन भी उनकी राष्ट्र निष्ठा को निर्बल नहीं कर सका। रज्जब अली आजाद जीवन पर्यन्त देश भक्त बने रहे। महोबा के स्वातन्त्र्य संघर्षी वीरों में आजाद को एक अलग स्थान है। इनका 1964 में इंतकाल हुआ। 1.

स्वतंत्रता-संग्राम और भगवान दास बालेन्दु अरजरिया।

भगवान दास बालेन्दु का लगभग पूरा परिवार आजादी की लड़ाई में अग्रणी रहा। बालेन्दु जी का कुलपहाड़ में 1907 में जन्म हुआ था। इन्होंने स्थानीय विद्यालयों में ही अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पूरी की। इन्हें हिन्दी , उर्दू तथा अंग्रेजी का ज्ञान था।

---

1. श्रीपति सहाय रावत , समर गाथा , महोबा , बसंत प्रेस , 1995 , पृ0 सं0 –136 , 137।

बालेन्दु जी ने साहित्य सम्मेलन प्रयाग की परीक्षायें भी पास की थीं। भगवान दास बालेन्दु जी की बनारस में किशोरी देवी के साथ शादी हुई थी , जो आगे चलकर क्रांतिनेत्री बनीं , इनकी छोटी बहन भुवनेश्वरी देवी तथा बहनोई नाथूराम तिवारी भी स्वातन्त्र्य आन्दोलन में सहभागी हुए। भगवान दास बालेन्दु एक जन्मजात कवि थे। इनकी काव्य प्रतिभा के आधार पर ही कविरत्न पं0 शिवराम शर्मा तथा चतुर्भज पाराशर चतुरेश ने इन्हें ' बालेन्दु ' की उपाधि दी थी।

इनमें असि और मसि का अदभुत संयोग था। बालेन्दु जी का 1930 तथा 1932 के स्वातन्त्र्य संघर्ष में सराहनीय योगदान रहा , ये गाँव–गाँव जाकर स्वाधीनता संघर्ष के लिए ग्रामीणों को जागरूक करते रहे। इन्हें गिरफ्तार करने के लिए पाँच सौ रूपयों का इनाम जिला प्रशासन ने घोषित किया था किन्तु बालेन्दु जी पुलिस की पकड़ से दूर रहे , इनकी अग्निधर्मा लेखनी आग उगलती रही। ये बुन्देलखण्ड केसरी , संत्याग्रही तथा 'प्रताप' जैसे आँग्ल विरोधी समाचार पत्रों में काव्य शैली में गोरा – विरोधी लेखन–कार्य करते रहे। इन्हें कुल मिलाकर 06 वर्षों का कारावास मिला। 1.

भगवानय दास 'बालेन्दु' अरजरिया , हमीरपुर , नैनी , फतेहपुर एवं फतेहगढ़ की जेलों में रहे। बालेन्दु जी को जेल में पन्त जी , बाल कृष्ण शर्मा नवीन , दीवान शत्रुघ्न सिंह , लाल बहादुर शास्त्री एवं कर्मवीर पं0 सुन्दर लाल जैसी राष्ट्रीय विभूतियों का साथ मिला। अन्ततः यह कहा जा सकता है कि महोबा के क्रांतिवीरों में बालेन्दु जी का स्थान महत्वपूर्ण रहा। 2.

---

1. श्री पति सहाय रावत , समर गाथा , महोबा , बसंत प्रेस , 1995 , पृ0 सं0– 137।
2. वही , पृ0 सं0 – 152।

स्वाधीनता - संघर्ष और श्री राम पचौरी

श्री राम पचौर का महोबा में 1906 में जन्म हआ था। ये मल्लविद्या में भी निपुण थे। इनकी भूषण तथा आल्हा काव्य में विशेष रुचि थी। श्री राम पचौरी जब 20 वर्ष के थे , तभी से वे राष्ट्र प्रेम के क्षेत्र में प्रवेश कर चुके थे। इनका सबसे पहले हमीरपुर के प्रसिद्ध क्रांतिकारी राधेश्याम मिश्र तथा रामगोपाल गुप्त से परिचय हुआ था। उसके बाद पचौरी महोबा में क्रांतिकारी साहित्य का वितरण करने लगे थे। पचौरी को स्वाधीनता –संग्राम में संघर्षी सहभाग के कारण 06 माह की सजा मिली। इन्हें बदायु जेल में बंद कर दिया गया , जहाँ पर ये अत्यधिक बीमार पड़ गये। सरकार ने कहा कि यदि पचौरी लिखित माफी नामा दे तो इन्हें जेल से मुक्त किया जा सकता है।

श्री राम पचौरी को जब सरकार के प्रस्ताव का पता चला तो इनके क्रोध का ठिकाना न रहा। पचौरी ने माफीनामा देने से साफ मना कर दिया। श्री राम पचौरी की बीमारी हालत से अवगत होने के लिए महोबा से बद्री प्रसाद तिवारी बदायुं गये थे। पचौरी जैसे देशभक्त ने तिवारी से भी माफीनामा न लिखने का अपना वचन दोहराया। अन्ततः 1930 में बदायुं जेल में ही इस वीर क्रांतिकारी का निधन हो गया। इस तरह श्री राम पचौरी देश के लिए जेल में ही शहीद हो गए। महोबा में कजली मेला के अगले दिन प्रतिवर्ष इस महान पुरोधा की याद में मेला आयोजित होता है। 1.

महोबा को वीरभूमि कहा जाता है जो पूरी तरह सच है। इस जनपद के स्वातन्त्र्य शूरों में बहुत से ऐसे स्वातन्त्र्य वीर हुए है।

---

1. श्रीपति सहाय रावत , समरगाथा , महोबा , बसंत प्रेस , 1995 , पृ0 सं0–152।

जिन्होंने आजादी की लड़ाई में बढ़ – चढ़कर भाग लिया है। उन वीरों में बैजनाथ तिवारी , नाथूराम तिवारी , किशोरी देवी , पूरन लाल अग्रवाल , लाल बहादुर गुसाई , बल्देव प्रसाद गुप्त , बृज गोपाल सक्सेना , प्रान सिंह परिहार , बैजनाथ सक्सेना एवं शंकर लाल जैन इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं , जिन्होनें आजादी के लिए सतत् संघर्ष किया। इस जनपद से लगभग 200 स्वातन्त्र्य सेनानी हुए हैं , जिनमें से अनेकों ने माँ भारती के लिए अपने आप को तितीक्षित किया है।

निष्कर्ष

1857 से लेकर 1947 तक 90 वर्षों के स्वातन्त्र्य समर में महोबा के अनेक क्रांतिशूरों ने प्रतिभाग किया। इस जनपद से लगभग 20 महिला सेनानी और लगभग 200 स्वातन्त्र्य सेनानियों ने आजादी के संघर्ष में बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

1857 के स्वातन्त्र्य युद्ध में महोबा जनपद की सराहनीय भूमिका रही , यहाँ के झींझन तथा उसके पास के गाँव के वीर सपूतों ने गोरों से डटकर मुकाबला किया। दिमान देशपत , नन्हें दिमान , रघुनाथ सिंह , कुन्जल शाह तथा जैतपुर की रानी फत्तमवीर का संघर्ष 1857 के स्वातन्त्र्य संघर्ष के इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ हैं। 1857 से लेकर 1868 तक लगभग 11 वर्षों तक बुन्देलखण्ड में इन वीरों ने गोरों को जमने नहीं दिया। दिमान देशपत अंग्रेजों के लए भय का पर्याय बन चुका था , बुन्देल धरा में तैनात गोरी फौज के लिए देशपत खौफ बन गया था। गोरी सरकार के लिए देशपत बुन्देला एक चिन्तनीय विषय बन चुका था।

दिमान देशपत के बाद उसके भाई नन्हें दिमान , भतीजा रघुनाथ सिंह तथा भान्जा कुंजल शाह का क्रांतिकारी संघर्ष कम महत्वपूर्ण नहीं था। देशपत के बाद रघुनाथ सिंह ने पूरे बुन्देलखण्ड में तहलका मचा दिया था। इस तरह से यह कहा जा सकता है कि सत्तावनी समर में महोबा के सहभाग को भुलाया नहीं जा सकता। प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष में महोबा के रणबाँकुरों के साथ यदि भितरघात न होता तो निश्चित रूप से बुन्देल क्षेत्र से गोरों के शासन का अन्त हो जाता और भारत से उनके पैर उखड़ जाते। 1842 से लेकर 1868 तक लगभग ढाई दशकों तक बुन्देलखण्ड में महाराज पारीछत , दिमान देशपत , नन्हें दिमान , कुंजलशाह , रघुनाथ सिंह तथा महारानी लक्ष्मीबाई और ताईबाई सहित बहुत से पुरोधाओं ने गोरों से घनघोर युद्ध किया , किन्तु ये वीर गोरों की साजिश एवं चाल की चौपड़ में हार गये।

महोबा के क्रांतिकारियों का सत्तावन के समर के बाद भी आजादी के लिए सराहनीय योगदान रहा।

चतुर्थ अध्याय

स्वाधीनता संघर्ष और बाँदा के क्रांतिकारी

स्वाधीनता-संघर्ष और बांदा के क्रांतिकारी

बांदा चित्रकूट धाम मण्डल का एक प्रमुख जनपद है , जिसका सम्बन्ध कल्चुरि वंश के संस्थापक बाम राजदेव से माना जाता है , इसके साथ ही इसे ऋषि बामदेव जी के साथ भी संश्लिष्ट किया जा है , इन्हीं ऋषि के नाम पर बांदा नाम पड़ा ऐसा माना जाता है। यह नगर केन या कर्णवती के कूल तथा वामदेवेश्वर महादेव की तलहटी पर बसा हुआ है। इस नगर को चन्देल कालीन बसा भी माना जाता है। पेशवा बाजीराव तथा मस्तानी से पैदा हुए पुत्र नवाब अलीबहादुर प्रथम ने 62 लाख वार्षिक आय के भूभाग के क्षेत्र को जीतकर बांदा को जिला मुख्यालय बनाया था। उसके बाद आँग्ल ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने नवाब के पुत्र शमशेर बहादुर द्वितीय को चार लाख वार्षिक आय की जागीर प्रदान की।1.

कम्पनी के अधीन प्रदेश का नाम बुन्देलखण्ड रहा किन्तु जिला मुख्यालय बांदा की रहा , कुछ समय बाद उत्तरी बुन्देलखण्ड के नाम से हमीरपुर को पृथक कर दिया गया। इस तरह बांदा जनपद ने भी कई पड़ावों को पार किया है। बांदा भी एक अग्निधर्मा धरती है , जहाँ पर बहुत सारे क्रांतिकारियों ने 1857 से लेकर आजादी प्राप्ति तक अपने पुरोधत्व के परचम लहराये हैं।

१८५७ की क्रांति और बांदा के क्रांतिवीर

बुन्देलखण्ड का क्षात्रधर्म किसी परिचय का मोहताज नहीं है , यहाँ पर विद्रोह औचक नहीं फैला था

---

1. डॉ0 रमेश चन्द्र श्रीवास्तव , बुन्देलखण्ड (साहि0 , ऐतिहा0 , सांस्कृतिक वैभव) , बांदा , बुन्देलखण्ड प्रकाशन , पृ0 सं0 – 253।

अपितु उसके मूल में गोरों की अमानवीय नीतियाँ जिम्मेदार थीं। बुन्देलखण्ड के कृषकों के साथ अंग्रेजों की ओर से लगातार हो रही बेइंसाफी उन्हें आक्रोशित करने के लिए पर्याप्त थी। आँग्ल सरकार द्वारा बुन्देल क्षेत्र पर किया गया भूबदोंबस्त किसान विरोधी था। इससे किसानें पर कर का बोझ इतना बढ़ गया कि वह उनकी सीमा से परे था , इससे साधारण किसान ही नहीं अपितु जागीरदार , लम्बरदार तथा मालगुजार भी अप्रसन्न हो गये। 1.

बिट्रिश सरकार ने बुन्देल क्षेत्र में क्रांति–प्रचार के सम्बन्ध में जब पन्ना के नरेश से जानकारी चाही तो उसने आँग्ल सरकार को बताया कि बुन्देल भूमि में विद्रोह की पूर्व पीठिका गत चार वर्षो से बन रही है। पन्ना के राजा ने उस पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हर गाँव में यह प्रचारित किया जा रहा था कि शक्तिहीन शक्तिशाली पर दबाव बनाये। इसका आशय यह था कि भारतीय गोरों पर अधिकार करें। हर एक गाँव की महिलायें दूसरे गाँव के जमींदार के निकट पहुँच कर यह कहती थीं कि हम आपकों लूटने आयी हैं , इस पर जमींदार उन्हें वस्त्रादि देकर मुक्ति पाता था। चपातियाँ गाँवों में प्रचार का एक साधन है। कई वर्षो से जनता पन्ना के हीरों की माँग उठा रही है।

गोरी सरकार के व्यवहार से राजा भी दुखी हो गये थे , उन्होंने आँग्ल सरकार के विरूद्ध विद्रोह के लिए सेनाओं को संगठित किया। बुन्देल क्षेत्र के अन्य राजाओं , जागीरदारों तथा लम्बरदारों को भी आपस में संगठित किया गया। इस प्रकार से अगर देखा जाय कि बुन्देलखण्ड में विद्रोही स्वर क्यों मुखरित हुए तो यह कहने में कोई संकोच नहीं होगा कि इसके लिए आँग्ल – आचरण ही जिम्मेदार था।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0– 1।

नवाब अली बहादुर द्वितीय का विद्रोही होना

नवाब अली बहादुर द्वितीय का आँग्ल विरोधी होना गैर स्वाभाविक नहीं था। इनके पिता जुल्फिकार अली को गोरी सरकार चार लाख वार्षिक पेंशन देती थी , जिसमें उनके सभी खर्चें शामिल थे। उनके निधन के बाद गोरी सरकार ने उनके पुत्र अली बहादुर को नवाब बांदा की उपाधि से वंचित कर दिया। उनकी सेना में भी कमी कर दी गयी। नवाब को पहले 15 तोपों की सलामी दी जाती थी किन्तु नवाब जुल्फिकार को सलामी के लिए केवल 11 तोपों से ही सन्तोष करना पड़ा। 1.

उसके बाद अलीबहादुर द्वितीय को तोपों की सलामी से ही वंचित कर दिया गया । उसे केवल 25 घुड़सवार तथा पैदल सैनिकों की एक कम्पनी रखने भर की अनुमति दी गयी। उससे यह भी कहा गया कि वह नवाब की छावनी की जमीन भी सरकार को हस्तगत करा दे। इसके बाद नवाब अली बहादुर द्वितीय के पुत्र के जन्मोत्सव पर गोरी सरकार ने परम्परागत रीति को भी (नजराना देना) नहीं निभाया।

उत्तर पश्चिम प्रान्त के लेफ्टीनेंट गवर्नर ने सरकार को मई 1856 में सूचित किया कि नवाब बांदा के ऊपर ग्यारह लाख का ऋण हो गया है , उसका कर्ज बढ़ता ही जा रहा है , ले0 गवर्नर ने उसे परामर्श दिया कि वह अपने अक्षम कामदार विलायत हुसैन को हटाकर उसके स्थान पर इमदाद अली बेग को रख ले , जो कार्य प्रबन्ध में सफल सिद्ध होगा। 2.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब , अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 14 , 15।
2. वही , पृ0 सं0 – 15।

उससे कर्ज भी कम होगा। नवाब ने इमदाद अली बेग को कुछ दिनों बाद जनवरी 1857 में हटा दिया , इससे ले0 गवर्नर नवाब से नाराज हो गया। उसने गोरी सरकार से अनुरोध किया कि नवाब को जो कोर्ट – कचहरी में पेश होने की जो छूट थीं , उसे समाप्त कर दिया जाय। 1.

नवाब बांदा ने इमदाद अली बेग के गलत व्यवहार से आँग्ल सरकार को अवगत कराया , साथ ही यह भी कहा कि बेग का आचरण शिष्ट नहीं है , नवाब ने उसके व्यवहार से गोरी सरकार को परिचित कराते हुए कहा कि उसने मेरी माँ के लिए भोजन की व्यवस्था नहीं की। उसने मेरी माँ से भोजन के प्रश्न पर कहा कि जो कुछ गोदाम में था दे दिया है , यदि भोजन की इच्छा है तो सुअर का माँस खाओ। इसके अतिरिक्त वह नवाब का कहना भी नहीं मानता था। उसने अपनी मरजी से नवाब के तोशाखाने में मोहनदास को सेवा में रख लिया था , लेकिन नवाब के बाबू ने उसका नाम सेविवर्ग से काट दिया था , जिस पर बेग बहुत नाराज हुआ था। 2.

नवाब ने कलेक्टर के अनुरोध पर भी अपने वफादार कामदार विलायत हुसैन को अपने पास ही रखा। इमदाद अली बेग नवाब की माँ से अच्छा व्यवहार नहीं करता था , वह अधिकांशतः नवाब की माँ के प्रति कठोर शब्दों का प्रयोग करता था , जो न तो नवाब को अच्छा लगता था और न ही माँ को , नवाब ने बेग की शिकायत कलेक्टर से की किन्तु उसने उसे अनसुनी कर दी। नवाब ने बेग द्वारा किये जा रहे दुर्व्यवहार से जब उच्च आँग्ल अधिकारियों को अवगत कराया।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब , अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 13।
2. वही , पृ0 सं0 – 13 , 14।

तो उन्होंने इसके लिए नवाब को ही दोषी ठहराया। अधिकारियों ने कहा कि आप द्वारा किये जा रहे कुप्रबन्धन के कारण ही बेग को कामदार बनाया गया है। इस पर नवाब की माँ ने कहा कि नवाब यदि दो माह के भीतर कर्ज अदा न कर पाये तब कलेक्टर किसी भी व्यक्ति को कामदार बना सकता है , नवाब निर्धरित समय पर कर्ज नहीं चुका पाये , इस पर कलेक्टर ने बेग को विधिवत नियुक्ति पत्र दे दिया।इसी बीच नवाब तथा डी0 एम0 के बीच मित्रता भी बढ़ने लगीं। 1.

एक दिन 26 मई 1857 को कलेक्टर ने नवाब को अपने आवास पर रात्रि के समय आमंत्रित किया , रात्रि में नवाब कलेक्टर के यहाँ पहुँचें , जहाँ पर पहले से ही जज तथा दो अन्य महाशय मौजूद थे। थोड़ी देर बाद कलेक्टर बेग तथा नवाब को एक अलग कमरे में ले गये , वहाँ पर उन्होंने कानपुर में उपद्रव होने जाने की खबर सुनायी। उसने नवाब से एक अतिविश्वसनीय व्यक्ति देने की बात कही , जिसके द्वारा वह एक गुप्त पत्र जनरल को भेज सके। नवाब ने अपने एक खास विश्वासी व्यक्ति काशी को यह कार्य सौंपा , उसके बाद कलेक्टर तथा नवाब ने क्रमशः बाइबिल व कुरान की शपथ लेकर आपस में मित्रता कायम रखने के लिए दोस्ती का हाथ बढ़ाया। 2.

बांदा की धरती विद्रोहाग्नि से धधक उठी

ऋषि बामदेव की नगरी विद्रोह से अछूती नहीं रही , बांदा में 1857 की क्रांति की सूचना इलाहाबाद तथा कानपुर के जेल से मुक्त कराये गये विद्रोहियों के द्वारा 08 जून को मिली।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0– 14 , 15।
2. वही , पृ0 सं0– 15।

विद्रोहियों ने 12 जून 1857 को बबेरू पर आक्रमण कर दिया , वहाँ के राजकोष से पाँच सौ रूपयों की लूट की गयी , वहाँ का तहसीलदार भागने में कामयाब रहा , बबेरू का तहसीलदार तथाा थानेदार अपनी जान बचाकर बांदा पहुँचे। 1.

आँग्ल सरकार के विरूद्ध बगावत की सूचना ग्राम्य अंचलों में भी पहुँची , वहाँ के ग्रामीणों ने हिम्मत जुटाकर बेंदा जौहरपुर तथा पैलानी में गोरी सरकार के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। इन सबने मिलकर 11 जून 1857 को तिंदवारी तहसील को लूट लिया , वहाँ के कर्मचारी अपनी जान बचाकर बांदा पहुँचे। बांदा का प्रमुख अमीन तसद्दुक हुसैन खाँ विद्रोही दल में सम्मिलित हो गया। बांदा के नवाब का चौकीदार रामप्रसाद भी बागियों से जा कर मिल गया। इस तरह बांदा नगर में विद्रोह की जमीन तैयार हो गयी। बांदा के कलेक्टर ने जून में ही नागौद के पोलिटिकल असिस्टेण्ट को अवगत कराया था कि बांदा की हिफाजत के लिए शीघ्र ही सेना का समुचित प्रबन्ध किया जाय। इस पर पोलिटिकल असिस्टेण्ट ने छावनी के मेजर हेम्पटन को इस प्रसंग से अवगत कराया कि मैं बांदा जाना चाहता हूँ , सुरक्षा की व्यवस्था कर दी जाय , जिसे मेजर ने यह कह कर टाल दिया कि नागौद के हालात ठीक नहीं है , इसलिए नागौद को न छोड़ा जाय। 2.

गोरी सरकार ने पन्ना नरेश से मदद मांगी , जिस पर उसने उसे आश्वासन दिया कि वह छः तोपों तथा एक हजार बन्दूकची दे सकता है।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997, पृ0 सं0 – 17।
2. वही , पृ0 सं0 – 17 , 18।

इसके पूर्व पन्ना नरेश गोरी सरकार को तोप तथा फौज दे चुका था , जिन्हें नागौद भेजा गया था। छतरपुर के राजा ने बांदा के कलेक्टर के यहाँ दो तोपें तथा पाँच सौ सैनिक भेजे थे। कलेक्टर ने गौरिहार , अजयगढ़ तथा चरखारी के राजाओं से भी मदद माँगी थी , जिस पर उन्होंने आँग्ल सरकार को सैन्य सहायता पहुँचायी थी। जून 1857 के मध्य बांदा में अफवाहों का बाजार गर्म रहा , 13 जून 1857 को रात्रि में अज्ञात लोगों के द्वारा बांदा के कई बंगलों को जला डाला गया। बांदा के मुसलमानों पर से गोरों का विश्वास उठ चुका था। इसकी सूचना नागौद के पोलिटिकल असिस्टेण्ट के द्वारा गवर्नर जनरल को भेजी जा चुकी थी। 1.

बांदा में विद्रोह – काल में वहाँ की छावनी कैप्टन बेनर के अधीन थी , उसके अधीन तीन बंगाली देशी पल्टन थीं , बांदा के कलेक्टर ने बांदा के सम्भ्रान्त नागरिको से कहा कि आप लोग अपनी सुरक्षा के लिए सशस्त्र चौकीदार रख सकते हैं। कलेक्टर ने शहर की सुरक्षा के लिए मुख्य–मुख्य स्थानों पर गश्ती दल नियुक्त कर दिये थे , उसने चिल्लाघाट की ओर से विद्रोहियों को रोकने के लिए डिप्टी कलेक्टर मो0 सरदार को जिम्मेदारी सौंप दी थी , हमीरपुर एवं अन्य मार्गों से होकर आने वाले विद्रोहियों को रोकने का दायित्व असिस्टेण्ट मजिस्ट्रेट वेवस्टर पर था।

8 जून 1857 को सरदार खाँ ने कलेक्टर को सूचित किया था कि बागी चिल्लाघाट से होकर आ रहे हैं , इसे कलेक्टर ने 12 तथा 13 जून 1857 को स्वयं देखा।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 18 , 19।
2. वही , पृ0 सं0 – 18 , 19।

वह स्वयं बांदा नवाब के पास गया और बांदा की सुरक्षा का अनुरोध किया। इस पर नवाब ने कलेक्टर को आश्वासन दिया कि वे अंग्रेजों तथा अंग्रेज महिलाओं को नवाब के महलों में पहुँचा दें। उस समय इस तरह की महिलाओं तथा बच्चों की संख्या 32 थी। कलेक्टर ने नवाब के कहे के अनुसार कार्य किया , कलेक्टर मेन , जज तथा कैप्टन बेनेट ने भी नवाब के महल में पनाह ली। 1.

विद्रोहियों को जब यह पता चला कि नवाब के महल में यूरोपियन , महिलायें तथा मि0 मेन इत्यादि शरण लिए हुए है तो बागी नवाब के पास पहुँच कर महल में रह रहे अंग्रेजों को नवाब से मांगा , जिस पर नवाब ने उत्तर दिया कि शरणागत की सुरक्षा का दायित्व मेरा है। बागी नवाब के महल को तीन दिनों तक घेरे रंहे लेकिन नवाब ने शरणार्थी गोरों को बागियों को नहीं सौंपा।

नवाब–महल में गोरों को कोई कष्ट नहीं रहा , महल के निचले भाग में उनका कार्यालय था , वहीं पर खजाना था। महल में खजाना ले जाते समय देशी सैनिकों ने देखा था , उन्हें यह नागवार गुजरा था। उस समय कोष में आठ लाख रूपये थे। 2.

नवाब , राजा सिंधियाँ एवं अन्य राजाओं का आपसी पत्र सम्पर्क

राजा सिधियाँ , बानपुर नरेश एवं शाहगढ़ के राजा ने नवाब से तथा नवाब ने उनसे पत्र सम्पर्क किया था , जिन पत्र – संवादों से ऐसा लगता है कि जैसे नवाब तथा नरेश एक जुट होकर स्वराज्य तथा स्वधर्म का निर्वाह करना चाहते थे।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 19 , 20।
2. वही , पृ0 सं0 – 23 , 24।

पत्रशैली इस तत्थ की पुष्टि करती है कि राजा तथा नवाब यह समझते थे। कि किसी एक के वश की बात नहीं है कि वह देश से गोरों को निकाल दे। शाहगढ़ के राजा बखत बली को नवाब ने सत्तावनी समर – काल में एक पत्र लिखा था , जिसका सारांश था कि नवाब बखतबली से मुलाकात तथा बातचीत करना चाहता था । उसने अपने पत्र में नाना साहब के साहस की सराहना की थी। नवाब ने पत्र के जरिये राजा से मित्रता एवं गोरों के विरूद्ध एकजुट होकर संघर्ष करने की बात कही।

नवाब ने पत्र में आगे उल्लेख किया कि बुन्देलखण्ड में कालिजंर दुर्ग सबसे अधिक उपयुक्त एवं सुरक्षित है। उसने वहाँ पर सेना रखने का प्रस्ताव किया। शाहगढ़ के राजा बखतबली ने भी नवाब को पत्रोत्तर देते हुए कहा कि हम आपसे मिलान चाहते है। राजा बखतबली ने पत्र में कहा कि गोरों की दक्षिण में मजबूत स्थिति है , इस नाते आप पेशवा से अर्ज करें कि आठ–नौ रेजीमेंट उस क्षेत्र में भेज दें ताकि अधर्मियों को दण्डित किया जा सके। 1.

जब विद्रोह फूट पड़ा

14 जून 1857 को 12वीं बंगाली देशी पल्टन की दो टुकड़ियों के सैनिकों के रुख में परिवर्तन आ गया , उन्होंने खजाना देने से मना कर दिया , बांदा में विद्रोह के शक को देखते हुए कलेक्टर ने फतेहपुर से सेना मंगायी , सैन्य दल बांदा पहुँचा , बांदा के डिप्टी कलेक्टर ने फतेहपुर से आये सैन्य दल को बागी दल समझा और उसकी सूचना कलेक्टर को दी , कलेक्टर ने अजयगढ़ तथा यहाँ के नवाब से सैनिकों को बुलाया। 2.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 32 , 33।
2. वही , पृ0 सं0 – 33।

नवाब की सेना के कमाण्डेण्ट बिन्जामिन उस समय मौजूद नहीं था , उसके न होने पर लेफ्टीनेण्ट वेनेट ने नवाब के सैनिकों की बागडोर अपने हाथ में ले ली , जिस पर नवाब के सिपाही नाराज हो गये , स्थिति को भाँपकर लेफ्टीनेण्ट फ्रेजर तथा इन्साइन क्लर्क नवाब के पास गये। नवाब को कलेक्टर की प्रार्थना से अवगत कराया।

कैप्टन के कदम से क्रांति की शुरूआत

कलेक्टर तथा नवाब ने स्वयं मौके पर जाकर सैनिकों को समझाने का प्रयास किया , उन्हें अतीत की वफादारी की याद भी दिलायी , अन्ततः 50 हजार की राशि देने के प्रश्न पर समझौता हो गया , सैनिको ने वेनेट को अपना कमाण्डर मान लिया , इसी मध्य एक आँग्ल कैप्टन ने सैन्यकर्मियों के प्रति कड़ा रुख अपनाया , उनसे उल्टे सीधे प्रश्न किये , साथ ही सिपाहियों के हवालदार के एक थप्पड़ मार दिया , इस पर सैन्यकर्मी उग्र हो उठे और सैन्य छावनी की ओर चल पड़े। 1.

कैप्टन वेनेट ने नवाब से उनकी शिकायत की , नवाब ने उन्हें रोकने के लिए विलायत हुसैन तथा गुलाम हैदर को भेजा , किन्तु विद्रोही सैनिकों ने उनकी बात नहीं मानी , वे आगे की ओर बढ़ गये। इस घटना से कलेक्टर सकते में आ गया। नवाब को एक अलग कमरे में जाकर सारी घटना से अवगत कराया। 2.

लेफ्टीनेण्ट फ्रेजर दौड़कर कलेक्टर के पास आया और यह सूचना दी कि सिपाहियों ने दूसने सिपाहियों को विद्रोह के लिए तैयार कर लिया है।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 33 , 34।
2. वही पृ0 सं0 – 33 , 34।

इस पर सभी आँग्ल अधिकारी विवश होकर बांदा शहर छोड़ने को तैयार हो गये। गोरे अधिकारियों ने बांदा से जाना अपने हित में समझा। बांदा के कलेक्टर ने नवाब को पत्र लिखा कि मेरे न रहने पर आप जिला प्रशासन की बागडोर संभाले। 1.

बांदा के कलेक्टर तथा अन्य 17 आँग्ल अधिकारी 14 जून 1857 को शहर छोड़कर नागौद के लिए प्रस्थान किया। उनके जाने के बाद विद्रोहियों ने छावनी के सभी बंगले जला दिए , नवाब ने अपने महल में यूरोपियनों को शरण दे रखी थी किन्तु बागियों को यूरोपियन नहीं मिल सके। 15 जून को प्रातः 12वीं पल्टन के सैनिकों ने जेल पर हमला बोला , जेल का दरोगा भी विद्रोहियों के साथ हो गया। बागियों ने जेल बंदियों को जेल से मुक्त करा दिया , जेल की तोपें एवं मालखाने के सारे सामान को उन्होंने अपने अधिकार में कर लिया , जेल के बाद विद्रोहियों ने माण्टेसरी स्कूल को भी लूट लिया , कुछ आँग्लों की पत्नियों को इस्लाम धर्म में दीक्षित कराया , साथ ही गिरजाघरों तथा सरकारी बंगलों को बागियों ने नष्ट कर दिया , कसाई खाने की गायों तथा बैलों को मुक्त कर दिया। अजयगढ़ की रानी ने बांदा विद्रोह के दमन के लिए सेना भेजी किन्तु वह भी बागी हो गयी। 2.

नागौद के पोलिटिकल असिस्टेण्ट को जब इस विद्रोह की सूचना मिली तो वह पन्ना नरेश के दो सौ सैनिकों के साथ बांदा पहुँचा , सागर के ब्रिगेडियर ने बांदा विद्रोह के समय भागने पर ले0 बेनेट तथा फ्रेजर को निलम्बित कर दिया।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 33 , 34।
2. वही , पृ0 सं0 – 33 , 34।

बांदा के कलेक्टर मि0 मेन अन्य यूरोपियन महिलाओं के साथ 16 जून को रीवा होते हुए मिर्जापुर पहुँचे। बांदा के नवाब ने अपने यहाँ काम करने वाले विंजामिन तथा क्रूस को भी बांदा से चले या भाग जाने की सलाह दी किन्तु उनके सम्बन्ध में विद्रोहियों को पता चला जाने पर उनके द्वारा उन्हें मार दिया गया। विंजामिन की पुत्री भी बागियों की शिकार हो गयी। तिरौंहा के ज्वाइंट मजिस्ट्रेट कोकरेल को भी विद्रोहियों ने मौत के घाट उतार दिया।

नवाब का कामदार विलायत हुसैन विद्रोहयों को दिल से चाहता था , वह उनकी मदद भी करता था। विलायत हुसैन की सलाह तथा बहकाने पर नवाब भी गोरों के खिलाफ हो गया था। नवाब के उकसाने तथा बांदा में उस समय जो भी घटित हुआ , उन सबके लिए विलायत हुसैन को ही जिम्मेदार ठहराया गया और अन्त में उसे पकड़ कर फाँसी पर लटका दिया गया। उसे उच्चाधिकारियों के यहाँ अपील करने का अवसर भी नहीं दिया गया। 1.

बांदा के अंग्रेज रहित हो जाने पर नवाब ने अपने शासन की आनन–फानन घोषणा कर दी। नवाब ने शहर कोतवाल तथा बांदा के तहसीदार को बुलाया , उन्हें अपने कामगारों के साथ काम करने के निर्देश दिये। कोतवाल नवाब के निर्देशानुसार शहर में मुनादी करवा दी , जिसे सुनकर बागियों ने मुनादी करने वाले को भगाया तथा कोतवाल को डांटा भी। उन्होंने यह मुनादी करायी कि सारी जनता ईश्वर की है , राज्य दिल्ली सम्राट का है और शासन फौज का है। विद्रोहियों ने तहसील के अमले को व तहसीलदार को पकड़ कर बंदी बना लिया। 2.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , पृ0 सं0 – 35 , 36।
2. वही , पृ0 सं0 – 35 , 36।

नवाब ने बागियों के तेवर देखते हुए उनको अपने यहाँ आमंत्रित किया , उनसे बात की और उनका स्वगात – सत्कार किया। नवाब ने बागियों के प्रशासन को मान्यता प्रदान कर दी , इस पर वे प्रसन्न हो गये। नवाब ने गायों तथा बैलों के वध पर पाबन्दी लगा दी , इससे हिन्दू वर्ग बहुत खुश हुआ। किसानों को भी बागियों ने सुविधायें प्रदान की , महाजनों ने जिन किसानों द्वारा लगान न अदा करने पर उनकी जमीनों को कब्जा लिया था , उनकी सम्पत्ति की कुर्की के लिए डिग्री हासिल कर ली थी , उन महाजनों को बागियों ने शहर से बाहर निकाल दिया।

महाजनों की सम्पत्ति लूट ली , बागियों ने सरकारी सम्पत्ति लूट ली एवं भवन आदि नष्ट कर दिए। 21 जून 1857 को पाँच सै आदमियों के समूह ने मुगली जंगल में कुछ यूरोपियनों को पकड़ कर नवाब के पास ले आये , नागौद भी विद्रोह की चपेट में आ गया था , इसीलिए गोरे भागे–भागे फिर रहे थे। नवाब ने खुश होकर गाँव के जमींदार को एक सौ रूपये का इनाम दिया। इन भगोडों में कैप्टन स्काट , डॉ0 मेन की दो वर्षीय पुत्र एवं कुछ आँग्ल महिलायें भी थी , माधौपुर के एक जंगल में धूम रही अंगेज महिला को नवाब ने सम्मान सहित अपने यहाँ बुलवा लिया , कुछ बैण्ड वाले यूरोपियन नौगाँव से भागकर बांदा आ गये। 1.

छठी देशी पल्टन के सैनिक भी इलाहाबाद में विद्रोह करके 16 जून 1857 को बांदा आ गये , उन्हें वहाँ मालूम कि हुआ कुछ यूरोपियन नवाब के महल में शरण लिए हुए हैं। 2.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 36 , 37।
2. वही , पृ0 सं0 – 40।

उन विद्रोहियों ने नवाब से कहा कि यूरोपियनों को हमारे हवाले कर दें अन्यथा वे नवाब के महल को नष्ट कर देंगे। बागियों ने नवाब के मुसलिम सैन्य कर्मियों को समझाकर अपने पक्ष में कर लिया। दोनों सैन्य दलों ने मिलकर नवाब के महल के सामने दीन–दीन के नारे भी लगाये किन्तु नवाब के वफादार व्यक्तियों के कारण यूरोपियन उन्हें न मिल सके। शरणार्थी नवाब के महल में डेढ़ माह तक रुके।

शरणार्थी जैसे ही नवाब के महल से निकले , बागियों ने नवाब के महल तथा नगर को आग के हवाले कर दिया।

निमनी पार का संघर्ष

बांदा से सात मील की दूरी पर निमनी नदी है , जो अजयगढ़ के राज्य तथा बांदा की सीमा को जोड़ती है , निमनी नदी के उस पार अजय गढ़ का किला है , महाराज छत्रसाल के वंशज बांदा को भी अपने अधीन करना चाहते थे , 1857 में रणजोर सिंह को शासन करने का अधिकार नहीं मिला था।

रणजोर दौआ अक्सर बांदा में हस्तक्षेप करता था , उसी बीच घटी एक घटना ने लड़ाई को जन्म दे दिया , हुआ यह कि अजयगढ़ राजा के सिपाहियों ने बांदा के एक कल्ला नामक महाजन को पकड़ लिया , जिस पर संघर्ष शुरू हो गया। रणजोर दौआ ने 1857 की क्रांति में नवाब से कुछ गाँव छीन लिए थे , इन विवादित गाँवों को लेकर अक्सर झगड़ा होता रहता था , राजस्व को लेकर विवाद होता रहता था। रणजोर दौआ आधा राजस्व चाहता था , मामला समझाने पर भी समाधित नहीं हुआ। 1.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 39, 40।

बांदा का इंशा उल्ला एक सशक्त मालगुजार था , वह अंग्रेज परस्त था , नवाब ने अपने सिपाहियों को अपने अधीन किये रहा , इंशा उल्ला द्वारा विरोध से बचने एवं रणजोर दौआ से अलगाव के लिए उसने ऐसा किया। बांदा के अधिकतर जमींदार भी आवश्यकता पड़ने पर मीर का ही साथ देते। नागौद का पोलिटिकल असिस्टेण्ट रणजोर दौआ तथा नवाब सहित दोनों ओर हाथ देता था। बांदा के नवाब ने मीर को अपनी तरफ रखना ही उचित समझा। उसने आँग्लों पर आक्रमण करने के लिए अधोलिखित रूप में सेना का सेनापतित्व मीर को सौंपा।

क्रंम संख्या	स्थान	सिपाही / तोपे	
01	पैलानी	800	X
02	चिल्लाघाट	700	दो तोंपे
03	सौदाल्लापुर	600	
04	बबेरू	600	
05	पनगरा	600	दो तोंपे

बांदा का एक और क्रांतिकारी सरदार खाँ भी था , नजीब उसका साथ दे रहा था , नागौद का पोलिटिकल असिस्टेण्ट सरदार खाँ का विरोधी था , इस खबर के बाद सरदार खाँ ने अपना कार्य क्षेत्र ग्वालियर कर लिया , उसके सहायक भी उसके साथ हो लिए। बांदा बाजार के चौधरी मन्नूलाल तथा जोधोराम ने सरदार खाँ को पकड़ने के लिए गोरी सरकार को आश्वासन दिया था। रणजोर दौआ ने कपसा के निकट सरदार खाँ को पकड़ कर उसके सभी सामान को जब्त कर लिया , सरदार खाँ किसी तरह से उसके चुंगल से भाग निकला। 1.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 39 , 40।

आँग्ल सरकार को क्रांतिपरक सूचना देने वाले लल्ला ब्राम्हण को तीन माह तक कैद रखने के बाद नवाब ने जमानत पर छोड़ दिया। इसी बीच नवाब की सुरक्षा तथा सहायता के लिए बुन्देलखण्ड के प्रमुख क्रांतिकारी उसके यहाँ पड़ाव डाले हुए थे , उनमें से राहतगढ़ के नवाब तथा देशपत बुन्देला प्रमुख थे।

निमनी के उस पार नाले की हिफाजत के लिए अजयगढ़ राज्य की ओर एक सेनाधिकारी तथा उसके सेनापतित्व में बीस सैन्यकर्मी थे। मोहर्रम के पाँचवे दिन मुसाहिब जान को निर्देश मिला कि अनाज तथा रसद की देखभाल करें , वह अजयगढ़ से चलकर बांदा आया। उसने एक पत्र रणजोर दौआ तथा दूसरा पत्र नवाब को दिया। नवाब ने अपने चोबदार रामप्रसाद को आदेशित किया कि वह जाकर सेना से युद्ध बंद करने को कहे , वहाँ पर केवल दो – चार सैन्य कर्मी रहें , अजयगढ़ राज्य के लोगों को बांदा नगर में प्रवेश से रोका जाय , उन्हें बिना हथियारों के आने दिया जाय। 1.

नवाब की सेना के वहाँ से हटने के बाद मुसाहिब जान दौआ के निकट गया और उससे कहा कि आप भी मैदान से अजयगढ़ सेना को वापस कर दें , जिस पर दौआ ने कहा कि अजयगढ़– रानी के आदेश के बिना सेना वापस नहीं जायेगी। दौआ से नवाब भी भयभीत हो गया। उसने बांदा की ताजियों की रस्म को निमनी नदी में पूरी करने की अनुमति भी नहीं दी। उसने आरा से बागियों की दो पल्टनों के बांदा आने के उद्देश्य को जानने के लिए अपने कुछ आदमियों को पल्टनों के पास भेजा।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 41 , 42।

पाँच दिन बाद लगभग पचास सवार नवाब के महलों के प्रथम द्वार में पहुँचे , उन्हें एक तलवार भेंट की , जिसे नवाब ने कबूल कर लिया। उन्होंने नवाब को बताया कि वे धर्मार्थ दिल्ली जा रहे हैं।

नवाब ने बागियों के साथ महल में लगभग दो घण्टे तक अपने विश्वस्त साथियों को लेकर बैठक की। दौआ की सेना अब भी निमनी पार में रुकी हुई थी। चार – पाँच दिन बाद दानापुर पल्टन के लगभग पच्चीस बागी तिलंगी दौआ के पास पहुँचें। इन सबके साथ सूबेदार शिवदयाल भी था। उस समय दौआ ने बांदा के एक साहूकार के पुत्र का अपहरण कर लिया था , उससे फिरौती की माँग कर रहा था। सूबेदार शिवदयाल ने दौआ को आक्रमण का भय दिखाकर उस बालक को मुक्त करा दिया। 1.

एक दिन की एक घटना के निमनीपार में संघर्ष को जन्म दे दिया । दौआ की जंगीपुर चौकी के जवानों ने तिलंगी सेना पर गोलियाँ चला दी , जिससे 15–16 तिलंगी जवान मर गये , इस पर दौआ रात्रि को कुरारा भाग गया , यह लड़ाई 06 घण्टों तक जारी रही। इस संघर्ष में बागियों के साथ जगदीशपुर , बिहार के बाबू कुँवर सिंह भी थे। नवाब ने इस समर का खुद दो–तीन दिनों तक नेतृत्व किया। इस युद्ध में दौआ पराजित हुआ। दौआ ने समर्पण के बाद अजयगढ़ जाने की अनुमति मांगी किन्तु वह ठुकरा दी गयी। इस पर कुछ झड़पें और हुई। चौथे दिन महताब अली तथा सूबेदार भवानी सिंह ने दौआ को पकड़ लिया , अजयगढ़ के तीन और सैन्य अधिकारी पकड़ गये। कुछ के सिर काटकर खटौआ दीवाल तथा नदी के किनारे लटका दिये गये। इस संग्राम में दो हजार बागी तथा अजयगढ राज्य के तीन सौ जवानों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 42।

बागियों ने रणजोर दौआ को पकड़कर पहले नवाब फिर गौरिहार के जागीरदार के पास ले गये , दोनों ही स्थानों पर उन्होंने रुपयों की माँग की किन्तु सफल न हो सके। इमामबक्स ने बिना देर के दौआ को फांसी पर लटकाने का हुक्म जारी कर दिया।

कुँअर सिंह द्वारा बांदा - बागियों की मदद

बांदा – विद्रोह को मदद के लिए जगदीशपुर के बाबू कुँवर सिंह ने दानापुर की दो रेजीमेण्ट के साथ चार हजार बागियों सहित बांदा की ओर प्रस्थान किया। वे मिर्जापुर होते हुए कुछ हमलों का मुकाबला करते हुए 04 सितम्बर 1857 को बांदा पहुँचे। अंग्रेजों ने दानापुर के बागियों को बुन्देल क्षेत्र में प्रवेश करने के मूल में पन्ना राज्य को दोषी करार दिया। गोरों ने पन्ना राज्य पर यह भी आरोप लगाया कि पन्ना के प्रमुख विद्रोही मुकुन्द सिंह ने ही कानपुर बागियों को पन्ना क्षेत्र में बुलाया था।

बांदा नवाब ने बाबू कुँवर सिंह से कानपुर पर आक्रमण हेतु मदद के लिए स्वयं लिखा था , जिस पर वे 40वीं देशी पल्टन के दो हजार विद्रोहियों के साथ बांदा पहुँचे थे। इस पल्टन में सूबेदार बाबूराम तथा जमादार नेपाल सिंह भी थे। कुँवर सिंह मूल रूप से कालपी जाकर तांत्या टोपे की सहायता करना चाहते थे। कुँवर सिंह के साथ अन्य विद्रोही भी आकर मिले , इससे उनके पास चार हजार बागी हो गये। बाबू कुँवर सिंह ने बांदा – नवाब की सैन्य शक्ति को सुदृढ़ किया। कुँवर सिंह ने 20 अक्टूबर 1857 को अपने असली मकसद हेतु ग्वालियर के लिए प्रस्थान किया। उन्हें कपसा तथा खजुहा गाँव में कुछ हमले भी झेलने पड़े किन्तु वे हिम्मत नहीं हारे। 1.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 45 , 46।

खजुहा युद्ध में दानापुर पल्टन का सूबेदार पकड़ा गया, जिसे अंग्रेजों ने फतेहपुर ले जाकर फाँसी पर लटका दिया।

दानापुर की देशी पल्टन के सूबेदार की बदौलत ही नागौद – विद्रोह सफल हुआ था और अंग्रेजों को नागौद से भागना पड़ा था। दानापुर तथा भागलपुर के विद्रोही सैनिक कालपी कूच कर गये। उने दिनों अजयगढ़ के प्रमुख क्रांतिकारी फरजंद अली भी बांदा – नवाब की मदद के लिए बांदा में पड़ाव डाले हुए थे।

बगावत के लिए धन - व्यवस्था

बागियों को विद्रोह –काल में केवल गोरों से ही मुकाबला नहीं करना पड़ता था अपितु उनके मार्ग की एक और प्रमुख मुसीबत थी – मुद्रा का अभाव, जिसे दूर करने के लिए उन्हें अनचाही लूटों का सहारा लेना पड़ता था। नवाब के खुद सैन्यकर्मी एवं बागियों की भारी भरकम संख्या को वेतन देना नवाब के लिए आसान नहीं था। बागी सिपाहियों ने बांदा के महाजनों से धन की उगाही की, नवाब ने फिर भी धन का अभाव महसूस किया, उसके 100 आदमियों ने एक तोप के बल पर मौदहा तहसील को लूटने के लिए भेजा, जहाँ से उसे तेइस हजार रूपयें प्राप्त हुए। नवाब ने चरखारी – नरेश से आर्थिक मदद का अनुरोध किया, जिसे राजा ने साफ मना कर दिया था। नवाब के कामदार विलायत हुसैन तथा मीर साहब ने 02 नवम्बर 1857 को बांदा के प्रमुख व्यापारी रतीराम के आवास को नेस्तनाबूद करके वहाँ से दो हीरे, सोना, चाँदी तथा पचहत्तर हजार रूपयें नकद प्राप्त किये। इन व्यक्तियों ने हर व्यापारी से पाँच सौ रुपये भी लिए, तब कहीं जाकर नवाब ने सिपाहियों के वेतन एवं रसद की व्यवस्था की। 1.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव, बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय, बांदा, बर्ग अकादमी, 1997, पृ0 सं0 – 53, 54।

नवाब ने बांदा के अन्य कई प्रमुख व्यापारियों तथा लोगों पर दबाव डालकर उनसे आर्थिक मदद ली। नवाब ने नारायण राव से दो लाख रूपयें प्राप्त किए , जिससे उसने सिपाहियों के वेतन की व्यवस्था की। नवाब ने भूरागढ़ किले को मजबूत किया। उसने इसी सैन्य शक्ति के बल पर मौदहा तथा खण्डेह पर अधिकार कर लिया। तरौंहा के पेशवा नारायण राव नवाब की धन से तो मदद करता ही था , साथ ही नवाब को विद्रोह के लिए प्रोत्साहित भी करता था। उसी के कहने पर नवाब ने नंदी जौहरपुर गाँव को पराजित कर उसे लूट लिया था। नवाब के पास काफी सैन्य शक्ति हो गयी थी। इस तरह से यदि देखा जाय तो बागियों एवं नवाब ने बगावत के लिए ही धनापूर्ति हेतु लूटपाट की।

विद्रोह- काल में नवाब की बांदा - व्यवस्था

नवाब को यह विश्वास हो गया था कि यहाँ से गोरों की सफाई हो गयी है , बांदा आँग्ल विहीन हो गया है , इस स्थिति में नवाब विद्रोहियों के साथ हो गया। बांदा में बागियों के आधिक्य से बांदा का वातावरण अशांत हो गया था , जिसे नवाब ने चाक – चौबंद करने के लिए एक कौसिंल बनाई , जिसमें निम्न प्रमुख लोग रखे गये – मिर्जा विलायत हुसैन , मिर्जा इमदाद अली बेग , मीर इन्शा उल्ला , मो0 सरदार खाँ , मीर फरहत अली तथा सेठ उदय करण। यह परिषद नवाब के निजी सलाहकारों से भिन्न थी। नवाब के विशेष सलाहकारों में मिर्जा विलायत हुसैन , मिर्जा गुलाम हैदर खाँ , बन्ने साहब तथा मीर इन्शा उल्ला खाँ प्रमुख थे , जिनका नवाब पर खासा असर था। 1.

बांदा में नवाब का आधिपत्य 13 जून 1857 को हो गया था। इसलिए उसने जमीदारों के नाम घोषणा की –

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अल बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 59 , 60 , 61।

" यदि कोई कत्ल , डाकेजनी , राहजनी या अन्य प्रकार का नुकसान बांदा जिले की सीमा में किया जाता है तो आपके गाँवों के घरों को बरबाद कर दिया जायेगा , जला दिया जायेगा या फिर तोपों से उड़ा दिया जायेगा , यदि आप सरकार की मदद करेंगे तो आपकी हिफाजत की जायेगी और पुरस्कार भी मिलेगा।

ईश्वर की कृपा से यह क्षेत्र देशी शासन के अधीन हो गया है , यहाँ पर नवाब काबिज हैं , इसलिए कोई भी व्यक्ति ब्रिटिश सरकार की आज्ञा का पालन न करें। इसके अतिरिक्त नवाब – दरबार की समय–सारिणी भी निकली। नवाब ने प्रशासन चलाने के लिए अपने एक सौ आदमियों को भेजकर मौदहा से उन्नीस हजार रूपयों का प्रबन्ध कराया। नवाब का सैन्य बल बढ़ रहा था। वह गोरी सेना का वीरता के साथ मुकाबला कर रहा था। इसके साथ ही उसके कुछ पत्रों से , जो दिल्ली सम्राट एवं अन्यों को लिखे गये थे , उसके चिन्तन एवं भावी चेतना का आभास मिलता है।

नवाब ने अपनी सैन्य शक्ति को निरन्तर बढ़ाया , उसने फतेहपुर तथा चरखारी में नियुक्त अपने खास लोगों को भी पत्र लिखे और उनसे बांदा आने का अनुरोध किया , दानापुर के बागियों की मदद से उसका कालिंजर –दुर्ग पर भी आधिपत्य हो गया था।

बांदा - विद्रोह का उत्कर्ष

नवाब ने छतरपुर राजा से भी मदद की पेशकश की किन्तु छतरपुर रानी ने आँग्ल सरकार की सहायता की। 1.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अल बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 65 , 66।

उसने बांदा – विद्रोह के दमन के लिए गोरों को फौजी मदद प्रदान की , जिसका नेतृत्व कै0 गिरफिन ने किया। बांदा के नवाब ने चिल्लातारा घाट पर अपनी सुरक्षा व्यवस्था मजबूत की , साथ ही उसने वहाँ की सभी नावों को पानी में डुबो दिया ताकि अंग्रेज चिल्लातारा घाट को पार न कर सके , उसने महल के चारों ओर खाई खुदवायी , नवाब की फौज मुकाबला के लिए तैयार हो गयी। उसने चिल्लातारा घाट पर पाँच हजार सैन्य कर्मी तैनात कर दिये , नवाब ने तोपों के साथ एक सौ सैनिको को घाट पर अलग से नियुक्त किया , नवाब पेशवा की अनुमति मिलने पर फतेहपुर को भी विजित करना चाहता था। 1.

नवाब ने चरखारी पर आक्रमण करने के लिए तांत्या टोपे की सहायता के लिए सैन्य मदद भेजी , फरवरी 1858 में बांदा में बचे शेष गिरजाघर एवं अन्य आँग्ल भवनों को जनता ने नष्ट कर दिए , नवाब साहब नाना साहब को सारी सूचना भेजता रहता था। उसने नवाब के भाई को चिल्लातारा घाट एवं घाटों पर सुरक्षा की स्थिति से अवगत करा दिया था। बांदा के गुसाईयों में दो गुट हो गये थे , एक नवाब की सहायता कर रहा था , दीन दयाल गिरि नवाब के साथ था , उसने भूरागढ़ दुर्ग में 26 अप्रैल 1858 के सग्रांम में प्रभावी पुरोधत्व का परिचय दिया था। नवाब की भूरागढ़ पराजय पर गिरि को अंग्रेजों ने किले में ही फांसी दे दी थी। इधर विद्रोह लम्बा खिंचने पर नवाब की आर्थिक स्थिति खराब हो रही थी। 2.

नवाव की आर्थिक तंगी बागियों की मदद के मार्ग में रोड़ा बन चुकी थी ,

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अल बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 68 , 69।

2. वहीं , पृ0 सं0 – 69।

अर्थाभाव के चलते नवाब को विद्रोहियों से अपने प्रति अधिक वफादारी की उम्मीद नहीं थी , उधर विटलॉक बांदा – दमन के लिए आगे बढ़ रहा था। ब्रिगेडियर मैकटाफ भी जबलपुर से बांदा की ओर आ रहा था , उसके साथ मि0 कालवेल भी था। कई आँग्ल सेनाधिकारी बांदा के आस–पास के क्षेत्रों में बागियों को बिखेर रहे थे। चरखारी तथा छतरपुर राजा की सेना विटलॉक की सहायता के लिए आ गयी थी। चरखारी नरेश के तीन हजार सैनिक बांदा पहुँच चुके थे। 1.

नवाब के पास वर्तमान में सैन्य शक्ति इस प्रकार थी–

सेना का स्वरूप	संख्या
विद्रोही	1000
विद्रोही पैदल	600
नजीब	100
नई भर्ती के सवार	500
नई भर्ती के पैदल सिपाही	800
तोपे	19
अवध के बागी	700

नवाब ने एक बार बांदा नगर पर आँग्ल आक्रमण को विफल कर दिया था और उनसे चार तोपे भी छीन ली थीं। इस मुठभेड़ में कालवेल बुरी तरह जख्मी हो गया था। कुछ समय बाद कालवेल का देहान्त हो गया था। नवाब को जनरल विटलॉक के सम्बन्ध में पता चला तो बांदा की स्थिति को मजबूत करने के लिए कालिंजर से सेना बुलायी तथा अपनी सेना के पाँच सौ सिपाही मौदहा में तैनात कर दिए थे। 2.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अल बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 70 , 71।
2. वही , पृ0 सं0 – 70 , 71।

बुन्देलखण्ड की क्रांति को दबाने के लिए गोरी सरकार ने नवम्बर 1857 में जनरल विटलॉक को सेना का प्रमुख बनाया था। वह दस जनवरी को काम्पटी आया , वहाँ से वह चलकर 03 फरवरी 1857 को जबलपुर पहुँचा। उसने जबलपुर से 17 फरवरी 1857 को 1900 सिपाहियो के साथ आगे की ओर प्रस्थान किया।

जनरल विटलॉक 26 फरवरी 1857 को अपनी सेना के साथ दमोह पहुँचा। उसे नाना साहब की सबसे अधिक चिन्ता थी। जनरल विटलॉक ब्रिगेडियर कारवेण्टर के अधीन कुछ सेना को रखकर वह दमोह से चलकर 05 मार्च 1857 को सागर आया , वहाँ पर पहले से ही मौजूद ह्युरोज ने सागर को बागियों से मुक्त करा दिया था। विटलॉक ने वहाँ के खजाने को जबलपुर भेज दिया। दमोह से पन्ना पहुँचा , वहाँ से मण्डला गया , उसके बाद वह 06 अप्रैल को चलकर 09 अप्रैल को छतरपुर आ गया। उसे वहाँ मेजर इलिस से सूचना मिली कि झींझन गाँव में दो हजार बागी ठहरे हुए हैं। इस पर जनरल ने रात में ही उस गाँव पर धावा बोलने का मन बनाया , वह 11 अप्रैल को जब झींझन पहुँचा तो सबेरा हो गया था , उसके आगमन की सूचना विद्रोहियों को मिल गयी थी। वे वहाँ से जाने में सफल रहे। शेष बचे बागियों में से 97 शहीद हो गये और 69 को पकड़ लिया गया , जिनमें से 09 को उसी समय फाँसी दे दी गयी। तोपों की मार से झींझन गाँव तथा बागियों के ठहरने के स्थान नष्ट कर दिए गये।

इसके बाद जनरल महोबा होते हुए कबरई पहुँचा , वहाँ पर बागियों ने जनरल की फौज पर जबरदस्त फायरिंग की , जिस पर विटलॉक को अधिक क्षति नहीं हुई। 1.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 72।

उसे वहाँ मालूम हुआ कि नवाब बांदा से आठ मील दूर गोयरा मुगली के मैदान में डटा हुआ है। जनरल की सेना बांदा की ओर आ गयी। नवाब ने अपनी सेना का खुद नेतृत्व किया। जनरल भी 19 अप्रैल को मुगली गाँव के पश्चिम में पहुँच गया। दोनों सेनाओं के बीच मुगली गाँव के पश्चिम भूरागढ़ के मैदान पर घमासान युद्ध हुआ। नवाब ने अपने तीन हजार सैनिक पहले झोंके। उन्होंने जनरल की सेना पर भारी गोली वर्षा की , तोपों का भी प्रयोग हुआ।

गोरी फौज के पास आधुनिक हथियार थे , सेना शस्त्रों से सुसज्जित थी। उसके सामने विद्रोही अधिक समय तक ठहर न सके। 1.

बागी सैन्य दल में अधिकतर सरदार थे , विद्रोही मैदान छोड़कर भाग निकले , नवाब को भी विवश होकर भागना पड़ा , आँग्ल सेना ने विद्रोहियों का केन नदी तक पीछा किया। इस युद्ध में 800 विद्रोही मारे गये। उसकी सेना ने विद्रोहियों का पीछा करते हुए तीन सौ बागियों को भी मौत की नींद सुला दिया , जो विद्रोही पकड़े गये , उन्हें मौके पर ही फाँसी पर लटका दिया गया।

बांदा क्षेत्र के कुछ अन्य विद्रोहीवीर

बांदा के बागी नवाब एवं चित्रकूट जनपद के पेशवा नारायण राव के अतिरिक्त कुछ अन्य विद्रोही वीर हुए हैं , जिन्होंने सत्तावन के समर में बढ़ – चढ़ कर भाग लिया था , जिनके योगदान को नकारा नहीं जा सकता। बांदा क्षेत्र के अन्य प्रमुख सत्तावनी पुरोधा इस प्रकार थे।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 88।
2. वही , पृ0 सं0 – 88।

मीर इंशा अल्ला

यह नवाब की सेना का एक प्रमुख सेनापति था। यह जायस निवासी था , जो बांदा के नवाब की सेना में भर्ती हुआ था। बांदा मे जब विद्रोह उत्कर्ष पर था , उस समय बांदा के नवाब ने मीर इंशा अल्ला को सेना की बागडोर थमायी थी। मीर ने लगभग ग्यारह हजार की सेना का सेनापतित्व किया था।

मानसिंह

बांदा के नवाब की बागी सेना का सेनापति मानसिंह को भी नियुक्त किया गया था। गोरी सेना ने जब लखनऊ मे आक्रमण किया था , उस समय बांदा के नवाब ने मानसिंह के नेतृत्व में एक सैन्य दल को बेगम हजरत महल की सहायता के लिए लखनऊ भेजा था। मानसिंह ने उस युद्ध में शानदार प्रदर्शन किया था। उस संग्राम में मानसिंह घायल हो गया था किन्तु उसका शौर्य जीवन्त रहा था।

दीन दयाम गिरि

1857 के विद्रोह काल में गिरि लोग दो खेमे में बंट गये थे , एक वर्ग अग्रेंजों के साथ था और दूसरा ग्रुप बांदा नवाब के संग था। दीन दयाल गिरि का गुट बांदा नवाब के प्रति वफादार था। उसे बांदा कोष से 589=00 मासिक पेंशन मिलती थी , 1857 के विद्रोह काल में जगत गिरि भाग कर पन्ना पहुँच गया। दीन दयाल गिरि ने जगत गिरि का साथ नहीं दिया , 19 अप्रैल 1858 को बांदा के भूरागढ़ किले में नवाब तथा विटलॉक की सेना के बीच भीषण युद्ध हुआ , जिसमें दीन दयाल गिरि ने प्रभावी पुरोधत्व का परिचय दिया। 1.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ० सं० – 87 , 88।

गिरि को आँग्ल सेना ने पकड़ लिया , उसे 26 अप्रैल 1858 को फांसी पर लटका दिया गया।

सरदार खाँ

बांदा में जब 1857 का युद्ध प्रारम्भ हुआ , उस समय सरदार खाँ बांदा का डिप्टी कलेक्टर था , यह बांदा के नवाब के साथ हो गया। नवाब ने इसे बांदा का निजाम बनाया था। विद्रोह के समय यह बांदा के प्रशासन की देखभाल करता था। यह नवाब का एक प्रमुख सलाहकार भी था। बांदा के पतन के बाद जब नवाब बांदा से भाग गये , उस समय सरदार खाँ ने भी गोरों के समक्ष 12 मई 1858 को आत्म समर्पण कर दिया था।

इनायत हुसैन

इनायत हुसैन सरदार खाँ के पुत्र थे। इनायत हुसैन भी पितानुगामी बन गये थे , जिस समय बांदा में 1857 में विद्रोह हुआ , उस समय यह भी नवाब के साथ जा मिला। 1857 के स्वातन्त्र्य समर में इनायत हुसैन के पास जालौन के दुर्ग की सुरक्षा का दायित्व था। इस दुर्ग पर गुरसराय के जागीरदार ने जब आक्रमण किया। उस आक्रमण काल में इनायत हुसैन को पकड़ लिया गया था। उसे गिरफ्तार कर गोरी सेना को सौंप दिया गया था।इस तरह बांदा के इन वीरों ने सन्तावन के समर में सराहनीय भूमिका निभायी थी। उपर्युक्त शूरों के अतिरिक्त इमदाद अली बेग , मोहम्मद महसूल , सेठ उदय करण , मिर्जा विलायत हुसैन , मिर्जा गुलाम हैदर खाँ , भूरे साहब , मान खाँ , गुलाबराय , खुदाबक्स , शिवबक्स , अहसान अली तथा लियाकत हुसैन ने भी नवाब का कदम से कदम मिलाकर साथ दिया। 1.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 72।

शीला का शौर्य

19 अप्रैल 1858 के भूरागढ़ समर में गोरी –सेना की विजय के साथ ही बांदा का पराभव शूरू हुआ। इस भीषण युद्ध में गोरी फौज के केवल पाँच सिपाहियों को अपनी जान गवानी पड़ी। इसके साथ ही उसके कुछ सैन्य अधिकारी भी घायल हुए , जिनमें कर्नल कालवेल तथा बिग्रेडियर मिलर गंभीर थे। बांदा का नवाब बिवांर से होता हुआ जलालपुर के बेतवा घाट को पार कर कदौरा पहुँचा , अंग्रेज सैनिकों ने बांदा नगर को पाँच दिनों तक लूटा।

बांदा का नवाब पराजित अवश्य हुआ था किन्तु बांदा शहर की एक वीरांगना शीला देवी का शौर्य बुलंदियों में रहा , उसका वीरत्व शोहरत की सुर्खियों में रहा। शीला देवी ने अपनी एक सौ महिला सेनानियों के साथ आँग्ल फौज से सीधा टक्कर ली। गोरी फौज ने तलवार से शीला का सिर काट दिया। इस युद्ध में सभी महिला शूरों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। बांदा का नवाब जब बांदा से विवश होकर जा रहा था तो वहाँ की जनता ने देखा कि वह रो रहा था। रणक्षेत्र से हटते समय विद्रोहियों ने छावनियों में आग लगा दी थी। 19 अप्रैल 1858 के बाद गोरों का बांदा पर पुनः कब्जा हो गया था। गोरों ने नवाब की सारी सम्पत्ति हडप ली , पेंशन जब्त कर ली , उसके ऊपर कई आरोप लगाये गये। 1.

बांदा की विद्रोहाग्नि बुझी नहीं

बांदा के पतन के बाद भी विद्रोही शान्त नहीं हुए। वे बगावत करते ही रहे।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ० सं० – 73 , 74।

डिप्टी कलेक्टर इमदाद अली बेग तथा पैलानी के तहसीलदार मो0 महसूल को 24 अप्रैल 1858 में फाँसी पर लटका दिया गया , इन वीरों ने नवाब बांदा की मदद की थी। विद्रोही अधिक संख्या में एकत्रित होकर भविष्य का ताना – बाना बुनने लगे , बांदा से भागा हुआ कलेक्टर बांदा – पराभव के पुनः बांदा आ गया , उसने 29 अप्रैल 1858 को बांदा का प्रभार पुनः ले लिया। विद्रोही सितम्बर से उपद्रव करते रहे , बागियों के दमन में आँग्ल फौज अभी भी कठिनाई महसूस कर रही थी , बांदा – विद्रोह को दबाना सुगम नहीं था। बांदा क्षेत्र के सत्तावनी समर के शेष विद्रोही मौदहा में एक जुट हुए। मौदहा के आस – पड़ोस के जमींदार भी विद्रोहियों के पक्ष में थे।

मई 1858 में पैलानी परगना के जसपुरा गाँव में 1500 विद्रोही तथा तीस घुड़सवार इकट्ठा हुए। वे इस फिराक में थे कि चिल्लातारा घाट के थाने को कब लूटा जाय। उसके बाद वे अवध में प्रवेश करना चाहते थे। कालपी से भागे हुए विद्रोही महोबा में एकत्रित हो रहे थे। इससे गोरी सरकार चिन्तित होकर महोबा में बिग्रेडियर ने पियर को महोबा की जिम्मेदारी सौंप दी। जनरल विटलॉक ने मेजर डगलस को बांदा – क्षेत्र के गाँवों में जाकर बागियों के सफाये के लिए कहा। इधर विद्रोहियों ने मौदहा किले पर कब्जा कर लिया। इस पर गोरी फौज तथा विद्रोहियों के बीच आमने – सामने की टक्कर हुई , विद्रोही अधिक तक रुक न सके। उन्हें किला खाली करना पड़ा। नवाब शान्त नहीं बैठा था , वह सैन्य शक्ति को संचित कर रहा था। उसके पास छः हजार सिपाही , आठ सौ सवार तथा तीन तोपें थीं। 1.

---

1. राष्ट्रीय अभिलेखागर , पोलटिकल प्रोसिडिंग्स , 4.3.1859 , द्वितीय अनुभाग क्रमांक 493 कैम्प फतेहपुर से मेजर हर्बट के टेलीग्राम , दिनांक 27.12.1858 के आधार पर।

नवाब बांदा के आस – पास के ग्रामीणों को विद्रोह हेतु प्रोत्साहित कर रहा था। गोरे बांदा तथा आस – पास के क्षेत्र में पूरी तरह विद्रोह पर काबू पाने में पूरी तरह सफल नहीं हो रहे थे। कहीं–कहीं पर विद्रोही गोरी फौज पर भारी भी पड़ रहे थे। यमुना का कछार बागियों की धमा – चौकड़ी से अशान्त था , अवध की तरफ से 900 विद्रोहियों का एक दल राजापुर घाट से होता हुआ बांदा में प्रविष्ट हुआ था। बागियों का दबदबा था। वे सुरकी के किले पर काबिज होने का अवसर देख रहे थे। बुन्देलखण्ड के पश्चिम तथा उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में अनेक विद्रोही प्रमुख प्रभावी पुरोधत्व को निभा रहे थे।

उनमें देशपत बुन्देला , नन्हें दिमान , जालौन के बरजोर सिंह और दौलत सिंह प्रमुख थे। वे वीर हमीरपुर तथा दतिया के क्षेत्र में विद्रोह करते थे। विटलॉक ने इस क्षेत्र में शांति – स्थापना हेतु मद्रास फौज के 150 सैनिकों को भी बुला लिया था , भारत के अन्य क्षेत्रों में 1858 में विद्रोह शान्त हो गया था किन्तु बुन्देलखण्ड धधक रहा था। बुन्देलखण्ड में बखतवलीसिंह , फरजंद अली , मुकुन्द सिंह , राधा गोविंद सिंह एवं रणमत सिंह गोरों की नाक में दम किए हुए थे।

नवाब का हथियार डालना

नवाब 1857 के स्वातन्त्र्य समर के प्रमुख पुरोधाओं के साथ रहा , कुछ समय बाद उसने यह अनुभव किया अब संघर्ष करना मुश्किल है , उसका सैन्य बल तथा कामदार भी कमजोर हो रहे थे , उसने 02 नवम्बर 1858 को गवर्नर जनरल को पत्र लिखकर उससे मुलाकात करने की अनुमति चाही। 1.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 69।

नवाब ने 19 नवम्बर 1858 को जनरल माइकल के सामने ओस कुल्ली शिविर में आत्म समर्पण कर दिया। उस समय नवाब के साथ उसका अमला भी था , जिसमें उसका परिवार तथा उसके प्रमुख सहायक थे। गोरी सरकार ने दिसम्बर 1858 में उसे तीन हजार की पेंशन स्वीकृत कर दी। उसे इंदौर रेजीडेन्सी में रहने को आदेशित किया गया। नवाब की माँ को दो सौ पचास रूपये की मासिक पेंशन स्वीकृत की गयी। गोरों ने नवाब के समर्पण के बाद उसकी बेगमों के सभी जेवरात उतरवा लिए थे , जिन्हें इलाहाबाद के खजाने में जमा कराया गया।

स्वाधीनता - संघर्ष और विश्वनाथ वैशम्पायन

बांदा को यदि वीरों की भूमि कहा जाय तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी , यह धरा असि और मसि के मणि – कंचन योग की गवाह रही है , यहाँ पर कलम और कटार दोनों के राही रहे हैं। बांदा के क्रांतिकारियों में एक नाम और महत्वपूर्ण रहा है , जिसने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से ऋषि वामदेव की नगरी का नाम रोशन किया है। राष्ट्र के चोटी के क्रांतिकारियों में शुमार कराने वाले विश्वनाथ वैशम्पायन बांदा नगर के ही थे।

जीवन का ऊषा काल

विश्वनाथ वैशम्पायन का बांदा नगर में 28 नवम्बर 1910 में जन्म हुआ था। विश्वनाथ अपने माँ–बाप के बहुत दुलारे थे , क्योंकि घर में विश्वनाथ से बड़ी एक बहन थी , इन्हें अपने घर में प्रथम पुत्र होने के कारण स्नेहिल लाड़ –प्यार मिला , विश्वनाथ वैशम्पायन की प्रारम्भिक शिक्षा बांदा में ही हुई। 1.

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद , चन्द्रशेखर आजाद , भाग 2 , 3 , मिर्जापुर , क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 16।

इनकी उम्र जब मुशिकल से सात–आठ वर्ष की होगी , उस समय इनके पिता का स्थानान्तरण झांसी हो गया , विश्वनाथ का सरस्वती पाठशाला में प्रवेश हुआ।

सरस्वती पाठशाला में ही देशभक्ति का पाठ पढ़ा

विश्वनाथ वैशम्पायन ने बांदा से प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करके जब सरस्वती पाठशाला पहुँचे तो इन्हें वहाँ पर एक नया परिवेश प्राप्त हुआ। मास्टर रुद्रनायारण उसी पाठशाला में ड्राइंग टीचर थे। मास्टर रुद्रनारायण झांसी में राष्ट्रीयता के जनक थे। उन्होंने ही वहाँ पर युवा वर्ग में राष्ट्रीय चेतना का उद्भव किया। विश्वनाथ के मस्तिष्क पर इसी पाठशाला में देशभक्ति के विचारों का बीजा रोपण हुआ। विश्वनाथ वैशम्पायन पाठशाला में पढ़ने के बाद मास्टर रुद्रनारायण के घर कला सीखने जाते थे। 1.

मास्टर रुद्रनारायण , शचीन्द्र नाथ बख्शी और विश्वनाथ वैशम्पायन

मास्टर रुद्रनारायण केवल विश्वनाथ वैशम्पायन के ही नहीं अपितु बहुत सारे युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत रहे। वैशम्पायन को देशप्रेम की शिक्षा सरस्वती पाठशाला एवं मास्टर रुद्रनारायण से मिली , साथ ही राष्ट्रीयता के बीजारोपण का अंकुरण एवं पल्लवन शचीन्द्र नाथ बख्शी के सानिध्य सलिल से हुआ।

प्रख्यात क्रांतिकारी शचीन्द्र नाथ बख्शी मास्टर रुद्रनारायण के घर ठहरे हुए थे। विश्वनाथ वैशम्पायन मास्टर साहब के घर कला सीखने जाते थे , वहीं पर इनका शचीन्द्र बाबू से परिचय हुआ। बख्शी उस समय क्रांतिकारी दल में नये रंगरूट भर्ती करने के अभियान को अग्रसर करने के लिए झांसी आए थे।

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद , चन्द्रशेखर आजाद , भाग 2 , 3 , मिर्जापुर , क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 17।

बख्शी जी ने वैशम्पायन को क्रांतिकारी दल का सदस्य बनाया , शचीन्द्र बाबू वैशम्पायन से प्रभावित होकर उनके किशोर व्यक्तित्व से सन्दर्भ में कहा था – इस किशोर बालक में अपनी उम्र के नौजवानों से भी अधिक बुद्धि है , उसमें अवस्थित उसका आन्तरिक साहस बाहर से नहीं दिखता था , समय पड़ने पर उसका बाह्य रूप प्रकट होता था , इससे उसके साथी चकित हो जाते थे।

आत्माभिमान के पक्के

विश्वनाथ वैशम्पायन बचपन से ही आत्माभिमानी थे , इसकी पुष्टि उनके बचपन में घटी एक घटना से होती है। बचपन में एक बार वैशम्पायन ने अपनी माँ से पाँच रूपये माँगे। माँ काम में व्यस्त थी , उन्होंने वैशम्पायन को पैसे देते हुए कहा जाओ , अब घर में मुँह न दिखाना। वैशम्पायन पढ़ने पाठशाला गये। स्कूल बंद होने पर उन्हें माँ की बात याद आयी। वे घर कैसे जायें ? माँ ने तो घर आने के लिए मना कर दिया था। वे यह सोचकर सीधे रेलवे स्टेशन पहुँचे। वैशम्पायन की उम्र उस समय लगभग 9–10 वर्ष की थी।

वे दिल्ली जाने वाली गाड़ी में बैठ गये , उनके पास कुछ पैसे भी थे , वैशम्पायन ने कुछ खाया , उसके बाद वे उसी सीट पर सो गये , उनकी जब आँख खुली तो गाड़ी झांसी से रवाना हो चुकी थी । उन्हें माँ की याद सताने लगी , उनकी आँखे भर आयीं , गाड़ी में बैठे सौदागरों ने वैशम्पायन को ढाढ़स बंधाया , मथुरा से झांसी आने वाली गाड़ी को देखकर उनका धीरज टूट गया। वे झांसी आने वाली गाड़ी में बैठ गये। वे घर से निकलने के बाद तीसरे दिन झांसी लौटें एवं शाम को पाठशाला के बाहर पुलिया पर बैठ गये। 1.

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद , चन्द्रशेखर आजाद , भाग 2 , 3 , मिर्जापुर , क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 18।

शाम को उनकी बुआ के लड़के ने उन्हें पुलिया पर बैठे हुए देख लिया , उसने घर में जाकर सूचना दी तब कहीं जाकर वे घर वालों के साथ घर गये। इस तरह से यह सिद्व होता है कि वैशम्पायन आत्माभिमान के पक्के थे। वे अपने स्वाभिमान से कोई समझौता नहीं करते थे।

चन्द्रशेखर आजाद और विश्वनाथ वैशम्पायन

शचीन्द्र नाथ बख्शी मास्टर रूद्रनारायण के घर रुके हुए थे। मास्टर रूद्रनारायण जी का मकान झांसी के मुकरियाना मोहल्ले में था। आजाद एक बार उसी मकान में पहुँचे थे , जहाँ पर शचीन्द्र बाबू ने इनका परिचय आजाद से कराया था। उस समय आजाद लम्बे बाल रखते थे , खादी का कुर्ता तथाा खादी की तहमत बांधते .थे। आजाद ने कुछ दिनों तक एक महंत के अखाड़े में व्यायाम सीखा था , इसी कारण उनका शरीर स्वस्थ एवं कसा हुआ था। आजाद ने वैशम्पायन जैसे दुबले पतले युवाओं को उन्हें व्यायाम करने का सुझाव दिए था।

वैशम्पायन ने उसी मुहल्ले के मकान में पहली बार रिवाल्वर देखा। वहीं पर उन्होंने रिवाल्वर से गोली चलते हुए देखा था। विश्वनाथ वैशम्पायन चन्द्रशेखर आजाद के बहुत ही विश्वसनीय साथी थे। 1.

भुसावल बम केस में सदाशिव और भगवान दास माहौर के गिरफ्तार हो जाने के बाद आजाद ने वैशम्पायन से कहा कि बच्चन (वैशम्पायन का दलीय नाम) अब तक हम चार थे , पर हम अब दो ही रह गये , हालांकि उन दिनों क्रांति – दल में सदस्यों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही थी किन्तु आजाद का यह कहना वैशम्पायन तथा उनके मित्रों के लिए बड़े गौरव की बात थी ,

आजाद का वैशम्पायन तथा उनके मित्रों पर कितना अडिग विश्वास था , उनका यह कथन उस प्रमाण के लिए पर्याप्त है।

एक और घटना है जो यह सिद्ध करती है कि वैशम्पायन के प्रति आजाद का कितना अधिक विश्वास था। आजाद जब झांसी में आकर रहने लगे , उनके पास एक कार भी आ गई तो उन्होंने विश्वानाथ से कहा कि जब कभी फुर्सत का समय होगा तो तुम्हें ड्राइविंग सिखा दूँगा , इस पर वैशम्पायन ने कहा कि आप मुझे गाड़ी चलाने का ढपोरसंखी आर्शीवाद ही देते रहते हैं , जब मौका आता है तो आप मुझे काम पर बाहर भेज देते हैं। इस पर आजाद थोड़ा हँसकर दुःखी मन से बोले कि क्या करूँ भाई जब महत्वपूर्ण काम आता है तो मुझे तुमसे अधिक विश्वसनीय व्यक्ति और कोई दिखता ही नहीं। आजाद के इस कथन के बाद विश्वनाथ वैशम्पायन को आत्मग्लानि हुई , उन्होंने आजाद से क्षमा याचना की। इसके साथ ही उनके प्रति इतने अधिक विश्वास से वैशम्पायन को गर्व अनुभव हुआ।

चन्द्रशेखर आजाद सदाशिव राव मलकापुरकर , भगवान दास माहौर और वैशम्पायन को अपना छोटा भाई समझते थे। इन तीनों के प्रति उनका ममत्व बहुत अधिक था। ऐसा कोई दिन शेष नहीं रहता था जब झांसी – प्रवास काल में इनसे न मिलते हों। 1.

क्रांतिधर्मी संघर्ष और विश्वनाथ वैशम्पायन

विश्वनाथ गंगाधर वैशम्पायन का क्रांतिधर्मी संघर्ष कम महत्वपूर्ण नहीं रहा , वे जब से आजाद के सम्पर्क में आये।

उसके बाद फिर उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा , वे जीवनान्त क्रांतिकारी बने रहे , वैशम्पायन आजाद के साथ अधिकांश रहे। झांसी में जिस समय धर–पकड़ का माहौल था , उस समय वैशम्पायन प्रतापगढ़ में अपने चाचा के यहाँ थे। सदाशिव के पत्र के आधार पर वैशम्पायन तुरन्त ग्वालियर कि लिए रवाना हो गये। विश्वनाथ जब प्रतापगढ़ से चले तो उन्होंने सोचा था कि या तो हम गोली के शिकार होंगे , या फाँसी पर झूलेंगे अथवा आजन्म कारावास सजा भोगेंगे। वैशम्पायन पहले झांसी आये , उसके बाद सदाशिव के बड़े भाई शंकर राव से मिलकर यह जाना कि उन्हें ग्वालियर में कहाँ जाना है ?

उनसे सही पता लेकर वैशम्पायन आजाद के पास ग्वालियर पहुँच गये। विश्वनाथ वैशम्पायन को देखते ही आजाद बोल पड़े तुम आ गये , आप अब अपने घर को भूल जाइये , क्रांतिकारी दल में वैशम्पायन के सक्रिय जीवन का वहीं से प्रारम्भ हुआ। आजाद ने वैशम्पायन से कहा कि मार्ग में अनेक काठिनाइयाँ आयेंगी , डरना नहीं , इस पर विश्वनाथ ने कहा कि आप जैसे मार्ग दर्शक के होते डर किस बात का ? वैशम्पायन ने सोचा कि मेरे जीवन के स्वर्णिम अध्याय का आरम्भ यहीं से हो रहा है।

ग्वालियर की जानकारी बहुत कम सदस्यों को थी , ग्वालियर एक सुरक्षित स्थान था। ग्वालियर के जनक गंज में जो मकान था , वह इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्ट का था , इसमें कई कमरे , एक आँगन व छत थी। इस मकान को भुतहा समझा जाता था , जिसे किराये पर कोई लेता नहीं था। 1.

वैशम्पायन एवं उनके साथियों ने ग्वालियर के इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्ट के मकान को तीन रूपये मासिक किराये पर ले लिया था। ये लोग वहाँ पर दो पैसों में सब्जी – रोटी एक बार खाकर दिन काट लेते थे , कभी – कभी मात्र बेसन उबालकर पेट की क्षुधा को तृप्त कर लेते थे। ग्वालियर के चन्द्रवदनी नाके में क्रांतिकारियों के किराये का मकान था , वहाँ पर जब अन्य क्रांतिकारी आते थे तो वे गजानन सदाशिव पोतदार के खाते में अंकित कराकर हलवाई के यहाँ से भोजन कर आते थे , भगत सिंह तथा सुखदेव ने वहाँ पर कई बार दूध – जलेबी खायी , पोतदार के खाते में एक बार इतनी अधिक रकम लिख गयी कि हलवाई ने इतने मित्रों को खिलाने का उससे कारण पूँछ बैठा किन्तु असेम्बली बम काण्ड के बाद गोरी सरकार द्वारा पूरे देश में भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त के फोटो चिपकाये तथा बांटे गये थे , जिन्हें देखकर रामप्रसाद हलवाई ने पहचान लिया था , हलवाई खुद राष्ट्रप्रेमी था , वह पोतदार के खाते में चुकता लिख देता था , क्रांतिवीरों से पोतदार ने बताया कि हलवाई की ओर से कोई खतरा नहीं है। 1.

ग्वालियर के जनकगंज वाले घर में बम निर्माण की सामग्री तैयार होती थी , उस निर्मित सामग्री में पिकरिक , फल्मिनेट अव मरकरी एवं मैनसिल पोटाश इत्यादि प्रमुख रहती थी , लोहे के बमों में पिकरिक भरकर उन्हें तैयार कर लिया गया था। यह सारी सामग्री भुसावल में सदाशिव और भगवान दास माहौर से बरामद हुई थी। कैलाशपति मुखबिर द्वारा आँग्ल सरकार को यह बताया गया था कि यह सब सामग्री ग्वालियर में तैयार की गयी है। उसने यह भी बताया था कि गजानन को पिकरिक एवं अव फल्मिनेट , अव मरकरी का फार्मूला भी पता था।

सरकार ने पोतदार को गिरफ्तार कर उससे उस प्रकरण के सम्बन्ध में बहुत पूँछताछ की , उसे नौकरी का प्रलोभन भी दिया गया किन्तु उसने कुछ भी नहीं बताया , तब उसे सरकार ने दिल्ली षडयंत्र में फंसा दिया। उसके बाद वैशम्पायन तथा पोतदार पर ग्वालियर षडयंत्र केस के नाम से एक अलग मुकदमा चलाया गया।

ग्वालियर षडयंत्र , पोतदार और वैशम्पायन

ग्वालियर में आजाद के नेतृत्व में बम बनाने का काम बराबर होता रहा , वैशम्पायन , पोतदार तथा उनके मित्र पिकरिक और गन काटन को बनाना सीख लिया था , ये कभी – कभी पैसा न होने पर भोजन से कटोती कर बम बनाने का सामान क्रय करते। ग्वालियर में आजाद ने साथियों से परामर्श कर यह निश्चित किया कि पंजाब , दिल्ली , उ0 प्र0 तथा बिहार क्रांतिपरक संगठन के लिए मुफीद नहीं है , इसलिए कुछ दिन दक्षिण भारत में रहकर सांगठनिक कार्य किया जाय। इस कार्य के लिए वैशम्पायन को आजाद ने अकोला भेजा। उनको सहस्त्र बुद्धे के माध्यम से राजगुरू से सम्पर्क करना था। वैशम्पायन नागपुर होते हुए अकोला गये , वे वहाँ पर सहस्त्र बुद्धे से मिले। उनका वहाँ पर आश्रम था। वहाँ पर राजगुरू आये। वैशम्पायन को देखकर राजगुरू बहुत प्रसन्न हुए। वैशम्पायन ने राजगुरू को आजाद का संदेशा दिया और संगठन की बात की। 1.

वैशम्पायन ने राजगुरू से कहा कि पहले भगवान दास माहौर और सदाशिव आयेंगे , तत्पश्चात आजाद और मैं खुद आऊँगा। वैशम्पायन को यह नहीं पता था कि राजगुरू से यह उनकी अन्तिम भेंट होगी और उनकी दक्षिण भारत में सांगठनिक साध अधूरी रह जायेगी।

एक दिन किसी भितरघाती ने राजगुरू के पुणे के मकान पता बता दिया और पुलिस ने उन्हें रात में मकान पर छापा मारकर गिरफ्तार कर लिया। राजगुरू की गिरफ्तारी के लिए पंजाब से पुलिस को विशेष रूप से भेजा गया था। वैशम्पायन लौटते समय भुसावल की ओर से आये ताकि वे आजाद को पुणे जाने के दोनों ओर के मार्गों का ज्ञान रहे , वे लौट आये और आजाद को सारी स्थिति से अवगत कराया। उसके बाद कुछ समय के लिए ग्वालियर छोड़ने का निश्चय किया गया।

आजाद कानपुर इसलिए पहुँचे थे कि वहाँ से कुछ आर्थिक प्रबन्ध हो जाय ताकि अकोला जाने पर अर्थाभाव की समस्या उत्पन्न न हो जाय किन्तु होना तो कुछ और ही था। वैशम्पायन ने माहौर तथा सदाशिव को झांसी में भुसावल जाने वाली गाड़ी में बैठाकर स्वयं कानपुर के लिए चले। उन्होंने कानपुर पहुँच कर दोनों के झांसी से सुरक्षित निकल जाने की सूचना आजाद को दी। इस सुखद समाचार को दिए हुए एक घण्टा भी नहीं हो पाया था कि वह हर्ष दुःख में तब्दील हो गया। वैशम्पायन ने अखबार खरीदा , जिसके पृथम पृष्ठ पर जैसे ही उनकी नजर पड़ी तो वे स्तब्ध हो गये , क्योंकि उसमें बड़े–बड़े अक्षरों मे भुसावल स्टेशन पर दो युवाओं की गिरफ्तारी सुखियों में छपी थी , उसमें गोली चलने का भी उल्लेख था। वैशम्पायन को समझने में देर न लगी कि वे और कोई नहीं दोनों मित्र ही थे। उन्होंने दुखी मन से वह समाचार पत्र आजाद के समक्ष रख दिया। आजाद भी तुरन्त अनुमान लगा गये कि उसमें क्रांतिकारियों की धर पकड़ का समाचार होगा , उन्होंने उस पर एक सरसरी नजर डाली और शून्य की ओर निहारते रह गये। 1.

आजाद दुखी मन से बोले कि बच्चन (वैशम्पायन) अब हम केवल दो बचे हैं। वे तो गए। इतना कहकर वे द्रवी भूत हो गए , उनकी आँखों में आँसू आ गये। वैशम्पायन को उनके साथ रहते हुए पाँच वर्ष हो गये किन्तु उन्होंने आजाद को इतना कमजोर होते हुए कभी देखा नहीं था। वैशम्पायन के अनुसार चिन्ताकाल में आजाद की चिन्तन शैली कुछ और होती थी , वे एक विशेष शैली में बैठकर समस्या का समाधान निकालकर थोड़ा सा मुस्करा देते थे किन्तु इस बार तो उनके अश्रु मित्रों के बिछोह की एक अलग दास्तान कर रहे थे। वे शोकाकुल थे।

आजाद ने अब अकोला जाने का विचार छोड़ दिया। उन्होंने अपनी योजना बदल दी क्योंकि वे साथियों के गिरफ्तार हो जाने पर साथियों की जानकारी के कार्यक्रम को या तो बदल देते थे या फिर स्थगित कर देते थे।

उस समय आजाद , वैशम्पायन तथा उनके अन्य मित्र कानपुर में ही ठहरे हुए थे। वे सब रामसिंह के मकान में थे। उन्होंने वीरभद्र तिवारी , सद्‌गुरू दयाल अवस्थी , मन्नीलाल पाण्डेय , विश्वनाथ पाण्डेय , हमीद खाँ , कैलाश द्विवेदी आदि के साथ क्रांतिकार्य प्रारम्भ किया। आजाद ने कानपुर से किसी एक साथी को मास्टर रुद्रनारायण के यहाँ झांसी भेजा , वहाँ से सदाशिव के भाई शंकर राव को बुलवाया। उन्हें सदाशिव तथा माहौर के पास भेजा ताकि दोनों के लिए एक अच्छे वकील की व्यवस्था हो सके। उन्होंने सितम्बर 1929 में छपी जब यह खबर पढ़ी कि पूना में राजगुरू भी गिरफ्तार कर लिए गये तो उनकी दक्षिण भारत में क्रांति के संगठन की रही–सही साध भी खत्म हो गयीं , राजगुरू की गिरफ्तारी ने उनको सोचने के लिए विवश कर दिया। 1.

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद , भाग 2 , 3 , मिर्जापुर , क्रांतिकारी प्रकाशन , पृ0 सं0 – 155 , 156।

उनके वास्तविक नाम तथा पते का संज्ञान बहुत कम लोगों को था। लाहौर षडयंत्र में फरार घोषित होने पर उनका नाम रघुनाथ तथा पता बनारस बताया गया था। आजाद को इससे यह लगा कि उसकी गिरफ्तारी के पीछे किसी भितरघाती साथी का ही हाथ है।

आजाद ने क्रांतिकारी संगठन तथा गतिविधियों का केन्द्र कानपुर को बनाया। वीरभद्र तिवारी आजाद के क्रांति–दल में काम करता था किन्तु वह सन्देहास्पद बन चुका था , जिसकी पुष्टि वैशम्पायन तथा शचीन्द्र नाथ बक्सी की की एक मुलाकात के बाद हुई। शचीन्द्र बाबू ने वैशम्पायन को बताया था कि उस समय जेल से कुछ लोगों ने आजाद के पास यह समाचार भेजा था कि वीरभद्र पर विश्वास न किया जाय किन्तु उस समय आजाद ने उस संदेश पर ध्यान नहीं दिया , कालान्तर में उसी वीरभद्र ने उनके लिए काल के सहयोग में सहायक की भूमिका निभायी थी और आजाद को मातृ–वेदी में अपनी आहुति देनी पड़ी थी। 1.

वीरभद्र के दोहरे खेल का संज्ञान आजाद को बहुत बाद में हुआ , तब तक बहुत देर हो चुकी थी। दिल्ली षडयंत्र का मुकदमा प्रारम्भ होने पर पुलिस की गतिविधियाँ कुछ शिथिल हो गयी , इससे आजाद खुलकर इधर–उधर भ्रमण करने लगे। वे अस्त्र–शस्त्र की आपूर्ति हेतु कार्य योजना बनाने लगे। उन्होंने आस–पास के देशी राज्यों से हथियार प्राप्त करने का प्रयत्न भी किया , वे उसमें सफल भी रहे। दतिया और खनिया धाना जैसी रियासतों तो ने उन्हें कई बार हथियारों की आपूर्ति की , जिनमें रिवाल्वर तथा पिस्टल प्रमुख रहते थे। शस्त्रों की आपूर्ति जयपुर से भी की जाती थी।

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर , क्रांतिकारी प्रकाशन पृ0 सं0 – 160 , 161।

सिद्वा महाराज आजाद के दल के सक्रिय सदस्य थे। उनके पास जयपुर में झण्डू फार्मेसी की एजेन्सी थी , वे उस समय जयपुर के राजघराने में दवायें बनाते थे , वहाँ की रसशाला में काम करते थे।

मुक्ति नारायण शुक्ल का धीरे–धीरे वहाँ के राजघराने से परिचय हो गया था , शस्त्रागार के अधिकारियों से भी मित्रता हो गयी थी , विश्वनाथ वैशम्पायन ने वहाँ से एक – दो बार हथियार भी प्राप्त किये थे। मुक्तिनारायण शुक्ल ने आजाद को एक पिस्टल दिया था , जो उनके पास अन्तिम समय तक रहा , उस माउजर से आजाद को बहुत लगाव था। मुक्तिनारायण शुक्ल को वह अमेरिकन पिस्टल महाराज अलवर के सेनापति गंगासिंह जी की पत्नी के इलाज करने के फलस्वरूप भेंट में मिला था , इस तरह वह पिस्टल बाद में शुक्ल जी से आजाद को प्राप्त हुआ था जो उनके पास अंत समय तक रहा।

जयपुर से शस्त्र संग्रह , वैशम्पायन और कल्याणी देवी

विश्वनाथ वैशम्पायान को आजाद ने जयपुर से शस्त्रापूर्ति के लिए भेजा था , वहाँ से हथियार लेकर उन्हें कानपुर पहुँचना था। वैशम्पायन को जिस व्यक्ति से बन्दूकें लेनी थीं , वह समझता था कि यह बन्दूक चला भी पायेगा या नहीं , वैशम्पायन ने राइफल नहीं चलायी थी , केवल दो बोर की बन्दूक से कई बार फायर किये थे। उस सज्जन ने उनसे राइफल चलाने के लिए कहा , वैशम्पायन ने राइफल से दो फायर किए जो दोनों ही सटीक रहे , इस पर खाँ साहब ने , जो वैशम्पायन की परीक्षा लेना चाह रहे थे , उनकी प्रशंसा की , वैद्य जी तो वैशम्पायन के परिचित एवं शस्त्रापूर्ति के माध्यम थे। 1.

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर , क्रांतिकारी प्रकाशन पृ0 सं0 – 162 , 163।

वैशम्पायन को हथियार जयपुर से कानपुर ले जाना था किन्तु उन्हें भय था कि कही जयपुर स्टेशन में आबकारी विभाग न पकड़ ले। इस पर वैद्य तथा वैशम्पायन के बीच यह परामर्श हुआ कि वैद्य जी की पन्ती कल्याणी देवी भी वैशम्पायन के साथ कानपुर जायेंगी। वैद्य जी ने कल्याणी से कहा कि यदि तुम पकड़ ली गयीं तो फिर क्या होगा , इस पर वे बोली कि मैं भी इनके साथ जेल चली जाऊँगी। इस तरह कल्याणी देवी में देशप्रेम जज्बा और जीवटता का अद्‌भुत संगम था। वैद्य जी का राजघराने से अच्छा सम्पर्क था , उन्हें आबकारी विभाग के सिपाही भी जानते थे। सिपाहियों ने स्टेशन में उनकी खैर खबर पूँछी। इस पर वैद्य जी ने वैशम्पायन की तरफ संकेत करते कहा कि यह हमारा भाई है , कानपुर से पढ़ाई छोड़कर भाग आया था। इसे समझा–बुझाकर पुनः कानपुर भेज रहे हैं , इसके साथ में इसकी भौजी और बिटिया भी जा रही हैं , ताकि यह पुनः कानपुर से और कहीं न भाग सके।

वैशम्पायन तथा कल्याणी देवी जब ट्रेन में बैठ गये और गाड़ी चल दी तो उन्होंने वैशम्पायन से कहा कि आपने इतनी गालियाँ कभी भी न खाये होंगे , जितना कि वैद्य जी ने अभी आपके लिए कहा है।

वैशम्पायन की कानपुर तक की यात्रा बहुत सुखद एवं सहज रही , उन्हें पूरे सफर में यह चिन्ता सताती रही कि कहीं पुलिस को शक न हो जाय किन्तु कल्याणी देवी तथा बच्ची के साथ में रहने के कारण किसी ने वैशम्पायन की ओर देखा भी नहीं। वे तीनों कानपुर सुरक्षित पहुँच गये। उन्होंने कल्याणी देवी को उनके घर पहुँचाया और स्वयं अपने निर्धारित स्थान पहुँच गये।

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 163 , 164।

वैशम्पायन जब 14 सितम्बर 1966 को उनके घर पहुँचे तो उन्हें अतीत के स्मरण प्रतिबिम्बित हो उठे। पुलिस ने भेद खुलने पर वैद्य जी को हथियार पहचानने के लिए उन्हें दिल्ली ले गयी भी किन्तु उन्होंने कहा था कि इनमें भी कोई हथियार मेरे पहचान के नहीं दिखते हैं।

वैद्य जी के घर में दुर्गा भाभी कुछ समय तक ठहरी थीं। वे लोग क्रांतिकारियों के प्रति बहुत आत्मीय भाव रखते थे।

आजाद द्वारा वैशम्पायन को लाहौर भेजना

भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त लाहौर जेल में बंद थे। आजाद उन्हें जेल से मुक्त कराना चाहते थे। आजाद को यह बताया गया था कि भगत सिंह तथा दत्त हर रविवार को सेण्ट्रल जेल से बोर्स्टल जेल अपने साथियो से मिलने जाते हैं , कुछ घण्टे वहाँ ठहर कर पुनः वापस आ जाते हैं। दोनों जेल के बीच की दूरी मुश्किल से डेढ़ फर्लांग की होगी। कुछ दिनों में भगत सिंह तथा दत्त को लारी में कड़ी सुरक्षा के बीच लाने – ले जाने का क्रम शुरू हुआ क्योंकि सरकार को यह आशंका थी कि कही क्रांतिकारी दोनों को छुड़ा न लें। 1.

आजाद ने इस स्थिति की जानकारी प्राप्त करने की दृष्टि से एक – दो मित्रों को भेजा भी क्योंकि उस सूचना से आजाद सन्तुष्ट नहीं हुए। अन्त में आजाद ने वैशम्पायन तथा काशीराम को वहाँ की वास्तविकता को जानने के लिए लाहौर भेजा। 2.

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 163 , 164।
2. वही , पृ0 सं0 – 165।

वैशम्पायन ने काशीराम के साथ जाने का निश्चय कर उन्हें यात्रा की जिम्मेदारी सौंप दी क्योंकि काशीराम लाहौर कई बार जा चुके थे। उन लोगों ने जाने की एक रणनीति यह बनायी कि तीसरे दर्जे से न चलकर द्वितीय दर्जे की यात्रा की जाय क्योंकि पुलिस जानती है कम पैसे होने के कारण क्रांतिकारी तीसरे दर्जे से यात्रा करते है। काशीराम ने दिल्ली स्टेशन से टिकट प्राप्त कर ली , वे दोनों प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठ गये। वैशमपायन ने पूँछा कि हम लोग इतना मंहगा सफर क्यों कर रहे है , इस पर काशीराम ने कहा कि एक व्यक्ति प्रथम श्रेणी का टिकट खरीद चुका था , वह बीमार हो गया इसलिए वह टिकट हमें दूसरे दर्जे के किराये में ही मिल गया। वह टिकट अमृतसर तक था , दोनों लोग अमृतसर तक चले तो गये किन्तु वहाँ पर काशीराम उतरकर जब वह लाहौर के लिए टिकट लेने लगा तो उसकी टिकट कलेक्टर ने जाँच कर ली। उसने बताया कि इस टिकट पर एक व्यक्ति यात्रा कर चुका है , टिकट कलेक्टर उससे दिल्ली से अमृतसर तक किराया माँगने लगा , टी० सी० तथा काशीराम बहस करते हुए वैशम्पायन के यहाँ तक पहुँच गये। उस विवाद से वैशम्पायन को पता चला कि टिकट देने वाले व्यक्ति ने काशीराम को ठग लिया था। वैशम्पायन के बहुत समझाने बुझाने तथा अनुरोध करने पर किसी तरह टिकट कलेक्टर मान गया। उसने काशीराम को स्टेशन ले जाकर लाहौर का टिकट दिला दिया। 1.

इस तरह वैशम्पायान तथा काशीराम किसी तरह से उस यात्रा – मुसीबत से बचे। वैशम्पायन ने भविष्य के लिए यह सोचा कि काशीराम पर पूरी तरह निर्भरता उचित नहीं है। वैशम्पायन ने आजाद द्वारा जिम्मेदारी को निभाने का क्रम शुरू किया।

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 166 , 167।

बम का दर्शन और विश्वनाथ वैशम्पयान

वैशम्पायन आजाद द्वारा निर्देशित लाहौर का कार्य करने के बाद कानपुर वापस आ गये। भगवती चरण वोहरा ने (बापू) अमीनाबाद लखनऊ में किराये का एक मकान लिया। वैशम्पायन उस मकान में कई बार गये थे , उसी मकान पर वोहरा ने बम का दर्शन नामक पम्पलेट तैयार किया , जिसे छपाने का दायित्व आजाद ने लिया था , वायस राय की गाड़ी को उड़ाने के प्रयास के बाद गांधी जी ने क्रांतिकारियों के उस कार्य के विरूद्ध कांग्रेस में निंदा का प्रस्ताव पास कराया एवं यंग इण्डिया नामक अपने साप्ताहिक पत्र में "कल्ट ऑफ बम्ब" शीर्षक से एक लेख लिखा , जिसका क्रांतिकारी दल ने मुँह तोड़ जवाब भी दिया था। उन्होंने "बम का दर्शन" नामक पम्पलेट को एक साथ पूरे भारत में बाँटने का निर्णय लिया था। उन्होंने क्रांतिदल की केन्द्रीय समिति में इस प्रकार का एक प्रस्ताव भी पारित किया था , बम का दर्शन नामक पम्पलेट बाँटने की जिम्मेदारी प्रान्तीय संगठनकर्ताओं को सौंपी गयी थी। विश्वनाथ वैशम्पायन ने 26 जनवरी 1930 को कुछ स्थानों पर पर्चे बाँटने का कार्य किया था। 1.

इस पर्चा – वितरण से नवयुवाओं में नव चेतना का जागरण हुआ था , लोगों की क्रांतिदल के प्रति आस्था बढ़ी थी। जनता को यह विश्वास हो गया था कि क्रांतिदल की शाखायें देश भर में व्याप्त है। क्रांतिदल ने 1922 से अब तक जितने भी पर्चे बांटे थे , उनमें यह पर्चा सबसे अधिक प्रभावी एवं प्रमुख था। 2.

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 179 , 180।
2. वही , पृ0 सं0 – 180 , 181।

भगत-दत्त को जेल से मुक्त कराने की योजना और वैशम्पायन

चन्द्रेशेखर आजाद ने भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त को जेल से मुक्त कराने की योजना पर कार्य प्रारम्भ करने का निश्चय किया , भगवती चरण वोहरा भी इसी प्रकार का एक्शन करना चाहते थे , दोनों के एक साथ काम करने से योजना तथा दल दोनों को बल मिला।

आजाद के समक्ष एक समस्या यह थी कि उ० प्र० से जाने वाले क्रांतिकारियों को लाहौर में कहाँ पर ठहराया जाय किन्तु भगवती चरण वोहरा की मदद से यह समस्या भी हल हो गयी। इन्द्रपाल ने लाहौर के कृष्ण नगर मुहल्ले में एक अलग मकान किराये पर लिया , जिसमें भगवती चरण वोहरा , यशपाल तथा वैशम्पायन जाकर रहने लगे , भगत सिंह को छुड़ाने में एक गैस का प्रयोग किये जाने का निश्चय हुआ , जिसे हंसराज नामक व्यक्ति ने तैयार करने का दावा किया था। उस गैस का नाम पिक्टा था , जिससे आसानी से व्यक्तियों को बेहोश किया जा सकता था। 1.

उस समय आजाद को दुर्गा भाभी , धन्वन्तरी , सुखदेव तथा अन्य क्रांतिकारी लाहौर में अपने घरों में रहकर सहयोग कर रहे थे। दुर्गा भाभी , भगवती भाई तथा आजाद के बीच संदेश वाहक का कार्य करती थीं। पिक्टा गैस बनाने के लिए हंसराज ने कोकीन की माँग की , जिसे धन्वतन्री ने लाकर उसे दे दी , इन्द्रपाल ने वह कोकीन हंसराज को दी , जिसने कोकीन को हंसराज तक पहुँचा दी। हंसराज ने आठ दिनों में गैस बनाने का आश्वासन दिया किन्तु आठ दिनों बाद इन्द्रपाल खाली हाथ लौट आया।

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ० सं० – 181 , 182।

उसने क्रांतिदल को बताया कि वह कोकीन अच्छी नहीं थी, कोकीन किसी कालेज की प्रयोगशाला की होनी चाहिए। उस प्रकार की कोकीन केवल कृषि कालेज में थी , जिसे लेने के लिए सुखदेव तथा इन्द्रपाल गये , किन्तु चौकीदार की चौकसी के कारण वे दोनों कालेज से कोकीन नहीं ला सके।

उसके बाद हंसराज को लाहौर के कृष्ण नगर मोहल्ले में बुला लिया गया , उसने लिक्रिस पाउडर बनाया , जिसके फलस्वरूप कमरे में धुआँ भर जाने से हंसराज स्वयं बेहोश हो गया किन्तु भगवती भाई समझ गये कि पिक्टा गैस का नाटक अधिक चलाने से कोई लाभ नहीं है। उन्होंने हंसराज को वहाँ से विदा कर दिया।

जब वैशम्पायन और आजाद पुलिस मुठभेड़ से बचे

चन्द्रशेखर आजाद के लिए कुछ क्रांतिकारी साथियों के मुखबिर बन जाने के कारण इलाहाबाद तथा कानपुर सुरक्षित नहीं थे , अब उनका क्रांति–विस्तार का विचार मध्य भारत में था किन्तु उसके लिए धनराशि की अधिक आवश्यकता थी , आजाद की सोच थी कि रकम प्राप्त के स्त्रोत खोजें जाये। उनकी एक कार कानपुर में पड़ी थी , जिसे बेचने के लिए वे तथा वैशम्पायन कानपुर गये। उस कार की बिक्री की जिम्मेदारी शिवचरण की थी। 1.

सर्दी का मौसम था। आजाद तथा वेशम्पायन ठंड से बचने के लिए लुधियाना के गरम शाल ओढ़े थे किन्तु उनको शाल के अन्दर रिवाल्वर रखने में परेशानी होती थी , इसलिए उन्होंने गरम कोट बनने के लिए कटरा मोहाल में एक दर्जी को दिया था।

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 186 , 187।

वे कोट लेने कटरा गये , उसके बाद स्टेशन पहुँचकर गाड़ी में बैठे। आजाद ने वैशम्पायन से कहा कि तुम लेटना चाहो तो लेट जाओ , मुझे नींद नहीं आ रही है , मैं बैठा रहूँगा। दोनों ने शाल तथा कार्वालिक एसिड ट्रंक में डाल दिया। आजाद ने कानपुर निकट आने पर वैशम्पायन को जगा दिया। वह गाड़ी हमेशा प्लेटफार्म नं0 एक में जाकर रुकती थी , वह उस दिन प्लेटफार्म न0 दो पर जा रही थी , जिसे वहाँ जाता हुआ देखकर वैशम्पायन को आश्चर्य हुआ , उसने झांककर देखा तो उस नम्बर पर सशस्त्र पुलिस कतार में खड़ी थी। उसने आजाद को बताया। आजाद ने पहले तो उस हल्के में लिया किन्तु थोड़ी देर बाद जब उन्होंने स्वयं देखा तो आजाद ने वैशम्पायन को सावधान रहने के लिए कहा , उन्होंने कहा कि हाथ रिवाल्वर पर रहे , संघर्ष होने पर कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ देना।

उन दोनों ने ट्रंक कुली को दिया और सुरक्षित रूप से स्टेशन से बाहर निकल गये किन्तु कुली ट्रंक लिए समय पर नहीं आया। आजाद और वह जैसे ही तांगा पर बैठने जा रहे थे कि कुली पेटी लिए हुए आ गया। आजाद ने उसे देर से आने पर डाटा , जिस पर उसने कहा कि टिकिट कलेक्टर बाक्स के बारे में जानकारी कर रहा था। इस तरह दोनों सयोंग से पुलिस मुठभेड़ से बच गये। 1.

विश्वनाथ वैशम्पायन के साथ वीरभद्र का भितरघात

विश्वनाथ वैशम्पायन वीरभद्र के छल के शिकार हुए , वे जब 10 फरवरी 1931 को इलाहाबाद स्टेशन से कानपुर के लिए चलने वाले थे कि उन्हें स्टेशन पर सदगुरु दयाल अवस्थी मिल गये।

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 189 , 190।

अवस्थी ने वीरभद्र से कहा कि आज मेरा भैय्या से मिलना आवश्यक है। इस पर वैशम्पायन ने उन्हें दस बजे रात को मिलने का समय दिया। वैशम्पायन उसके साथ स्टेशन के बाहर निकले , अवस्थी जैसे ही साइकिल पर वाटर वर्क्स की ओर गये और दिखायी न पड़ने लगे , वैसे ही वैशम्पायन तुरन्त लौटे और गाड़ी पर जाकर बैठ गये , वैशम्पायन ने उसे रात्रि के दस बजे का समय इसलिए दिया ताकि वे तब तक कानपुर पहुँच जायेंगे। उसके बाद वैशम्पायन के बारे में उनको जानकारी नहीं रहेगी। 1.

वैशम्पयन कानपुर पहुँच कर सीधे मुत्सद्दी के घर पहुँचे। वे भी एक दिन पूर्व अपनी पत्नी के साथ कलकत्ते से कानपुर आये थे। वैशम्पयन तथा मुत्सद्दी देर रात तक आपस में विचार – विमर्श करते रहे , वैशम्पायन ने सोने के पूर्व यह निश्चित कर लिया था कि प्रातः जल्दी उठकर मुत्सद्दी का घर छोड़ देंगे ताकि उन्हें वहाँ पर वीरभद्र न खोज सके , वैशम्पायन ने अपनी रणनीति के अनुसार मुत्सद्दी का घर प्रातः छोड़ दिया और मुत्सद्दी के एक रिश्तेदार शिवशंकर के यहाँ जाकर भोजन किया। रामचन्द्र मुत्सद्दी की पत्नी ने बाद में वैशम्पायन से बताया कि उन्हें वीरभद्र ढूढ़ने उसी दिन आया था क्योंकि उसे इलाहाबाद में ही यह सूचना मिल गयी थी कि वैशम्पायन कानपुर गया है। उसे यह भी जानकारी थी कि वैशम्पायन कार की धनराशि लेने शिवचरण के यहाँ जरूर जायेगा। विश्वनाथ वैशम्पायन 11 फरवरी 1931 को दोपहर शिवचरण के घर पहुँचे , उसका कानपुर में कुली बाजाद में घर था। 2.

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 188 , 189 , 190।
2. वही , पृ0 सं0 – 190।

उसके घर का दरवाजा बंद था। वैशम्पायन ने आवाज लगायी , जिस पर शिवचरण स्वयं आया। वह वैशम्पायन को नीचे ले गया , उसने बताया कि यहाँ पर वीरभद्र बैठा है। उसने वैशम्पायन को एक अलग स्थान पर बैठा दिया। 1.

उस समय तक विश्वनाथ वैशम्पायन यह न जान पाये थे कि उन्हें पकड़वाने की छल योजना में शिवचरण भी शामिल है। वीरभद्र दस मिनट बाद शिवचरण के घर से निकल कर बाहर गया , वैशम्पायन ने उसे जाते हुए देखा , शिवचरण उसके बाद वैशम्पायन को अपने घर लेकर गया , वे वहाँ पर डेढ़ घण्टे तक रुके रहे। शिवचरण ने वैशम्पायन से कहा आज शाम चार बजे मोटर लेने वाला व्यक्ति आयेगा , उस कार का सौदा हो जाने पर एक दिन बाद वह व्यक्ति रुपये देगा। आप कल आकर रूपये ले जाइयेगा किन्तु वह व्यक्ति चार बजे तक नहीं आया। वैशम्पायन को शिवचरण तथा उसकी माँ नीचे तक छोड़ने आये। वहाँ एक व्यक्ति भाँग घोट रहा था , उससे शिवचरण ने यह भी कहा कि क्यों गुरू , भाँग छन रही है। वैशम्पायन जैसे ही तिराहे के पास साइकिल पर चढ़ने लगे , वैसे ही वहाँ इर्द–गिर्द पहले से घात लगाये पुलिस वाले उन पर टूट पड़े , उन्हें दबोच लिया गया। विश्वनाथ वैशम्पायन को बाद में पता चला कि भाँग घोटने वाला तथा वे सादे कपड़े पहने लोग और कोई नहीं पुलिस वाले थे। वैशम्पायन ने अपनी गिरफ्तारी के बाद जब शिवचरण की ओर निहारा तो उसका चेहरा सफेद पड़ गया था। वह भी वैशम्पायन को गिरफ्तार कराने के षडयंत्र में हिस्सेदार था , अन्यथा अपने घर से हथियार लाकर वैशम्पायन की सहायता करता।

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 190 , 191।

वैशम्पायन ने जेल जाकर 14–15 फरवरी 1931 को जेल में बन्द सत्याग्रहियों के द्वारा उपर्युक्त छल–वृतांत आजाद के पास पहुँचा दिया था। इस तरह वीरभद्र ने भितरघात कर आजाद को गिरफ्तार करा दिया था। यशपाल ने अपने लेखों में वीरभद्र को बचाने का प्रयास किया है , साथ ही यह भी कहा कि वैशम्पायन का पीछा भूरे सिंह नामक सी0 आई0 डी0 ने किया था किन्तु उसके प्रमाण में वे और कुछ नहीं लिख सके , उस लेख के सन्दर्भ में वैशम्पायन ने कहा कि जब मैं कानपुर में किसी से मिला ही नहीं तो भूरे सिंह कहाँ से आ गया। इससे स्पष्ट होता है कि वीरभद्र के भीतरघात में शिवचरण का पूरा सहभाग था।

यशपाल ने शिवचरण के घर जिस तलाशी का जिक्र किया है , वह बहुत दिनों बाद का प्रसंग है , वह तलाशी एक बम विस्फोट को लेकर हुई थी , जिसमें शिवचरण जख्मी हुआ था , विश्वनाथ की गिरफ्तारी के समय न तो वह गिरफ्तार हुआ और न उसके घर की तलाशी हुई थी , इस सबसे बचने के लिए ही वैशम्पायन को रास्ते में पकड़ने का प्रपंच रचा गया था , अन्यथा परम्परा यह रही है कि जिस पर या जहाँ से क्रांतिकारी को गिरफ्तार किया जा रहा है , वहाँ की तलाशी तथा उस घर के सदस्य गिरफ्तार अवश्य किये जाते रहे हैं , इस तरह के अनेक दृष्टान्त रहें है , जो यह सिद्ध करते है कि किसी क्रांतिकारी को गिरफ्तार करते समय उपर्युक्त प्रकार का ही रवैया अपनाया गया है।

शिवचरण के यहाँ हथियार होते हुए भी उसे गिरफ्तार नहीं किया गया , शिवचरण के यहाँ नीचे मकान में बम ढलते थे फिर भी उसे दिल्ली षडयंत्र के मुकदमे में नहीं लाया गया।

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 191 , 192।

इसका स्पष्ट कारण था कि उस पर वीरभद्र की कृपा थी क्योंकि वीरभद्र पुलिस का गुप्त सहायक बन चुका था , इसीलिए पुलिस उसे लगातार छोड़ रही थी। वीरभद्र ने केवल वैशम्पायन के साथ ही विश्वास घात नहीं किया अपितु वह माँ भारती के अनन्य उपासक आजाद के प्राणों का भी सौदागर बन गया।

वीरभद्र यह अच्छी तरह जानता थी कि वैशम्पायन आजाद का अभिन्न मित्र है , जब तक वैशम्पायन गिरफ्तार नहीं होगा तब तक आजाद विवश होकर बाहर इधर–उधर नहीं घूमेंगे और आजाद को घेरना आसान नहीं होगा। इस तरह यह सिद्ध होता है कि वीरभद्र ने योजनाबद्ध तरीके से वैशम्पायन को जेल पहुँचाया तत्पश्चात् क्रांतिपुत्र आजाद का काम तमाम करवाया।

क्रांतिकारियों की जीवन–गाथा पर क्रांतिकारियों के लेखन में भ्रान्तियाँ एवं भूलों का उल्लेख मिलता है , वैशम्पायन ने , यशपाल जो एक स्वयं क्रांतिकारी थे , के बारे में लिखा है कि उन्होंने अपनी कृति सिंहावलोकन में आजाद के सम्बन्ध में तथ्यों को तोड़ – मरोड़ कर लिखा है , जो उचित प्रतीत नहीं होता है। यशपाल ने प्रकाशवती के सन्दर्भ में भी सिंहावलोकन में यथार्थ नहीं लिखा है , वैशम्पायन ने चन्द्रशेखर आजाद की जीवनी लिखकर यशपाल द्वारा उल्लिखित सिंहावलोकन में अनेक तथ्यों को मनगढंत एवं अपने को पाठकों में प्रभावी होने का जिक्र किया है। यशपाल जैसे एक क्रांतिकारी एवं लेखक के इस आचरण को समीचीन नहीं माना जा सकता है। वैशम्पायन ने अपने कृति अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद में इस तरह के कई दृष्टान्तों का उल्लेख किया है। 1.

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 191 , 192।

रावी नदी के तट का बम - परीक्षण , भगवतीभाई और वैशम्पायन

28 मई 1930 को भगवती चरण , सुखदेव राज तथा वैशम्पायन ग्यारह बजे रावी नदी के तट पर घने जंगल में बम–विस्फोट के लिए गये ,वे जब रावी नदी के किनारे पहुँचे तो उन्होंने अपनी साइकिलें घाट पर ही खड़ी कर दीं , नावों से नदी पार कर घने जंगल में बम–परीक्षण करना था , भगवती भाई (बापू) तथा सुखदेव नावों को खेना जानते थे , उन्हें नावें मिल गयीं , वे सब नदी पार कर घने जंगल में पहुँचे , नावों को घाट के किनारे लगाकर खूटों से उन्हें बांध दिया गया। 28 मई 1930 को बापू बहुत प्रसन्न थे क्योंकि आजाद से मिलकर उन्हें हार्दिक प्रसन्नता हुई थी , उनका विश्वास था कि आजाद से मिलकर गोरी सत्ता से लड़ने में मजा आयेगा , उन्हें यह भी विश्वास था कि भगत तथा दत्त को छुड़ाने की योजना सफल हो जायेगी।

जंगल के एक सुरक्षित स्थान को देखकर सभी लोग वहीं पर ठहर गये , सामने एक बड़ा सा गड्ढा दिखायी दिया , जिसमें बम का परीक्षण करना था। सुखदेव राज ने सबसे पहले बम का परीक्षण करना चाहा किन्तु उसने बम को देखकर कहा कि इसकी पिन ढ़ीली है। उसके बाद वैशम्पायन ने उसे चलाने की इच्छा प्रकट की , इस पर बापू ने बम को हाथ में लेकर देखा और कहा कि तुम लोग पीछे हटो , मैं इसे देखता हूँ। वैशम्पायन तथा सुखदेव राज ने उन्हें मना किया किन्तु वे माने नहीं , अपनी हठ पर अड़े रहे। बापू पिन निकाल कर बम फेंक भी न पाये थे कि बम का विनाशक विस्फोट हो गया , वह विस्फोट उनके हाथ में हो गया , धुअें का गुब्बार छा गया। 1.

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 203।

धुयें के कम होने पर वैशम्पायन ने देखा कि बापू घायल होकर जमीन पर पड़े है। सुखदेव राज के बायें पैर में बम का एक टुकड़ा धंस गया था। इसके बाद उन दोनों ने तय किया दो मे से एक बंगले में जाकर यह सूचना साथियों को दें। सुखदेव सूचना देने चले गये और और वैशम्पायन (बच्चन) बापू भाई के पास रहे। बच्चन उन्हें वन के घने भाग में ले गये ताकि विस्फोट की आवाज सुनकर कोई आये भी तो उसे मालूम न हो सके कि विस्फोट किसने किया है।

बापू भाई को जमीन पर लिटाकर वैशम्पायन ने उनके घाँवों पर पट्टिया बाँधी , उनका एक हाथ कलाई से चला गया था , दूसरे हाथ की उंगलियाँ कट चुकी थीं। इससे भी बढ़कर था उनके पेट में एक बड़े जख्म का होना , जिससे कुछ आँते बाहर निकल आयी थीं। इस पर वैशम्पायन अपने शरीर पर कुछ कपड़ें छोड़कर शेष को फाड़–फाड़कर उनके धाँवों को बांधा था किन्तु उनके शरीर से रक्त स्त्राव बन्द नहीं हो रहा था जो उनके लिए प्राणघातक बना। बापूभाई को बहुत अधिक शारीरिक वेदनाएं थीं फिर भी उनके मुख की मुस्कान वैसी ही थी। यह उनका मृत्यु के प्रति अदम्य साहस था। उस स्थिति को देखकर वैशम्पायन को ऐसा लग रहा था मानों वे स्वयं अपनी मृत्यु का चित्र सामने देख रहे हों। बापूभाई की मूक वेदनायें वैशम्पायन की मानसिक वेदनायें बन रहीं थीं।

बापूभाई के बुरी तरह घायल होने पर वैशम्पायन ने कहा था कि भैय्या आपने यह क्या किया ? इस पर भगवती भाई का उत्तर उनके त्याग एवं तितीक्षा का जीवन्त रूप था – यह अच्छा ही हुआ , यदि तुम दोनों में से कोई घायल हो जाते तो मैं किस तरह अपना मुँह आजाद को दिखाता ? 1.

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद , भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 204 , 205।

यह कथन उनके आत्म बलिदान का उच्चतम आदर्श था। बापूभाई का यह पार्थिव शरीर छोड़ने के पहले का संदेश था। उन्होंने अपनी मृत्यु के पूर्व वैशम्पायन से यह भी कहा था कि मेरा निधन भगत , दत्त के छुड़ाने में बाधा न बने , आप लोग इसे ध्यान रखियेगा , इससे मेरी आत्मा को शांति मिलेगी। बापूभाई ने अन्त में बच्चन से यह कहा था कि भाभी का साथ न छोड़ना।

वैशम्पायन उनकी निरन्तर सेवा करते रहे , उन्हें पानी पिलाते रहें , बीच–बीच में वें गीले कपड़े से उनका मुँह भी पोंछते रहे। वैशम्पायन सोचतें रहे कि शायद बापू भाई की मदद के लिए कोई साथी डाक्टर लेकर आ जाये किन्तु वह उनका चिन्तन साकार न हो सका।

विश्वनाथ वैशम्पायन ने बुरी तरह घायल भगवती भाई को बचाने की हर संभव कोशिश की , उसने छैल बिहारी , इन्द्रपाल तथा क्रांतिकारी वात्स्यायन एवं उनके मेडिकल कालेज में पढ़ने वाले भाई ब्रम्हानंद की भी मदद ली , चिकित्सीय मदद लेकर वैशम्पायन भगवती भाई के यहाँ पहुँचे , तब तक बहुत देरी हो चुकी थी , बापूभाई महाप्रयाण कर चुके थे , अब केवल उन तक क्रांतिकारियों की श्रद्धाजंलि ही पहुँच सकती थी। 1.

भगवती भाई की पत्नी दुर्गा देवी , जिन्हें सभी लोग दुर्गा भाभी के नाम से पुकारते थे , एक स्थान पर निश्चल बैठी थीं , सुशीला दीदी बुझी हुई सी बैठी थीं , आजाद सिर झुकाकर आँसू पोंछ रहे थे , सुखदेव राज पलंग पर घायल पड़ा था। भाभी थोड़ी देर बाद उठीं , सभी को ढाढ़स बँधाने लगीं , वैशम्पायन तथा आजाद ने भाभी को पलंग पर लिटा दिया।

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 204 , 205।

आजाद ने उन्हें धीरज बंधाते हुए कहा कि तुमने तो पार्टी के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया है , हम तुम्हारे प्रति अपने कर्तव्य को कभी भी विस्मृत नहीं होने देंगे।

भगवती भाई को रावी के किनारे एक स्थान पर दफना दिया गया। वे सदा के लिए रावी के तट पर सो गये किन्तु अफसोस कि गद्दार मित्रों ने उन्हें मर कर भी चैन से रहने नहीं दिया , उन्हें शहीद होकर भी शांति नहीं मिली , इन्द्रपाल ने मुखबिर बनने के बाद अपने बयान में बम परीक्षण का पूरा किस्सा बता दिया था , उसने यह भी बताया कि भगवती भाई को कहाँ पर दफनाया गया था। पुलिस ने इन्द्रपाल की मदद से लाश को खोजा , भगवती भाई के अस्थिपंजर को मुकदमें में प्रस्तुत किया। यशपाल ने ही इन्द्रपाल को बापू भाई के दफनाने की बात बताई थी।

यशपाल ने अपनी पुस्तक सिंहावलोकन में भगवती भाई की शहादत के बारे लिखा था कि उनके शव पर बड़े –बड़े पत्थर बांधकर उसे जल में समाधि दे दी गयी या फिर उसे प्रवाहित कर दिया गया। उन्होंने इसलिए यह लिखा ताकि इन्द्रपाल का अपराध जनता की दृष्टि में कम दिखायी पड़े।

वैशम्पायन ने भगत और दत्त को जेल से छुड़ाने के एक्शन में पूरी सिद्दत के साथ भाग लिया , वह एक्शन भले ही असफल रहा हो किन्तु वैशम्पायन आजाद के साथ पूरे मिशन में कन्धे के साथ कंधा मिलाकर चलते रहे। आजाद बापू भाई की शहादत के बाद बहुत दुखी हो गये थे। उनका एक दाहिना हाथ टूट गया था। 1.

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 208।

दिल्ली लौटकर आजाद ने अपने साथियों से विचार–विमर्श करके बम तथा बम मसाला बनाने के लिए दो सुरक्षित स्थानों के बारे में सोचा। उनका बम कारखाना एक दिल्ली तथा दूसरा कानपुर में खोलने का विचार था। आजाद ने आर्थिक संकट को देखते हुए शस्त्रपूर्ति हेतु दिल्ली के कूँचा नटवा में अवस्थित गाड़ोदिया की कोठी में डाका डाला था , जिसमें लगभग तेरह हजार रूपये मिले थे।

यशपाल पर यह आरोप लगा था कि उसने अपने स्वार्थ के लिए प्रकाशवती को घर से निकाल दिया था। उसने पार्टी को यह झांसा दिया था कि प्रकाशो दल के लिए हजारों रूपये लेकर आ रही है किन्तु रास्ते में रुपये गिर गये। उस पर यह दोषारोपाण किया गया कि उसने विवाह के लिए ही प्रकाशो को घर से निकाला था , पार्टी के नियमों के यह विपरीत था कि कोई भी दल का सदस्य विवाह नहीं करेगा, विवाहित लोगों को दल में नहीं रखा जाता था , दल की केन्द्रीय समिति ने यशपाल को प्राणदण्ड की सजा सुनायी थी। कालान्तर में दल के कई क्रांतिकारी सदस्यों के गद्दार हो जाने के बाद केन्द्रीय समिति में यह प्रश्न उठा कि किस–किस को मारा जायेगा। आजाद ने केन्द्रीय समिति को ही भंगकर दिया था। 1.

आजाद ने वैशम्पायन से भाभी के साथ दक्षिण भारत जाने के लिए कहा क्योंकि महाराष्ट्र में सरदार पृथ्वीसिंह आजाद तथा मद्रास प्रान्त में सीताराम राजू सक्रिय थे। इनके क्रांतिदल वहाँ पर काम कर रहे थे।

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 217 , 225।

लेमिंगटन शूटिंग काण्ड और वैशम्पायन

बम्बई में एक लेमिगंटन रोड है , जिस पर पुलिस स्टेशन था , जिस दिन भगत सिंह को फांसी होनी थी , उस दिन क्रांतिकारी ऐक्शन करने को बेचैन हो उठे , उस पुलिस स्टेशन पर अधिकतर ऐग्लों इण्डियन सारजेंट थे , आपस में क्रांतिकारियों ने यह निश्चय किया कि पुलिस स्टेशन पर गोलियाँ चलाना है , इस ऐक्शन के क्रांतिदल के सदस्यों ने एक मित्र से गाड़ी माँगी , उस गाड़ी को चलाने वाला क्रांतिकारियों का मित्र था , रात्रि के लगभग ग्यारह बजे लेमिंगटन पुलिस स्टेशन पर अच्छी रोशनी थी , इन क्रांतिवीरों ने , जिसमें वैशम्पायन , सुखेदव तथा भाभी थे , स्टेशन से निकलने वाले चार सार्जेण्टों पर गोलियाँ दागी , वे वहीं पर लेट गये , इसी बीच वहाँ पर एक मोटर आयी , उसमें से उतरने वालों का भी गोलियों से स्वागत हुआ , जिसमें से एक महिला के टाँग में गोली लगी , जिससे वह जमीन पर गिर पड़ी। 1.

इन क्रांतिकारियों ने कुछ गोलियाँ मोटर के टायरों पर चलायीं , जिससे कि पुलिस वाले उनका पीछा न कर सके , गोली चलाने के बाद लौटने वक्त इन्हें पता नहीं था कि पुलिस से कब टक्कर हो जाये। यह सोचकर ही वैशम्पायन ने अपना बयान अपनी जेब में डाल लिया था , जिसका आशय था कि पुलिस को जिंदा शरीर पर नहीं अपितु मेरी लाश पर अधिकार होगा।

लेमिंगटन शूटिंग काण्ड के चार घण्टे बाद पुलिस ने इस षड़यत्र से जुडे लोगों को खोज निकाला। यह काण्ड आगे चलकर बम्बई षड़यत्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

---

1. विश्वनाथ वैशम्पायन , अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद भाग – 2 , 3 , मिर्जापुर क्रांतिकारी प्रकाशन , 1967 , पृ0 सं0 – 235 , 236।

इस केस में दस क्रांतिकारियों पर मुकदमा चला , जिनमे एक वैशम्पायन भी थे। चार मई 1931 को हाईकोर्ट के फैसले के बाद सभी अभियुक्तों को रिहा कर दिया गया।

इससे यह स्पष्ट होता है कि वैशम्पायन का स्वातन्त्र्य संघर्षी सहभाग बहुत महत्वपूर्ण रहा , वैशम्पायन ने अपने जीवन के 57 वर्षों में से 08 वर्ष बंदी जीवन के रूप में बिताये। हिन्दुस्तान के नामचीन क्रांतिकारियों के साथ वैशम्पायन का प्रतिभाग रहा। वैशम्पायन जी स्वातन्त्र्योत्तर भारत में पत्रकार , साहित्यकार , संगीतकार एवं एक श्रेष्ठ रचनाकार की भूमिका निभाते रहे। मातृभूमि का अनन्य उपासक 1967 में इस लोक से विदा हो गया।

स्वाधीनता संघर्ष और पं० लक्ष्मीनारायण अग्निहोत्री

बांदा एक वीर प्रसवा वसुधा है , यहाँ पर अनेक ऐसे शूर पैदा हुए हैं , जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा में अपने को होम कर दिया , बांदा में कुछ ऐसे पुरोधा भी रहें हैं , जिनकी जन्मभूमि भले ही बांदा न रही हो किन्तु उनकी कर्म भूमि यह अवश्य रही है , जो बांदा के ही होकर रह गये थे , जिन्होंने बांदा के लिए अपना सब कुछ अर्पित कर दिया। पं0 लक्ष्मीनारायण अग्निहोत्री उन्हीं में से एक थे , जो बांदा में जन्में अवश्य नहीं थे किन्तु वे बांदा के ही माने जाते थे।

अग्निहोत्री जी कानपुर जनपद के उस क्षेत्र में पैदा हुए थे , जहाँ पर झण्डा गीत को लिखने वाले श्याम लाल पार्षद जन्में थे। कानपुर का नरवल गाँव था। नरवल में ही अग्निहोत्री जी का 1890 में जन्म हुआ था। पं0 लक्ष्मीनारायण अग्निहोत्री 24 वर्ष की आयु में बांदा पधारे थे। 1.

---

1. डॉ0 कृष्णदत्त अवस्थी (प्र0 संपादक) , कामद क्रांति बांदा , 1972 , पृ0 सं0 – 55।

राष्ट्रीय आन्दोलन 1885 के बाद 1920 तक साढ़े तीन दशकों की यात्रा तय कर चुका था। वह उदारवादी , उग्रवादी और क्रांतिकारी विचार धाराओं से होकर गुजरा था किन्तु 1920 में आन्दोलन को तब बहुत धक्का लगा जब लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का देहावसान हो गया , उस समय देश के मिशन में एक रिक्कता सी आ गयी थी। उस संधिकाल में गांधी जी ने देश का गहनता के साथ अध्ययन किया और असहयोग आन्दोलन जैसे प्रथम प्रभावी अहिंसक संग्राम की शुरूआत की , जिसके अच्छे परिणाम प्राप्त हुए। 1.

पं0 लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री ने गांधी–आन्दोलन से अनुप्राणित होकर बांदा में गांधी –आन्दोलन की अगुवायी का दृढ़ निश्चय कर लिया। अग्निहोत्री जी ने 1920 में राजकीय इण्टर कालेज के अध्यापक पद से त्यागपत्र दे दिया। उन्हें 1920 में दो वर्ष का कठोर कारावास मिला। अग्निहोत्री जी ने तरूणों को तरस्विता का पाठ पढ़ाने की दृष्टि से बांदा के कालूराम , मनसुखराम गोदाम में राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की।

अग्निहोत्री जी के आह्वान पर शंभूदयाल श्रीवास्तव तथा द्वारिका प्रसाद सिन्हा जैसे प्रमुख शिष्यों ने राजकीय विद्यालय से अपना नाम कटाकर राष्ट्रीय विद्यालय में प्रवेश लिया। छात्रों तथा अध्यापकों की रोजी–रोटी के लिए विद्यालय में चुटकिया प्रथा की नींव डाली गयी , जिसके अन्तर्गत वहाँ पर एक कोने में आटा एकत्रित किया जाता था। इस विद्यालय में छात्रों के अन्दर देश–प्रेम कूट–कूट कर भरा जाता था। अग्निहोत्री जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे , उन्होंने गांधी चर्खा , खादी और ग्रामोद्धार को व्यावहारिक रूप देने के लिए मटौंध में बुनकरों को संगठित किया।

---

1. डॉ0 कृष्णदत्त अवस्थी (प्र0 संपादक) , कामद क्रांति बांदा , 1972 , पृ0 सं0 – 55 , 56 , 57।

उन बुनकरों में मनका नामक एक ऐसी बुढ़िया थी जो 80 नं0 के सूत को निकालने में सिद्ध हस्त थी। अग्निहोत्री जी के इस मिशन को आगे बढ़ाने में पं0 मातादीन शर्मा का बहुत बड़ा योगदान रहता था।

अग्निहोत्री जी से प्रभावित होकर बांदा के बहुत से व्यापारी सीधे आन्दोलन में तो नहीं कूदे थे किन्तु आन्दोलन के लिए वे मुक्तहस्त से आर्थिक मदद देते थे। मातादीन शर्मा ने अग्निहोत्री जी तथा वणिक वर्ग के बीच एक कड़ी का कार्य कर महत्वपूर्ण प्रतिभाग निभाया था। अग्निहोत्री ने जेल से मुक्त होकर बालकराम गुप्त जैसे बलिष्ठ युवक को राष्ट्रप्रेम की राह का राही बनाया। अग्निहोत्री जी बांदा जनपद के गांवों का भ्रमणकर युवाओं में चेतना जाग्रत करते थे। उनका स्वयं सेवकों का जत्था गाँव – गाँव में पहुँचता था। शिक्षित लोग स्वतंत्रता प्राप्ति के मिशन का मजाक उड़ाया करते थे।

अग्निहोत्री जी के राजकीय विद्यालय से 1920 में त्यागपत्र देने के बाद उनके साथ विद्यालय छोड़ने वाले छात्रों में चन्द्रभान विभव , मिथिलाशरण , जगन्नाथ कलार , श्याम सुंदर श्रीवास्तव , शंभूनाथ सिन्हा , सत्यनारायण पाण्डेय , मुन्नीलाल अग्रवाल , राधेश्याम सेठ , ब्रज बिहारी लाल सेठ , भगवान दास पुरवार , मदन मोहन पुरवार , भूपेन्द्र निगम तथा मातादीन चौरसिया इत्यादि थे। अग्निहोत्री जी के छात्रों की यह टोली प्रतिदिन प्रातः चार बजे से प्रभात फेरी निकालती थी फिर हर मोहल्ले में धूमकर युवाओं को इकट्ठा कर राष्ट्रगान गाते हुए धूमती थी। उसके बाद दिन भर विदेशी वस्त्रों को एकत्र कर बांदा के कभी माहेश्वरी देवी चौराहे पर तो कभी रामलीला मैदान में कभी चौक में तो कभी कोतवाली के दरवाजे पर तो कभी कचहरी में एक बड़ी होली जलायी जाती थी।

---

1. डॉ0 कृष्णदत्त अवस्थी (प्र0 संपादक) , कामद क्रांति , बांदा , 1967 , पृ0 सं0 – 58 ।

क्रांति चेता अग्निहोत्री जी के इस कार्य में कभी – कभी अधिकारी वर्ग भी अपने विदेशी वस्त्र उतार कर होली में डाल देते थे , वे खद्दर की साफी या लुंगी लपेट कर घर जाने में गौरव अनुभव करते थे।

अग्निहोत्री जी के निर्देशन में एक दिन रामलीला मैदान में एक बहुत बड़ी विदेशी वस्त्रों की होली जलायी गयी , जिसमें करीब एक लाख कीमत के विदेशी वस्त्र जलाये गये , विदेशी वस्त्रों के उस होली दहन मे अग्निहोत्री जी के छात्रों तथा बाबा जीवन दास का प्रमुख हाथ था। उस दिन रामलीला मैदान में बड़ी तादाद में बांदा की जनता ने होली दर्शन किए , साथ ही विदेशी वस्त्रों के प्रयोग न करने का संकल्प भी लिया। क्रांति की इस नई चेतना को जगाने में अग्निहोत्री जी का प्रमुख सहयोग था , उनका कार्यक्षेत्र केवल बांदा ही नहीं था अपितु वे हमीरपुर , बांदा तथा उ0 प्र0 एवं देश के विभिन्न भागो में जाकर खादी प्रचार का अथक प्रयास करते थे। 1.

विभिन्न स्थानों , ग्रामों तथा नगरों में स्थापित खादी भण्डार या गांधी आश्रम की शाखायें भावी आन्दोलनों तथा विशेषकर क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए छावनियों का काम करने लगीं। अग्निहोत्री जी त्यागी एवं तपस्वी थे। वे देशप्रेम के रंग में इतने रंग गये थे कि उन्हें अपने परिवार के सदस्यों का भी कभी–कभी ध्यान नहीं रहता था , बांदा के सभी राष्ट्रीय आन्दोलनों के अगुवा अग्निहोत्री ही थे। अग्निहोत्री जी ने बांदा के क्रांतिकारी आन्दोलन में भी अग्रणी भूमिका निभायी। महादेव भाई तथा रामसेवक खरे बांदा के क्रांतिकारी आन्दोलन के अगुवा थे।

---

1. डॉ0 कृष्णदत्त अवस्थी (प्र0 संपादक) , कामद क्रांति , बांदा , 1972 , पृ0 सं0 – 63 , 64।

अग्निहोत्री जी का इन सबसे बडा निकट सम्बन्ध था। वे इन्हें भी सलाह दिया करते थे। बांदा में क्रांतिकारी आन्दोलन 1930–1933 तक विधिवत चला। लक्ष्मी नरायण अग्निहोत्री जी क्रांतिकारी आन्दोलन में भी सरीक हुए , इन्हें लखनऊ में बंदी बनाया गया था। 1.

पं0 लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री जी बुन्देलखण्ड के संगठन – समिति के प्रमुख संगठनकर्ता थे। बांदा के कांग्रेसी –संगठन का दायित्व अग्निहोत्री जी , कुँवर हर प्रसाद सिंह , विष्णुकरण सेठ और बल्देव प्रसाद रहतिया को सौंपा गया। लक्ष्मीनारायण अग्निहोत्री जी भारत छोड़ो आन्दोलन में भी जेल गये , वे दो वर्षो तक कारावास में रहे। अग्निहोत्री जी जीवन भर त्यागी रहे , वे कष्टसहिष्णु थे। अनियमित भोजन , जेल यातनाओं और अनवरत कार्य साधना से उनका शरीर दुर्बल हो गया था। बौद्विक चिन्तन ने उनके मस्तिष्क को भी कमजोर कर दिया था। गांधी जी को अग्निहोत्री जी की जब इस दशा का पता चला तो उन्होंने उन्हें भाषण न करने की सलाह दी , जिसे अग्निहोत्री जी ने पूरी तरह पालन किया। 2.

15 अगस्त 1947 को देश आजाद हो गया , बांदा में आजादी के पर्व को मनाने के लिए राजकीय उच्चतर मा0 वि0 में एक सभा आयोजित की गयी, जिसकी अध्यक्षता अग्निहोत्री जी ने की। उन्होंने जनता को समय के अनुसार ढलने की सीख दी किन्तु उन्हें अपेक्षित जनसहयोग न मिल सका। उन्होंने 02 अक्टूबर 1947 को रामलीला मैदान में गांधी जयन्ती के अवसर पर अपनी व्यथा को व्यक्त करते हुए कहा–

---

1. डॉ0 कृष्णदत्त अवस्थी (प्र0 संपादक) , कामद क्रांति , बांदा , 1972 , पृ0 सं0 – 67 , 68।
2. वही , पृ0 सं0 – 68।

"साधु अवज्ञा का फल ऐसा , जरै नगर अनाथ का जैसा"

उस भाषण के बाद अग्निहोत्री जी ने बांदा छोड़ दिया। उसके बाद वे बांदा फिर नहीं आये। कुँवर हरप्रसाद की उनसे लखनऊ में भेंट हो गयी , उन्होंने अग्निहोत्री जी से बांदा चलने का आग्रह किया , जिसे उन्होंने स्वीकार भी कर लिया किन्तु विधाता की इच्छा कुछ और ही थी , वे बांदा चलने के लिए चले तो उनका पैर केले के एक छिलके पर पड़ गया , जिससे वे गिर गये। उनकी रीड़ की हड्डी में एक कटीला तार लग गया , जिससे वे टिटनेस की चपेट में आ गये। इस महान त्यागी एवं तपस्वी का 13 दिसम्बर 1947 को निधन हो गया।

स्वाधीनता संघर्ष और कुँवर हर प्रसाद सिंह

बांदा के स्वातन्त्र्य शूरों में कुँवर हर प्रसाद सिंह का एक अलग महत्व था , बांदा के आयुधी आरेख में लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री तथा कुँवर हर प्रसाद सिंह की एक पृथक पहचान थी। हर प्रसाद सिंह का बांदा जनपद के अजयगढ़ में 1883 में जन्म हुआ थ। इनके पिता का नाम हीरालाल सिंह एवं माँ का नाम गौरा देवी था। कुँवर साहब के जन्म के कुछ माह बाद मथुरा प्रसाद खरे का जन्म हुआ। खरे के पिता का नाम प्रागीलाल खरे थे , जो हीरालाल सिंह के मित्र थे। कुँवर हरप्रसाद सिंह तथा मथुरा प्रसाद खरे दोनों ने एक साथ बांदा में अध्ययन करना प्रारम्भ किया , दोनों ने प्रारम्भ में एक विद्यार्थी सभा का आयोजन किया , जिसकी तत्काल सूचना दीवान जी द्वारा राजा साहब को दी , जिसका कुँवर हर प्रसाद सिंह ने विरोध किया , इससे दीवान डर गये। उसके बाद दीवान ने कुँवर तथा खरे के सामने मुचलका लिखा कागज फाड़ डाला। इस पर हर प्रसाद सिंह ने कानून के अध्ययन का संकल्प लिया। 1.

1. डॉ0 कृष्णदत्त अवस्थी (प्र0 संपादक) , कामद क्रांति बांदा , 1972 , पृ0 सं0 – 71 ।

कुँवर ने 1906 में प्लीडर की परीक्षा पास की और बांदा में वकालत करने लगे , बांदा में उस समय आठ वकील थे। माता प्रसाद बांदा के एक प्रसिद्ध मुख्तार थे , जो बहस तथा जिरह में अपना को सानी नहीं रखते थे। कुँवर ने कुंजा तेली के केस के रूप में पहला मुकदमा जीता। हर प्रसाद सिंह की बांदा में वकालत क्रमशः उत्तरोत्तर बढ़ती गयी। जाने माने राष्ट्रनेता तथा हिन्दी के प्रबल पक्षधर राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन जी एक मुकदमे के सिलसिले में 1913 में कुँवर सिंह के घर आये। टण्डन जी ने कुँवर साहब के मुंशी को हिन्दी में काम करने के लिए प्रोत्साहित किया।

कुँवर के मुंशी ने हिन्दी में कार्य करना प्रारम्भ किया , जिस पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पाँचवे अधिवेशन लखनऊ में उन्हें पुरस्कृत किया गया। 1917 में बांदा में नागरी प्रचारिणी पुस्तकालय की स्थापना के पीछे कुँवर साहब का बड़ा योगदान रहा।

कुँवर साहब का बांदा के सार्वजनिक कार्यों के उन्नयन में महती योगदान रहा। कुँवर साहब की कोठी स्वातन्त्र्य शूरों की केन्द्र बन गयी थी। कुँवर ने "परहित सरिस धर्म नहिं भाई" को अपने जीवन का मूल मंत्र मान लिया था। वे विकास संस्कृति के सच्चे पारखी थे।

1920–21 को बांदा में एक राजनैतिक कांफ्रेस आयोजित हुई , जिसमें टण्डन तथा नेहरू पधारे थे। पं0 लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री तथा कुँवर साहब का इस आयोजन में सक्रिय सहभाग रहा। हर प्रसाद सिंह की कोठी राष्ट्रीय विभूतियों के समागम की साक्षी रही।

---

1. डॉ0 कृष्णदत्त अवस्थी (प्र0 संपादक) , कामद क्रांति बांदा , 1972 , पृ0 सं0 – 72।

इन्हें पं0 नेहरू तथा गांधी जी का सानिध्य भी प्राप्त हुआ , कुँवर हर प्रसाद सिंह 1930 से 1942 के बीच कई बार जेल गये। कुँवर साहब की कोठी क्रांतिकारियों के लिये तीर्थ बन गयी थी , जिसकी पुष्टि तत्कालीन गुप्तचर विभाग के कर्मचारी की व्यक्तिगत डायरी से हुई , 1942 के संघर्षी अभियान में कुँवर साहब की भूमिका पर तत्कालीन जिलाधीश मो0 गिल साहब ने कहा था कि कुँवर साहब बहुत खतरनाक व्यक्ति हैं। इस तरह कुँवर हर प्रसाद सिंह का स्वाधीनता आन्दोलन में शानदार सहभाग रहा। उनका 06 जून 1951 को निधन हो गया।

बांदा के क्रांतिकारी आन्दोलन में सहभाग करने वाले क्रांतिकारियों में राजराम रूपौलिहा , बाबा महावीर दास , भगवान भाई पछइहा , मिथिला शरण , गोकुल भाई , महादेव भाई , जमुना प्रसाद बोस , रामगोपाल गुप्त , रामसेवक खरे एवं सरदार प्रेम सिंह के नाम उल्लेखनीय है , जिन्होंने स्वातन्त्र्य आन्दोलन में अग्निधर्मा अगुवायी की।

बांदा की महिला सेनानियों में भगवती देवी , रूप कुमारी , कंचन कुमारी , सावित्री देवी , गंगा बाई , रूक्मिणी बाई , तुलसी देवी , राजकुमारी , सुभदादेवी , कमला देवी , विजयलक्ष्मी एवं रामदेवी के नाम उल्लेखनीय है , इनमें से कुछ ने सशस्त्र संघर्षी भूमिका निभायी।

निष्कर्ष

बांदा का स्वातन्त्र्य संघर्ष का आरेख बहुत ऊँचा रहा , 1857 के स्वातन्त्र्य संघर्ष में बांदा के बागी नवाब अलीबहादुर द्वितीय का योगदान कम महत्वपूर्ण नहीं रहा , उसने उस काल में कई नामचीन देशभक्तों को आजादी के संघर्ष में सहयोग के लिए पत्र लिखे।

किन्तु उन्हें सकारात्मक उत्तर नहीं मिले , इतना ही नहीं देशी रियासतों के राजाओं का सहयोग भी नवाब को वांछित रूप में नहीं मिला। पन्ना नरेश , चरखारी नरेश , रतन सिंह तथा छतरपुर की रानी पूरी तरह अंग्रेज परस्त थीं। छतरपुर रानी ने ऑग्ल सरकार को फौजी मदद भी प्रदान की थी। छतरपुर रानी की सेना तथा ऑग्ल फौज का सेनापति कै0 गिरफिन था , जो क्रांतिकारियों के खात्मे के लिए आठ महीने तक अनवरत प्रयास करता रहा।

बांदा के गुंसाईयों में विभाजन हो गया था। एक गुंसाई गुट नवाब के साथ था , दूसरा अंग्रेज परस्त था। इस तरह की अनेक विसगतियों तथा वैषम्य रहे , जिन्होंने नवाब की शक्ति को क्षीण किया , उसके मिशन को विफल किया , अन्यथा सत्तावन का समर बुन्देलखण्ड को ऑग्ल विहीन कर देता।

19 अप्रैल 1858 का नवाब तथा अंग्रेजों के बीच का भीषण संग्राम निर्णायक सिद्ध हुआ , नवाब की सेना ने गोरों से जबरदस्त टक्कर ली किन्तु आधुनिकतम हथियारों से लैस गोरी सेना के सामने देशी फौज अधिक समय तक रुक न सही। इस घनघोर युद्ध में विद्रोहियों का सर्वाधिक नुकसान हुआ। गोरी फौज की विजय हुई।

नवाब को यदि देशी राज्य के नरेशों का वांछित सहयोग मिल जाता तो देश लगभग 09 दशक पहले ही आजाद हो जाता। संघर्ष के बाद बांदा में कई ऐसे रणबाँकुरे हुए है , जिनका भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष में सराहनीय सहभाग रहा है।

बांदा के सत्तावनेत्तर शूरों में पं0 लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री , कुँवर हर प्रसाद सिंह , मिथला शरण , राजाराम रूपौलिया , महादेव भाई , गोकुल भाई एवं रामसेवक खरे जैसे अनेक क्रांतिकारी हुए है , जिन्होंने बांदा के गौरव को बढ़ाने में अहम् भूमिका निभायी।

स्वाधीनता आन्दोलन में वामदेव की नगरी में केवल पुरुष नाहर ही नहीं हुए है अपितु बांदा की वीरांगना शीला देवी ने एक सौ महिला सेनानियों के साथ अंग्रेजों से टक्कर ली थी , जिसमें सभी महिला क्रांतिकारी शहीद हो गयी थीं। सत्तावन के संघर्ष में महिलाओं के इस योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है।

पंचम् अध्याय

स्वाधीनता संघर्ष और चित्रकूट (कर्वी) के क्रांतिकारी

5

स्वाधीनता संघर्ष और चित्रकूट(कर्वी) के क्रांतिकारी

बांदा से लगभग 70 किमी0 दूर इलाहाबाद मार्ग पर कर्वी नगर अवस्थित है , जो एक आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक नगरी है , कर्वी के समीप चित्रकूट जैसा पावन तीर्थ है , जो विश्व विश्रुत है। चित्रकूट 06 मई 1997 को एक नये जनपद के रूप में अस्तित्व में आया। ऐसी मान्यता है कि महाभारत काल अथवा मराठी सेना का एक अधिकारी कर्वे के नाम पर ही इस नगर का नामकरण कर्वी हुआ। तलछटी पर बसे तरौंठा का नाम भी ताराहवन के आधार पर पड़ा। पेशवा बाजीराव द्वितीय के भाई अमृतराव को 1803 में कर्वी की जागीर प्राप्त हुई थी। चित्रकूट जनपद का भी स्वाधीनता संग्राम में सराहनीय सहभाग रहा है।

१८५७ का स्वातन्त्र्य समर और चित्रकूट (कर्वी)

वीरभूमि बांदा के स्वातन्त्र्य समर में कूदने पर कर्वी जैसा सांस्कृतिक शहर भला इससे अछूता कैसे रहता ? बाजीराव पेशवा द्वितीय का चचेरा भाई राघोवा का पुत्र अमृतराव 1817 में बनारस से तिरौंहा आया , तिरौंहा आवास के लिए उसे पसंद आ गया। 1842 में अमृतराव तिरौंहा का आधिपत्य अपने पुत्र को देकर वापस बनारस चला गया , जहाँ पर उसकी मृत्यु हो गयी। विनायकराव के कोई सन्तान नहीं थी। उसने एक ब्राम्हण के लड़के नारायण राव को गोद ले लिया। उसने पश्चिमोत्तर प्रान्त के प्रमुख को एक पत्र लिखकर यह आग्रह किया कि नारायण राव को सभी प्रकार के हक एवं सुविधायें प्रदान की जाय। 1.

---

1. डॉ0 रमेशचन्द्र श्रीवास्तव , बुन्देलखण्ड –साहि0 , ऐति0 व सांस्कृतिक वैभव , बांदा , बुन्देलखण्ड प्रकाशन , 1997 , पृ0 सं0 – 25 , 55।

सयोगवंश दोनों में अधिक दिनों तक सौहार्द नहीं रह सका। विनायक राव ने 1853 में कलेक्टर को एक पत्र लिखकर यह सूचित किया कि उनके नारायण राव से सम्बन्ध अच्छे नहीं है। विनायक राव की 06 जूलाई 1853 को मृत्यु हो गयी। उसकी मृत्यु के बाद तिरौंहा की जागीर सरकार ने स्वयं ले ली।

विनायक राव ने प्रथम गोद – पुत्र नारायण राव से असन्तुष्ट थे , उन्होंने अपने दूसरे गोद –पुत्र माधवराव को अपना उत्तराधिकारी घेषित किया। विनायक राव ने अपने दूसरे गोद – पुत्र के वयस्क होने तक के लिए बाबू हरिश्चन्द्र अगवाल , बाबू राधा गोविंद तथा मुकुन्द राव को जागीर की सम्पत्ति के प्रबन्ध हेतु कार्यपालक तथा ट्रस्टी नियुक्त किया। विनायक राव अपनी मृत्यु के कुछ दिन पहले इस वसीयत की सूचना को बुन्देलखण्ड के रेजीडेण्ट तथा आस – पडोस के राज प्रमुखों को भेज दी थी। 1.

इधर विनायक राव की मृत्यु के कुछ दिनों बाद नारायण राव ने कुछ महिला सेवादरों तथा अन्य घरेलू सेवकों की मदद से विनायक राव की पूरी सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया , उसने माधवराव को भी अपने संरक्षण में रख लिया। इससे कार्यपालक तथा ट्रस्टी भी हताश हो गये। उसने अपने मुख्तार को गर्वनर जनरल के पास कलकत्ता इस आशय के साथ भेजा की मृत्यु पूर्व की पेंशन एवं पहले की शेष रकम जो लगभग साढ़े तीन करोड़ हो रही थी , का आदेश निर्गत कराकर लाये। इस पर ब्रिटिश अधिकारियों ने उसे बताया कि वह 1841 तथा 1851 के अधिनियम के मुताबिक प्रमाण पत्र प्रस्तुत करे तभी नारायण राव को भुगतान किया जा सकता है। 2.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पु0 सं0 – 93 , 94।
2. वहीं , पृ0 सं0 – 94।

इतना ही नहीं सरकार की अमृतराव तथा विनायक राव द्वारा जमा प्रतिभूति राशि पर भी नियति खोटी हो गयी। सरकार ने तो पहले केवल चार प्रतिशत इन पर ब्याज देना स्वीकार किया , बाद में उसने वह भी बंद कर दिया। ऑग्ल सरकार ने इन विवादों को निपटाने के लिए कलेक्टर को अधिकृत कर दिया। कलेक्टर से यह कहा गया कि वह पश्चिमोत्तर प्रान्त के ले0 गवर्नर से निर्देश प्राप्त कर ले। सरकार ने जिलाधीश से कहा कि उसने विनायक राव के सभी आवेदनों को खारिज कर दिया है। सरकार ने यह भी दलील दी कि कहीं पर भी हिन्दू कानून में यह उल्लिखित नहीं है कि प्रथम गोद पुत्र के जीवित रहते दूसरे को गोद के रूप में लिया जाय।

सरकार ने कलेक्टर से कहा कि यदि गोद – पुत्रों में विवाद है तो वह न्यायालय से ही समाधित होगा।

सरकार ने अमृतराव के मरने के बाद तिरौंहा की जागीर को जनपद बांदा से संश्लिष्ट कर दिया था किन्तु कर्वी के पेशवा को दीवानी तथा फौजदारी के मामलों में न्यायिक छूट दी गयी थी। नारायण राव के सिपाहियों ने एक जुट होकर उसे सिंहासनरूढ़ कर दिया और यह भी संकेत दिया कि यदि उसकी इच्छा हो तो वह माधवराव को भी गद्दी पर बैठा सकता है। नारायण राव विनायक राव के मरने के बाद उसकी सारी सम्पत्ति पर पहले ही काबिज हो चुका था , उसके बाद उसने कलेक्टर को सूचित कर दिया था कि उसका माधव राव तथा विनायकराव की पुत्री से आपस में समझौता हो गया है , अब कोई भी साम्पत्तिक विवाद नहीं है। 1.

---

1. भगवानदास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बाहदुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 95 , 96।

नारायण राव के द्वारा तिरौंहा की जागीर मिलते ही पोलिटिकल असिस्टेण्ट द्वारा बर्खास्त 399 सिपाहियों को पुनः सेना में रख लिया गया। सरकार ने नारायण राव को पेशवा की उपाधि से विभूषित नहीं होने दिया। नारायण राव सरकार विरोधी हो गया। नारायण राव के विद्रोही होने पर तुरन्त झांसी के मेजर इलिस 8 अक्टूबर 1858 को तरौंहा पहुँचे , उसे बताया गया कि नारायण राव की सेना ने विद्रोह कर दिया है , नारायण के परामर्श के अनुसार सभी सैनिको को परेड पर बुलाया गया। नारायण राव के अंगरक्षकों द्वारा इलिस को बताया गया कि उनका विनायकराव के समय का शेष वेतन का भुगतान कर दिया जाय। इस पर इलिस ने बहुत ही रूखा उत्तर दिया कि नारायण राव केवल 25 सिपाही रख सकते है , शेष सिपाहियों को अलग किया जाता है।

कर्वी के नारायण राव ने 1854 में राधा गोविंद को अपने यहाँ सेवा में रख लिया था। बाबू हरिश्चन्द्र ने अपने अधिकार में खजाना तथा अन्य अधिकार अपने पास रखे , हरिश्चन्द्र स्वयं माधराव का संरक्षक बन गया। उसने खजाने का पच्चीस लाख रूपया पाँच प्रतिशत ऋण पत्रों मे लगा दिया , जिससे सवा लाख वार्षिक ब्याज मिलने लगा। गोविंद राव की तरौंहा में जन विद्रोह फैलाने तथा उसे उकसाने में प्रमुख भुमिका थी।

नारायण राव का पत्र व्यवहार नाना साहब से होता था , 14 जून को बांदा में बगावत हो गयी , इधर 15 जून 1858 को कर्वी के ज्वाइण्ट मजिस्ट्रेट की हत्या कर दी गयी। 1.

पेशवा नारायण राव को जब यह खबर मिली तो उन्होंने कर्वी तथा तरौंहा में यह सूचना प्रसारित करा दी कि कर्वी में ऑग्ल शासन समाप्त हो गया है।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0 – 95 , 96 , 97।

उसके स्थान पर नारायण राव माधवराव का शासन स्थापित हो गया है। उन दोनों ने स्वयं ही 'पेशवा महाराज' एवं श्रीमंत की उपाधि धारण कर ली। नारायण राव ने मृतक ज्वाइण्ट मजिस्ट्रेट की सारी सम्पत्ति हड़प ली। उन्होंने तिरौंहा किले का किलेदार खुदा बक्स को नियुक्त किया। कर्वी में गोरों के प्रति विद्रोह निरन्तर बढ़ रहा था , जिसे देखते हुए रीवाँ के पोलिटिकल एजेण्ट ने 28 जून 1857 को भारत सरकार को पत्र लिखा कि वह 450 पैदल सिपाही , 300 घुड़सवार तथा चार तोपों के साथ कर्वी के विद्रोहियों का दमन करने के लिए जा रहा है। उसने रीवाँ राजा से आकस्मिक व्यय हेतु दस हजार रूपये भी मँगाये।

इधर नारायण राव ने भी अपनी सुरक्षा बढ़ा ली। उसने अपने पास डेढ़ हजार सैनिक तथा 40 तोंपे इकट्ठा कर ली थीं। उसने दानापुर के बागी सिपाहियों के पास खबर भेजी थी कि वे नारायण राव के यहाँ नौकरी कर लें , दूसरी ओर नारायण राव ने गोरी पल्टन के सैनिकों को भी अपनी ओर करने के प्रयास किए। नारायण राव ने रामसहाय पटवारी के भाई को इस कार्य के लिए नागौद भेजा , जहाँ पर 50 वीं पल्टन नियुक्त थी। नारायण राव का जिन गाँवों पर अधिकार था , उनसे राजस्व वसूलता था। नारायण राव के अधीन जितने परगने थे। उन सबसे तहसीलदारों को हटा दिया था।

नारायण राव ने अपनी सैन्य शक्ति में वृद्धि की , उसके पास छः हजार सिपाही तथा आठ तोंपे थीं। नारायण राव ने बांदा नवाब से अनुरोध किया था कि गोरों से मुकाबला के लिए वे दो रेजीमण्ट तथा एक रिसाला तिरौंहा भेज दें। बुन्देलखण्ड का पोलिटिकल एजेण्ट मेजर इलिस जिन दिनों कालिंजर में कैंप डाले था। 1.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0–97 , 98।

उस समय पेशवा ने बरबा तथा पुरैया गाँव को 11 दिसम्बर 1857 को लूट लिया था।

नारायण राव ने इसी तरह 11 जनवरी 1858 को भवानीपुर एवं भगतपुर गाँवों को लूटकर वहाँ के लम्बरदारों को पकड़ लिया। नारायण राव का तरौंहा की जनता पर काफी प्रभाव था , वहाँ की जनता अंग्रेजों के प्रति नाराज थी। नारायण राव के पास सैन्य शक्ति में वृद्वि होकर वह ढाई हजार तक पहुँच गयी थी , 38 तोपे थीं , दस तोंपे तैयार हो रही थीं। नारायण राव ने 500 सैन्यकर्मी राजापुर घाट तथा एक हजार आदमी तथा दो तोंपे मऊ घाट पर लगा दी थी , ताकि समय आने पर ऑग्लों का मुकाबला किया जा सके। उसने दो सौ आदमी बदौसा तथा एक सैन्य कर्मी रघौरा में नियुक्त कर दिए थे। वह पूरी तन्मयता के साथ तरस्विता की तैयारी कर रहा था , गोला , बारूद तथा अन्य अस्त्र–शस्त्र तैयार कराये जा रहे थे , इसी बीच मैहर से भाग कर तोपची आया था , जिसे नारायण राव ने अपने यहाँ रख लिया था।

नारायण राव की रींवाँ रियासत के धीरज सिंह तथा पंजाब सिंह जैसे प्रमुख विद्रोही मदद कर रहे थे , जिनके सहयोग से राव ने रींवा राज्य के कई गाँवों को लूटा , इन विद्रोहियों का सेनापति छतरसिंह था , इस समय तक राव के पास दस हजार सैन्यकर्मी तथा 20 तोंपे हो गयी थीं , जिसके कारण ऑग्ल सेना भी तरौंहा पर हमला करने से डरती थी । राव के पास घनाभाव नहीं था , उसे सहयोग करने के लिए अनेक विद्रोही तैयार हो जाते थे। राव का कामदार राधा गोविंद , रणमत सिंह तथा फरजंद अली के साथ मिलकर पश्चिमी बुन्देलखण्ड में अंग्रेजों की नाक में दम किए था। 1.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0–101।

नैगवाँ गाँव के जागीरदार के मरने के बाद उसकी विधवा वहाँ का प्रबन्ध देखती थी , वह अंग्रेजों के साथ थी , राव ने नैगवाँ पर हमला कर उसे भी लूट लिया , नैगवाँ की 26 मार्च 1858 की मुठभेड़ में वहाँ का मुख्तार मारा गया था। कर्वी के विद्रोह को शांत करने के लिए 17 अप्रैल 1858 को ऑग्ल सेनापति खुद तिरौंहा पहुँवा था , उसके पहुँचने पर वहाँ के विद्रोही पहले जंगल में जाकर छिप गये।

जनरल विटलॉक के तरौंहा से वापस जाने के बाद वहाँ के विद्रोही पुनः सक्रिय हो गये , इसके बाद पेशवा नारायण राव पुनः और अधिक आक्रामक हो गया , राव ने कुछ और गाँवों पर हमलाकर उन्हें नष्ट कर दिया , उसके पास राजापुर घाट , मऊ घाट , बदौसा तथा रघौरा पर तैनात सिपाहियों के अतिरिक्त पच्चीस हजार सैनिक तथा 22 तोंपे थीं। उसका क्षेत्र में प्रभुत्व निरन्तर बढ़ रहा था। कर्वी का 1858 में रू0 16075=00 राजस्व था , जिसे नारायण राव तथा माधव राव वसूलते थे , उनके पास बनारस , हमीरपुर , बांदा तथा कर्वी में ओर भी सम्पत्ति थी।

कर्वी का पतन

नारायण राव के पास सैन्य शक्ति तथा तोंपे होने के बावजूद वह गोरी सत्ता के बढ़ते दबाव से परेशान था। उसने 22 अप्रैल 1858 को नागौद के पोलिटिकल असिस्टेण्ट को एक पत्र लिखा कि वह ऑग्ल विरोधी नहीं है , वह समर्पण को तैयार है। राव का यह पत्र पोलिटिकल असिस्टेण्ट को 30 अप्रैल को प्राप्त हुआ , इस पर पोलिटिकल असिस्टेण्ट ने उसे निर्देश दिया कि वह माधव राव को लेकर बांदा पहुँचे। 1.

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0– 102।

उसने दस दिनों का अवसर माँगा। पोलिटिकल असिस्टेण्ट ने यह मामला गवर्नर जनरल को बताया। गवर्नर जनरल ने कहा कि उसकी जीवनदान की शर्त नहीं मानी जायेगी , उस पर मुकदमा चलेगा , यदि उसकी इच्छा हो तो बांदा आ सकता है। सरकार तो यह चाह रही थी कि राव विद्रोह त्याग दे , वह उसे पकड़ने का पुरजोर प्रयास कर रही थी। सरकार भी राव से बहुत परेशान थी। उसने यह कहा कि राव तथा माधवराव के पास सूचना भेज दी जाय कि उन्हें जीवनदान मिल सकता है बशर्ते उन्हें बुन्देलखण्ड के बाहर किसी अन्य स्थान पर रहना पड़ेगा।

हालात को भांपकर नारायण राव ने आत्मसमर्पण का मामला टाल दिया और दस दिनों के भीतर वह बांदा नहीं आया। वह अपने महल में अस्त्र–शस्त्र एवं रसद आदि सामग्री को एकत्रित करने में जुट गया। तरौंहा के किले में सैन्य व्यवस्था कर दी गयी। उसका कामदार राधा गोविंद ने राव को बराबर गोरों के विरूद्ध उकसाता रहा। 1.

गोरी सरकार ने जब देखा कि नारायण राव अपने वादे से हट रहा है तो उसने तरौंहा तथा कर्वी दोनों स्थानों पर आक्रमण करने का मन बनाया। सेनापति जनरल विटलॉक तो मानों बुन्देलखण्ड में विद्रोह – दमन का बीड़ा उठाये था। उसकी मदद के लिए कुछ सैनिक मानिकपुर से भेजे गये। विटलॉक ने कर्वी के लिए पहली जून 1858 को प्रस्थान किया। राव का कर्वी पर अधिकार था। जनरल विटलॉक ने पहली जून को कर्वी पर कब्जा कर लिया। उसके बाद वह तरौंहा की ओर बढ़ा।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0– 101 , 102।

उस समय राव के पास दस हजार सैनिक थे। विटलॉक 06 जून को चित्रकूट पहुँच गया। 10 जून को मेडकॉफ तथा विटलॉक की सेना आपस में मिल गयी। संयुक्त सेना ने 11 जून 1858 को तरौंहा पर आक्रमण करने की रणनीति बनायी।

जनरल विटलॉक ने अपना एक दूत नारायण राव के पास इस आशय के साथ भेजा कि वह स्वयं राव से मिलना चाहते हैं , इसलिए नारायण राव तथा माधव राव दोनों दीवान के साथ सैन्य शिविर में आ जाये। वे दोनों अपने साथ न कोई हथियार लायें और न ही अपने साथ सिपाही लायें। राव ने कल मिलने की खबर भेज दी। वे दोनों भाई भविष्य को लेकर चिंतित हो गये। उन दोनों को रात भर नींद नहीं आयी। राधागोविंद (दीवान) मध्य रात्रि को उन दोनों भाईयों से मिलने आया , उसने दोनो भाईयों को समझाया कि वे दोनों विटलॉक के कैम्प मे न जाये , आप दोंनो के जाने से गोरी सत्ता बिना गोली – बारूद के ही जीत जायेगी , सम्भव है कि आप दोनों के प्राण खतरे में पड़ जायें , दीवान ने कहा कि हम लोगों के पास गोरी सरकार से लड़ने के लिए आवश्यकता भर का सब कुछ है। 1.

हम लोग यदि गोरों से युद्ध करेंगे तो मन की भड़ास भी निकल जायेगी , अपयश भी नहीं मिलेगा , एक दिन तो सभी को मरना है। दीवान ने कहा कि मैं आपके साथ समर्पण के लिए नहीं जाऊँगा। दीवान ने कहा कि जब तक मुझमे दम है , मैं झुकूँगा नहीं , अकेले लडूँगा। आप मुझे व्यय के लिए अविलम्ब दो लाख रूपये दीजिए , यदि आपने इच्छा से नहीं दिया तो आपसे बलात् ले लूँगा।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0– 105।

वह राव से पाँच हाथी तथा बहुत सा साधन लेकर अपनी सेना के साथ जंगल निकल गया। उसने वहाँ से लगभग 25 किमी0 की दूरी पर एक पहाड़ी में अपना शिविर लगाया।

विटलॉक को राधागोविंद के जंगल में गड़े दो लाख के धन का पता लग गया , उसने उसे खुदवा लिया किन्तु उसे केवल चालीस हजार रूपये तथा कुछ गहने ही हाथ लगे। विटलॉक ने उस धन को नागरिक – विकास के लिए दे दिया। राधागोविंद जब कर्वी से फरार हुआ तो उसने वह धन लेकर परासिन के किले में छिपा दिया था। उसके पास सोना , चाँदी–रुपये तथा तोंपे एवं हथियार भी थे। 1.

इधर नारायण राव ने ज्योतिषी से पूँछा कि विटलॉक से मिलने जाने के लिए कौन सी मुहूर्त शुभ रहेगी ? इस पर ज्योतिषी ने बताया कि प्रातः साढ़े पाँच बजे की लग्न शुद्ध , शेष दिन का समय उपयुक्त नहीं है। इस पर दोनों भाईयों ने प्रातः साढ़े पाँच बजे जनरल विटलॉक के शिविर में जाने का निश्चय किया। उनके साथ लगभग दो सौ अंगक्षकर भी थे। पौ फटने के पूर्व ही ये दोनों भाई पयस्विनी नदी पार कर चुके थे। ये लोग जैसे ही जनरल के शिविर के पास पहुँचे तो उन्हें रोक दिया गया। उनसे कहा गया कि केवल दानों भाई ही पैदल चलकर साहब से भेंट कर सकते हैं। दोनों भाई मजबूर थे। उनके छत्रधारियों को भी रोक दिया गया , जिस समय ये दोनों भाई जनरल के शिविर में पहुँचे , उस समय जनरल भोजन करने के लिए बैठा ही था , ये लोग चार घड़ी तक उसकी खड़े होकर प्रतीक्षा करते रहे।

---

1. भगवान दास श्रीवास्तव , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997 , पृ0 सं0– 107।

भीषण गर्मी थी , किसी ने भी इन्हें बैठने तक को नहीं कहा , ये दोनों भूखे भी थे। दिन ढलते ही साहब शिविर से बाहर निकला और कहा कि सरकार के आदेश से तुम लोगों को कैद किया जाता है , इसके बाद उसने आदेश की तामील के लिए सिपाहियों को आदेश दे दिया। इनके साथ कामदार मुकुन्द राव भी था।

दोनों भाईयों को एक पेड़ के नीचे ले जाया गया , जहाँ पर गोरों के पहरे में उन्हें स्नान एवं भोजनादि की छूट दे दी गयी। दूसरे दिन प्रातः चार बजे पेशवा के महल में पाँचा–छः सौ गोरे तथा देशी सिपाहियों ने आकर महल के सभी परिचारकों को कैद कर लिया। राव की पत्नी एक कमरे में अलग जाकर बैठ गयीं , गोरों ने महल का सामान लूट लिया , सामान इतना अधिक था कि बैलगाडियों की कतार एक कोस तक फैली थी। राव की पत्नी के सभी गहने उतरवा लिए गये। वे अपने एक रिश्तेदार के यहाँ चलीं गयीं।

गोरी सरकार को एक करोड़ का धन प्राप्त हुआ , उसे 38 तोंपे मिली। दूसरे दिन पेशवा के इर्द – गिर्द के बड़े लोगों की हवेलियाँ भी खाली करा ली गयीं। बांदा के विशेष आयुक्त ने 01 सितम्बर 1858 को नारायण राव के खिलाफ मुकदमें में निर्णय देते हुए कहा कि उसका मंशा गोरी सरकार के विरूद्ध युद्ध की नहीं थी।

नारायण राव की सारी सम्पत्ति जब्त करने का ओदश दिया। मि0 मेन ने माधवराव को भी देशद्रोह के अपराध में लिप्त पाया। उसने अपने निर्णय में कहा कि माधवराव की भी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली जाय। उसने मुकुन्द राव को एक वर्ष की कैद व सश्रम सजा दी। 1.

---

1. डॉ0 कृष्ण दत्त अवस्थी , कामद क्रांति , बांदा , 1972 , पृ0 सं0 – 91 , 92।

किन्तु उसने अपने न्यायिक निर्णय में दोनों भाईयों के अतिरिक्त उनके संरक्षकों के सम्बन्ध में सहानुभूति पूर्वक विचार करने की अनुशंसा भी लिखी।

गवर्नर जररल ने मिस्टर मेन द्वारा दिए निर्णय का गंभीरता पूर्वक अध्ययन किया , उसने नारायणराव की सजा कम करके उसे हजारी बाग में मजिस्ट्रेट की देख–रेख में रखने का निश्चय किया। माधव राव की सजा को अन्तिम निर्णय होने के पूर्व तक स्थगित रखने का आदेश दिया। माधव राव के संरक्षक कामदार मुकुन्द राव के दण्ड को कम करके उसके लिये यह विकल्प दिया कि वह राव के साथ उस स्थान पर रहे , जहाँ पर उसे रखा जाय। दोनों भाईयों तथा मुकुन्द राव को बांदा से इलाहाबाद भेज दिया गया , जहाँ से उन्हें हजारी बाग भेज दिया गया। इलाहाबाद से माधव राव तथा मुकुन्द राव को बरेली भेज दिया गया। उसे बरेली के कमिश्नर के संरक्षण में रखा गया। माधव राव के संरक्षक मुकुन्द राव के स्थान पर बालकृष्ण उर्फ अन्ना गोरे को उसका संरक्षक बनाया गया। नारायण राव को आजीवन हजारी बाग में ही रखा गया , उसे सात सौ रूपये की मासिक पेंशन दी जाती थी , राव के पारिवारिक लोग आज भी कर्वी में निवास करते हैं। 1.

चित्रकूट (कर्वी)जनपद केवल सत्तावन के समर में ही अग्निधर्मा नहीं रहा अपितु उसके बाद से स्वातन्त्र्य शूर 1857 के बाद 20वीं सदी के पहले दूसरे तथा तीसरे दशक में स्वातन्त्र्य आन्दोलन में अग्रणी रहें , जिनमें कुछ प्रमुख इस प्रकार है–

---

1. डॉ0 कृष्ण दत्त अवस्थी (प्र0 संपा0), कामद क्रांति , बांदा , 1972 , पृ0 सं0 – 92।

स्वाधीनता संघर्ष और पं० गोदीनशर्मा परिब्राजक

चित्रकूट एक पावन तीर्थ धाम है , यहीं पर श्रीराम ने अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष का उद्घोष किया था , क्रांति का आह्वान किया था। ऐसे प्रणम्य एवं प्रेरणा स्त्रोत भगवान राम के प्रवास स्थल चित्रकूट ने कई स्वातन्त्र्य चेता मातृभूमि की सेवा के लिए दिए , जिन्होंने संघर्षी क्षेत्र में कोई कोर कसर उठा नहीं रखी , उन्ही में से एक गोदीन शर्मा भी थे। पं0 गोदीन शर्मा का 07 फरवरी 1892 को चित्रकूट जनपद के कामता गाँव (चित्रकूट) में जन्म हुआ था। इनके जन्म के साथ ही इनके दुर्भाग्य का भी जन्म हो गया था। इनके धरती पर आगमन के आठ दिन बाद ही इन पर से पितृ छाया उठ गयी। माँ सुधीती देवी ने इनका नाम गरीबदास रख दिया , कालान्तर में इनके गुरु ने इन्हे गोदीन शर्मा नाम दिया था। ये पढ़ने में भी बहुत मेधावी थे , इन्होंने कर्वी में मिडिल तक की शिक्षा प्राप्त की। गोदीन जब मात्र 13 वर्ष की आयु के थे ,तभी इन्होंने कर्वी के रथ यात्रा समारोह मे अपना पहला भाषण किया , यहीं से इनके क्रांतिकारी जीवन का श्री गणेश माना जाता है , ये कर्वी से मिडिल पास करके गवर्नमेण्ट हाईस्कूल में पढ़ने बांदा आये। गोदीन को यहाँ पर प्रमुख स्वातन्त्र्य शूर प0 लक्ष्मीनारायण अग्निहोत्री का सानिध्य मिल गया। 1.

अग्निहोत्री जी द्वारा प्रकाशित पत्र 'सचिव' में गोदीन शर्मा का सक्रिय सहयोग रहा। इन्होंने बांदा पुलिस तथा विद्यार्थियों के संघर्ष में भी बढ़ – चढ़कर भाग लिया , गोदीन बांदा से शिक्षा ग्रहण करने के लिए जब प्रयाग गये तों उन्हें वहाँ पर मालवीय जी का सानिध्य मिला।

---

1. डॉ0 कृष्ण दत्त अवस्थी , (प्र0 संपा0) कामद क्रांति , बांदा , 1972 , पृ0 सं0 – 93।

गोदीन शर्मा ने गांधी जी से प्रभावित होकर विद्यालय छोड़ दिया और कांग्रेस के प्रचार कार्य में जुट गये। इन्होंने अपने एक मित्र शीतला प्रसाद त्रिपाठी तथा रामलाल गुप्त के साथ मिलकर होम रूम लीग के भवन में तिलक विद्यालय की स्थनापन में अहम् सहभाग किया। इनकी कार्य क्षमता एवं निष्ठा को देखकर पं0 जवाहरलाल नेहरु ने गोदीन शर्मा को तिलक स्वराज्य आश्रम का प्रबंधक नियुक्त कर दिया था। पं0 नेहरु इन्हें प्यार में कामरेड कहकर पुकारते थे।

पं0 लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री के आग्रह पर गोदीन शर्मा पुनः बांदा आ गए। शर्मा ने कर्वी में तिलक आश्रम की स्थापना की , जिसमें युगल किशोर सिंह जैसे प्रतिभाशाली देशभक्त शामिल हुए। गोदीन शर्मा पुनः अपने शैक्षिक विकास की ओर उन्मुख हुए। शर्मा बनारस तथा बिहार विद्यापीठ में शिक्षा ग्रहण करने के लिए गये। उस समय डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद जी बिहार विद्यापीठ के प्राचार्य थे , शर्मा जी वहाँ पर कांग्रेस के प्रचार कार्य में लगे रहे , फलतः वे बी0 ए0 प्रथम वर्ष में फेल हो गये , उनकी प्रतिभा को देखते हुए उन्हें बी0 ए0 द्वितीय वर्ष की परीक्षा में बैठने की अनुमति दे दी गयी।

गोदीन शर्मा विद्यापीठ से निकलकर तिविया कालेज दिल्ली तथा हरिद्वार से आयुर्वेद की शिक्षा ग्रहण की , इस समय तक पं0 गोदीन शर्मा एक सच्चे देशभक्त बन चुके थे , शर्मा जब ऋषिकुल हरिद्वार मे थे , उस समय भारतीय हिन्दू शुद्धि महासभा मलकाने राजपूतों को हिन्दु राजपूतों की बिरादरी में मिला रही थी किन्तु उसके मिशन में अर्थाभाव एक बड़ी समस्या थी। हिन्दू महासभा की जर्जर माली हालत को देखकर गोदीन शर्मा ने स्वयं को बेचने की घोषणा की।

---

1. डॉ0 कृष्ण दत्त अवस्थी , (प्र0 संपा0)कामद क्रांति , बांदा , 1972 , पृ0 सं0 – 94 ।

जिसकी पुष्टि सभा की घोषण नं0 4 में प्रकाशित शर्मा जी के पत्र के एक अंश से होती है –

श्रीमान मंत्री भारतीय हिन्दू शुद्धि महासभा , आगरा आप बहुत दिनों से बिछुड़े हुए भाईयों को हृदय से लगा रहे हैं , यह कितनी खुशी की बात है , पर कितने खेद का विषय है कि हिन्दु समाज की ओर से इस परम पुण्य कार्य के लिए उचित आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं हो रही है , ऐसी दशा में मैं विद्यार्थी आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे बेचकर अपना कार्य जारी रक्खें , यदि खरीदने वाला असहयोगी होगा तो अति उत्तम होगा।

निवेदक
गोदीन शर्मा विद्यार्थी
आयुर्वेद कालेज ऋषिकुल
हरिद्वार

यह घोषणा गोदीन शर्मा का समष्टि के लिए व्यष्टि के बलिदान का एक जीवन्त आदर्श है। वे गांधीवादी होते हुए भी एक उग्रवादी क्रांतिकारी थे , ऑग्ल सत्ता के प्रति उनका विरोध था , जो समय – समय पर उनके व्यक्तित्व एक कृतित्व के माध्यम से प्राकट्य प्राप्त करता था। 1.

गोदीन शर्मा महान त्यागी एवं क्रांतिकारी अग्निहोत्री जी के निर्देशन में कांग्रेस के प्रचार कार्य को यही अंजाम देते हुए भी वे क्रांतिकारी कार्यो में अपने को संलग्ल रखते थे। उन्होंने बांदा की अमन सभा में खुलेआम गोरी सरकार की निंदा की थी।

---

1. डॉ0 कृष्ण दत्त अवस्थी , (प्र0 संपा0) , कामद क्रांति , बांदा , 1972 , पृ0 सं0 – 174।

गोदीन शर्मा के इस साहस को ही देखकर अग्निहोत्री जी ने शर्मा जी को "चित्रकूट का शेर" कहकर उनके कर्म की प्रशंसा की थी। शर्मा जी ने लोकमान तथा बुन्देलखण्ड केसरी जैसे अग्निधर्मा समाचार पत्रों का सम्पादन भी किया था।

गोदीन शर्मा ने रियासतों में कांग्रेस के प्रचार कार्य को त्वरा प्रदान करने के लिए चित्रकूट सुधार समिति और 'महावीर दल' नाम संगठनों को खड़ा किया। इन संगठनों के माध्यम से शर्मा जी ने अनेक समाज सुधार के कार्य किए। शर्मा कर्वी सेवा समिति तथा बांदा अध्यापक मण्डल के प्रधानमंत्री भी रहे। वे स्वयं अर्थाभाव से भी जूझते रहे किन्तु अपने लिए कुछ नहीं किया। वे एक सच्चे देशभक्त बने रहे। शर्मा जी ने कई बार जेल–यात्रायें की। शर्मा जी को 1930 में 09 माह की जेल हुई। उसके बाद सोहावल गोलीकाण्ड में शर्मा जी ने जनता का खुलकर पक्ष लिया , फलतः जागीरदार तथा सरकार दोनों उनके विरूद्ध हो गयी। ये एक प्रमुख रियासती विद्रोही भी थे। उन्हें 1934 में 09 माह की सजा मिली। शर्मा जी ईश्वरवादी थे। वे ईश्वर से प्रार्थना करते थे–

दुष्कंटकों से पूर्ण विपिनों में हमारा वास हो।
खाने पड़े पत्ते मगर नहीं दासता का भास हो।

ये अनवरत सक्रिय रहे। इन्हें जागीर कामता रजौला ने पुनः 1937 में 03 माह निष्कासन का आदेश दि0या। शर्मा जी राष्ट्रस्तरीय कार्यो में भाग लेते रहे। इन्हें 1942 में सवा वर्ष की नजर कैद हुई। , जिसे इन्होंने बांदा जेल में काटी। शर्मा जी सांग्रामिक क्षेत्र के अतिरिक्त साहित्यिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में भी अग्रणी रहे। 1.

---

1. डॉ0 कृष्ण दत्त अवस्थी , (प्र0 संपा0) , कामद क्रांति , बांदा , 1972 , पृ0 सं0 – 174 , 175।

वे चित्रकूट आश्रम नामक पत्र के संपादक रहे। इनका ' कलयुग में सतयुग ' नामक नाटक हिन्दी साहित्य की एक उपयोगी धरोहर मानी जाती है। शर्मा जी ने कुछ और भी रचनाएं की। इनका कामता गाँव का निवास इनके त्याग की सच्ची दास्ताँ बयाँ करता है। गोदीन शर्मा ने सदैव राष्ट्रहित को प्रमुखता प्रदान की , गोदीन शर्मा की चोटी के क्रांतिकारियों में गणना होती रही है।

स्वाधीनता संघर्ष और जगन्नाथ प्रसाद करवरिया एवं नारायण दास टेलर मास्टर

कर्वी के स्वातन्त्र्य शूरों में बहुत से ऐसे वीर सेनानी रहे हैं , जिन्होंने हिंसक तथा अहिंसक दोनों ही प्रकार के स्वातन्त्र्य संघर्ष में बढ़–चढ़कर भग लिया है। उनमें से रामबहोरी करवरिया , जगन्नाथ प्रसाद करवरिया एवं नारायण दास टेलर मास्टर के नाम उल्लेखनीय हैं। 1.

जगन्नाथ प्रसाद कर्वी के निकट तरौंहा के करवरिया वंश के एक प्रमुख पुरोधा थे। इनका क्रांतिकारी आन्दोलन में भी सराहनीय सहभाग रहा , क्रांतिकारी आन्दोलन के शीर्ष पुरोधा चन्द्रशेखर आजाद से जगन्नाथ प्रसाद करवरिया की 1921 के असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण बनारस जेल में सजा काटते समय हुई थी। करवरिया ने उस समय भी आजाद की मदद की थी। करवरिया को 'बी' क्लास की जेल मिली थी , उन्हें जेल में जो फल एवं मेवा मिलती थी , वे उसमें से कुछ निकालकर कैदियों तथा उनसे सहानुभूति रखने वाले जेल कर्मियो को दे देते थे ,, आजाद को जब पहली बार छः तथा दूसरी बार बारह बेतों की सजा मिली तो बेंत लगाने वाले कर्मियों में से वह कर्मी भी था , जिन्हें करवरिया फल एवं मेवा देते थे।

---

1. डॉ0 कृष्ण दत्त अवस्थी , (प्र0 संपा0) , कामद क्रांति , बांदा , 1972 , पृ0 सं0 – 176।

उन्होंने उस कर्मी से कह रखा था कि बेंत इस प्रकार लगायें कि चोट अधिक न लगे। उनकी युक्ति रंग लायी और वे अपने उद्देश्य मे सफल रहे। उस समय करवरिया छः माह की जेल बनारस में काट रहे थे।

करवरिया की आजाद से भेंट

करवरिया 1928 में जिला बोर्ड बांदा के सदस्य थे , वे एक स्कूल की जाँच के सम्बन्ध में चिल्ला गये थे , जहाँ पर उनकी कुछ सन्यासियों से भेंट हुई , वे वस्तुतः सन्यासी नहीं थे , अपितु क्रांतिकारी सन्यासी वेश में थे।

उन सन्यासियों में क्रांति शिरोमणि चन्द्रशेखर आजाद भी थे , वे सब चित्रकूट आ रहे थे। करवरिया आजाद को पहचान नहीं पाये। आजाद ने ही करवरिया को पहचाना और अपना परिचय दिया। बनारस के जेल काल में आजाद करवरिया से कहा करते थे कि अवसर आने पर मैं चित्रकूट अवश्य आऊँगा और वह समय आ गया। आजाद उनके साथी तथा करवरिया बांदा आये , फिर वहाँ से वे सब कर्वी गये।

आजाद कर्वी के गणेश बाग में ठहरे

आजाद और करवरिया गाड़ी के एक ही डिब्बे में बैठे , शेष आजाद के साथी अलग – अलग डिब्बों में बैठे। आजाद तथा करवरिया से दो सिपाहियों ने ढेरों प्रश्न किए किन्तु वे आजाद के बारे में कुछ भी जान न सके , करवरिया तथा आजाद के अलग–अलग स्थानों से लिए गये टिकिटों ने भी बहुत साथ दिया , करवरिया उनके साथ कर्वी पहुँचे। उन्होंने चन्द्रशेखर आजाद को पेशवा कालीन आवास गणेश बाग की कोठी में ठहराया। 1.

---

1. डॉ0 कृष्ण दत्त अवस्थी , (प्र0 संपा0) , कामद क्रांति , बांदा , 1972 , पृ0 सं0 – 158।

उस निर्जन कोठी में कोई ठहरने का साहस नहीं करता था , यदा – कदा कोई सन्यासी वहाँ ठहर जाता था।

चन्द्रशेखर आजदा को करवरिया ने वहीं पर ठहराया , करवरिया ने अपने यहाँ से भोजनादि का प्रबन्ध कर स्वयं उन्हें भोजन दे आये। करवरिया ने आजाद के बारे में किसी से भी चर्चा तक नहीं की , फिर भी वे शाम चार बजे जब अपने घर से बाहर निकले तो उन्हें अपने घर के सामने खड़े दरोगा को देखकर बहुत आश्चर्य हुआ।

उन्हें पता चला कि उनका घर चारो ओर से पुलिस घेरे है। करवरिया ने दरोगा जी को पूरे सम्मान के साथ बैठाया। उस समय उनकी जेब में आपत्तिजनक डेढ़ पृष्ठ के कागज पड़े थे , वे जिसको कतरी हुयी सुपाड़ी के साथ धीरे – धीरे चबा गये , दरोगा जी नहीं जान पाये। आजाद उस दिन करवरिया के घर नहीं आये , पुलिस ने उनके घर की तलाशी तो नहीं ली किन्तु वह तभी हटी जब उसे विश्वास हो गया कि करवरिया के घर में कोई बाहरी व्यक्ति नहीं है। करवरिया जी को जैसे ही अवसर मिला , वे तुरन्त आजाद के पास पहुँचे और उन्हें उस समय घटी घटना की सूचना दी , आजाद ने इस पर कहा कि मैं तो सदैव सतर्क रहता हूँ। उसके बाद आजाद कभी देवांगना में रहें तो कभी जानकी कुण्ड में , वे कभी कभी गणेशबाग भी आ जाते थे। उन्हें चित्रकूट का जंगल तथा वहाँ की पहाड़ियाँ अपने मिशन के लिए बहुत उपयोगी लग रही थीं , इसी कारण वे कुछ ऐसे गुप्त स्थान वहाँ पर बनाना चाहते थे जो कि अवसर आने पर उपयोग मे आ सके और पुलिस उन्हें खोज न सके।

---

1. डॉ0 कृष्ण दत्त अवस्थी , (प्र0 संपा0) , कामद क्रांति , बांदा , 1972 , पृ0 सं0 – 176।

करवरिया जी का आजाद से सम्पर्क होने के बाद उनके क्रांतिधर्मी संगठन से भी सम्पर्क हुआ , वे उनके एक – दो एक्शन में साथ गये , किन्तु वे पूरी तरह उनकी कसौटी में खरे नहीं उतरे , फिर भी उनका क्रांतिकारियों से अनवरत सम्बन्ध बना रहा। करवरिया जी के मकान में क्रांतिकारी आते रहे। वे उनका यथा संभव सहयोग करत रहे।

नारायण दास टेलर मास्टर भी कर्वी के एक जुझारु स्वातन्त्र्य वीर रहे हैं। वे मूलतः तो रूडकी के थे किन्तु 27 वर्ष की उम्र में कर्वी में आकर बस गये थे , वे तब से कर्वी के होकर रह गये थे। टेलर मास्टर का स्वाधीनता संघर्ष में सराहनीय सहभाग रहा। टेलर मास्टर ने रामबहोरी करवरिया के साथ मिलकर सराहनीय संघर्ष किया। उनका विदेशी वस्त्रों की होली जलाने में अग्रणी सहयोग रहा। नयी बाजार कर्वी की धर्मशाला मे टेलर मास्टर के ही नेतृत्व में सत्याग्रहियों का कैम्प चलता थ। मास्टर साहब भाषण करने में माहिर थे। पुलिस का गुप्तचर विभाग मास्टर साहब पर कड़ी निगरानी रखता था। नारायण दास पुलिस को चकमा देने में भी पारंगत हो गये थे। 1.

टेलर मास्टर का ऑग्लों से सख्त विरोध रहता था। उनके दृढ़ निश्चय को इन पक्तियों मैं देखा जा सकता –

अब भेड़ बकरी बनकर न हम रहेंगे।
कर देंगे जालिमों का हम खत्म जुल्म ढाना।।

नारायण दास टेल मास्टर ने जेल – यातनाओं को भोगा , जेल के अत्याचारों एवं अव्यवस्थाओं के विरोध में अनशन भी किए। टेलर मास्टर ने इसी दौरान कलेक्टर को तसले से मारा भी जो एक बहुत बड़ा साहसिक कार्य था।

---

1. डॉ0 कृष्ण दत्त अवस्थी , (प्र0 संपा0) , कामद क्रांति , बांदा , 1972 , पृ0 सं0 – 158।

जिस पर उन्हें एक सप्ताह की खड़ी हथकड़ी की सजा मिली। टेलर मास्टर का कई क्रांतिकारियों से भी सम्पर्क रहा। ये उनकी समय–समय पर मदद भी करते रहे। कर्वी वस्तुतः स्वातन्त्र्य सेनानियों के सम्बन्ध में काफी समृद्व रही है , यहाँ के स्वातन्त्र्य वीरों में रामबहोरी करवरिया , मास्टर सुखवासी लाल , बाबा जीवन दास , जुगल किशोर करवरिया , दीनदयाल करवरिया , रामनेवाज शुक्ल मारकुण्डी , हीरालाल मिश्र ब्यूर , मुरलीधर करवरिया जैसे अनेक देशभक्तों के नाम उल्लेखनीय हैं , जिन्होंने कर्वी की धरती के वास्तविक पुत्र होने का धर्म निभाया।

निष्कर्ष

चित्रकूट (कर्वी) एक नवसृजित जनपद हैं , यहाँ के स्वातन्त्र्य शूर वस्तुतः बांदा के ही पुरोधा थे। कर्वी के पेशवा नारायण राव तथा माधव राव ने सत्तावन के समर में स्वातन्त्र्य संग्राम में सहभाग करने में कोई कोर कसर उठा नहीं रखी , उन्होंने गोरी सेना के सेनापतियों का जमकर मुकाबला किया। उनके सहायकों में राधागोविंद ऐस प्रमुख सहयोगी थे जो गोरों के घोर विरोधी थे। नारायण राव पेशवा की छतरसिंह , रणमत सिंह तथा फरजंद अली पहले से मदद कर रहे थे। नारायण राव ने नवाब बांदा से भी मदद मांगी थी , जो नहीं मिल पायी थी , यदि जनरल विटलॉक का मिलकर सामना किया जाता तो उस संग्राम का परिणाम कुछ और होता किन्तु ऐसा हो न सका।

बांदा का सत्तावन के संघर्ष के बाद भी स्वातन्त्र्य संग्राम में कम योगदान नहीं रहा। इस जनपद के करवरिया परिवार ने मातृभूमि के मुक्ति मिशन में कई स्वातन्त्र्य शूरों को प्रदान किया।

जिनमें रामबहोरी करवरिया , जगन्नाथ प्रसाद करवरिया , जुगुल किशोर करवरिया एवं दीनदयाल करवरिया के नाम उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त गुलाबचन्द्र अग्रवाल , रामनेवाज मारकुण्डी , गोदीन शर्मा , हीरालाल मिश्र व्युर , रामलाल स्वर्णकार , बाबा दीन और वृंदावन इत्यादि ने भी आजादी के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

चित्रकूट जनपद के वीरों का फारेस्ट एक्ट की धारा 25 के उल्लघंन मे भी सराहनीय सहभाग रहा। इस कार्यक्रम के अर्न्तगत चित्रकूट के स्वातन्त्र्य शूर सरकार संरक्षित वनों में से नजदीक के वन में जाकर वृक्ष काटते थे और सरकारी कानून की अवज्ञा करते थे। इस आन्दोलन में पाठा के पुरोधाओं का विशेष योगदान रहा। इस अभियान के अन्तर्गत हीरालाल , रामकिशोर , विश्वम्भर शिवकुमार , बद्री प्रसाद , जयनारायण , गया प्रसाद और कलकैंया की विशेष भूमिका थी।

पं0 परमानंद तथा चन्द्रशेखर के कर्वी – चित्रकूट प्रवास काल में उनसे यहाँ के कई क्रांतिकारी जुड़े और आजादी के युद्ध में अपने को आगे रखा। उन क्रांतिकारियों में से महन्तराम रमन दास , गणेश दास एवं मंगली प्रसाद रिछारिया इत्यादि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

इस तरह से अन्त कहा जा सकता कि कर्वी भी स्वातन्त्र्य आन्दोलन एक प्रमुख स्थान रहा है। इस नवोदित जनपद का स्वातन्त्र्य संघर्ष में सराहनीय सहयोग रहा है , जिसे नकारा नहीं जा सकता।

षष्ठम् अध्याय

स्वाधीनता संघर्ष और जालौन (उरई) के क्रांतिकारी

स्वाधीनता संघर्ष और जालौन(उरई) के क्रांतिकारी

झांसी मण्डल के जनपदों में जालौन एक प्रमुख जनपद है , जिसका साहित्यिक , सांस्कृतिक , आध्यात्मिक एवं सांग्रामिक क्षेत्र में आरेख बहुत ऊँचा रहा है, जालौन (उरई) का अतीत भी गौरवशाली रहा है। इसके नामकरण को लेकर भी मतभिन्नता है। इस सम्बन्ध में दो प्रमुख मान्यताएं हैं – पहली मान्यता के अनुसार जालौन को जालिम नामक ब्राम्हण ने बसाया था। इस जनपद का पहले नाम जालवन था , जो कालान्तर में जालौन के रूप में परिवर्तित हो गया। दूसरी मान्यतानूसार यहाँ जालवन मुनि का आश्रम या स्थान था , जिसके कारण यह क्षेत्र जालवन कहलाने लगा , जो बिगड़कर आगे चलकर जालौन के रूप में तब्दील हो गया। 1. जालौन (उरई) जनपद ने भी कई चरणों या पड़ावों को पार किया है। यह जनपद आध्यात्मिक दृष्टि से विश्रुत रहा। इस जनपद में कालप , वेदव्यास , उद्दालक , आरूणि , श्वेतकेतु , पाराशर तथा लोमेश जैसे विश्व विश्रुत मुनियों की सानिध्य सलिला बही है , बुन्देल भूमि में जब आर्यो का प्रवेश हुआ तो वे सबसे पहले इसी उपजाऊ धरती पर आकर बसे। पुराणों तथा महाभारत में ऐसा उल्लेख है कि राजा ययाति ही जालौन सहित इस क्षेत्र के पहले राजा थे। उसके बाद मनु के नाती ऐल पुरूरवा से जो वंश जाना गया वह चन्द्रवंश के रूप मे विख्यात हुआ। 2.

---

1. बलवन्त सिंह (राज्य संपादक) , जालौन , उ0 प्र0 डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स , लखनऊ , 1989 , पृ0 सं0 – 01।
2. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 10 , 11 ,12।

ऐल के पुत्र आयु , आयु के पुत्र नहुष तथा नहुष–नंदन ययाति थे। ययाति के बड़े पुत्र यदु थे। इनके वंशज यदुवंशी कहलाये। इस तरह जालौन क्षेत्र चेदि , नंदवंश , मौर्य साम्राज्य , शुंग वंश , हर्ष वर्धन , गुप्त वंश तथा चन्देल वंश के अधीन रहा।

प्राचीन काल के बाद मध्यकाल में जालौन पर मुगल सत्ता स्थापित हुई , यह कुतबुद्दीन ऐबक , फिरोजशाह तुगलक , इब्राहीम लोदी , बाबर , हुमाँयु , शेरशाह सूरी तथा अकबर के अधीन रहा। इस तरह यह क्षेत्र काफी दिनों तक मुगल सत्ता के आधिपत्य में रहा। औरंगजेब की मृत्यु के बाद जालौन बुन्देलों के अधीन रहा। यह कुछ समय तक मराठों के कब्जे में भी रहा। 1.

अंग्रेजों का जालौन क्षेत्र पर अधिकार का सिलसिला 1805 से प्रारम्भ हो गया। उनका कोंच पर सबसे पहले अधिकार हुआ , उसके बाद 8 दिसम्बर 1803 को नाना गोविंद राव की कालपी में कर्नल पावेल से हार हो गयी , फलतः कालपी भी अंग्रेजों के कब्जे में आ गयी। नाना गोविंद राव को विवश होकर अंग्रेजों से 23 अक्टूबर 1806 तथा 13 जून 1817 को दो सधिया करनी पड़ी। उसके बाद अंग्रेजों ने 1840 में जालौन राज्य का अंग्रेजी राज्य में विलय कर लिया। तत्पश्चात् उरई , जालौन , आटा और महोबा परगने अंग्रेजों को प्राप्त हुए , इसी को जालौन जिले के रूप में गठित करने का प्रथम प्रयास माना जा सकता है। 2.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 36 , 37 , 41।
2. बलवन्त सिंह (राज्य संपादक) , जालौन , उ0 प्र0 डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स , लखनऊ , 1989 , पृ0 सं0 – 42।

१८५७ की प्रथम क्रांति और जालौन

1857 के सत्तावनी समर में वैसे तो पूरे बुन्देलखण्ड क्षेत्र में संघर्षी बिगुल बजा था किन्तु इस संग्राम में जालौन जनपद पीछे नहीं रहा , यहाँ कई शूरों ने सराहनीय सहभाग किया , जिसे विस्मृत नहीं किया जा सकता। मेरठ में 1857 में क्रांति हो जाने के बाद उसकी सूचना 06 जून को उरई पहुँच गयी। उरई के आबकारी विभाग में सबसे पहले हलचल हुई । इस विभाग के कर्मियों ने सबसे पहले विद्रोही दृष्टिकोण अपनाया , उन्होंने आबकारी विभाग में आग लगा दी , कानपुर क्रांति की सूचना भी कालपी पहुँच गयी। इससे कालपी के डिप्टी कलेक्टर शिवप्रसाद घबड़ा गये। 1.

किन्तु डिप्टी कलेक्टर शिवप्रसाद को ब्राउन ने कालपी छोड़ने की अनुमति प्रदान नहीं की , उरई में शांति तथा झांसी में अपने परिवार को देखते हुए ब्राउन झांसी मदद देने का मन बनाया। झांसी के सहायतार्थ ब्राउन ने इटावा सैन्य अधिकारी से उरई आने का आग्रह किया। समथर के राजा हिन्दूपत ने ब्राउन के कहने पर एक तोप , सौ सैनिक तथा साठ–सत्तर घुड़सवारों को उरई भेजा।

इधर कालपी के हालात दिन पर दिन खराब होते जा रहे थे , ब्राउन ने 53वीं पल्टन के माध्यम से कालपी की स्थितियों को सुधारने के लिए अलेक्जेण्डर को भेजा किन्तु वहाँ पर सैनिकों ने इनके पहुँचने के पहले ही विद्रोह कर दिया था। कैप्टन को अपने प्राण बचाना मुश्किल हो गया। वह किसी तरह भागकर इटावा पहुँचा।

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ० सं० – 44।

ब्राउन 8 जून 1857 को कैप्टन कोसर्ट तथा समथर – सैन्य टुकड़ी के साथ झांसी के लिए प्रस्थान करने का मन बनाया किन्तु उनके झांसी रवानगी के पूर्व यह समाचार झांसी से आया कि विद्रोहियों ने झांसी में गोरों का वध कर दिया है। ब्राउन को इस सूचना से बहुत बड़ा आघात लगा क्योंकि मरने वालों में उनकी पत्नी और बहन भी थीं। 06 जून 1857 को उरई में भी विद्रोह हो गया। परिवारीजनों के मारे जाने के कारण ब्राउन की मनोदशा बहुत खराब थी। उसने उरई से जाने का मन बनाया किन्तु उरई छोड़ने के पहले उसने दो कार्य किए। पहला कार्य था कि उसने गुरू सराय के राजा केशवराव को सन्देश भेजा कि वह अपने सैनिकों के साथ उरई पहुँचे एवं स्थानीय अधिकारियों को मदद प्रदान करें। उनका दूसरा संदेश इन्दौर के होल्कर से सम्बन्धित था , जिसमें होल्कर से सैन्य मदद भेजने के लिए कहा गया था किन्तु इन्दौर में क्रांति हो जाने कारण वहाँ पर कोई मदद नहीं पहुँची।

ब्राउन ने सुरक्षात्मक कारणों से अपनी वैयक्तिक सम्पत्ति अपने विश्वास पात्र सेवक जमादार गोपाल सिंह तथा उरई तहसीदार महमूद हुसैन के यहाँ रखवाकर सहायक आयुक्त लैम्ब के साथ उरई से जालौन के लिए प्रस्थान किया। ब्राउन तथा उसके साथियों को आगरा जाना था। डिप्टी कलेक्टर पशन्हा तथा ग्रिफिथ उरई में ही ठहर गये। 10जून को राजा केशवराव के बड़े पुत्र शिवराम ताँतिया तथा उनके भाई सीताराम नाना काफी सैन्य दल के साथ जालौन पहुँचे। उन्होंने ब्राउन से भेंट की। ब्राउन ने ऑग्ल परस्त केशवराव से अंग्रेजों की मदद के लिए प्रस्ताव रखा , जिसे केशवराव ने स्वीकार कर लिया किन्तु उन्होंने ब्राउन से एक अधिकर पत्र देने के लिए कहा। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 44 , 45।

ब्राउन ने मुंशी से एक अधिकार पत्र लिखवाया , जिसका सार था कि केशवराव को जलौन जिले में अमनचैन एवं सरकारी अधिकारियों को मदद के लिए अधिकृत किया जाता है।

12 जून 1857 को ब्राउन लैम्ब कोसर्ट तथा अलेक्जेण्डर एवं अन्य सहायको के साथ इटावा के लिए कूच किया। इसी बीच केशवराव ने मोहर्रिर को रिश्वत देकर उर्दु भाषा में लिखे अधिकार पत्र में तोड़ – मरोड़ करवाकर ऐसा अंकन करा लिया , जिसका अर्थ निकलता था कि ब्राउन ने केशवराव को जलौन का शासन सौंप दिया है। केशवराव ने उस अधिकार पत्र का जिले के सभी तहसीलदारों में प्रसारित करा दिया। उसमें उसने यह सूचित किया कि डिप्टी कमिश्नर ने शासन दायित्व केशवराव को सौंपा है , इसलिए सभी रिपोर्ट सीधे उसे ही प्रेषित की जायं। जालौन के तहसीलदार इनायत हुसैन को जब यह पत्र मिला तो उसने ब्राउन , जो बहुत दूर नहीं पहुँचे थे , के पास एक हरकारे को इस आशय के साथ भेजा कि दो डिप्टी कलेक्टर पशन्हा तथा ग्रिफिथ के होते हुए जिले का शासन केशवराव को कैसे दिया जा सकता है ? 1.

इनायत हुसैन की सूचना तथा पत्र दोनों ब्राउन को मिल गये , वह केशवराव की चालाकी को भी समझ गया किन्तु वह केशवराव के विरूद्ध कुछ करने की स्थिति में नहीं था। उसने एक पत्र द्वारा उसे निर्देशित अवश्य किया किन्तु केशवराव ने उन निर्देशों को नकार दिया। केशवराव के दोनों पुत्रों सीताराम नाना तथा शिवराम तांतिया ने क्रंमशः जालौन तथा कालपी को अपना मुख्यालय बनाकर जालौन , उरई , कोंच , कनार , कालपी , आटा , तथा मोहम्मदाबाद का शासन प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया।

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 45 , 46।

जिले से वसूला गया सारा धन गुरूसंराय जाने लगा। भदेख के राजा परीक्षित तथा विलायां के क्रांतिकारी बरजोर सिंह जिले के प्रमुख क्रांतिकारी थे। ये दोनों यह नहीं समझ पा रहे थे कि केशवराव ऑग्ल विरोधी है या समर्थक किन्तु इन दोनों को उसकी तरफ से कोई मदद नहीं मिल पा रही थी। विलायां के प्रमुख क्रांतिकारी ठाकुर बरजोर सिंह केशवराव का विरोधी हो गया। 15 जून 1857 को झांसी के क्रांतिवीर कानपुर जाते समय उरई में रुक गये। उन्होंने सबसे पहले जेल से क्रांतिकारियों को मुक्त कराया , लूटपाटकर सरकारी दफ्तरों में आग लगा दी , ब्राउन की कोठी पर हमला किया। ब्राउन के सेवक रामगोपाल सिंह को बहुत खोजा गया ताकि ब्राउन की सम्पत्ति का पता चल जाय किन्तु वह मिल न सका। ब्राउन ने जों 23 बक्सें धन से भरे जमीन में गाड़ दिये थे , वे क्रांतिकारियों को मिल गये , कुछ धन से भरे बक्से गोपाल सिंह द्वारा कुयें में डाल दिए गये थे , उन्हें भी क्रांतिकारियों द्वारा निकाल लिया गया। 1.

क्रांतिकारियों ने ब्राउन के चहेते उरई के तहसीलदार मो0 हुसैन को लूट लिया , वह जान बचाकर उरई से भागना चाहा किन्तु वह इटौरा के जमींदार द्वारा पकड़ लिया गया , जिसे लूटने के बाद छोड़ दिया गया। जालौन तथा आटा के तहसीलदारों की भी क्रांतिकारियों ने पूरी फजीहत कर दी। लहर के तहसीलदार को छोड़कर शेष तहसीलदार ऑग्ल समर्थक रहे।

थानेदारों में केवल बंगरा के थानेदार ने क्रांतिवीरों का साथ दिया , शेष थानेदार अंग्रेजों के साथ रहे। 2.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 47 , 48।
2. वही , पृ0 सं0 – 49

लहर की रानी तथा रामपुरा के राजा भानसिंह भी ऑग्ल समर्थक रहे , 16 जून 1857 को रिसालेदार काले खाँ के नेतृत्व में विद्रोही सैन्य दल कानपुर जाने के लिए उरई पहुँचा। काले खाँ ने गोरों को पकड़ने का निश्चय किया। 15 जून 1857 की रात्रि को डिप्टी कलेक्टर पशन्हा अपने परिवार के साथ उरई से जालौन की ओर भागा था। उसके साथ ग्रिफिथ भी था। पशन्हा की माँ अस्वस्थता के कारण उरई के बंगले में ही रुक गयी , 17 जून 1857 को विद्रोहियों ने पशन्हा के बंगले को लूट लिया तथा उसकी माँ की हत्या कर दी।

डॉ0 हेमिंग उरई में ही सहयक सर्जन थे , उसकी भी सैनिकों के साथ तैनाती थी। उसने भी 16 जून 1857 को रात्रि में उरई छोड़ने का निश्चय किया। हेमिग ने स्थानीय लागों का वेश धारण करके रात्रि में ही कालपी का रास्ता पकड़ा , उसने पकड़े जाने के कारण पगडंड़ियों का सहारा लिया किन्तु दिशा भ्रम हो जाने के कारण वह रात भर भटकता रहा , उसे प्रातः काल कालपी के निकट होना चाहिए था किन्तु उसने अपने आपको उरई कचहरी के निकट पाया। उसने कचहरी के कुऐं में आकर पानी पिया , कुछ क्रांतिकारी वहाँ पर नहा रहे थे , यद्यपि वह वेश बदले था किन्तु क्रांतिकारियों ने उसे पहचान लिया। 17 जून 1857 को उसको वहीं पर मार दिया गया। 1.

मिस्टर डबल अंग्रेजी कार्यालय में हेडक्लर्क था , डबल के साथ परिवार में पत्नी , पुत्र तथा सास श्रीमती पिलिंगटन रहती थी , 15 जून 1857 को यह परिवार भी हमीरपुर जाने के लिए उरई से भागा था , जो रातभर चलकर प्रातः बीहड़ में छिप गये। 2.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 48 , 49।
2. वही , पृ0 सं0 – 49।

ऐर गाँव के सुबराती , खैराती तथा पलटू नामक देशप्रेमियों ने इन्हें पकड़कर उरई लाकर क्रांतिकारियों को सौंप दिया।

17 जून 1857 को क्रांतिकारियों ने डबल की पत्नी तथा सास श्रीमती पिलिंगटन को मार डाला , इस हमले में डबल का पाँच वर्षीय पुत्र बच गया था , जिसे बाद में आगरा भेज दिया गया था , 15 जून 1857 को पशन्हा तथा ग्रिफिथ परिवार सहित भागकर सकुशल जालौन पहुँचे , इन लोगों को जालौन में खतरा लगा , फलतः ये ग्वालियर की ओर भागे , लेकिन इनके पीछे दुर्भाग्य पड़ा हुआ था , 17 जून को जालौन – ग्वालियर रोड़ पर इन दोनों को 53वीं देशी पल्टन का वह दस्ता मिला जो उरई से ग्वालियर सरकार कोष लेकर गया था। वह टुकड़ी गोरों से बहुत नाराज थी , क्योंकि गोरों ने इन पर विश्वास न करके सिंधिया के सैनिकों पर विश्वास करके उन्हें ग्वालियर से धन लेने के लिए भेजा था , इस कारण यह टुकड़ी क्रांतिकारियों से मिलने का निर्णय ले लिया था।

53वीं देशी पल्टन ने पशन्हा तथा ग्रिफिथ का सारा सामान लूटकर दोनों को कैद कर जालौन ले गयी। क्रांतिकारियों ने उन दोनों से कहा यदि वे दो हजार रूपये उन्हें उपलब्ध करा दें तो नकद राशि छोड़कर शेष सारा सामान लौटा दिया जायेगा। इस पर पशन्हा ने शिवराम तांतिया से सरकारी कोष से दो हजार रूपये क्रांतिकारियों को देने के लिए कहा , जिसे तांतिया ने अनसुनी भर नही किया अपितु विद्रोहियों को एक हजार चार सौ रुपये देकर पशन्हा के साथ के घोड़ों तथा अन्य सामान अपने लिए क्रय कर लिया। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 53।

झांसी तथा उरई – विद्रोह की सूचना कालपी पहुँच गयी थी , जिसे सुनकर कालपी के डिप्टी कलेक्टर शिवप्रसाद की हालत खस्ता हो गयी थी। उसे यह भी पता चल गया था कि विद्रोहियें का नायक काले खाँ कालपी को ओर आ रहा है। इस पर शिवप्रसाद ने बिना किसी को सूचना दिए यमुना पार करके कानपुर की ओर भाग गया था। 1.

विद्रोही 18 जून को कालपी पहुँचे , शिवप्रसाद को तलाशा किन्तु वह न मिला। उसके बारे में सूचना देने वाले को पाँच सौ रुपये के इनाम की भी घोषणा की गयी , किन्तु वह तो क्रांतिकारियों के कालपी पहुँचने से पहले ही वहाँ से भाग चुका था। विद्रोहियों ने उसके घर को लूट लिया , वहाँ के थानेदार बसन्तराव को गिरफ्तार कर लिया गया।

जब कालपी में क्रांति-प्रमुखों का समागम हुआ

बनारस , इलाहाबाद , कानपुर तथा बिठूर में क्रांतिकारियों की पराजय हो गयी थी , इस कारण बहुत से क्रांतिकारियों तथा क्रांतिप्रमुखों ने कालपी पहुँचने का मन बनाया , फलतः वे 40वीं देशी पल्टन के साथ रीवां , बांदा से होते हुए 16 अक्टूबर 1857 को कालपी पहुँचे। केशवराव के पुत्र शिवराम तांतिया कालपी को केन्द्र बनाकर जालौन जिले में शासन कर रहा था। गुरसरांय का यह शासक परिवार क्रांतिकारियों का समर्थक होने का ढोंग करता था। 2.

25 जुलाई 1857 को बिहार में दानापुर स्थित छावनी की 6वीं , 8वीं तथा 40वीं देशी पल्टन के सैनिकों ने आरा में विद्रोह का शंखनाद कर दिया।

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 53 , 54।
2. वही , पृ0 सं0 – 54।

जगदीशपुर के बाबू कुँवर सिंह को उन्होंने अपना नेता स्वीकार कर लिया , 30 जुलाई तथा 03 अगस्त 1857 को कुँवर सिंह ने गोरों को पराजित किया और वे 12 अगस्त को अंग्रेजों से पराजित हुए। वे जगदीशपुर से कालपी आये , उन्हें शिवराम तांतिया की काली करतूतों का जब पता चला कि उसने पशन्हा तथा ग्रिफिथ को परिवार सहित सकुशल कानपुर पहुँचा दिया है तो इस पर वे बहुत नाराज हुए। उन्होंने तांतिया को कैद कर लिया।

तांत्या टोपे के प्रयासों से ग्वालियर सेना स्वातन्त्र्य संघर्ष के लिए तैयार हो गये। ग्वालियर से जालौन आते रास्ते में विद्रोहियों ने रामपुरा के ऑग्ल समर्थक राजा भानसिंह को कैद कर लिया , वह विद्रोहियों को एक मुश्त काफी धन देकर मुक्ति पाने में सफल रहा। राजा भान सिंह पहले सपरिवार ग्वालियर भाग कर गया फिर रानी लक्ष्मीबाई द्वारा ग्वालियर पर काबिज होने के बाद सिंधिया के साथ आगरा भाग गया , उसके बाद जालौन पर पूर्ण रूप ऑग्ल सत्ता पुनः स्थापित होने के बाद वह रामपुरा लौटे , ऑग्ल सेवा के बदले उन्हें गोरों ने ड्रेस ऑफ आनर की उपाधि प्रदान की। 1.

29 अक्टबर 1857 को तांत्या टोपे ग्वालियर पधारे , उन्हें केशवराव तथा उनके पुत्रों ने खुश करने की बहुत कोशिश की किन्तु तांत्या टोपे नहीं माने। उन्होंने जालौन के पूर्व शासक गोविंद राव की नातिन ताईबाई के पाँच वर्षीय पुत्र गोविंद राव को जालौन में सिंहासनारूढ़ किया। केशवराव अपने अमले के साथ गुरसरांय लौट गये। 2.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 54 , 55।
2. वही , पृ0 सं0 – 55।

तांत्या टोपे ने जालौन में कुछ समय तक रुक कर फौज में नयी भर्ती की। भदेख नरेश परीक्षित ने उनकी इस दृष्टि से बहुत मदद की। ताई बाई ने तीन हजार पैदल सैनिक तथा 600 घुड़सवार भर्ती करके तांत्या टोपे को सौंप दिए। दीवान विश्वास राव ने तांत्या टोपे को पाँच हजार रूपये की आर्थिक मदद दी। तांत्या टोपे का पहला मिशन कानपुर में पुनः अधिकार करने का था। वे भदेख नरेश , जालौन की पल्टन तथा ग्वालियर सैन्य दल के साथ कालपी आ गये।

तांत्या टोपे की कालपी में कुँवर सिंह से भेंट हुई , उनकी दृष्टि में कालपी का सामरिक दृष्टि से महत्व अधिक था , इस विचार से तांत्या टोपे ने कालपी के किले पर अधिकार कर लिया , हर गाँव में पेशवा का भगवा ध्वज फहराने लगा। ताई बाई और उनके सहयोगियों का शासन पर अधिकार था , कालपी की रक्षा के लिए तीन हजार सैनिक तथा बीस तोपें रह गयीं , शेष के साथ तांत्या टोपे तथा कुँवर सिंह ने 10 नवम्बर 1857 को कालपी से कानपुर के लिए कूच किया , इस सेना ने नवम्बर तथा दिसम्बर माह में कई बार विजय प्राप्त की किन्तु इसे 06 दिसम्बर 1857 को भारी पराजय का सामना करना पड़ा। इसके बाद कुँवर सिंह अपने सैन्य दल के साथ बिहार की ओर चले गये। तांत्या टोपे शेष सैन्य दल के साथ कालपी वापस आ गये। इस पराजय की सूचना से भदेख राजा परीक्षित इतने हताश हुए कि उन्होंने आत्महत्या कर ली। इसके बाद तांत्या के अनुरोध पर परीक्षित की पत्नी चन्देल जू ने एक अपने एक सामंत के पुत्र को गोद लेकर क्रांति की मशाल को कनार क्षेत्र में उद्दीप्त रखा। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 56 , 57।

दिल्ली तथा कानपुर में विद्रोहियों की पराजय के बाद भी जालौन में क्रांतिकारियों का शासन रहा , कालपी में क्रांति का संचालन जनवरी 1858 से होने लगा। नाना साहब के भतीजे राव साहब तथा उनको सलाह सुलभ कराने की दृष्टि से मोहम्मद इशहाक कालपी पहुँच गये थे। ताईबाई भदेख की रानी , चन्देल जू तथा बिलायां के बरजोर सिंह के ऊपर क्रांतिकारियों की आर्थिक मदद का भार था , राव साहब ने बुन्देलखण्ड के सारे नरेशों से स्वातन्त्र्य संघर्ष में मदद के लिए अनुरोध किया , तांत्या को कानपुर के युद्ध में बत्तीस तोंपे गवानी पड़ी थी , इस कारण सैन्य तथा अस्त्र–शस्त्र के लिए धन की बहुत आवश्यकता थी , पड़ोसी नरेश राजा रतन सिंह ने राव साहब तथा तांत्या टोपे को आर्थिक सहयोग देने से इन्कार कर दिया था। 1.

राजा रतन सिंह पूरी तरह ऑग्ल परस्त था , पनवाड़ी तथा जैतपुर के परगनों पर जब क्रांतिकारियों ने अधिकार कर लिया था तो रतन सिंह ने अपने सैन्य बल की मदद से उन्हें टिहरी राज्य में भगा दिया था , इतना ही नहीं उस क्षेत्र के प्रमुख क्रांतिकारी सबदल दौआ को पकड़ कर फांसी पर लटका दिया था , महोबा के सहायक मजिस्ट्रेट मि0 कारने को चरखारी मे शरण तथा हमीरपुर के जिला मजिस्ट्रेट मि0 लायड़ की रक्षा के लिए एक तोप तथा सौ सैनिकों की मदद दी थी। रतन सिंह के उन सब कारनामों को देखते हुए कालपी में रह रहे क्रांतिकारियों ने उसे नसीहत देने का निश्चय किया था। तांत्या टोपे के नेतृत्व में जनवरी 1858 में नौ सौ पैदल सैनिकों , दो सौ घुड़सवार सैनिकों तथा चार तोंपो के साथ चरखारी को घेर लिया गया , राजा रतन सिंह को विश्वास था कि उनकी मदद के लिए गोरी फौज आयेगी।

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 57।

इसलिए वह तांत्या टोपे को संधि की चर्चा में उलझाये रहा किन्तु तांत्या राजा की चालाकी को समझ गये , इसलिए उन्होंने चरखारी शहर तथा किले को छोड़कर शेष चरखारी क्षेत्र मे कब्जा कर लिया। तांत्या टोपे की अपील का चरखारी सेना पर प्रभावी असर हुआ , बहुत से सैनिक अपने घरों को लौटने लगे। राजा का एक सरदार जुझार सिंह क्रांतिकारियों के साथ हो गया , जिसकी मदद से 01 मार्च 1858 को चरखारी शहर पर तांत्या का अधिकार हो गया , शेष सेना के साथ रतन सिंह किले के अन्दर चले गये , कालपी सेना ने चरखारी किले को घेर लिया , गोरी सेना के न आने पर राजा रतन सिंह ग्यारह दिनों बाद तांत्या से सुलह करने के लिए विवश हो गये , जिसकी राजकुमार जय सिंह , अन्ना गोरे , गंगादीन दीक्षित तथा बेनी प्रसाद ने मध्यस्थता की।

तांत्या को एक लाख रूपये देने का प्रस्ताव किया गया , जिसे तांत्या टोपे ने स्वीकार नहीं किया , उन्होंने किले पर फिर से गोला बारी शुरू कर दी , जिस पर राजा ने घबड़ाकर तीन लाख रूपयों का प्रस्ताव किया , उस प्रस्ताव को तांत्या ने स्वीकार कर लिया , तांत्या टोपे ने चरखारी की 24 तोपों को भी हथिया लिया। 1.

कालपी तथा जालौन में चरखारी विजय की खुशियाँ मनायी जा रही थीं किन्तु कालपी में रानी झांसी का पत्र राव साहब को मिला कि जनरल ह्युरोज झांसी को घेरे है। रानी ने राव साहब से मदद माँगी। राव साहब के आदेश पर तांत्या टोपे ने चरखारी से झांसी के लिए प्रस्थान किया , इस सेना के साथ बानपुर के राजा मर्दन सिंह तथा शाहगढ़ के राजा बख्तबली सिंह भी थे। 2.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 57 , 58।
2. वही , पृ0 सं0 – 58।

इस कारण क्रांति–सेना की संख्या बीस हजार तक पहुँच गयी थी , ये सभी 30 मार्च 1858 को बरुआ सागर पहुँचे।

जनरल रोज ने इस समर में चालाकी भरे कदम उठाते हुए नकली आक्रमण जारी रखते हुए सेना के मुख्य भाग को तांत्या से मुकाबले के लिए बरुआ सागर भेज दिया , 01 अप्रैल 1858 को बरुआ सागर में घमासान युद्ध हुआ , जिसमें कालपी सेना बुरी तरह परास्त हुई , यदि झांसी का सैन्य दल किले से निकल कर पीछे से रोज की सेना पर हमला कर देता तो निश्चित रूप से गोरी सेना की पराजय होती और हिन्दुस्तान की उस तारीख का इतिहास ही कुछ और होता ?

रोज ने तीव्र गति से तांत्या पर आक्रमण किया , उनके पास अपने सैनिकों को बचाने के अलावा और कोई चारा शेष नहीं रह गया था , तांत्या ने जंगल में आग लगाकर धुयें की ओट में अपने सैन्य दल को युद्ध क्षेत्र से निकाल लिया। 1.

इस युद्ध में तात्या टोपे को 1500 सैनिकों तथा सारी तोपों के गवाने की भारी क्षति उठानी पड़ी , बचे हुए सैनिक छोटी – छोटी सैन्य टुकड़ियों में भागकर कालपी पहुँचे , तात्या टोपे तथा नरवर के राजा सैन्य दल के साथ कोंच और कालपी पहुँचे , झांसी – पराजय के बाद रानी लक्ष्मीबाई अपने सुरक्षाकर्मियों व अपने पुत्र के साथ 06 अप्रैल 1858 को कालपी पहुँची। 2.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 59 , 60।
2. वही , पृ0 सं0 – 60।

बेतवा–पराजय के बाद धीरे–धीरे सैनिक कालपी में एकत्रित होने लगे , उनकी संख्या सात हजार तक हो गयी , क्रांतिकारियों को यह मालूम था कि जनरल ह्युरोज कालपी अवश्य आयेगा , इस कारण राव साहब ने प्रमुख नेताओं को दरबार में आमंत्रित किया , जिसमें रानी लक्ष्मीबाई बानपुर नरेश , शाहगढ़ के राजा बख्तबली सिंह जालौन की ताईबाई , भाण्डेर के सूबेदार उमाराव सिंह एवं कोच के राम राव गोविंद प्रमुख थे। सैन्य प्रतिनिधित्व छत्तर सिंह , इच्छा सिंह , शमशेर खाँ , शिवदीन सिंह , चुन्ना सिंह एवं शिवप्रसाद ने किया। इस दरबार में निर्णय लिया गया कि अंग्रेजों से लोहा लेने का सबसे उपयुक्त स्थान कोंच रहेगा। समर –संचालन का दायित्व तांत्या टोपे को सौंपा गया , राव साहब ने कोंच – युद्ध में सहभागिता के लिए रानी लक्ष्मीबाई को भी आदेशित किया। 1.

अप्रैल के अन्तिम सफ्ताह में क्रांतिकारियो ने कोंच के लिए प्रस्थान किया , विभिन्न स्थलों पर सुरक्षात्मक अग्रिम चौकियाँ स्थापित करने के बाद क्रांतिकारियों ने कोंच में मोर्चाबंदी सुदृढ़ करने का कार्य प्रारम्भ किया। ऐसी मान्यता है कि क्रोंच मुनि के नाम पर कस्बे का नामकरण कोंच हुआ। क्रोंच मुनि पुरातन काल से ही कस्बे में निवास करते आ रहे थे। एक अन्य मान्यतानुसार यह कहा जाता है कि पृथ्वीराज सिंह चौहान के सेनापति की जन्मभूमि कोंच थी , वहाँ पर बारह खम्भे तथा चौड़ा ताल उसी के द्वारा निर्मित कराये गये थे। युद्धाक्रांन्त होकर कोंच निवासी वहाँ से पलायन कर गए। तांत्या टोपे ने बानपुर नरेश मर्दन सिंह तथा शाहगढ़ नरेश बख्तबली सिंह को बेतवा के घाटों पर कब्जा करने के लिए भेजा , जिन पर गुरसरांय के राजा केशवराव का अधिकार था।

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 61।

क्रांति धर्मी सैनिकों ने गुरुसरांय के सैनिकों को घाटों से भगा दिया , जनरल रोज ने 25 अप्रैल 1858 को झांसी से कालपी के लिए कूच किया। 01 अप्रैल 1858 को मेजर गाल तथा रोज की सेनाओं का पूँछ में समागम हुआ। रोज को पूँछ में ही पता चला कि कोटरा तथा सैद नगर पर बेतवा घाटों में मर्दन सिंह तथा बख्त सिंह का अधिकार हो गया है किन्तु रोज का लक्ष्य तो कालपी पर अधिकार का था। उसने सबसे पहले कोंच पर आधिपत्य करने का निर्णय लिया।

उसने कोटरा तथा सैदनगर पर अधिकार करने के लिए मेजर ओर को भेजा , उसने मर्दन सिंह तथा शाहगढ़ नरेश की सेनाओं को दो घाटों से पीछे हटने के लिए बाध्य कर दिया। मेजर ओर ने पुनः घाट केशवराव के अधीन कर वह रोज के पास पूँछ पहुँच गया। रोज को पूँछ में यह भी पता चला कि कोंच के उत्तर – पश्चिम में कोंच से लगभग 14 मील दूर लोहारी नामक स्थान पर तात्या टोपे की एक सैन्य टुकड़ी उपस्थित है , उसने प्रथम ब्रिगेड को 05 मई को हमला करने के लिए लोहारी भेजा। विद्रोही वीरों की संख्या लोहारी में बहुत कम थी , वहाँ पर विद्रोहियों की पराजय हुई , सारे सैनिक शहीद हो गये , ऑग्लों का वहाँ पर मृत्यु का तांडव हुआ। अंग्रेजों ने लोहारी के सभी आबाल – वृद्ध को काट डाला। 1.

रोज की सेना ने 06 मई 1858 को कोंच को तीन ओर से घेर लिया , रोज ने तीन ओर से तीनों ब्रिगेड को लगा दिया , रोज ने धूप और लू से बचने की दृष्टि से प्रातः समय में युद्ध करने का निश्चय किया , उसने अपने अनुभव का लाभ उठाते हुए यह निश्चय किया कि पार्श्व – युद्ध में भारतीय विद्रोही बिखर जाते हैं।

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ० सं० – 62।

जब कि आमने – सामने के समर में उनका कोई जवाब नहीं रहता। 07 मई 1858 को रोज – सेना ने कोंच से डेढ़ मील पहले अपना अड्डा जमाया।

क्रांतिकारी सेना में कोई हलचल नहीं थी , किले पर ध्वज फहरा रहा था , रोज ने कोंच पर तीन ओर से आक्रमण का मन बनाया , रोज ने बड़ी तोपों से विद्रोहियों पर बायें पार्श्व से गोले दागने का आदेश दिया , विद्रोहियों ने भी जवाब दिया किन्तु कुछ समय बाद पता या भेद लगाने के लिए ले0 कर्नल गाल को भेजा गया , उसने पता लगाया कि गोरों की गोलाबारी से क्रांतिकारी खेमें में अव्यवस्था फैल गयी थी , पैदल सैनिक पीछे बागो में चले गए थे। इस पर रोज ने सैनिक रणनीति बदलते हुए दिन में गर्मी शुरू होने से पहले ही विभिन्न स्थानों पर ठहरे हुए विद्रोहियों को समर हेतु आमंतित्र कर कोंच पर अधिकार करने का निश्चय किया।

रोज ने – मेजर स्टुअर्ट तथा कर्नल राबर्टसन को कैप्टन ओमानी के तोपखने के साथ कोंच पर गोला दागने के निर्देश दिये , इस गोलाबारी से 25वीं पल्टन को अविलम्ब धावा बोलकर बगीचों तथा मंदिरों तक जाने में सफलता प्राप्त की , कैप्टन लाइट फुट के नेतृत्व में 86वीं घुड़सवार दल ने बायीं ओर से चलकर सामने पड़ने वाले सभी सशस्त्र सैनिकों तथा तोपचियों को परास्त कर कोंच के उत्तरी भाग तथा दुर्ग पर आधिपत्य कर लिया। रोज ने ब्रिगेडियर स्टुअर्ट के साथ कोंच में प्रवेश किया। उन्हें वहाँ पर एक जुते हुए खेत में विद्रोही सैन्य दल का मोर्चा लगा हुआ दिखाई पड़ा , जिसे जीतने के लिए कैप्टन फील्ड के तोपखाने , कैप्टन थाम्पसन तथा कैप्टन गोर्डन के सैनिकों को भीषण संग्राम करना पड़ा। रोज को क्रांतिकारियों को दो भागों में विभाजित करने में सफलता मिल गयी। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 63 , 64।

सभी विद्रोही पीछे हटने लगे , तात्या तथा रानी लक्ष्मीबाई भी उनको रोक नहीं पायीं। कोंच समर में क्रांतिकारियों की पराजय अवश्य हुई किन्तु उनका सांगठनिक महत्व उल्लेखनीय रहा , इस कोंच – संग्राम में 700 क्रांतिकारियों ने अपने आपको उत्सर्ग किया।

यह महासमर छः घण्टों तक चला , जिसमें आठ–नौं तोपों पर गोरों का कब्जा हो गया , गोरों की तरफ से शहीद हुए 09 सैनिकों में से तीसरी घुड़सवार के रिसालेदार सफदर अली बेग प्रमुख थे। इस युद्ध में 47 अधिकारी तथा सैनिक घायल हुए , जिनमें से कैप्टन मैकमोहन , ले0 बाइगरी तथा जमादार छवि सिंह प्रमुख थे , कोंच – विजय के बाद कैप्टन टरनन को जालौन जिले का डिप्टी कमिश्नर बना दिया गया , केशवराव भी पुत्रों के साथ गोरों की मदद के लिए कोंच आ गये थे , कोंच – विजय के बाद पुनः जालौन में ऑग्ल सत्ता स्थापित हो गयी थी। इसके बावजूद जालौन तथा कालपी क्षेत्र में फिर भी क्रांतिकारी काबिज थे , इसके बाद रोज ने कालपी में विद्रोह की सुगबुगाहट सुनकर फौरन कालपी के लिए कूच कर दिया।

कोंच – पराजय के बाद तांत्या टोपे कालपी नहीं गये , अपितु पहले वे चुर्खी गये , जहाँ पर उस समय उनका परिवार रह रहा था , वे वहाँ से ग्वालियर चले गए। तांत्या के जाने के बाद कालपी के क्रांतिकारियों में निराशा बहुत अधिक थी किन्तु उसी समय बांदा के बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय तीन हजार के सैन्य दल , कुछ तोपों तथा रिसाले के साथ कालपी आ गये। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 64 , 65।

जिनके आने से क्रांतिकारियों में नये उत्साह का संचार हुआ , रानी ने भी राव साहब को ढाढ़स बधांया और कहा कि संगठित सेना पर शत्रु कभी भी विजय प्राप्त नहीं कर सकता है। इस तरह नवीन परिवेश में कालपी युद्ध की तैयारियाँ प्रारम्भ हो गयीं।

कालपी के सभी घाटों पर अधिकार करके पुल को विनष्ट कर दिया गया , शहर की तीन ओर की सड़कों को काटकर अवरोध बनाने के लिए सभी पुलियों को खत्म कर दिया गया। 15 छोटी–बड़ी तोपें को खास–खास स्थानों पर लगा दिया गया , चार हजार की नयी भर्ती की गयी , इस तरह युद्ध में कुल दस हजार सैनिक हो गए। हर चौकी में लगभग दो सौ सैनिकों को तैनात किया गया , राव साहब ने डेढ़ हजार के सैन्य दल , चार तोपों तथा छः घुड़सवार सैनिकों को लेकर कोंच की ओर से होने वाले आक्रमण का स्वयं दायित्व संभाला। सात सौ अफगानी सैनिकों ने जालौन मार्ग का मोर्चा संभाला। कालपी शहर की सुरक्षा के लिए ग्वालियर सैन्य दल के दो हजार सैनिकों को लगाया गया। 1.

रोज ने 09 मई 1858 को पहली बिग्रेड के साथ कोंच से कालपी के लिए प्रस्थान किया , भीषण गर्मी थी , पानी का खासा संकट था। रोज का पहला विश्राम कोंच उरई मार्ग पर हरदोई गूजर गाँव में हुआ , जो उरई से पहले दस मील पर था। रोज को वहाँ पर पता चला कि उस गाँव का जमींदार क्रांतिकारियों तथा ताईबाई का सहयोगी है , गढ़ी की तलाशी लेने पर चार तोंपे मिली तथा पन्द्रह क्रांतिकारी भी पकड़े गये। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 66 , 67।

इस पर रोज बहुत नाराज हुआ। उसने तोपों से गढ़ी को ध्वस्त करा दिया। विद्रोहियों का कोई तर्क स्वीकार नहीं किया गया , 15 विद्रोहियों को फांसी की सजा मिली। वहाँ से रोज 15 मई को उरई की ओर चला।

कोंच – पराजय तथा हरदोई गूजर गाँव में रोज द्वारा किए गये नरसंहार ने ताईबाई को तोड़कर रख दिया। उनके प्रमुख क्रांतिकारी नेता तांत्या भी मार्ग दर्शन के लिए तैयार नहीं थे। फलतः ताईबाई ने जनसामान्य का और संहार न हो , इसलिए उन्होंने स्वयं का बलिदान देने का निश्चय किया। उन्होंने अपनी काफी सम्पत्ति गुपचुप तरीके से राव साहब कालपी के यहाँ भेजकर 10 मई 1858 को नव नियुक्त डिप्टी कमिश्नर टरनन तथा गवर्नर जनरल के प्रतिनिधि राबर्ट हेमिल्टन के सामने आत्म समर्पण कर दिया। ताईबाई के समर्पण के साथ–साथ उनके पुत्र गोपालराव , पति नारायण राव , राज्य के दीवान विश्वासराव तथा बलवन्त राव इत्यादि उनके प्रमुख सहयोगियों ने भी समर्पण किया।

रोज ने उरई में अपना समय नष्ट नहीं किया वह तुरन्त कालपी के लिए चल पड़ा। उरई से भागते समय विद्रोही जो चार तोंपे छोड़ गए थे , उसने उन्हें अपने अधिकार में कर लिया। रोज की फौज 10 मई को ही उरई से प्रस्थान कर गयी। रोज ने कालपी के विद्रोहियों को भ्रमजाल में फाँसने के लिए गमन – व्यूह की रचना की , उसकी फौज आटा तक मुख्य मार्ग से गुजरी , उसके बाद उसकी फौज ने सन्दी गाँव में 11 मई 1858 को अपना पहला पड़ाव डाला , उधर क्रांतिकारी भी रोज – सैन्य दल की टोह में निरन्तर लगे हुए थे। उन्होंने अपने तीन गुप्तचर संदी गाँव भेजे। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 67।

किन्तु पकड़े जाने पर गोरों द्वारा उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया। रोज का अगला शिविर 12 मई एवं 13का विश्राम इटौरा में ही रहा , वह अपनी दूसरी बिग्रेड से अधिक दूरी नहीं रखना चाहता था। रोज 15 मई 1858 को कालपी से 4–5 किमी0 दूर यमुना के किनारे अपनी प्रथम बिग्रेड के साथ गुलौली गाँव पहुँचा।

रोज ने गुलौली गाँव पहुँचते ही बिग्रेडियर मैक्सवेल को यमुना पार अपने आने की सूचना भेज दी , साथ ही यमुना के किनारे तक तोपखाना ले जाने के निर्देश भी दिए। उधर क्रांतिकारी भी कम सावधान नहीं थे। उन्हें भी 15 मई को ही रोज के गुलौली गाँव पहुँचने की सूचना मिल गयी थी। क्रांतिकारियों को दूसरी बिग्रेड की खबर थी कि वह रास्ते में है। उन्होंने स्थिति का लाभ उठाने के लिए गोलाबारी भी की किन्तु कैप्टन हारे तथा स्टूअर्ट ने आक्रमण को विफलकर दिया। 16 मई को दूसरी बिग्रेड पर नवाब बांदा ने आक्रमण किया किन्तु गोरी सेना ने उसे भी विफल कर दिया। रोज तथा बिग्रेडयर मैक्सवेल ने गुलौली गाँव में रात्रि में सलाह–मशविरा किया और अपनी रणनीति को अन्तिम रूप दिया , 23 मई 1858 को आक्रमण – तिथि निर्धारित की गयी। मैक्सवेल को 682 नं0 का ऊँट दस्ता तथा 124वीं सिख रेजीमेण्ट को गुलौली भेजने के लिए निर्देशित किया गया। 1.

उस तोपखाने को यह भी निर्देशित किया गया कि यमुना पार से प्रतिदिन 16 से 18 घण्टे तक कालपी शहर , किले और रायड गाँव पर गोले दागे जायं। 17 मई को क्रांतिकारियों ने भरी दोपहर में दूसरी बिग्रेड पर धावा बोला।

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 70।

जिसमें गोरे सैनिकों को कोई क्षति तो नहीं हुयी किन्तु सेना को पानी तथा चारा प्राप्त करने में भारी दिक्कत हुई। 18 मई के सैन्य दल पर क्रांतिकारियों ने आक्रमण करने के स्थान पर केवल आक्रमण का दिखावा किया , जिसमें अंग्रेजों के भरी दोपहर में मुस्तैद रहने पर 17 गोरों को लू लग गयी। 20 मई को क्रांतिकारियों ने यमुना नदी में खड़े होकर तीन बार प्रतिज्ञा की , जब फिरंगी नष्ट हो जायेंगे तभी हम जीवित रहेंगे नही तो रणभूमि में सदैव के लिए चिरनिद्रा मे सो जायेंगे , इसकी एवं आक्रमण की सूचना रोज को 22 मई को प्राप्त हो गयी थी। 1.

22 मई को रोज की सैन्य स्थिति मजबूत थी। वह स्वयं , बिग्रेडियर स्टुअर्ट तथा कर्नल राबर्टसन अपने – अपने मोर्चे संभाले थे। 22 मई को प्रातः रोज के गुप्त संकेत पर मैक्सवेल के तोपखाने से कालपी किले तथा शहर पर गोले बरसने शुरू हो गये। बांदा के नवाब अपने 1400 घुड़सवार सैनिकों तथा कई सैन्य बटालियने और तोपखानों के साथ जलालपुर सड़कर पर रोज के बायें पार्श्व में तिरही गाँव के सामने तक पहुँच गये। रोज दायें पार्श्व की हलचल से अनभिज्ञ था। उसे यह पता नहीं चल पा रहा था कि आक्रमण कहाँ पर होगा फिर भी उसकी रणनीति तथा सूझबूझ सामरिक दृष्टि से उपयुक्त एवं प्रभावी थी। उधर क्रांतिकारी भी सतर्कता एवं सावधानी भरा कदम उठा रहे थे। क्रांतिकारियों ने गोरी सेना पर भीषण आक्रमण किया , जिसमें आकाश धुयें से आच्छादित हो गया था , तिरही मोर्चे पर रोज को गोलाबारी की आवाज कम सुनायी देने लगी , इस पर उसने बिग्रेडियर स्टुअर्ट से जानकारी चाही कि क्या ऊँट दस्ते की मदद भेजी जाय।

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 71।

जिस पर स्टुअर्ट ने तुरन्त मदद भेजने की प्रार्थना की। रोज स्वयं ऊँट दस्ते के साथ स्टुअर्ट की मदद के लिए फौरन रवाना हुआ। रोज ने देखा कि हल्की तोपों के द्वारा सब गोरे मारे जा चुके हैं , स्टुअर्ट पैदल हो गया था। एक–आध बचे तोपची पैदल तलवारों से युद्ध कर रहे थे , घोड़ो पर का तोपखाना तितर–बितर हो गया था। रोज ने ऊँट दस्ते से क्रांतिकारियों पर जोरदार धावा बोला। इस अप्रत्याशित हमले से क्रांतिकारियों के पैर उखड़ने लगे , वे भागने लगे , ऊँट दस्ते ने विद्रोहियों का कालपी तक पीछा किया। इधर बायें मोर्चे पर गोरों की जीत हो गयी , बांदा के नवाब ने भी दोपहर बाद अपना मोर्चा छोड़कर परिवार के साथ जालौन का मार्ग पकड़ा , कर्नल राबर्टसन ने उसका कुछ दूर तक पीछा किया , फिर वह वापस मोर्चे पर लौट अया। क्रांतिकारी सेना पूरी तरह विफल हो गयी , हर मोर्चे पर असफल हो गयी। उनके लिए ऊँट दस्ता अभिशाप बनकर आया। ऊँट दस्ते ने संभवतः अन्य किसी भी युद्ध में इतनी प्रभावी भूमिका न निभायी हो।

22 मई के निर्णायक युद्ध में गोरों की कालपी – विजय हुई , 22 मई रात्रि को रानी लक्ष्मी बाई तथा राव साहब को सूचना प्राप्त हुई कि बांदा नवाब मोर्चा छोड़कर शेरघाट की ओर प्रस्थान कर गए हैं , कालपी की सुरक्षा के लिए तैनात मुरार पल्टन ने भी मोर्चा छोड़ दिया है , अब रानी तथा राव साहब के लिए कालपी में रहने का कोई अर्थ शेष नहीं रह गया था। 22 मई को आधी रात्रि के बाद रानी लक्ष्मीबाई तथा राव साहब एक हाथी तथा 15 घुड़सवार सैनिकों के साथ चुर्खी पहुँचे। वे वहाँ से रिश्तेदारों तथा तांत्या के परिवार के कुछ सदस्यों को लेकर सरावन गए। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 72 , 73।

26 मई को सब लोग सरावन से चलकर गोपाल पुरा गये। लालपुरी गुंसाई तथा नवाब बांदा भी शाम को दल–बल के साथ गोपाल पुरा आ गये। तांत्या भी रात मे गोपालपुरा पहुँच गये।

सभी क्रांतिकारी 27 मई को महोना पहुँचे , सभी ने वहाँ पर निश्चय किया कि यदि क्रांति को बचाये रखना है तो ग्वालियर पर अधिकार प्रथम आवश्यकता है। कोंच पराजय के बाद तात्या ग्वालियर में ही रहकर फौज तथा जनता को क्रांतिवीरों के पक्ष में करने में जुटे हुए थे , रोज की दोनों बिग्रेड ने 23 मई 1858 को कालपी पर अधिकार करने के लिए कूच किया। दोनों बिग्रेड बिना किसी बाधा के कालपी तक पहुँच गयी। रोज का 23 मई 1858 को दस बजे तक शहर तथा किले पर आधिपत्य हो गया।

इस युद्ध में 500–600 क्रांतिकारी शहीद हुए। उन्होंने 18 तोंपे गवायीं , क्रांतिकारी 08 तोपें भागते समय छोड़ गये, किन्तु इस युद्ध की एक विशेषता यह रही कि गोरे एक भी प्रमुख क्रांतिकारी नेता को पकड़ नहीं सके। अंग्रेजों ने कालपी मे सूचना या जानकारी प्राप्त करने के लिए जनता को बहुत कष्ट दिये , वहाँ पर जमकर लूटपाट की , साहूकारों को तरह–तरह के कष्ट देकर उन्हें लूटा। कालपी – युद्ध में 31 गोरे सैनिक मारे गये , जिनमें रोज का एक प्रमुख सहायक बाइगरी भी था , 57 ऑग्ल घायल हुए , जिसमे एक रोज भी खुद थे।

स्वाधीनता संघर्ष और भदेख नरेश परीक्षित

जालौन एक ऐसा जिला हैं , जिसके बहुत से शूरवीरों ने 1857 के स्वातन्त्र्य समर में शानदार सहभाग किया। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 74।

उनमें से एक भदेख के राजा परीक्षित भी थे। भदेख पहले कानपुर जिले में शामिल था , बाद में 1825 में इसे कालपी से जोड़ा गया। 1857 की क्रांति के समय भदेख नरेश के पास 26 गाँव थे। इस सत्तावनी क्रांति मे गोरो के खिलाफ सबसे पहले राजा ने झण्डा उठाया। गोरों के कानून राजा परीक्षित के लिए एकदम नये थे। करों के वसूलने में राजा को जहाँ कई बार अपमानित होना पड़ा , वहीं दूसरी ओर लगातार पड़ने वाले अकालों ने काश्तकारों की कमर तोड़ दी , इस तरह परीक्षित द्वारा कर वसूलना बहुत मुश्किल हो रहा था , दूसरी ओर भदेख नरेश की तुलना में रामपुरा तथा गोपाल पुरा के राजा गोरों को कोई टैक्स नहीं देते थे , साथ ही सरावन तथा जम्मनपुर के राजा बहुत कम टैक्स देते थे। राजा परीक्षित गोरों के दिन प्रतिदिन कर्जदार होते जा रहे थे। राजा के यहाँ गोरों का अमला आये दिन टैक्स के लिए खड़ा रहता था।

राजा परीक्षित स्वाभिमानी एवं दयालु थे। वे अपनी जनता से कड़ाई से कर नहीं वसूलते थे किन्तु कालपी के गोरे अधिकारियों को इन सब बिन्दुओं से कोई लेना – देना नहीं था। उन्हें तो अपनी अदायगी से सरोकार था। समय पर बकाया न जमाकर पाने की स्थिति राजा परीक्षित को कई बार अपमानित होना पड़ा , उन्हें कनार के तहसीलदार देवीप्रसाद के समक्ष पेश होने का आदेश भी मिला , राजा परीक्षित के अतिरिक्त इस तरह का अपमान और किसी राजा को नहीं झेलना पड़ा , राजा परीक्षित ने अपने सम्मान की रक्षा के लिए रूपनाथ मारवाड़ी के यहाँ रियासत के कई गाँवों को रेहन में रख दिया और टैक्स की भरपायी की। उन्हें इतना अपमानित और कभी नहीं होना पड़ा। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 75 , 76।

इन सब घटनाओं के कारण परीक्षित का गोरों के प्रति आक्रोशित होना स्वाभाविक था। जालौन में जैसे ही 1857 की क्रांति का शंखनाद हुआ , राजा भदेख तन–मन–धन से विद्रोहियों के साथ हो गये। राजा परीक्षित ने सेना को सुसंगठित कर शेरगढ़ घाट पर अधिकार कर लिया। विद्रोहियों के उरई आने पर राजा ने उनकी हर प्रकार से मदद की। राजा परीक्षित ने ग्वालियर के विद्रोही सैन्य दल के उरई ठहराव काल में उनकी पूरी मदद की। तांत्या टोपे जब कानपुर पर पुनः अधिकार के लिए कानपुर गये तो उनके साथ भदेख नरेश के सैनिक भी गये। 06 दिसम्बर 1857 को कानपुर युद्ध में क्रांतिकारियों की पराजय हुई , तांत्या टोपे की पराजित सेना कालपी वापस लौट आयी , कानपुर पराजय तथा साफल्य न मिलने के विक्षोभ के कारण राजा परीक्षित ने जहर खाकर अपने प्राणों की इतिश्री कर ली।

भदेख नरेश की मृत्यु के बाद जालौन जिले की उत्तरी सीमा तथा कनार परगने में क्रांति की मशाल को जलाये रखने के लिए राजा की विधवा रानी चन्देलन जू स्वातन्त्र्य समर में कूद पड़ीं। भदेख नरेश के कोई सन्तान नहीं थी , तांत्या की सलाह पर रानी ने अपने एक प्रमुख के पुत्र को गोद लेकर परीक्षित के उत्तराधिकारी के रूप में भदेख की गद्दी पर बैठाया। कालपी पर अधिकार हो जाने के बाद कैप्टन टरनन ने सेना को भदेख पर आधिपत्य के लिए भेजा। तोपों से भदेख की गढ़ी को नष्ट कर दिया। रानी , उनके पुत्र व दीवान तथा उनके कुछ सहयोगियों को कैद करके कालपी लाया गया। रानी के जो सहयोगी गिरफ्तार नहीं हुए थे , उन्होंने रानी को कैद से मुक्त कराने का निश्चय किया , टरनन को जब इस बात का पता चला तो उसने रानी को कानपुर भेज दिया। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 78।

अनेक कोशिशों के बावजूद भी जब तक पूरा जालौन विद्रोहाग्नि से शान्त नहीं हुआ , तब तक भदेख में भी क्रांतिकारी हलचलें जारी रहीं। क्रांति में सहभागी होने के कारण गोरों ने भदेख रियासत के सभी गाँवों को अपने कब्जे में कर लिया , गोरों ने इनमें से कई गाँवों की नीलामी करा दी। कालका प्रसाद ने आल तथा इटहा गाँव को खरीद लिया। भदेख को एक ब्राम्हण जमींदार ने खरीदा। इस तरह से यदि देखा जायं तो भदेख नरेश , उनकी रानी एवं परिवारी जनों का सत्तावनी समर में श्लाध्य सहभाग रहा किन्तु भदेख में उनकी स्मृतियों को चिरजीवी बनाने के लिए स्वातन्त्र्योत्तर भारत में कुछ नहीं किया गया।

स्वाधीनता संघर्ष और वीर महिला ताईबाई

स्वातन्त्र्य संघर्ष के इतिहास मे कुछ ऐसी वीरांगनाओं के नाम अंकित हैं , जो किसी परिचय की मोहताज नहीं है , जिनमें से बेगम हजरत महल , अजीजन बाई , रानी लक्ष्मीबाई , अवन्ती बाई एवं रानी चेनम्मा लोकविश्रुत हैं , किन्तु बुन्देलखण्ड में एक और वीर महिला हुई है , जिसने जालौन जिले में अपने पुरोधत्व के बल पर सात माह तक अपनी स्वतंत्र सत्ता कायम रखी। वह और कोई नहीं अपितु जालौन के शासक गोविंद राव नाना की नातिन थी। 1.

ताई बाई एक महत्वपूर्ण तरस्वी महिला थी , जिनका जालौन के मराठा राजवंश से सम्बन्ध था। गोविंद पंत बल्लाल खेर जालौन में मराठा राजवंश के संस्थापक थे , इन्हें गोविंद पंत बुन्देले भी कहा जाता था , बुन्देले के छोटे पुत्र गंगाधर गोविंद को कालपी और जालौन क्षेत्र बटवारे में मिला था। गंगाधर गोविंद के बाद उनके पुत्र गोविंद राव उर्फ नानाराव जालौन नरेश हुए। 2.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 79।
2. वही पृ0 सं0 – 79।

गोविंदराव नाना के बालाबाई नामक एक कन्या उत्पन्न हुई , जिनकी गोपाल राव से शादी हो गयी। बालाबाई और गोपालराव के एक पुत्री पैदा हुई , जिसका नाम करण ताईबाई हुआ। ताईबाई की शादी हाता के नारायण राव के साथ हुई , शादी के बाद वे दोनों जालौन के किले में रहने लगे। गोविंद राव नाना की मृत्यु के बाद उनके पुत्र बालाराव गोविंद जालौन के शासक हुए। बालाराव निःसन्तान थे , उनकी पत्नी लक्ष्मीबाई ने अपने भाई गोविंद राव को गोद लेकर जालौन का शासक बनाया। इसे गोरी सरकार ने भी स्वीकृति प्रदान कर दी। संयोग वश 1840 में गोविंद राव का देहावसान हो गया।

लक्ष्मीबाई ने अबकी बार गरुसराय के राजा केशवराव को गोद लेने का प्रस्ताव अंग्रेजों के समक्ष रखा , जो अस्वीकृत हो गया , ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने जालौन राज्य को कम्पनी के साथ मिला लिया , गुरुसराय पहले जालौन रियासत के अधीन था , जालौन के विलीनीकरण के बाद केशवराव की प्रार्थना पर गुरुसराय को स्वतंत्र रूप से चलाने का अधिकार केशवराव को ही दे दिया।

गोरों ने उसके बदले में केशवराव से बाइस हजार रुपये का कर लेना शुरू कर दिया। केशवराव बहुत चतुर एवं अवसर परस्त था , वह गोरा परस्त रहा , 1857 की क्रांति के समय भी वह अंग्रेजों का समर्थक रहा। गोरों ने 1806 और 1817 में जालौन नरेश गोविंद राव नाना जो संधि की थी , उसके अनुपालन से मुकर कर जालौन रियासत को हड़प लिया। संधि के प्राविधान के अनुसार यह व्यवस्था थी कि गोविंद राव के उत्तराधिकारी और वंशज जालौन राज्य के वशानुंगत राजा माने जायेंगे। गोरों ने ताईबाई की दावेदारी को भी नहीं माना। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 80।

गोरों के इस अन्याय से ताईबाई के क्रोध का ठिकाना न रहा और वे गोरों की दुश्मन बन गयीं। 06 जून 1857 से उरई में विद्रोहियों की गतिविधियों मे हलचल तेज हो गयी थी , उरई में तथा जालौन में विद्रोह होने के बाद जालौन पर केशवराव का अधिकार हो गया था , केशवराव अवसर परस्त था , वह जिसका पलड़ा भारी देखता था , उसी तरफ हो जाता था। ताईबाई शीघ्र ही केशवराव को समझ गयीं। केशवराव ने जिन दो डिप्टी कलेक्टरों को कैद कर चुर्खी मे रखा था , क्रांतिकारियों के चाहने पर भी मृत्युदण्ड नहीं दिया। क्रांतिकारियों को जैसे ही कानपुर में पराजय मिली , केशवराव ने तुरन्त पैतरा बदला। उसने पशन्हा तथा ग्रिफिथ को सपरिवार 02 सितम्बर 1857 को कानपुर सुरक्षित पहुँचा दिया। उससे ताई बाई को उसके दोगले पन की परख हो गयी। 1.

26 अक्टूबर 1857 को जब तांत्या टोपे ग्वालियर से जालौन पधारे तो ताई बाई ने केशवराव की करतूतों का तांत्या के सामने खुलासा किया , जिस पर केशवराव ने तांत्या टोपे को खुश करने की बहुतेरी कोशिश की किन्तु तांत्या ने उनकी एक न सुनी। केशवराव अपने पुत्रों सहित जालौन से अपमानित होकर गुरुसराय गये। तांत्या ने ताई बाई के पाँच वर्षीय पुत्र गोविंद राव को जालौन की गद्दी पर बैठाकर ताई बाई को राज्य संरक्षिका घोषित कर दिया। वहाँ पर स्वतंत्र क्रांतिकारी सरकार गठित हो गयी।

ताई बाई ने क्रांति – संचालन के लिए तांत्या को तीन लाख रूपयों की मदद प्रदान की। ताई बाई ने भाऊराव विश्वास को राज्य का प्रधानमंत्री नियुक्त किया।

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 80।

ताई बाई ने एक माह से भी कम समय मे एक बड़ी सेना का गठन कर उसे तांत्या के साथ कानपुर फतह के लिए भेजा। यह सेना नवम्बर तथा दिसम्बर को विजयी हुई किन्तु 06 दिसम्बर 1857 को युद्ध में उसे भारी पराजय का सामना करना पड़ा , पराजित सेना तांत्या के साथ कालपी वापस आ गयी। ताई बाई इस पर भी हिम्मत नहीं हारी , वह पुनः सक्रिय हुई। उसने अपने जेवरात बेंचकर पुनः एक फौज खड़ी कर तांत्या की मदद के लिए भेजा। इस सेना ने चरखारी पर विजय हासिल की , इस जीत का खुशी पर जालौन के दुर्ग से 29 तोपों की सलामी दागी गई। ताई बाई ने क्रांतिकारी सैनिकों के वेतन तथा खर्चे का भार स्वयं उठाया। जालौन , कनार , आटा , कालपी , उरई , मोहम्मदा बाद तथा कोंच – कटरा में गोरी सत्ता का एक भी निशान तक नहीं रहने दिया। 1.

07 मई 1858 को क्रांतिकारी सेना की कोंच के युद्ध में पराजय हुई , तांत्या भी कोंच से सीधे ग्वालियर चले गये , इससे ताई बाई को बहुत निराशा हुई , उधर रोज ने कोंच तथा हरदोई गूजर पर अधिकार कर लिया। ताई बाई निरपराध जनता को गोरों द्वारा पिसता देखकर वह स्वयं अपने को होम करने के लिए उद्यत हो गयीं , ताई बाई ने अपने पुत्र तथा सहयोगियों के साथ डिप्टी कमिश्नर टरनन के समक्ष आत्म समर्पण कर दिया। अंग्रेजों ने जालौन राज्य पर अधिकार कर लिया। गोरों ने सबको कैद करके मुकदमे तक उन सबकी पेंशन आधी कर दी , ताई बाई की सारी सम्पत्ति हड़प कर ली गयी , गोरों ने सभी को आजीवन कारावास का दण्ड दिया। ताई बाई को निर्वासित कर मुंगेर (बिहार) भेज दिया गया , जहाँ पर ताई बाई की 1870 में मृत्यु हो गयी। 2.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 81।
2. वही , पृ0 सं0 – 81।

ताईबाई के पुत्र की उस समय तक 17 वर्ष की आयु हो गयी थी। उसे अंग्रेजों ने अध्ययन के लिए इलाहाबाद भेज दिया , ताईबाई के पति के जालौन–निवास के अनुरोध को ले0 कर्नल डेविडसन नहीं माना। इस तरह ताईबाई ने अपने शानदार सहभाग से भारत के संघर्षी इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा , जिसे भुलाया नहीं जा सकता। 1.

स्वाधीनता संघर्ष और ठाकुर बरजोर सिंह

बुन्देल क्षेत्र में जालौन एक ऐसा जनपद रहा है , जिसका आयुधी आरेख बहुत शानदार था , यहाँ के तमाम स्वातन्त्र्य शूरों ने सत्तावनी समर में धाक जमायी थी। जालौन के जीवट जवानों एवं वीरों में बरजोर सिंह की एक प्रमुख गणना थी। बिलायां एट से कुछ मील आगे अवस्थित है , ठा0 बरजोर सिंह बिलायां के ही निवासी थे। इनके पिता का नाम रुकमानन्द था , बरजोर सिंह के पिता तथा पितामह दोनों ऑग्ल विरोधी थे। 2.

विलक्षण प्रतिभा

ठा0 बरजोर सिंह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे , उन्हें वीरता विरासत मे मिली थी। बरजोर सिंह का करिश्मायी व्यक्तिव था। उनकी आवाज में जादू था , उनकी एक आवाज में हजारों व्यक्ति स्वातन्त्र्य संघर्ष के लिए सहर्ष एवं स्वाभाविक रूप से तैयार हो जाते थे। बरजोर सिंह ने सांगठनिक क्षमता बहुत थी। वे एक सफल छापामार गुरिल्ला योद्धा थे , यही कारण था कि वे दस वर्षों तक गोरों की नाक में दम किये रहे।

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 82।
2. वही , पृ0 सं0 – 83।

बिलायां की जमींदारी

पूना के पेशवा माधवराव ने 1776 में कोंच का क्षेत्र अपने सेनापति तुकाजी होल्कर को सेना के रखरखाव के खर्चे के लिए दिया था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी 19वीं सदी के प्रारम्भ से ही इस क्षेत्र में अपना आधिपत्य जमाने लगी थी। कर्नल फाउसेट ने 22 मई 1804 को अमीटा पर अधिकार करने की दृष्टि से हमला किया , बरजोर सिंह के पूर्वजों के पास उस समय अमीटा की गढ़ी थी। उन्होंने मीर खाँ पिण्डारी की मदद से गोरों के आक्रमण को असफल कर दिया था।

अमीटा के समर में लेफ्टीनेण्ट मोरिस , ले० गैलेप्सी , असिस्टेण्ट सर्जन हूपर तथा बहुत से सैनिक मारे गए थे। जसवन्त राव होल्कर ने 1805 में गोरों से हार के बाद कोंच का क्षेत्र कम्पनी को दे दिया था , कोंच के 67 गाँवों पर गोरों का शासन हो गया था। किन्तु गोरों के लिए बरजोर सिंह का परिवार सदैव परेशानी का कारण बना रहा। बरजोर सिंह ने 1840 में बिलायाँ गाँव की जमींदारी एक स्थानीय कुर्मी से प्राप्त की थी , वह जमींदारी 1841 में गोरों से सेटेलमेण्ट होने के बाद बरजोर सिंह के नाम हो गयी , बरजोर सिंह का यहीं से गोरों के विरूद्ध विद्रोह या विरोध भी प्रारम्भ हो गया। मराठा शासन में यहाँ की जनता अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्र थी , मराठा काल में अकाल के समय जनता को टैक्स नहीं देना पड़ता था , उस काल में उनके घरों की कुर्की नहीं होती थी किन्तु गोरों के शासन में समय से लगान की अदायगी न होने पर जनता तथा जमींदार दोनों को अपमानित होना पड़ता था।

बरजोर सिंह को लगान के मामले में कई बार ब्रिटिश हवालात में भी समय गुजारना पड़ा। बरजोर सिंह की नहीं अपितु कई अन्य रियासतों के राजाओं तथा जमींदारों को भी इसी स्थिति या हालात से गुजरना पड़ा।

सूपा का बुढ़वा मंगल

अंग्रेजों का बढ़ता अनवरत अत्याचार तथा रजवाड़ों के गोरों के अमानवीय दृष्टिकोण के चलते बुन्देलखण्ड के बुन्देलों तथ पवारों ने एक प्रभावी रणनीति बनाने के लिए बुढ़वा मंगल के दिन सूपा (तब – हमीरपुर , अब – महोबा) में एक बैठक आयोजित की , जिसके सूत्रधार एवं प्रमुख जैतपुर नरेश महाराज परीक्षत थे। 1.

जालौन जिले में केशवराव तथा उनके पुत्रों का लगभग 06 माह तक आधिपत्य रहा , तात्या जब ग्वालियर से जालौन आये , तब कहीं जाकर केशवराव और उनके पुत्र जालौन से भागे। 1858 में मई का महीना जालौन के क्रांतिकारियों के लिए निराशा भरा रहा , 7 मई को कोंच और 23 मई को कालपी पराजय से क्रांतिकारियों को बहुत आघात लगा , इसके साथ ही भदेख नरेश परीक्षित ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली , उधर जालौन की वीरांगना ताई बाई ने जनहित में 10 मई को डिप्टी कमिश्नर टरनन के सक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। उसके बाद गुरुसराय के राजा केशवराव अपने बेटों के साथ कोंच – शासन करने के लिए आ गये , इन सब हालातों से ऐसा लगा था कि जालौन जिले में स्वातन्त्र्य संघर्ष का समापन हो गया है किन्तु ऐसा नहीं हुआ। जालौन की धरती का एक रण बाँकुरा अभी भी क्रांति – ज्वाल जलाये हुए था। उस महान पुरोधा का नाम था बरजोर सिंह।

गोरे कालपी में कालपी को जीतने का जहाँ जश्न मना रहे थें , वहीं कालपी तथा झांसी के बीच ऑग्ल सेना का सम्पर्क समाप्त करने की योजना को बरजोर सिंह अन्तिम रूप देने में व्यस्त थे। उनका इतना अधिक प्रभाव था कि उनके एक इशारे भर में उनके सहयोगी क्रांति में कूदने को तत्पर हो जाते थे। कुल्ले खाँ अपने पाँच सौ सहयोगियों के साथ बिलायां आ गया। हिन्दुस्तान की तत्कालीन भेद नीति के शिकार बरजोर सिंह भी हुए। उनकी समस्त योजना की जानकारी बिलायाँ के लम्बरदार ने नन्दलाल गूजर के माध्यम से मोंठ के ऑग्ल शिविर में पहुँचा दी। कुल्ले खाँ ने 26 मई 1858 को बिलायाँ के लम्बरदार तथा नन्दलाल गूजर को कैद कर लिया , लेकिन बरजोर सिंह की नीति का तो खुलासा हो ही गया था। झांसी के कमिश्नर ने बरजोर सिंह की सूचना कालपी में रोज के पास भेज दी , साथ ही यह भी कहा कि बरजोर सिंह पर आक्रमण किया जाय। 1.

रोज ने मेजर ओर के अधीन घुड़सवार दस्तों को निर्देशित कर बरजोर सिंह के विद्रोह को दबाने के लिए भेजा। मेजर ओर अपने घुड़सवार दस्तों के साथ तेजी से गिरथान पहुँच गया , जहाँ पर उसे सूचना मिली कि बरजोर सिंह एवं उनके साथी बड़ी संख्या में बिलायाँ की गढ़ी में उपस्थित हैं , बिना तोपों की मदद के गढ़ी की जीत संभव नहीं थी , मेजर ने कालपी से तोपे मगवायी। तोंपे मेजर ओर के पास गिरथान शिविर में 30 मई 1858 को शाम तक पहुँच पायी। गोरी सेना ने रात दस बजे बिलायाँ के लिए प्रस्थान किया , सुबह होते – होते उसने गढ़ी के चारो ओर मोर्चा बंदी कर ली।

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 82।

मेजर गर्मी में युद्ध से बचना चाहते थे क्योंकि वह मौसम गोरों के अनुकूल नहीं होता है , गोरी सेना 31 मई 1858 को प्रातः काल गढ़ी पर तोंपो से गोला बरसाने लगी। उधर बिलायाँ की गढ़ी से भी कुछ गोले दागे गये। बरजोर सिंह सूर्य के चरम काल में युद्ध करना चाहते थे , किन्तु गोरी सेना ने इसका अवसर ही नहीं दिया। दगते हुए गोलों की साया में अंग्रेजी फौज गढ़ी के दरवाजे तक पहुँच गयी , अकस्मात गढ़ी का दरवाजा खुला , बरजोर सिंह लगभग तीन सौ सैनिको के दस्ते के साथ गढ़ी से निकले , भयंकर युद्ध प्रारम्भ हो गया।

बरजोर सिंह के वीर साथियों ने अद्भुत शौर्य का परिचय देते हुए गोरों के मोर्चे को विफल कर दिया किन्तु गोरों की तोपों के सामने क्रांतिकारी सेना तितर – बितर होने लगी , युद्ध का विस्तार हो गया , गोरों के घुड़सवार दस्ते क्रांतिकारियों का पीछा करने लगे , विद्रोही वीर गति को प्राप्त हो रहे थे , फिर भी उन्होंने हथियार नहीं डाले , इस युद्ध में 150 क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों की आहुति दी। बरजोर सिंह ने जब देखा कि गोरों की विशाल सेना पर विजय संभव नहीं है तो उन्होंने ले० वेस्ट मैकोट तथा शेख अहमद को गंभीर रूप से घालय करके गोरी सेना को काई की तरह फाडते हुए वे बेतवा के बीहड़ों पर निकल गये , जिसके चप्पे – चप्पे से वे परिचित थे।

बरजोर सिंह का एक घोड़ा तथा 35 घायल क्रांतिकारी सैनिको के अतिरिक्त और कुछ भी मेजर ओर के हाथ नहीं लगा , इतिहास वेत्ता पी० जे० ओ० टेलर ने 1857 के भारतीय विद्रोह का एक सहयोगी नामक अपनी पुस्तक में बिलायाँ के युद्ध के बारे में जो वर्णन किया है , उससे बरजोर सिंह के शौर्य की पुष्टि होती। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ० सं० – 83।

टेलर ने लिखा था कि इस महल के एक राजा बरजोर सिंह ने उस महान साहस का परिचय दिया कि ब्रिटिश सेना का झांसी से सम्बन्ध की कट गया।

बिलायाँ के युद्ध में गोरों को सुगमता के साथ सफलता नहीं मिली अपितु गोरी सेना के ले0 डोवरकर तथा सहयोगियों में शाहनूर खाँ , जीवन सिंह , हवलदार शिवदीन तथा शेख सरवर को जी जान से युद्ध करना पड़ा , बरजोर सिंह ने ऑग्ल सैन्य अधिकारियों तथा सहायकों को गंभीर चोटें भी पहुँचायी। बरजोर सिंह एक निर्विवाद योद्धा थे। उनके पास युद्ध सामग्री में तोपें नहीं थी , साथ ही अश्वारोही सैन्य दस्ते का अभाव था , उनकी पराजय के यही मूल कारण थे। बिलायाँ युद्ध की पराजय से बरजोर सिंह के क्रांतिकारी संगठन को भारी क्षति पहुँची , जिले की जनता की हिम्मत भी जवाब दे गयी। बरजोर सिंह के प्रमुख सहयोगियों ने भी अपने को उनसे अलग कर लिया किन्तु उनके साथ दगा नहीं किया। 1.

गोरी सरकार ने बरजोर सिंह को जिंदा या मुर्दा पकड़ने वाले को दो हजार का इनाम भी देने की घोषणा की , सरकार ने उनकी हुलिया भी प्रकाशित की। गोरी सरकार का यह लालच भी वहाँ की जनता को विचलित नहीं कर सका। बरजोरसिंह बिलायाँ से इन्दुरखी पहुँचे , जहाँ पर उनकी सहयोगी दौलत सिंह से भेंट हुई , उन दोनों विद्रोही प्रमुखों ने शीघ्र ही एक नया क्रांतिकारी संगठन खड़ा कर लिया , जिसका उद्देश्य था गोरी सरकार को खत्म करना। बरजोर सिंह यह समझ चुके थे कि गोरों पर सीधी विजय प्राप्त नहीं की जा सकती है , इस कारण उन्होंने छापामार युद्ध नीति का आश्रय लिया।

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 83 , 84।

कालपी – पराजय के बाद रानी लक्ष्मीबाई तथा तांत्या ने ग्वालियर की ओर कूच किया था , इस कारण कालपी की सेना ग्वालियर गयी , उस अवसर का लाभ उठाकर बरजोर सिंह ने गोरों तथा उनके समर्थकों पर हमला करना शुरू कर दिया। 21 जून 1858 को बरजोर सिंह ने धर्मापुर जागीर , 22 जून को सहपुरा तथा , 23 जून को सांईसीरा गाँव को लूटा एवं वहाँ के जमींदार के लड़कों में से छोटेलाल तथा प्रताप को बंधक बना लिया। 21 जून की धर्मापुरा की घटना की सूचना वहाँ के जमींदार ने गोरों के पास भेजी तथा सुरक्षा उपलब्ध कराये जाने की प्रार्थना की। 25 जून 1858 को बरजोर सिंह ने धर्मापुरा के लोगों को नसीहत देने के लिए वहाँ पुनः आक्रमण किया , वहाँ पर आयी हुई बारात को भी लूट लिया। वहाँ के लोगों को यह समझाने के लिए मजबूर कर दिया गया कि टैक्स गोरों को न देकर बरजोर सिंह को दिया जाय। 1.

बरजोर सिंह का अब प्रमुख लक्ष्य गोरों के सबसे बड़े समर्थक गुरुसरांय के राजा केशवराव थे। केशवराव अपने पुत्रों सहित मई से ही गोरों की मदद के लिए कोंच में डेरा जमाये हुए थे। बरजोर सिंह ने 30 जून , 01 जूलाई तथा 02 जूलाई 1858 को लगातार तीन दिनों तक कोंच पर भीषण हमला किया , जिसमें अंग्रेज परस्त एक जमादार घायल हुआ तथा गुरुसरांय के चार सैनिक मरे , गुरुसरांय की सेना हार कर वापस लौट गयी। बरजोर सिंह का कोंच पर अधिकार हो गया। बरजोर सिंह का अगला लक्ष्य जालौन था। इसका कारण यह था कि ताई बाई के आत्मसमर्पण के बाद जालौन के ठाकुरों ने गोरों की मदद की थी। 2.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 84 , 85।
2. वही , पृ0 सं0 – 85।

वहाँ की जनता गोरों को टैक्स देना प्रारम्भ कर दिया था किन्तु जालौन पर अधिकार सुगम नहीं था क्योंकि छापामार युद्ध में पीछे हटकर भागने के मार्गों पर अधिकार जरूरी होता है , इसके लिए जालौन की घेराबंदी आवश्यक थी।

बरजोर सिंह ने अपने इस लक्ष्य की पूर्ति के प्रथम प्रयास में माधोगढ़ को लूटकर आधिपत्य जमा लिया , दूसरे प्रयास में पीपरी नौरोजपुर के लायक सिंह की मदद से 23 जूलाई 1858 को मदारपुर पर कब्जा कर लिया। जालौन में कालपी के अलावा बरजोर सिंह ने तीन ओर से अपना प्रभुत्व जमा लिया।

बरजोर सिंह ने 02 अगस्त 1858 को जालौन पर हमला कर जालौन थाने के थानेदार तुराब अली को कैद करके क्रांतिकारी सत्ता का ऐलान कर दिया। बरजोर सिंह ने , जिन गाँवों से गोरों को टैक्स मिलता था , उन गाँवों में इतनी दहशत फैला दी कि अंग्रेजों को वहाँ से धन मिलना बंद हो गया , जनता ने भयभीय होकर बरजोर सिंह को टैक्स देना प्रारम्भ कर दिया , उसने दो माह के अन्दर बिलायाँ – पराजय की भरपायी कर ली। झांसी के कमिश्नर ने भी इस तथ्य की पुष्टि की थी।

जालौन पर बरजोर सिंह का प्रभुत्व एक तरह गोरों के लिए खुली चुनौती थी , अंग्रेजों ने कालपी से एक बड़ी फौज भेजी , बरजोर सिंह ने समर शास्त्र के अनुसार उससे छापामार युद्ध नहीं किया , उसने दरोगा तुराब अली को सजाये मौत दी , उसके बाद वह कोंच के सुरक्षित क्षेत्र में चला गया।

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 85 , 86।

बरजोर सिंह कोंच आकर आराम से नही रहा , उसने 06 अगस्त 1858 को कोहरा थाने को लूट लिया , अगस्त माह में बरजोर सिंह के कारण गोरों का जालौन में नाम मात्र शासन रह गया था। उसने इस महीने में जालौन के कई क्षेत्रों में लूटपाट की , उसकी गुप्त छापामार नीति के बारे में गोरों को कुछ भी पता नहीं चलता था , उन्हें यह नहीं पता चल पाता था कि बरजोर सिंह कल किस क्षेत्र में आक्रमण करेगा ? उसके बारे में एक लोकोक्ति अब तक प्रचलन में है–

हंडिया में रांधो खपरिया में खाओ।
भाजो री बहना बरजोर आओ।।

डिप्टी कमिश्नर टरनन का मुख्यालय कालपी होने के कारण गोरी फौज भी कालपी में ही रहती थी। उसने बरजोर सिंह पर तीन ओर से घेरा डालने की नीति बनायी। झांसी कैप्टन मोनट्रीय ने मोठ में अड्डा जमाया। इस सेना ने गुरसरांय के सैनिकों के साथ मिलकर कोंच पर कब्जा कर लिया।

मऊ-महोनी का युद्ध

बरजोर सिंह हार मानने वाले योद्धा नहीं थे , उन्होंने अपनी सेना को छोटी – छोटी टुकड़ियों में बाँटकर गोरी सेना की नाक में दम कर दिया , उसने मऊ – महोनी पर अपना मजबूत गढ़ बनाया , उनके 500 सहयोगियों ने सहाव पर कब्जा कर लिया। बरजोर सिंह को मऊ – महोनी से हटाने का दायित्व कैप्टन अशबर्नर को दिया गया , उसके साथ बम्बई के तीसरी घुड़सवार के दस्ते थे। बरजोर सिंह अपने प्रमुख सहयोगियों के साथ चार हजार सैनिकों को लेकर गोरों से मुकाबले के लिए तैयार थे। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वातंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 86।

मऊ – महोनी के युद्ध मे 4 सितम्बर 1858 को बरजोर सिंह की हार हुई , वे तो बचकर निकलने में सफल हो गए किन्तु उनके 140 साथियों को अपनी जान गंवानी पड़ी। गोरों को उसकी दो तोपें भी मिल गयी।

सहाव - समर

बिग्रेडियर मैकडफ ने सहाव की गढ़ी में तीन हजार क्रांतिकारियों को घेर लिया , उसे यह भी मालूम था कि बहुत से क्रांतिवीरों के पास शस्त्र हैं , उसने मजबूत युद्ध – व्यूह की रचना की , उसकी सहायता के लिए अलग–अलग बाजुओं में कैप्टन ओम ने कर्नल प्राइमोज , मेजर डेविस तथा रिसालेदार मीर हुसैन अली भी थे , सिक्ख सैन्य दल ले0 डिक के अधीन अलग से सुरक्षित रखा गया था , गोरी सेना ने 05 सितम्बर 1858 को गढ़ी पर गोले बरसाने प्रारम्भ कर दिए , क्रांतिकारियों ने आगे बढ़कर ऑग्ल सेना पर भीषण आक्रमण किया , सहाव से सिरावन तक युद्ध में 200 क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों की आहुति दी , 21 घायल क्रांतिकारी पकड़ लिए गये , गोरी सेना के सात सैनिक तथा ले0 डिक गंभीर रूप से घायल हुआ। 1.

क्रांतिकारियों की 4–5 सितम्बर 1858 के युद्ध में जान – माल की अपार क्षति हुई। बरजोर सिंह ने इस अपारक्षति के बावजूद भी हिम्मत नहीं हारी , उसने क्रंतिवीरों के मनोबल को बढ़ाने तथा गोरों की मनोदशा बिगाड़ने की दृष्टि से 16 सितम्बर 1858 को जोतापुर लहर , 18 अक्टूबर को जूसी लहर को लूटकर वहाँ के लम्बरदार को कैद कर लिया।

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 87।

गोरों की सेनायें 1858 के अन्त तक कालपी , जालौन , कोंच , और उरई में स्थायी रूप से रहने लगीं , इस कारण बरजोर सिंह को अपनी रणनीति को कुछ समय तक रोकनी पड़ी , इस समय तक भारत में क्रांति को लगभग समाप्त कर दिया गया था , साथ ही महारानी विक्टोरिया द्वारा आत्मसमर्पण करने वालों के लिए माफी की घोषणा भी हो चुकी थी , इस घोषणा का बहुत से विद्रोहियों ने लाभ लेकर आत्मसमर्पण भी किया , जिनमें एक बांदा – नवाब भी थे। इतने पर भी बरजोर सिंह जैसे सूरमा शिरोमणि ने माफी नहीं माँगी। बरजोर सिंह लम्बे समय तक अंग्रेजों से संघर्ष करते रहे।

गोरों की चाल का और एक रूप

इधर ब्रिटिश संसद में यह प्रस्ताव पेश होना था कि भारत में सत्तावनी – क्रांति का दमन कर दिया गया है। उत्तरी पश्चिमी प्रान्तीय सरकार के सामने सबसे बड़ा धर्म संकट यह था कि वह गवर्नर जनरल को बरजोर सिंह जैसा क्रांतिवीर होते हुए यह कैसे सूचित करे कि यहाँ की क्रांति का पूरी तरह दमन कर दिया गया है। इस समस्या से निजान पाने के लिए गोरे लोगों ने एक चाल यह चली कि आगे से बरजोर सिंह को डकैत कहा जाय , उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों को भी डकैती की घटनाओं के रूप में उल्लिखित किया जाय। पूर्व में हमीरपुर के मजिस्ट्रेट ने देशपत जैसे महाऩ बुन्देला पुरोधा को एक डाकू की संज्ञा दे चुके थे। गोरी सरकार ने जनवरी 1859 से बरजोर सिंह के पुरोधत्व धर्म को एक डकैत के कार्य के रूप में रूपान्तरित कर दिया। अंग्रेजों की इस सोची – समझी चाल को वहाँ की जनता नहीं समझ पायी और बरजोर सिंह जैसे महान सूरमा के क्रांतिकारी योगदान को भूलने लगी। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 87।

सरकारी अभिलेखों के अनुसार 1859 में जालौन जिले से स्वातन्त्र्य संघर्ष खत्म हो गया किन्तु ऐसा नहीं हुआ , गोरों ने बरजोर सिंह के क्रांतिकारी कार्य – कलापों को डकैती के रूप में उल्लिखित किया। झांसी – कमिश्नर ने जालौन के डिप्टी कमिश्नर को लिखा कि बरजोर सिंह की जमींदारी आदि जब्त कर ली जाय किन्तु बरजोर सिंह बुद्धिमान भी बहुत थे , वे गोरों पर एक रत्ती भर विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने 1884 में ही अपने नाबालिग पुत्र चन्द्रहास के नाम जमींदारी को रू0 2972 में रजिस्ट्री कर दी थी। चन्द्रहास के नाम कोई अपराध दर्ज नहीं था , इस कारण टरनन के पास उनकी जमींदारी अधिगृहीत करने का कोई कारण नहीं बनता था। उसने यह पूरा प्रकरण उच्चाधिकारियों के पास भेजा।

17 जरवरी 1859 को उत्तर पश्चिमी प्रान्त के अवर सचिव ने झांसी – कमिश्नर को सूचित किया कि गवर्नर जनरल ने बरजोर सिंह की सम्पत्ति या जमींदारी को , जो उनके नाबालिग पुत्र चन्द्रहास (चन्द्रहंस) के नाम है , को जब्त करने के आदेश पारित कर दिए हैं , किन्तु बरजोर सिंह का उस क्षेत्र में इतना दबदबा था कि उसकी सम्पत्ति को कोई भी खरीदने का साहस नहीं कर पा रहा था। बरजोर सिंह ने यह घोषणा कर रखी थी कि जो भी उसकी सम्पत्ति को खरीदेगा , उसको जीवित नहीं छोड़ा जायेगा। 1.

गोरी सरकार ने अन्त में विवश होकर गुरसरांय के राजा के दो पुत्रों जयरामदास तथा आत्माराम को , जिन्होंने उसकी क्रांति के समय सहायता की थी , बिलायाँ ग्राम की जमींदारी ईनाम के रूप में दो हजार किराये में दे दी।

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 89।

05 मार्च 1859 से बरजोर सिंह ने पुनः अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को प्रारम्भ कर दिया , उसने पारा को लूट लिया। गोरे जब उसे उत्तर में खोज कर रहे थे तब वह सलैया (कोंच) को लूट रहा था। बरजोर सिंह का 24 से 26 मार्च 1858 तक कोटरा पर अधिकार रहा। गोरी फौज की टुकड़ी जब कोटरा पहुँची तब तक वह कोटरा छोड़ चुके थे। वे गोरों को भेंट स्वरूप वहाँ पर एक चपराशी की लाश छोड़ गये। बरजोर सिंह अवसर पड़ने पर हमीरपुर तथा झांसी जिले के क्रांतिकारियों की मदद के लिए आते रहते थे। उन्होंने रानी द्वारा गोद लिए गए पुत्र के पिता जमुना भैया की सहायता मऊ जाकर कई बार की। 06 अप्रैल 1859 को मऊ – महोनी के निकट पहुँच नदी के किनारे मैकिनराय से बरजोर सिंह की मुठभेड़ हो गयी , बरजोर सिंह तथा दौलत सिंह नदी पार करके ग्वालियर के क्षेत्र में प्रवेश कर गये। कैप्टन स्वीने को मई 1859 में बरजोर सिंह के सेवढ़ा में होने की सूचना मिली , वह सेना के द्वारा उसे तथा क्रांतिकारियों को वहाँ पर पकड़ना चाहा किन्तु भारी नुकसान उठाकर कैप्टन स्वीने को वहाँ से हटना पड़ा।

बरजोर सिंह ने 24 मई 1859 को भाँडेर परगना में प्रवेश किया , वहाँ पर लूटमार शुरू कर दी , झांसी – सेना आने की सूचना पर उसने अपनी सेना के दो भाग कर दिए , दौलत सिंह आधे सैन्य दल के साथ ग्वालियर क्षेत्र में प्रवेश कर गए और शेष आधे सैन्य दल के साथ वे घसान और बेतवा के बीहड़ में चले गए। बरजोर सिंह को गुरसराय के राजा केशवराव के कारण 01 जून को बेतवा पार करके सैदनगर कोटरा से जालौन में घुसने मे सफलता नहीं मिली। उसे ऐरच की तरफ जाना पड़ा। 1.

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 88।

बरजोर सिंह ने 09 जून को गरौठा के पचास बनियों को , जो केशवराव के समर्थक थे , लूट लिया। बुन्देलों की गरौठा में अच्छी संख्या थी , वे सब क्रांतिकारियों के समर्थक थे। इस कारण उन बुन्देलों से बरजोर सिंह को कोई क्षति नहीं पहुँची। बरजोर सिंह ने 10 जून को करेरा को लूटकर उसमें आग लगा दी , एक सरकारी चपरासी को मार दिया। झांसी के डिप्टी मजिस्ट्रेट नियाज अली तथा गुरसराय के सैनिकों ने उसका पीछा किया किन्तु वह हमीरपुर सीमा में प्रवेश कर गया।

धसान नदी के तट का युद्ध

बरजोर सिंह के लिए 19 जून 1859 का दिन बहुत ही अशुभ रहा , अलीपुरा से लगभग 10 किमी0 दूर दक्षिण पश्चिम में घसान नदी के तट पर मेजर डेविस तथा लेफ्टीनेंट हावथार्न ने बरजोर सिंह तथा छत्रसिंह को औचक घेर लिया। बरजोर सिंह तथा गोरी सेना के बीच घनघोर युद्ध हुआ , जिसमें बरजोर सिंह के 12 क्रांतिकारी साथी शहीद हो गये , जिनमें सिंह का मुँहबोला भाई भी शामिल था , बरजोर सिंह ने बेतवा नदी पार करने का प्रयास किया किन्तु बेलाही गाँव के निकट ले0 कटानिया से भिड़न्त हो गयी , जिसमें बरजोर सिंह को अपना बहुत सारा सामान खोना पड़ा , उनके दो सहयोगियों को गोरों ने गिरफ्तार कर लिया। बरजोर सिंह ने समय को भांप कर अपने साथियों के साथ उन्होंने अपनी सदैव की शरण दात्री दतिया की धरती में प्रवेश किया। उनके पीछे चार जनपदों की सेना लगी थी। दौलत सिंह ने बरजोर सिंह की तरफ से गोरों का ध्यान बाँटने की दृष्टि से इन्दुरखी के दुर्ग और कस्बे पर आधिपत्य जमा लिया परन्तु यह कब्जा अधिक दिनों तक नहीं रहा। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वातंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 91।

लेo ओसवार्न ने दौलत सिंह को वहाँ से हटा दिया। महारानी विक्टोरिया ने जुलाई 1859 में यह घोषण करदी कि भारत वर्ष में विद्रोह खत्म हो गया है। बरजोर सिंह ने इस घोषणा को मिथ्या सिद्ध करते हुए 31 जुलाई को दतिया की सीमा से जालौन जनपद में धावा बोलकर बुढ़रवा और पुरा गाँवों को लूटकर बारह आदमियों को फिरौती की दृष्टि से अगवा कर लिया। 1.

बरजोर सिंह का दतिया तथा ग्वालियर के क्षेत्रों में ठहराव

बरजोर सिंह ने ग्वालियर तथा दतिया रियासतों के क्षेत्रों में दो माह तक रुककर अपने सैन्य संगठन को मजबूत किया , उसके बाद 10 अक्टूबर 1859 को सिंध नदी पार कर जालौन के बर्रा गाँव को लूटकर उसे आग के हवाले कर दिया क्योंकि वहाँ के मालगुजार ने बरजोर सिंह को जमा के रूप में रू125 देने से मना कर दिया था। बरजोर सिंह तथा उनके साथियों को गाढ़े वक्त में दतिया और ग्वालियर रियासत के गाँवों में शरण प्राप्त होती थीं। बरजोर सिंह द्वारा लहर तथा कछावाहाधार में वारदात करके वहाँ से भाग जाने के कारण उस क्षेत्र की गोरी सरकार के कर्मचारी उन्हें पकड़ नहीं पाती थे। गोरी सरकार ने दतिया के इस रवैये से पत्र लिखकर नाराजगी जतायी थी। उसने यह भी धमकी दी थी कि दतिया की ओर से जालौन में प्रवेश कर बरजोर सिंह जो वहाँ से राजस्व वसूलेंगे , उसकी भरपायी दतिया राज्य से की जायेगी। इस पर दतिया राज्य के दीवान गनेशीलाल ने गोरों को विश्वास दिलाया था कि बरजोर सिंह राज्य की सीमा में प्रवेश नहीं करने पायेगा किन्तु रियासत की जनता बरजोर सिंह की समर्थक थी। जनता ने बरजोर सिंह कीं समर्थक थी। जनता ने बरजोर सिंह के साथ विश्वासघात नहीं किया। उनका क्रांतिकारी आन्दोलन पूर्ववत चलता रहा।

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 94।

बरजोर सिंह के परिवार पर कहर

गोरी सरकार ने बरजोर सिंह के विरूद्ध कठोर कदम उठाने के लिए ले0 लाइंग को दतिया में नियुक्त किया। कालपी से गोरी फौज को भी दतिया भेजा गया। दतिया राज्य पर ले0 लाइंग की रिपोर्ट के आधार पर रू0 175—10 का जुर्माना भी किया गया। लाइंग के हाथ एक और सफलता लगी , उसने गुप्तचरों द्वारा बरजोर सिंह के परिवार के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर ली। उनका परिवार भूमिगत होकर दतिया के किसी क्षेत्र में रह रहा था , बरजोर सिंह के पूरे परिवार को कैद कर दतिया की जेल में डाल दिया गया। झांसी के कमिश्नर ने दतिया राज्य को लिखा कि उनके लड़के चन्द्रहंस तथा लड़की लालकुँवरि को उरई भेज दिया जाय तथा परिवार के शेष सदस्यों को रिहा कर दिया जाय। उन दोनों को उरई लाया गया। किन्तु बरजोर सिंह के डर से डिप्टी कमिश्नर टरनन ने उन्हें उरई में न रखकर उनको कानपुर या इटावा रखना चाहते थे लेकिन कहीं के भी अधिकारी इस दायित्व को निभाना नहीं चाहते थे। बरजोर सिंह के इस विषय के रुख को भी कोई नहीं जान पा रहा था। उनके बच्चों को बिलायाँ में निगरानी में रखा गया।

दरबार का आयोजन

गोरे यह दिखाना भी चाहते थे कि जनपद मे गोरी सत्ता पूरी तरह से स्थापित हो गयी है , उन्होंने एतद् विषयक प्रदर्शन के लिए 30 नवम्बर 1861 को उत्तरी पश्चिम प्रान्त के ले0 गवर्नर को उरई बुलाकर एक दरबार का भी आयोजन किया गया , जिसमें कई आँग्ल अधिकारी तथा अंग्रेज परस्त दीवान एवं जागीरदारों ने सहभाग किया। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 94।

गोरी सरकार बरजोर सिंह के बच्चों पर भी निष्ठुर हो गयी थी , उनके जीवन–यापन के लिए मात्र चार–चार रूपयों का जीवन निर्वाह भत्ता निर्धारित किया था , जो जीवन पर्यन्त के लिए नहीं था। सरकार ने कालान्तर में उनके बच्चों को बरजोर सिंह की चाची रानी दुलैया के संरक्षण में रख दिया था , जहाँ पर बरजोर सिंह के एक मात्र पुत्र चन्द्रहंस की 'संदेहास्पद रूप में मृत्यु हो गयी थी , जिस पर बरजोर सिंह ने 26 मई 1866 को 20–30 साथियों के साथ बिलायाँ आकर चाची रानी दुलैया की हत्या कर दी थी। गाँव के अन्य किसी भी व्यक्ति को उन्होंने कोई क्षति नहीं पहुँचायी। उनकी यह एक मात्र ऐसी घटना रही , जिसे प्रतिशोध के रूप में आंका जाता है।

बरजोर सिंह का प्रयाण

बरजोर सिंह जी के बिलायाँ आगमन की सूचना से जिला प्रशासन बुरी तरह सकते में आ गया। एट के पुलिस अधिकारी वारिस अली , कर्नल स्विंग तथा विलियम को बरजोर सिंह के पकड़ने के लिए भेजा गया। बिलायाँ से कुछ दूरी पर ही एट के सब इन्सपेंक्टर वारिस अली की बरजोर सिंह से भिड़न्त हो गयी , जिसमें सिंह का भतीजा और उनके दो तीन साथी पकड़ लिए गए किन्तु सिंह अपने शेष साथियों के साथ सैदनगर पहुँच गये। कर्नल स्विंग तथा विलियम बरजोर सिंह को नहीं पा सके। बरजोर सिंह ककरबई के क्षेत्र में सुरक्षित पहुँच चुके थे किन्तु प्रचण्ड गर्मी में अहर्निश दौड़ के कारण उन्हें लू लग गयी थी , जिसके कारण वे बीमार पड़ गये। लू ने बुन्देलखण्ड के एक महान सूरमा की जीवन लीला समाप्त कर दी। इस महान पुरोधा ने बुन्देलक्षेत्र में एक दशक तक अंग्रेजों को छकाये रखा। बरजोर सिंह के सम्बन्ध में अंग्रेजों ने जो प्रचारित किया था , वह पूरी तरह मिथ्या एवं भ्रामक था। 1.

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 96।

वे न तो डाकू थे और न ही आतंकवादी। वे गुरिल्ला युद्ध के महारथी थे , उनका उद्देश्य आँग्ल सरकार तथा उनके समर्थकों को दण्ड देना था। बरजोर सिंह पक्के राष्ट्रवादी थे।

१८५७ के स्वातन्त्र्य समर के अन्य योद्धा

जालौन जनपद में बहुचर्चित क्रांतिचेताओं के अतिरिक्त बहुत से ऐसे सूरमा हुए है , जिन्होंने 1857 के स्वातन्त्र्य समर में पूरे मनोयोग से सहभाग किया है , जिन्होंने सत्तावनी क्रांति में भाग लिया , उनमें से अधोलिखित का सहयोग सराहनीय रहा।

स्वाधीनता संघर्ष और मोती गूजर

जालौन के सत्तावनी संघर्ष के शूरों में से मोती गूजर एक ऐसा नाम रहा है , जिसके सत्तावन की क्रांति में अनुदाय को भुलाया नहीं जा सकता –

मोती गूजर बिलायाँ के ही रहने वाले थे। ये बरजोर सिंह के अभिन्न साथी थे। मोती गूजर को जनपद जालौन के 1857 के समर में सहभाग करने के कारण राष्ट्रप्रेम के सर्वोच्च पुरस्कार फाँसी की सजा से सम्मानित किया गया।

मोती गूजर का बरजोर सिंह के लिए ढाल बनना

बिलायाँ में बरजोर सिंह तथा गोरों के बीच 31 मई 1858 को भीषण संग्राम हुआ , युद्ध में जब क्रांतिकारी सेना की पराजय होने लगी , तब इन्होंने बरजोर सिंह से युद्ध स्थल से बाहर निकल जाने के लिए कहा ताकि जनपद में सत्तावनी क्रांति की मशाल जलती रही।

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 97।
2. वही , पृ0 सं0 – 98।

मोती गूजर को यह पता था कि युद्ध भूमि से निकलना आसान नहीं था। इसके साथ ही विद्रोही सेना को एक फायदा मिल रहा था कि गोरे बरजोर सिंह को पहचानते नहीं थे। ऐसी स्थिति में मोती गूजर ने जवाहर ब्राम्हण , देशराज गड़रिया , कुमान कोरी , छेदी ब्राम्हण , गुलाब बेहना , बिहारी अहीर , सबलू अहीर , बैजू चमार , कल्लू लोधी तथा नदी गाँव के इसरिया हज्जाम के साथ मिलकर बरजोर सिंह को अपने सुरक्षा घेरे में ले लिया और भयंकर युद्ध करने लगे , मोती गूजर ने आनन–फानन बरजोर सिंह को घोड़े से उतारकर पैदल ही बेतवा के बीहड़ की ओर निकल जाने का अवसर दिया। मोती गूजर स्वयं बरजोर सिंह के घोड़े पर सवार होकर तथा उनके ध्वज को हाथ में लेकर भीषण युद्ध किया। ले0 वेस्टमेकोट तथा मेजर डोवकर गूजर को ही बरजोर सिंह समझ बैठे। वे इनसे युद्ध करने लगे। 1.

मोती गूजर ने वेस्टकोट को गंभीर रूप में जख्मी कर दिया किन्तु गोरी सेना के साधु सिंह , शाहनूर खाँ , जीवन सिंह , सूबेदार मोहम्मद अली , लक्ष्मण पाण्डे तथा शेख कम्मू इत्यादि ने मिलकर एक साथ आक्रमण करके मोती गूजर को कैद करने मे सफलता प्राप्त कर ली। गोरी सेना को केवल बरजोर सिंह का घोड़ा तथा झण्डा ही मिल पाया। गोरे लोग गूजर से बहुत क्रोधित हुए थे। उन्होंने तुरन्त उस पर मुकदमा चलाने का नाटक रचकर उसे 10 जून 1858 को फांसी पर लटका दिया। इस तरह जनपद का एक प्रथम वीर सत्तावनी समर – वेदी में आत्म समिधा डालकर जनपद का प्रथम अमर होता बन गया। मोती गूजर के अतिरिक्त जवाहर ब्राम्हण , देशराज गड़रिया , मास्टर विश्वास राव , इसुरिया हज्जाम ,

---

1. देवेन्द्र कुमार सिंह , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 , पृ0 सं0 – 98।

नारायण राव , कुमान कोरी , कल्लू लोधी , गुलाब बेहना , बिहारी अहीर , बाजूगोपाल , लायक सिंह , परीक्षित , रमजानी , खैराती , पलटू एवं प्राग जैसे लगभग अस्सी ऐसे सत्तावनी शूर रहें है , जिन्होंने 1857 की क्रांति में शानदार सहभाग किया। इस तरह से अन्त में कहा जा सकता है कि 1857 के स्वातन्त्र्य समर के इतिहास में जालौन जनपद के योगदान का ग्राफ बहुत महत्वपूर्ण एवं ऊर्ध्वगामी रहा। 1857 के बाद आजादी के पूर्व तक नौ दशकों के संघर्ष में भी जालौन पीछे नहीं रहा , यहाँ अनेक स्वातन्त्र्य शूरों ने सत्तावनी समर के बाद आजादी के लिए क्रांतिकारी आन्दोलन में बढ़–चढ़कर भाग लिया–

स्वाधीनता संघर्ष और चतुर्भुज शर्मा

राठ–उरई मार्ग पर उरई से 22 किमी0 पहले वेत्रवती नदी के किनारे अवस्थित मोहाना जालौन जनपद का ऐसा गाँव है , जहाँ पर उसकी जाबाँजी की बहुत सी अनछुई यादें आज भी जिंदा हैं , 1857 से लेकर 1947 तक के नौ दशकों के हर संघर्ष में इस गाँव ने साहसिक भूमिका निभायी है। इसी मोहाना की देशधर्मी मट्टी में वहाँ के एक सपूत ने अपने को तितीक्षित कर इतना फौलादी बना लिया कि आने वाली बाधायें राष्ट्रप्रेम के उस पथिक को कभी थकित एवं दमित न कर सकीं। उस महान पुरोधा का नाम था– चतुभुर्ज शर्मा।

मोहाना का नामकरण

मोहाना गाँव भी अपने नामकरण के मूल में कई दन्त कथायें छिपाये है। एक मान्यातानुसार इसे जहाँ मदन और दुन नाम के दो लोधियों ने बसाया था।

---

1. डॉ0 भवानीदीन , प्राचीरें बोलती है , सुमेरपुर , सन्दर्शिता , 2001 , पृ0 सं0 – 76

वहीं एक दूसरा मत यह भी है कि मोहन नामक व्यक्ति के नाम पर इसका मोहाना नाम पड़ा। बेतवा के किनारे मोहाने (डांड़ी , पहाड़ी) पर बसा होने के कारण भी इसे मोहाना कहे जाने की भी एक मान्यता है। चतुर्भुज शर्मा का जन्म मोहाना के चुन्नीलाल शर्मा के घर 1900 में हुआ। शर्मा जी को पिता से परिश्रम एवं माँ से कर्मनिष्ठा की सीख बालकाल में ही प्राप्त हो गयी थी। शर्मा जी की प्रारम्भिक पढ़ाई मोहाना गाँव में ही हुई थी , उसके बाद वे शिक्षा ग्रहण के लिए डकोर गए। इन्हें डकोर प्राथमिक पाठशाला के प्रधानाध्यापक लाला रामजी मिश्र का सानिध्य मिला। मिश्र जी ने ही शर्मा जी के व्यक्तित्व को निखारा।

लाला रामजी मिश्र का कुछ समय बाद कालपी के पास चुर्खी स्थानान्तरण हो गया। शर्मा जी ने डकोर में दर्जा तीन तक शिक्षा ग्रहण करने के बाद मिश्र जी के सानिध्य में चुर्खी जाकर शिक्षा ग्रहण की। तत्पश्चात् शर्मा जी को उरई के मिडिल स्कूल में पं0 कृष्णपाल , पं0 रामदीन तथा मुंशी दुर्गा प्रसाद का नैकट्य प्राप्त हुआ। चतुर्भुज शर्मा के किशोर काल में प्रथम विश्वयुद्ध प्रारम्भ हो गया था। उन्हीं दिनों में शर्मा जी के साथ घटी एक घटना ने उन्हं आँग्ल विरोधी बना दिया।

शर्मा जी को आँग्ल विरोधी बनाने वाली घटना

चतुर्भुज शर्मा अपने पिता जी को बापू कहा करते थे। वे एक बार पिता के कहने पर उरई की गल्ला मण्डी में गल्ला बेचने के लिए अपने नौकर के साथ उरई गए। उन दिनों सरकारी बेगार एक आम बात थी।

---

1. चतुर्भुज शर्मा , विद्रोही की आत्मकथा , दिल्ली , आत्माराम एण्ड सन्स , 1970 , पृ0 सं0 – 11 , 12।

वे जब उरई से वापस बैलगाड़ी द्वारा आ रहे थे , तभी तहसीलदार के चपरासी ने बेगार के लिए गाड़ी को ले चलने के लिए कहा। शर्मा जी ने उसका कड़ा विरोध किया , फिर उनकी गाड़ी वह तहसील तक लिवा ले गया। शर्मा जी ने तहसीलदार के समक्ष बेगार – प्रथा का भारी विरोध किया , तहसीलदार पहले तो नाराज दिखे बाद में शर्मा जी के अड़िग विश्वास को देखकर उसने बैलगाड़ी छोड़ दी , शर्मा जी उस घटना के बाद आँग्ल विरोधी हो गये।

शिक्षाकाल का विरोध

शर्मा जी वर्नाक्युलर परीक्षा पास करने के बाद अपनी माँ के साथ उरई में रहकर आँग्ल शिक्षा प्राप्त करने लगे , उन्हें वहाँ पर पं० रामाधार मिश्र जैसे योग्य एवं प्रतिभाशाली गुरु का समीप्य मिला। मिश्र जी अध्यात्म एवं वेदान्त में निपुण थे। वे होमरूल आन्दोलन के पक्के समर्थक थे। मिश्र जी ने ही शर्मा जी की मनोभूमि में पड़े मातृभूमि के विचार–बीज का वपन किया , जो कालान्तर में अंकुरित होकर विकसित हुआ। 1919 में आँग्ल सरकार जब जीत की खुशी में छात्रों कों तमगे बांट रही थी , उस समय शर्मा जी ने कक्षा में उसे लेने से इन्कार कर गोरों के प्रति विरोध की शुरुआत की। 1.

क्रांतिकारी आन्दोलन में

चतुर्भुज शर्मा विद्यार्थी जीवन से ही देशप्रेम के क्षेत्र में प्रवेश कर चुके थे। शर्मा जी के विद्याथी काल में कालीचरन निगम , मूलचन्द्र तथा मोतीलाल शर्मा प्रमुख सहपाठी थे , चतुर्भुज शर्मा ने विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार आन्दोलन में अपनी विदेशी टोपी को आग में डालकर आन्दोलन की शुरुआत की।

---

1. डॉ0 भवानीदीन , प्राचीरें बोलती है , सुमेरपुर , सन्दर्शिता , 2001 , पृ0 सं0 – 80।

उसके बाद उन्होंने रौलेट बिल का विरोध करने की दृष्टि से रौलेट विरोधी फार्म भरकर डी0 एम0 को कानून तोड़ने का नोटिस भिजवा दी। इस बात को लेकर उनके पिता तथा सहपाठी नाराज हुए। उन्होंने इसकी परवाह नहीं की। उनके साथ केवल एक सहपाठी मोती लाल शर्मा भर रहे। चतुर्भुज शर्मा अपनी धुन के धनी थे।

अंग्रेजी अध्यापक पं0 मुरलीधर की प्रेरणा से शर्मा जी पुनः अध्ययन करने लगे। शर्मा जी ने 1925 में इण्टर तथा 1927 में बी0 ए0 की परीक्षा पास की।

चतुर्भुज शर्मा का गरम दल के नेता मौलाना हजरत मोहानी से सम्पर्क हो गया। मोहानी साहब उग्रवादी विचारों के थे। चतुर्भुज शर्मा जैसे नवयुवाओं पर इनका अच्छा असर पड़ा। इसके अतिरिक्त चतुर्भुज शर्मा अग्निधर्मा समाचार पत्र 'प्रताप' प्रेस में भी जाते थे , उनका वहाँ पर गणेश शंकर विद्यार्थी। जी से सम्पर्क हुआ। शर्मा जी को उनके विचारों ने भी प्रभावित किया। उन्होंने 1929 में विधि–स्नातक की परीक्षा भी पास की , वे जनपद के जहाँ मन्नीलाल पाण्डेय , झन्नीलाल पाण्डेय तथा बेनी माधव तिवारी जैसे प्रमुख राष्ट्रवादी नेताओं से जुड़े थे , वहीं शर्मा जी के राष्ट्र के चोटी के नेताओं से भी अच्छे सम्बन्ध थे , वे हिंसक तथा अहिंसक दोनों प्रकार के आन्दोलनों से जुड़े रहे। उन्होंने जेल – यात्रायें भी कीं। वे दो दशकों तक कांग्रेस के प्रमुख नेता एवं मंत्री भी रहे। इस महान राष्ट्रवादी ने 26 अक्टूबर 1976 को इस दुनिया से कूच किया। उनका स्वातन्त्र्य धर्मी योगदान याद रहेगा। 1

---

1. डॉ0 भवानीदीन , प्राचीरें बोलती है , सुमेरपुर , सन्दर्शिता , 2001 , पृ0 सं0 – 80।

स्वाधीनता संघर्ष और चन्द्रभान विद्यार्थी

बुन्देलखण्ड वैसे तो किसी परिचय का मोहताज नहीं है , उसका नाम आते ही मानस पटल उसके माहात्म्य को बोध अंकित हो जाता है किन्तु बुन्देली – वसुधा में कुछ ऐसे स्थल हैं , जिनके महत्व का अपना एक अलग ही महत्व रहा है , उनमें कालपी – कीर्तिका को विच्छेदित नहीं किया जा सकता। कालपी की कीर्ति – कौमुदी ने बुन्देलधरा को ही नहीं अपितु सारे देश की माटी को अपने सपूतों की शूरता – सुवास से महकाया है।

कालपी हालांकि आज महर्षि वेदव्यास , नवरत्न बीरबल , मदार साहब जैसे सिद्व पुरुष , आचार्य श्रीपत , कृष्ण बल्देव वर्मा एवं द्वारिका प्रसाद गुप्त रसिकेन्द्र जैसे साहित्य शिल्पियों के कारण जहाँ जानी जाती हैं ,

वहीं इस व्यास – वसुधा के गौरवशाली इतिहास का एक और पुरोधा–पृष्ठ हुआ है , जिसके उल्लेख के बिना उसकी अर्थवत्ता अधूरी मानी जायेगी। उस इतिहास – पुरुष का नाम था– चन्द्रभान विद्यार्थी। विद्यार्थी जी ने अपने त्याग एवं तरस्विता की तूलिका से कालप्रिया के महत्व – मानचित्र को सदैव सजाया – संवारा है। 1.

चन्द्रभान अग्निहोत्री जी का जन्म उस काल में हुआ था , जब सारा देश लार्ड कर्जन द्वारा किये बंग – भंग की पीड़ा को भोग रहा था। विरोध और बगावत के इसी दौर में चन्द्रभान अग्निहोत्री जैसे अग्निधर्मा पुरुष का 17 फरवरी 1906 मे कानपुर की अकबरपुर तहसील के कोरवा खुर्द गाँव में बृजमोहन लाल अग्निहोत्री के घर हुआ था।

---

1. डॉ0 भवानीदीन , प्राचीरें बोलती हैं , सुमेरपुर , सन्दर्शिता , 2001 , पृ0 सं0 – 90 , 91।

इनके ऊपर से बहुत कम आयु में ही माता – पिता का साया उठ गया था , फलतः इनके मामा पं0 रामरतन मिश्र ने विद्यार्थी जी की परवरिश की।

क्रांति-दल की सदस्यता

चन्द्रभान अग्निहोत्री को सबसे पहले गणेश शंकर विद्यार्थी का सानिध्य मिला। उनसे सम्पर्क में आने के बाद ही चन्द्रभान अग्निहोत्री ने अपना उपनाम विद्यार्थी कर लिया जो उनके साथ जीवनान्त जुड़ा रहा। चन्द्रभान विद्यार्थी का कालपी के क्रांतिदल के कर्ता – धर्ता राजाराम सिंह , रघुराज सिंह एवं भानुप्रताप सिंह जैसे वीरों से परिचय हो गया , विद्यार्थी भी उस क्रांतिकारी संगठन के सदस्य हो गये। विद्यार्थी भी क्रांतिदल के कार्यो में प्रतिभाग करने लगे। क्रांतिकारियों के पास हथियार क्रय करने के लिए सदैव अर्थाभाव रहता था , वे इसीलिए राजनैतिक डकैतियाँ डालते थे , कालपी की इस क्रांतिकारी टोली को अर्थाभाव झेलना पड़ रहा था , फलतः दल ने विद्यार्थी तथा पूर्णचन्द्र गुप्त को पोस्टमैन से बीमा के रुपयों को लूटने की जिम्मेदारी सौंपी। पोस्टमैन को बबीना और कदौरा से बीमा का धन लेकर जिस रास्ते से गुजरना था , उसी मार्ग पर प्रातः आठ बजे से विद्यार्थी एवं गुप्त जी धन लूटने के उद्देश्य से घात लगाकर बैठ गये किन्तु भेदिये के कारण पोस्टमैन उस मार्ग से प्रातः सात बजे ही निकल गया। इस तरह दो देशभक्तों की मुराद पूरी न हो पायी। 1.

विद्यार्थी जी को पटाखों ने बचाया

क्रांतिकारियों के पास हथियारों के साथ ही आत्मघाती पदार्थ भी रहता था। इसी क्रम में विद्यार्थी जी एक बार विजयादशमी के दिन रिवाल्वर लिए हुए कालपी के पुल से निकल रहे थे।

---

1. डॉ0 भवानीदीन , प्राचीरें बोलती हैं , सुमेरपुर , सन्दर्शिता , 2001 , पृ0 सं0 – 92 , 93।

उसी बीच रिवाल्वर कैसे चलता है , ये विचार – मंथन में फंसे विद्यार्थी जी से अचानक उसका घोड़ा दब गया , पुल पर मोहम्मद अली थानेदार गश्त दे रहा था , रिवाल्वर चलने की आवाज से वह हरकत में आ गया , किन्तु विजयादशमी होने के कारण पटाखों की गूँज ने विद्यार्थी की रक्षा कर दी।

चन्द्रभान विद्यार्थी ने 1920 से 1942 तक के आन्दोलनों में पाँच वर्ष जेल में बिताये , विद्यार्थी जी सामाजिक क्षेत्र में भी अग्रणी रहे। वे 90 वर्षो तक जीवित रहे। 18 दिसम्बर 1993 को विद्यार्थी जी के रूप में बुन्देली धरा से एक महामना का अवसान हो गया।

स्वाधीनता संघर्ष और पं० मन्नीलाल एवं झन्नीलाल पाण्डेय

जालौन (उरई) जनपद के स्वातन्त्र्य शूरों में पं0 मन्नी लाल पाण्डेय एवं झन्नीलाल पाण्डेय की अपनी एक अलग पहचान रही है। मन्नीलाल पाण्डेय का 1892 में केदार नाथ पाण्डेय के घर जन्म हुआ था। ये अपनी उम्र के ऊषाकाल में ही आन्दोलन की चौखट पर दस्तक दे चुके थे। मन्नीलाल पाण्डेय ने होमरूल आन्दोलन में 1916–17 में भाग लिया था , यहीं से इनके राष्ट्रप्रेमी जीवन का शिलान्यास हुआ था। 1.

मन्नीलाल पाण्डेय और जालौन की वांलिटियर सेना

मन्नीलाल पाण्डेय एक समर्पित एवं प्रभावशाली देशभक्त थे। लखनऊ में 1936 के लगभग नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की अध्यक्षता में कांग्रेस अधिवेशन का आयोजन होना था , जिसमें जालौन जिले से वालिंटियर्स का एक दल लखनऊ जाना था , इसमें जालौन के एक ही नामराशि के दो स्वातन्त्र्य शूरों ने अहम् भूमिका निभायी थी।

---

1. साप्ताहिक अगस्त (साप्ताहिक पत्र) , उरई , 1988 , पृ0 सं0 – 3।

उनमें से एक थे मन्नीलाल पाण्डेय और दूसरे थे – मन्नीलाल श्रीवास्वत। इन दोनों नेताओं के नेतृत्व में जालौन से स्वयं सेवकों का बड़ा दल लखनऊ गया था। 1.

जालौन के वालिंटियर्स की लखनऊ में एक अलग पहचान बन गयी थी। ये जब रूट मार्च से निकले तो लोग आश्चर्य चकित रह गये। यह दल अनुशासित एवं बड़ा था। इस अधिवेशन में जालौन के स्वातन्त्र्य शूरों को देश की चोटी की विभूतियों के दर्शन हुए , जिनमें गाँधी जी , पं0 जवाहर लाल नेहरु , श्रीमती सरोजनी नायडू एवं गोविंद बल्लभ पन्त प्रमुख थे। इस अधिवेशन में ग्राम सुधार कमेटियों का गठन हुआ , जिसमें जालौन के स्वातन्त्र्य सेनानी बनवारी लाल को अध्यक्ष बना दिया गया। मण्डल कांग्रेस कमेटियाँ भी गठित हुयी , जिसमें जालौन में जैसारी कला में मण्डल कांग्रेस कमेटी का गठन हुआ , जिसका मुख्यालय डकोर था।

जालौन के पहाड़पुर गाँव में एक राजनैतिक सम्मेलन का आयोजन किया गया , जिसमें पं0 गोविंद बल्लभ पन्त पधारे थे , जालौन के कई स्वातन्त्र्य सेनानियों को पन्त जी के वहाँ पर दर्शन हुए। मन्नीलाल पाण्डेय 1920 तथा 1930 के गांधी आन्दोलनों में सरीक हुए। इन्हें जेल की यातना भी भोगनी पड़ी। ये जिले के एक प्रमुख स्वान्तन्त्र्य शूर थे। ये 1936 में विधायक निर्वाचित हुए थे। इस महान सूरमा का 21 दिसम्बर 1939 को निधन हो गया था।

झन्नीलाल पाण्डेय भी एक प्रमुख स्वातन्त्र्य सेनानी थे। इन्होंने भी देश की आजादी के संघर्ष में भाग लिया था।

---

1. तुलसी राम त्रिपाठी (उ0 संपादक) हलचल , साप्ताहिक पत्र , उरई , 1953 , पृ0 सं0 – 3।

स्वाधीनता संघर्ष और बेनी माधव तिवारी

उरई के स्वातन्त्र्य सेनानियों में बेनी माधव तिवारी का एक अलग स्थान रहा है , बेनी माधव तिवारी एवं मन्नीलाल पाण्डेय तथा चतुर्भुज शर्मा ये त्रिस्तरीय जीवटता की हस्तियाँ उरई में विश्रुत रही हैं , इनका 1890 में जन्म हुआ था। इन्होंने 1924 में प्रसिद्ध क्रांतिकारी गोपी नाथ शाह की फाँसी होने पर गोरी सरकार के विरूद्ध लाल स्याही से एक लेख लिखा था , जिस पर गोरी सरकार ने इन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाकर बेनी माधव तिवारी को 02 साल की सजा दी थी। उनके लेख के एक अंश से यह सिद्ध होता है कि वे कितने क्रांतिधर्मी विचार के थे– 'हम ब्रिटेन के राजनीतिज्ञों से पूँछना चाहते हैं कि भारत वासियों के हकों को इस तरह कुचलना और देश के वक्ष स्थल को उन्हीं के खून से रंगना अन्त में क्या रंग लायेगा , यदि आये दिन इसी तरह भारतीयों के रक्त से भारत की जमीन रंजित होती रही तो भारत की आजादी की घोषणा ब्रिटेन द्वारा नहीं अपितु भारतीयों द्वारा होगी।' तिवारी जी ने अपने जीवन के 62 वर्षों के काल में पाँच बार जेल की यात्रायें की और 40 वर्षों तक राजनीति में छाये रहे , ये अपने जीवन के युवा अर्थात 17–18 वर्ष की उम्र से ही क्रांति के क्षेत्र में कूद पड़े थे। इन्होंने 1907 –08 से लेकर आजादी प्राप्ति तक लगभग हर आन्दोलन में क्षेत्र की अगुवायी की। ये उरई के चेयरमैन तथा बुन्देलखण्ड से निर्वाचित होकर 13 वर्षों तक एम0 एल0 सी0 भी रहे। इनका 10 दिसम्बर 1952 को निधन हो गया था। उरई ही नहीं अपितु सारा बुन्देलखण्ड इनके स्वातन्त्र्य संघर्ष में योगदान को भूल नहीं सकता। 1.

---

1. तुलसी राम त्रिपाठी (उ0 संपादक) हलचल , साप्ताहिक पत्र , उरई , 1953 , पृ0 सं0 – 4।

सत्तावनी समर के बाद जालौन के स्वातन्त्र्य शूरों में मन्नीलाल श्रीवास्तव , रामेश्वर प्रसाद गुप्त , पं0 बल्देव प्रसाद पालीवाल , मोतीलाल शर्मा , त्रिलोकी नाथ , रामनाथ वर्मा , प्रेमनारायण पालीवाल , भानसिंह तथा बनवारीलाल गुप्त इत्यादि , का नाम उल्लेखनीय है , जिन्होंने स्वातन्त्र्य समर में बढ़ – चढ़कर भाग लिया।

निष्कर्ष

बुन्देलखण्ड के जनपदों में जालौन (उरई) एक ऐसा जिला रहा है , जिसका 1857 से लेकर 1947 तक के हर संघर्षी अभियान में शानदार भूमिका रही , 1857 के स्वातन्त्र्य समर में जालौन और हमीरपुर दो ऐसे जिले रहे , जहाँ पर सत्तावन का संघर्ष तब तक उद्दीप्त रहा , जब बुन्देलखण्ड के अन्य क्षेत्रों में सत्तावनी स्वातन्त्र्य का सूर्य अस्तातल में चला गया था। जालौन (उरई) ऐसा जनपद है , जहाँ पर झांसी के बाद यहाँ के वीरों ने सर्वाधिक सत्तावन की क्रांति में सहभाग किया।

06 जून 1857 को झांसी तथा कानपुर में हुई सत्तावनी क्रांति की सूचना उरई आ गयी थी , उसके बाद से यहाँ पर विद्रोहियों ने क्रांति की अलख जगा दी थी। कोंच तथा कोंच से लगभग तीस किमी0 की दूरी पर क्रांतिकारियों तथा जनरल ह्युरोज की आँग्ल सेना के बीच लोहारी में 07 मई 1857 को घमासान युद्ध हुआ था। लोहारी में सारे क्रांतिकारी वीरगति को प्राप्त हुए थे। कोंच समर में तांत्या टोपे तथा रानी लक्ष्मीबाई ने भी सहभाग किया था किन्तु कोंच के संग्राम में यदि क्रांतिकारियों की रणनीति जनरल के रण–व्यूह को समझ पाती तथा क्रांतिकारियों के पास यदि तोपों की संख्या अधिक होती तो निश्चित

रूप से कोंच का युद्ध स्वातन्त्र्य समर के इतिहास में एक नया अध्याय लिख देता। उरई से उत्तर में लगभग 60 किमी0 दूरी पर भदेख रियासत है , जहाँ के राजा परीक्षित ने 1857 के सत्तावनी – समर में यादगार भूमिका निभायी थी।

राजा भदेख रियासत में एक लोकप्रिय राजा थे। उनके प्रति गोरों का व्यवहार राजोचित नहीं था। गोरे उनके प्रति सतही व्यवहार करते थे। गोरों द्वारा कानपुर में पुनः अधिकार कर लेने की सूचना तथा क्रांतिकारियों की लगातार पराजय की खबर से राजा परीक्षित हताश हो गये थे। उन्होंने इसी अवसाद के चलते आत्महत्या कर ली थी। उनके निधन के बाद उनकी विधवा रानी चन्देलन जू ने सत्तावनी समर में सराहनीय प्रतिभाग किया था।

1857 की क्रांति में जालौन जिले की प्रथम वीरांगना ताईबाई का सहभाग भी कम सराहनीय नहीं रहा , ताईबाई ने सत्तावनी क्रांति में तांत्या टोपे को आर्थिक तथा सैनिक सहायता दी थी। कोंच तथा कालपी में क्रांतिकारियों की पराजय तथा तांत्या टोपे का सीधे ग्वालियर जाने की खबर ने ताईबाई को भी निराशा की निशा में धकेल दिया था। ताईबाई ने जनसंहार को रोकने के लिए स्वयं अपना बलिदान करने की सोची , उन्होंने 10 मई 1858 को उरई में नव नियुक्त उपायुक्त मि0 टरनन के समक्ष आत्म समर्पण कर दिया। उन्हें तथा उनके परिवार को गोरी सरकार की यातना का शिकार होना पड़ा। ताईबाई की निर्वासित जीवन में मुँगेर (बिहार) में 1870 में मृत्यु हो गयी।

1857 के स्वातन्त्र्य शूरों में एक और ऐसा सूरमा हुआ है , जिसने जालौन में एक दशक तक गोरों की नाक में दम किए रहा।

उस वीर पुरुष का नाम था– बिलायाँ के ठाकुर बरजोर सिंह। अंग्रेजों ने लाख कोशिशें की किन्तु बरजोर सिंह को गिरफ्तार नहीं कर सके।

गोरों ने बरजोर सिंह को बदनाम करने के लिए कई षडयंत्र रचे , उन्हें डाकू तथा आतंकी भी कहा। बरजोर सिंह को उसके परिवार के सदस्यों का गोरों द्वारा किया गया दमन भी दबा नहीं सका। बरजोर सिंह को सत्तावन की क्रांति में अपने पुत्र चन्द्रहांस को भी खोना पड़ा। उनके पुत्र तथा पुत्री को गोरों ने बहुत यातना दी किन्तु बरजोर सिंह देशप्रेम के पथ से विचलित नहीं हुए।

विद्रोहियों के पास प्रशिक्षित सुसंगठन नहीं था , उनमें वांछित अनुशासन भी नहीं था। भितरघात की मार अलग से थी , उनके पास गोरों की तुलना में तोंपे बहुत कम थी। इन सब अभावों के बावजूद उनमें गजब की आयुधी भावना थी। इस प्रकार अन्ततः कहा जा सकता है कि जालौन जनपद की सत्तावन तथा सत्तानवेत्तर संग्राम में स्मरणीय भूमिका रही।

सप्तम् अध्याय

स्वाधीनता संघर्ष और झाँसी के क्रांतिकारी

7

स्वाधीनता संघर्ष और झांसी के क्रांतिकारी

झांसी बुन्देलखण्ड (उ0प्र0) का एक प्रमुख जनपद तथा संभाग का मुख्यालय भी है , महाराज वीर सिंह देव ने 1618 में झांसी नगर तथा दुर्ग दोनों को क्रमशः बसाया तथा निर्मित कराया था। झांसी नगर का पहले का नाम बलवन्त नगर था। ऐसी मान्यता है कि झांसी शब्द की 'झाँई सी' शब्द से उत्पत्ति हुई है। पहले यहाँ पर मराठा शासन रहा। कालान्तर में गोरों के अधीन होने पर 1804 में यह सनद प्राप्त राज्य हो गया।

बुन्देलखण्ड के जनपदों में झांसी एक प्रमुख जनपद है , जिसका 1857 से लेकर 1947 तक के स्वातन्त्र्य संग्राम में जुझारू सहयोग रहा है। 1.

१८५७ की क्रांति और झांसी

झांसी के स्वातन्त्र्य योद्धाओं में अनेक ऐस योद्धा रहे है , जिन्होंने 1857 के स्वातन्त्र्य संघर्ष में पूरे मनोयोग से भाग लिया है। 2.

झांसी - राज्य : एक दृष्टि में

इसके पूर्व कि स्वातन्त्र्य – संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई के तरस्विता के तेवरों के आरेख पर प्रकाश डाला जाय , यहाँ पर संक्षेप में झांसी – शासन पर एक दृष्टिपात करना समीचीन होगा –

---

1. डॉ0 रमेशचन्द्र श्रीवास्तव , बुन्देलखण्ड वैभव , बांदा , 2000 , पृ0 सं0 – 245।
2. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 ,पृ0 सं0 – 01 , 02।

ब्रिटिश कम्पनी और झांसी – शासक शिवराम भाऊ के बीच 1804 में एक संधि हुयी थी। शिवराम भाऊ पंत प्रधान पेशवा बाजीराव द्वितीय के झांसी में प्रतिनिधि थे। पहले वह सूबेदार कहलाते थे। पेशवायी सामर्थ्य निर्बल हो चुकी थी , सूबेदार मजबूत थे। बुन्देलखण्ड मे आधिपत्य की दृष्टि से गोरों के लिए झांसी के सूबेदार से मित्रता स्वाभाविक थी। 1817 के जून में गोरों तथा पन्त प्रधान बाजीराव के बीच अन्तिम संधि हुई , जिसके अन्तर्गत पेशवा के सारे अधिकार , जो उसे बुन्देलखण्ड में प्राप्त थे , कम्पनी को प्राप्त हो गये। इसके बदले में बाजीराव को आठ लाख रूपयों की वार्षिक पेंशन तथा बिठूर की जागीर मिली , जिसमें उनका पूना से आकर बिठूर मे रहना भी शामिल था। 1.

नवम्बर 1817 में शिवराम भाऊ के पौत्र रामचन्द्रराव के साथ एक दूसरी संधि हुई , जिसमें पेशवा का स्थानापन्न कम्पनी सरकार से मनवाया गया , उस संधि में एक शर्त यह थी कि झांसी का राज्य रामचन्द्र राव के कुटुम्ब में 'दवाम' के लिए रहेगा। रामचन्द्र राव को 1852 में राजा की उपाधि मिल गयी। शिवराम भाऊ के कृष्ण राव , रघुनाथ राव तथा गंगाधर राव नाम के तीन पुत्र थे , जिनमें से बड़े पुत्र कृष्ण राव का निधन हो गया था। कृष्णराव के पुत्र रामचन्द्र राव थे। शिवराम भाऊ के जेठे पुत्र के पुत्र होने के कारण रामचन्द्र को झांसी की गद्दी प्राप्त हुई। रामचन्द्रराव को राजगद्दी मिलने के बाद उनके द्वारा झांसी में एक भव्य राजदरबार का आयोजन किया गया , जिसमें राजकोष से बहुत सा धन लुटाया गया। 2.

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 ,पृ0 सं0 – 02 , 03।
2. वही , पृ0 सं0 – 03।

रामचन्द्रराव जब अवयस्क थे तो शासन की बागडोर उनकी माँ सखूबाई के हाथ मे थी , जो रामचन्द्रराव के बालिग होते ही खत्म हो गयी। सखूबाई को अपने हाथ से राज्य का अधिकार चला जाना बहुत खला। उसे खजाने के खाली होने का कोई विशेष रंज नहीं था। सखूबाई ने रामचन्द्र राव को खत्म कराने का षडयंत्र रचा। 1.

झांसी के लक्ष्मी तालाब के दक्षिण – पश्चिम में महालक्ष्मी का मंदिर बना है , इसी मंदिर के चौपड़े में सखूबाई ने अपने पुत्र के वध के लिए भाले गड़वाये थे , रामचन्द्र को रात में तैरने का बहुत शौक था। सखूबाई को अपने मिशन की कामयाबी का पूरा भरोसा था किन्तु वह पूरा न हो सका , लालू कोदलेकर नाम के एक मराठा युवक तथा मऊ के आनंद राय की मदद से रामचन्द्र बच गये। आनंदराय मऊ छोड़ कर भाग गया किन्तु कोदलेकर सखूबाई के कोप से नहीं बच सका। उसने उसे काल के गाल में डाल दिया। लालू की मृत्यु के बाद उसके घर काशी , सुन्दर तथा मुन्दर नाम की तीन पुत्रियों ने जन्म लिया , जो बहुत रूपवान थीं। सखूबाई के क्रोध के कारण इनका लालन – पालन बड़ी कठिनाई से हुआ। माँ के द्वारा अपने विरूद्ध साजिश रचने के बाद भी रामचन्द्र राव सखूबाई के प्रति कठोर नहीं हुए किन्तु उनके दोनों काका सखूबाई को उन्मुक्त छोड़ना नहीं चाहते थे। इसलिए सखूबाई को कैद कर लिया गया। फलतः कोदलेकर के सम्बन्धियों को झांसी बुला लिया गया तथा आनंदराय को राहत मिल गयी। 2.

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 07 , 08।
2. वही , पृ0 सं0 – 08।

रामचन्द्रराव 1835 में निःसन्तान मरे। उनकी विधवा रानी ने कृष्णराव को गोद ले लिया किन्तु कम्पनी सरकार ने उसे अनुमोदित नहीं किया। रघुनाथ राव को राज्य का उत्तराधिकारी घोषित किया गया। झांसी की राजस्व वसूली अव्यवस्था की भेंट चढ़ गयी। उस सामन्ती युग में किसानों की सबसे बुरी हालत थी। रघुनाथ राव रंगीले स्वभाव के थे। उनका लच्छो नाम की वेश्या से लगाव था। इस वेश्या के दो पुत्र तथा दो पुत्रियाँ थी , जिनमें से एक नवाब अली बहादुर था। रघुनाथ राव ने अली बहादुर को 85 गाँवों को जागीर में दे दिया। रघुनाथ राव ने सखूबाई को आजाद कर दिया था। रघुनाथ राव का 1838 में निधन हो गया। 1.

रघुनाथ राव के बाद झांसी राज्य की गद्दी के चार दावेदरों ने दावा ठोंका , जिनमें से गंगाधर राव , कृष्णराव (रामचन्द्र राव का कथित दत्तक पुत्र) , अलीबहादुर तथा रघुनाथ राव की विधवा रानी। सखूबाई कृष्णराव को शह दे रही थी , उसने झांसी –दुर्ग पर अधिकार कर लिया था। गंगाधर राव शहर के महल में एक तरह से कैद जैसे होकर रह गए थे। गंगाधर राव सखूबाई से डरकर अंग्रेजों की शरण में कानपुर पहुँचे , अली बहादुर ने करेरा – दुर्ग में शरण प्राप्त की। इस घटना की सूचना पर मध्य भारत के गवर्नर जनरल के एजेण्ट साइमन फ्रेजर के झांसी पहुँच गये । सखुबाई ने पहले तो फ्रेजर के साथ दुर्व्यवहार कराया किन्तु वह बाद में जब सेना एवं तोपखानों के साथ आया तो वह किला छोड़कर भाग गयी। झांसी का मामला निपटाने के लिए गोरी सरकार ने एक कमीशन बैठाया , जिसने गंगाधर राव को झांसी का उत्तराधिकारी घोषित किया।

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 11 , 12।

गंगाधर राव को 1839 में झांसी की गद्दी प्राप्त हुई। वे साहित्य तथा संगीत के प्रेमी थे। उनकी रंगशाला में मोतीबाई एक प्रसिद्ध अभिनेत्री थी। गंगाधर राव को झांसी पर शासन करते हुए सात–आठ वर्ष बीत गये , राव केवल नगर–शासन को देखते थे , शेष राज्य पर कम्पनी के कर्मचारियों का दखल रहता था। गंगाधर राव की संगीत पर बहुत रूचि थी , नाट्य शाला में 'रत्नावली' का अभिनय होना था , मोतीबाई को उसका किरदार निभाना था , निर्देशक स्वयं गंगाधर राव थे , उनके आमंत्रण पर नाट्यशाला में सभी आये , राव सबसे आगे बैठे थे , उनके पास में खुदाबख्श , दीवान रघुनाथ सिंह , राव दुल्हाजू एवं दीवान जवाहर सिंह इत्यादि बैठे हुए थे , कुछ समय बाद रंगमंच पर अपने यौवन का लावण्य उड़ेलती तथा इठलाती हुयी मोतीबाई का प्राकट्य हुआ। इस पर खुदाबख्श के मुँह से वाह शब्द उच्चरित हो गया , उधर मोतीबाई ने भी एकाध बार अपनी दृष्टि को खुदाबख्श पर केन्द्रित किया , मोतीबाई का नृत्य भी मनमोहक था। खुदाबख्श के मुँह से पुनः 'वाह' शब्द निकल गया जो नरेश को अच्छा नहीं लगा। राव ने खुदाबख्श से कहा कि तुम मूर्ख हो। उन्होंने मोतीबाई पर भी टिप्पणी की। राव कार्यक्रम की समाप्ति पर रंगमंच के श्रृंगार कक्ष में गये , मोतीबाई ने अभिवादन किया , उसको राजा के मुँह से प्रशंसा के दो शब्द सुनने की उत्सुकता थी , परन्तु राजा ने उसे शाबासी देने के स्थान पर उससे कहा कि क्या तुम शराब पीकर आयी थी ? 1.

राजा के इस कथन पर मोतीबाई सकते में आ गयी , उसे तो मानों सांप सूंघ गया। 2.

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 ,पृ0 सं0 – 13 , 14।
2. वही , पृ0 सं0 – 13 , 14।

उसने धीरे से मधुर आवाज में कहा कि श्रीमन्त सरकार मैंने तो कभी शराब पी ही नहीं है तो आज कैसे पीती ? कुछ और संवाद के बाद राजा शान्त हुए। राव ने उसे अभिनय के बारे में और भी नसीहत दी , मोतीबाई ने हाँ में हाँ मिलाया और कहा कि सरकार भविष्य में आगे कभी भूल नहीं होगी। राजा ने उससे कहा कि इस बार तुम्हें शकुन्तला का अभिनय करना है। मोतीबाई की कुछ देर बाद उदासी समाप्त हो गयी , वह पुनः सहज भाव में आ गयी। 1.

निर्धारित समय पर शकुन्तला – नाटक अभिनीत हुआ , दर्शन सभी पूर्व के थे , श्रृंगारिक परिधानों से परे तपोवन में मोतीबाई ने जब सहेलियों के साथ में वन में बेलो तथा लताओं को सींचने का अभिनय किया तो उसके शकुन्तला के किरदार को देखकर दर्शकों ने दाँतो तले उँगली दबा ली। उधर खुदाबख्श मोतीबाई के रत्नावली के किरदार की पूर्व की तरह एक झलक पाने के लिए आतुर थे। शकुन्तला और दुष्यन्त का किरदार बहुत अच्छी तरह निभाया गया। मोतीबाई ने शकुन्तला का बहुत ही सुन्दर अभिनय किया। राव ने खुदाबख्श से पूँछा कि अभिनय कैसा रहा? उसने कहा कि महराज बहुत सुन्दर अभिनय रहा। राजा ने कहा कि तुम्हारी 'वाह' नहीं निकली। उस पर वह जरा झेंपा तथा झेंप को मिटाते हुए मुस्काराकर बोला कि हुजूर उसके लिए कोई जगह नहीं मिली। राजा इस बात को पीकर रह गये।

नाट्य अभिनय के बाद राजा पुनः श्रृंगार कक्ष में पहुँचे। मोतीबाई तब तक उसी किरदार के वेश में थी। वह नरेश की सम्मति सुनने के लिए उन्हें प्रणाम कर उनके सामने आयी। 2.

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 ,पृ0 सं0 – 31 , 32।
2. वही , पृ0 सं0 – 32।

राजा ने उसको शाबासी दी , इस पर वह खुशी के मारे फूली नहीं समायी। राजा ने उसको एक बड़ा बाग जागीर में दे दिया। नरेश ने दूसरे दिन खुदाबख्श को राज दरबार से अलग कर झांसी से निकाला कर दिया , जिस पर सभी सकते में आ गये। मोतीबाई नाट्यशाला में पूर्व की भाँति अभिनय करती रही किन्तु उसे खुदाबख्श देखने को नहीं मिला , उस नाटक शाला में कुछ दिनों बाद जूही नाम की एक और अल्प वयस्क यौवना शामिल हो गयी , वह नृत्य तथा गायन अधिक करती थी। 1.

स्वाधीनता संघर्ष और रानी लक्ष्मीबाई

स्वातन्त्र्य संघर्ष में रानी के अनुदाय पर कोई प्रश्नचिन्ह लगने को शेष नहीं रह जाता किन्तु इसके पूर्व कि रानी के संघर्षी जीवन के योगदान को देखा जाय , उनके जीवन पर एक दृष्टि डालना समीचीन होगा।

रानी लक्ष्मीबाई : एक परिचय

रानी लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम मनू था।

पारिवारिक पृष्ठभूमि

मराठा मेदिनी में सतारा के निकट बाई का एक गाँव है , पेशवाकाल में वहाँ के कृष्णराव ताम्बे को एक ऊँचा पद प्राप्त था। इनका पुत्र बलवन्त राव वीर था। बलवन्त राव पेशवायी सेना में उच्च पद प्राप्त था। इनके दो पुत्र थे – मोरोपन्त और सदाशिव । इन दोनों को पूना दरबार की कृपा प्राप्त थी। 1818 में पेशवायी शासन खत्म होने के बाद एक संधि की शर्तानुसार पेशवा बिठूर चले आये। बाजीराव के एक भाई चिमाजी अप्पा साहब बनारस चले आये। मोरोपन्त पर चिमाजी जी की बड़ी कृपा रहती थी।

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 23।

मोरोपन्त पूना से चिमाजी के साथ काशी चले आये। ये चिमाजी का काम–काज संभालते थे। इस कारण इनको पचास रुपये की मासिक पेंशन प्राप्त होती थी। मोरोपन्त मनू के पिता थे। इनकी माँ का नाम भागीरथी बाई था , जो एक सुशील एवं सुन्दर महिला थीं। 1.

जन्म

मनू का काशी में 19 नवम्बर 1835 में जन्म हुआ था। चिमाजी के निधन के बाद मोरोपन्त काशी से बिठूर चले आये। बाजीराव भी मोरोपन्त के प्रति दयालु थे। मनू ने अपने जीवन के मुश्किल से चार बसन्त ही देखे होगे कि इनकी माँ का मनू के ऊपर साया उठ गया , फलतः मनू की परवरिश की देखभाल का दायित्व मोरोपन्त पर ही आ गया। मोरोपन्त ने मनू का लालन–पालन बहुत ही दुलार – प्यार से किया। मनू अपने सौन्दर्य के कारण बाजीराव जैसे प्रमुख शासक द्वारा छबीली के नाम से पुकारी जाती थीं , बाजीराव के कोई सन्तान नहीं थी , इस कारण उन्होंने नाना घोंडूपन्त नाम एक बालक को गोद ले लिया था। नाना तीन भाई थे – पहले स्वयं नाना , दूसरे बाला और तीसरे राव साहब थे।

व्यायाम और मनू

मनू को मलखम्भ , कुश्ती , तलवार , बन्दूक चलाने तथा घुडसवारी करने में विशेष आनंद आता था। मनू की नाना तथा उसके भाईयों के बीच बहुत अच्छी मैत्री थी। मनू चंचल तथा हठीली बहुत थी। वह कुशाग्र बुद्धि की थी। मनू बचपन से ही निडरता तथा झिझकता के झंझावत से दूर थी।

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 27 , 28।

नाना साहब को मिलने वाली आठ लाख रूपयों की पेंशन उनके परिवार के लिए पर्याप्त थी। मनूबाई का दृष्टि कोण कुछ भिन्न था। वह छत्रपति शिवाजी जैसे वीरों के आख्यान की अनुशंसक थी। मनू को व्यायाम में विशेष रुचि थी। 1.

मेरे भाग्य में एक नहीं दस हाथी लिखे हैं

एक छोटी सी घटना से मनू की भावी दृढ़ता एवं सोच का पता चलता है। घुड़सवारी करते समय नाना घोड़े से गिर गया था , जिसे मनू स्वयं उठाकर लायी थी , कुछ दिनों बाद उसके घाव ठीक हो गये थे , फिर भी वह सावधानी बरत रहा था। उसके मन को बहलाने के लिए बाजीराव पेशवा ने हाथी मंगवाया। नाना तथा उसके एक भाई राव साहब दोनों हाथी में बैठकर निकल गये। मनू भी हाथी की सवारी करना चाहती थी किन्तु नाना तथा राव ने उसे हाथी पर नहीं बैठाया। इस पर मनू को बहुत कष्ट हुआ। उसने अपने पिता मोरोपन्त से भी हाथी पर बैठने की हठ की , किन्तु उसकी वह जिद पूरी न हो सकी।

मोरोपन्त ने मनू को डाँटते हुए कहा कि बेटी हम न तो छत्रधारी है और न ही सामंत या सरदार , इसलिए हमें समय को देखकर उसी के अनुसार चलना चाहिए। तुम बेकार हठ मत करों , तुम्हारी किस्मत में हाथी नहीं लिखा है। इस पर मनू तुनक कर खड़ी हो गयी और बोली कि ऐसा नहीं है , मेरे भाग्य में एक नहीं दस हाथी लिखे हैं। इस पर मोरोपन्त का क्रोध काफूर हो गया। उसने हँस कर मनू को गले से लगा लिया। 2.

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 ,पृ0 सं0 – 34 , 35।
2. वही , पृ0 सं0 – 35।

मनू के इस कथन में उसके भविष्य की भूमिका तथा पुरुषार्थ छिपा हुआ था।

जन्मपत्री में तो राजयोग का संयोग है

तात्या दीक्षित झांसी से बाजीराव पेशवा के यहाँ बिठूर पहुँचे। दीक्षित जी को ज्योतिष का सम्यक ज्ञान था। उनका मराठी समाज में काफी परिचय था। बाजीराव के साथ दक्षिणी ब्राम्हणों के काफी परिवार बिठूर आकर बस गये थे। आचार्य बाला गुरु मलखम्भ एवं मल्लयुद्ध में विशारद हासिल किए हुए थे। इनके अखाड़े में हिन्दुस्तानियों की संख्या हजारों में थी। वे स्वास्थ्य विज्ञान पर बहुत बल देते थे। बाला गुरु स्वयं बलिष्ठ थे। 1.

मोरोपन्त ने समय पाकर तात्या दीक्षित जी से प्रार्थना की कि मुझे अपनी मनूबाई के विवाह की बहुत चिन्ता है , मैंने उसके लिए वर भी खोजे है किन्तु अभी तक कोई योग्य वर नहीं मिला है , आपके परिचय का दायरा विस्तृत है , आप इसके लिए एक योग्य वर खोज दीजिए , मै आपका आभारी रहूँगा , बाजीराव ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि कन्या सुन्दर है इसलिए इसके लिए योग्यवर चाहिए।

मोरोपन्त ने मनूबाई की रुचि एवं विशेष गुणों पर प्रकाश डाला। उसके अस्त्र–शस्त्र के संचालन में उसकी निपुणता पर भी बल दिया। तात्या दीक्षित ने मनूबाई की जन्मपत्री को देखकर कहा कि मैंने ऐसी जन्मपत्री तो पहले शायद ही देखी हो। जन्मपत्री के आधार पर इसे किसी राज्य की रानी होना चाहिए। इनके इस प्रकार बताने पर मोरोपन्त फूले नहीं समाये।

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 74।

तात्या दीक्षित मोरोपन्त के अनुरोध को सुनकर तथा मनूबाई की जन्म पत्री देखकर भेंट इत्यादि लेकर बिठूर से झांसी आ गये। वे मनू के लिए उत्तम वर की खोज के प्रयास में थे , वे जानते थे कि अच्छा वर ढूढ़ने पर उन्हें अच्छा फल मिलेगा। तात्या दीक्षित ने मनू के लिए वरो पर दिमाग में जोर डाला , कुछ की टीपनायें लाकर मिलायी। वह टीपना मिल गयी किन्तु बात नहीं बनी , उन्होंने अन्त में झांसी नरेश गंगाधर राव की जन्मपत्री मिलायी , वह टीपना मिल गयी किन्तु तात्या दीक्षित के मन में एक प्रश्न उठा कि राव की पहली पत्नी का निधन काफी दिन पूर्व हो चुका था , गंगाधर राव विधुर थे , विवाह भी करने चाहते थे किन्तु कठोर स्वाभाव के कारण बदनाम अधिक थे। 1.

गंगाधर राव का बहुत सा समय नाट्य शाला में व्यतीत होता था। राजा द्वारा रंगमंच में महिला का किरदार निभाने के कारण राजा की मिथ्या बदनामी बहुत हुई थी , इसीलिए राजा का स्वभाव कठोर हो गया था। तांत्या दीक्षित ने मन में विचार किया कि यदि मनू का गंगाधर के साथ विवाह हो जाय तो कितना सुन्दर रहेगा ? मनू में रानी बनने के सभी गुण पाये जाते है , दोनों के बीच उम्र का अन्तर अवश्य है किन्तु राव का स्वास्थ्य अच्छा था। तांत्या ने भली भाँति विचार कर राजा के समक्ष निवेदन करते हुए कहा महाराज महल सूना है , उसमें कोई सजातीय कन्या दीवाली को जगमगा सकती है। इस पर राजा ने कहा कि मैं कोई सजातीय कन्या कहाँ से पकड़ लाऊँ।

मौके की नज़ाकत को भाँपने में माहिर तांत्या ने कहा कि महाराज , मैंने जन्मपत्री मिला ली है , वह बिल्कुल मिल गयी है , कन्या भी देख ली है , वह सुन्दर तथा कुशाग्र बुद्धि की है। उसमें रानी होने के सभी लक्षण मौजूद हैं।

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 84 , 85।

इस पर राजा ने थोड़ा सा मुस्कराकर पूँछा कि वह कहाँ पर है ? इस पर दीक्षित ने उत्तर दिया कि महाराज वह इस समय बिठूर में है। बाजीराव पेशवा के कार्यभार की देखभाल के लिए नियुक्त मोरोपन्त ताम्बे की वह पुत्री है। राजा ने तात्या से पूछा कि ताम्बे भट्ट भिक्षुक तो नहीं है , तात्या ने कहा कि महाराज वह भट्ट भिक्षुक नहीं है। राजा ने तात्या दीक्षित से यह पूँछा कि मोरोपन्त तथा बाजीराव के बीच सम्बन्ध कैसा ? इस पर दीक्षित ने बताया कि दोनों के बीच मित्रों जैसा सम्बन्ध है। राजा ने दीक्षित से फिर प्रश्न किया कि क्या वे लोग सम्बन्ध को स्वीकार कर लेंगे , तात्या ने कहा कि मुझे विश्वास है कि वे सम्बन्ध को अनुमोदित कर देंगे। 1.

राजा के कर्मचारियों के साथ तात्या दीक्षित बिठूर आ गये। उन्होंने मोरोपन्त तथा बाजीराव को यह समाचार सुनाया। दोनों ने रिश्ते को कबूल कर लिया। गंगाधर राव की उम्र रिश्ते में आड़े नहीं आयी , मनूबाई श्रृंगारित हुयीं। मनूबाई की सगायी हो गयी।

मनूबाई का विवाह

मोरोपन्त यथा समय मनूबाई को लेकर आ गये। कोठी कुँआ वाले भवन में भाँवर पड़नी थीं किन्तु भाँवरो से पहले नगर के गणेश मन्दिर में रीतियों को पूरा करना था। राजा की सवारी निकल कर गणेश मंदिर की ओर गयीं , मनूबाई भी मंदिर की ओर गयीं। उनकी सेवा में 16 दासियों को लगाया गया था। सुन्दर , मुन्दर और काशी नामक तीन कन्याये सर्वप्रथम मनू से मिलीं और कहा कि हम आपकी दासियाँ है , रानी ने उनसे मृदुल व्यवहार किया और कहा कि तुम सब मेरी सहेलियाँ बनकर रहोगी , दासी नहीं।

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 115।

मनू उनसे अस्त्र–शस्त्र के संचालन एवं घुड़सवारी के बारे में पूँछती रही। मनू ने उनसे व्यायाम इत्यादि के बारे में बातचीत की। मनू ने उनसे कहा कि अपने को केवल सौन्दर्य तक सीमित कर लेना एक मात्र स्त्री–कर्तव्य नहीं है। कोठी कूँआ वाले भवन में राजा तथा मनू की भाँवरे पड़ी। बाहर नृत्य गायन हुआ। मोतीबाई तथा जूही ने अपनी – अपनी कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। सारी झांसी नगरी प्राफुल्य पा गयी। विवाह के बाद मराठी तथा बुन्देली परम्परानुसार मनू का नाम रानी लक्ष्मीबाई रखा गया। शादी के बाद रानी पर बंदिशे अधिक थीं। वे उनके कारण अपने को अधिक सहज अनुभव नहीं कर पाती थीं। वे प्रायः किले के महल में रहती थीं। रानी लक्ष्मीबाई लुक–छिपकर व्यायामादि कर पाती थीं , कुछ घुड़सवारी भी कर लेतीं थी। रानी किले के भीतर रहले वाली महिलाओं को सवारी , शस्त्राभ्यास , मलखम्भ तथा कुश्ती का अभ्यास कराती थीं। उनकी भगवत गीता पर विशेष रुचि थी। वे हठीली तथा चपल मनू से एक गंभीर रानी लक्ष्मीबाई बन गयी थीं। रानी लक्ष्मीबाई का राजा गंगाधर राव के प्रति वैसा व्यवहार था ,जैसा कि एक हिन्दु नारी का होता है , रानी को राजा के शौक तथा रूचि का पता था , राजा–रानी के संवाद से रानी की देश की प्रति पराधीनता – पीड़ा को सहजता से समझा जा सकता है।

रानी के चिन्तन का स्वरूप

रानी राजा की संगीत प्रियता से परिचित थी किन्तु उनकी राजा से वैचारिक भिन्नता थी , वे बचपन से जिस सांस्कृतिक परिवेश में पली–बढ़ी थीं , उसको देखते हुए अंग्रेज परस्त मानसिकता वाले लोगों से उनका मतभेद रहना स्वाभाविक था। 1.

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 117 , 118।

रानी का देश के वर्तमान हालात पर राजा से कई बार तर्क – वितर्क भी हुआ था। वे बचपन से ही ऑग्ल विरोधी थी। रानी राजा के साथ 1850 में कई स्थानों पर तीर्थ यात्रा कर गयीं। वे एक न्याय प्रिय रानी थीं। वे राजा के क्रोधी – स्वभाव से सहमत नहीं थीं। 1.

रानी लक्ष्मी बाई को राजा का वह कदम बहुत अच्छा लगा , जिसके अर्न्तगत उन्होंने सैन्य दल को सशक्त एवं समृद्ध किया। राजा गंगाधर राव ने कई बार गोरों की मदद भी की , जो रानी को रास नहीं आता था। 15 वर्षीय रानी लक्ष्मीबाई बहुत गंभीर हो गयी थीं। राजा गंगाधर राव एक पुरातन पंथी विचार धारा के थे। वे नारी – स्वाधीनता के अधिक पक्षधर नहीं थे। राजा ने खुदाबख्श को देश निकाला दे दिया था। वह एक बार उनको नाट्य शाला में दिख गया , बस फिर क्या था ? राजा का कहर बरपा , मोतीबाई जैसी विश्रुत अदाकारा को नाट्यशाला से निष्कासित कर दिया गया , जिस पर सारे शहर को आश्चर्य हुआ , राजा ने नाट्यशाला के प्रहरी को बिच्छू से डसवाने की सजा दी।

मनू को बिठूर के किशोर काल में राष्ट्रवादी परिवेश प्राप्त हुआ था। वे उस छोटी सी उम्र में ही राष्ट्रप्रेम की पक्षधर बन चुकी थी। शादी के बाद रानी लक्ष्मीबाई में परिवक्वता और भी आ गयी थी।

कप्तान गार्डन झांसी में ऑग्ल सेना का एक अधिकारी था। वह राजा के यहाँ अक्सर आता – जाता रहता था। वह गंगाधर राव के यहाँ भी बिना मतलब के नहीं जाता था। वह राजा की सारी सूचना गवर्नर जनरल को भेजता था।

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 ,पृ0 सं0 – 136।

रानी लक्ष्मीबाई को पुत्र-सुख

रानी लक्ष्मीबाई गार्डन के महल – आगमन को अच्छा नहीं मानती थीं। वे पहले से ही गोरा – विरोधी थीं। रानी लक्ष्मीबाई ने 1851 में एक पुत्र को जन्म दिया , पूरा झांसी – शहर इस सूचना से आनंद – विभोर हो उठा था। गंगाधर राव ने पुत्ररत्न की प्राप्ति पर बहुत बड़ा जलसा किया , खजाने का एक बड़ा भाग खर्च कर डाला , दरबार लगा। रानी लक्ष्मीबाई का पुत्र लगभग दो माह का हो गया। वे व्यायाम नहीं कर पाती थीं , शरीर पुरी तरह स्वस्थ नहीं हुआ था। रानी लगभग सारा समय पुत्र–प्यार में व्यतीत करती थीं। राजा भी सारा समय महल में ही बिताते थे। राजा ने दण्ड विधान में सारल्य ला दिया। जनता उनको प्रजावत्सल कहने लगी।

रानी लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे का संवाद

अंग्रेजों ने बाजीराव पेशवा की मृत्यु के बाद उन्हें दी जाने वाली पेंशन जब्त कर ली। यह एक तरह से गोरों द्वारा की गयी एक बेईमानी थी। दोनों घटनाओं के बाद तात्या टोपे रानी से मिलने झांसी आया। दोनों के बीच संवाद हुआ। रानी लक्ष्मीबाई गोरों की नियति पर कटाक्ष करते कहा कि उनकी नीति सारे देश को निगलती जा रही है , सारी रियासतों के राजाओं को तो मानो सांप सूंघ गया है , सभी अफीम खाये बैठे हैं। गोरों द्वारा पेंशन खत्म किया जाना एक सरासर बहुत बड़ा अन्याय है। तात्या टोपे ने रानी को बिठूर स्मरण दिलाया।

बाजीराव पेशवा की मृत्यु के बाद गोरों ने बिठूर की जागीर को छोड़कर पेशवायी पेंशन खत्म कर दी। 1.

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 137।

नाना साहब की अर्जी पर अंग्रेजों ने कोई ध्यान नहीं दिया। तात्या ने रानी को अतीत के आदर्श याद दिलाये , जिस पर रानी ने कहा कि टोपे मैं वे नाम कभी भूल नहीं पाऊँगी , अभी समय नहीं आया है , अंग्रेजों के अत्याचारों का घड़ा अभी भरा नहीं है , थोड़ा सा परिवेश शान्त होने दो , समर्थ रामदास का दिया हुआ राज्य संदेश तथा छत्रपति शिवाजी का पोषित आदर्श और छत्रसाल का अनुदाय अक्षय एवं अमर है। तात्या ने रानी – उद्रबोधन के बाद कहा कि महरानी ये सब बातें सिद्धान्तगत हैं , कानों को सुनने में अच्छी लगती है।

रानी ने तात्या के इस प्रश्न पर दृढ़ होकर कहा कि तात्या जनता कभी भी अचेत नहीं होती , अचेत तो उसका नेतृत्व करने वाले नायक होते हैं। रानी ने तात्या से कहा कि नाना साहब से कहना कि सचेष्ट होकर समय की प्रतीक्षा करें। मैं अपने मिशन को कभी नहीं भूलूँगी। आदर्श की दृढ़ता कर्म का पहला सोपान है। तात्या रानी से थोड़ा और संवाद करने के बाद वापस बिठूर चला गया।

राजा और रानी पर समय का विपरीत प्रभाव

रानी लक्ष्मीबाई पर नियति निष्ठुर हो गयी। उनके पुत्र का तीन माह बाद निधन हो गया , जिससे राजा के स्वास्थ्य पर बहुत प्रतिकूल असर पड़ा , रानी पर भी पुत्र–आघात का विपरीत असर पड़ा। राजा और रानी लगभग दो वर्ष तक विपत्ति में रहे। राजा का स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता गया। उनका वैद्य प्रताप शाह मिश्र उपचार करते थे। प्रतापशाह उद्दण्ड प्रकृति के थे , किन्तु राजा उसके साथ अपने को बहुत हद तक समायोजित करते थे। 1.

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 ,पृ0 सं0 – 158।

राजा के स्वास्थ्य की सूचना झांसी के पोलिटिकल एजेण्ट मालकम को दी गयी , उसने राजा को डाक्टरी उपचार का परामर्श दिया किन्तु वैद्य तथा वकीलों के कारण उसे माना नहीं गया। 1.

गंगाधर राव का निधन

सारे शहर ने राजा के स्वास्थ्य सुधार की कामना की , सारे मंदिरों में पूजा – अर्चना की गयी , वैद्य ने अन्तिम प्रयास किया किन्तु राजा स्वस्थ नहीं हो सके। उन्होंने अपने खास लोगों से कहा कि यदि रानी साहब स्वीकार कर लें तो मैं अपने कुटुम्बी वासदेव राव वालकर के पुत्र को आनंद राव को गोद लेना चाहता हूँ। रानी ने हामी भर दी। आनन–फानन दत्तक विधान तैयार किया गया , नगर के प्रमुखों को आमंत्रित किया गया। नये पोलिटिकल एजेण्ट मेजर एलिस तथा गोरी सेना के अधिकारी मार्टिन को भी बुलाया गया। आनंद राव का दामोदर राव के रूप में नामकरण किया गया।

राजा ने एक खरीता कम्पनी सरकार के नाम लिखवाया। उन्होंने खरीता अपने हाथ से एलिस को दिया। राजा का गला अवरुद्ध हो गया। रानी की भी पर्दे के पीछे सिसक सुनायी पड़ी। राजा ने एलिस से झांसी वासियों , वैद्य तथा रंगकर्मियों के बारे में संवाद किया , उनके वेतनादि के बारे में भी एलिस से कहा। राजा गंगाधर राव का 21 नवम्बर 1853 को निधन हो गया। गंगाधर राव के निधन के समय रानी की उम्र 18 वर्ष थी। राजा के देहावसान का रानी के स्वास्थ्य पर बहुत विपरीत असर पड़ा। 2.

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 ,पृ0 सं0 – 163 , 164।
2. वही , पृ0 सं0 – 164।

राजा की ऑंग्ल - नीति

राजा की मृत्यु से एक दिन पूर्व एलिस ने राजा के खरीता को पोलिटिकल एजेण्ट कैथा के निकट भेज दिया था। उसे मालकम ने 25 नवम्बर 1853 को गवर्नर जनरल के पास कलकत्ता भेज दिया था किन्तु मालकम ने खरीता के साथ अपने संलग्नक में झांसी राज्य के लिए दत्तक पुत्र की सिफारिश नहीं की थी। गोरों की राज्य हडपने की नीति लगातार अग्रसर हो रही थी। डलहौजी का तो लक्ष्य ही यही था कि मैं हिन्दुस्तान की धरती को सपाट कर दूँगा। 1.

नाना , तात्या और रानी के बीच संवाद

राजा गंगाधर राव के निधन के बाद पति–शोक का उन्हें गहरा आघात लगा था किन्तु राष्ट्र के प्रति भक्ति–भावना तथा लगन ही ऐसे आधार शेष थे , जो उन्हें जीवित रखे थे। राजा के देहावसान के बाद नाना , तात्या तथा रानी के संवाद से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि उनमें राष्ट्रवादी धारणा कितनी कूट–कूट कर भरी हुई थी। उन तीनों की किले के दीवान खास में बातचीत हुई , उस समय रानी के साथ सुन्दर–मुन्दर और काशीबाई भी थीं। रानी ने नाना से कहा कि बुन्देल क्षेत्र के रजवाड़े बुझे हुए दीपक जैसे हैं , उनमें तेल तो है किन्तु लौ नहीं है। नाना ने कहा कि क्या उनमें लौ उत्पन्न नहीं जा सकती ? इस पर रानी ने कहा कि मैं कह नहीं सकती। तात्या ने कहा कि मैं कई स्थानों पर गया हूँ किन्तु मुझे रियासतों के हालात ठीक नहीं दिखायी पड़े। राजाओं को हास–परिहास , अपने सम्मान तथा सुरापान से ही फुरसत नहीं है।

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 215 , 216।

रानी ने कहा कि वीरसिंह देव, छत्रसाल तथा दलपति के बुन्देल क्षेत्र की स्थिति तो कुछ और होनी चाहिए। नाना ने लखनऊ तथा दिल्ली के सम्बन्ध में बताया कि वहाँ हालात कुछ बेहतर हैं। रानी ने दोनों से कहा कि मुझे रानी साहब न कहें , अच्छा नहीं लगता। तात्या ने दिल्ली के सम्बन्ध में बताया कि वहाँ का बादशाह बूढ़ा है , वह बहुत दुखी रहते है , जिसे वे कविता के माध्यम से व्यक्त करते हैं , राजकुमारों में प्रतिभा एवं क्षमता दिखायी पड़ती है किन्तु उसमें भी घुन लगने की संभावना है। रानी ने दोनों से अन्य कई रियासतों के सम्बन्ध में पूँछा किन्तु उन दोनों के कथनों से एक बात साफ हो गयी कि हालात सभी जगह के उपयुक्त नहीं थे। 1.

अन्त में तात्या ने दामोदर राव की गोद को अंग्रेजों द्वारा स्वीकार कर लेने पर विश्वास जताया , परन्तु इस पर रानी ने कहा कि चाहे एलिस हो या मालकम , सब एक ही थैली के चट्टे – बट्टे हैं। मैंने झांसी के पूरनचंद बंगाली बाबू को कलकत्ते भेजा है जो स्वयं लाट साहब से मिलकर यहाँ का पक्ष रखेंगे। क्या लाट इतने बड़े संविधान को निगल जायेगा ? इस पर तात्या ने कहा कि बाई साहब गोरों का कोई भरोसा नहीं है।

अली बहादुर तथा एलिस के बीच मित्रता थी , पीर अली , अली बहादुर का नौकर था। राजा के देहान्त के बाद अली बाहदुर की गोरों से कुछ उम्मीदें बंधती नजर आ रही थीं , वह एलिस से मिलने एलिस की कोटी पर गया। उसने एलिस से अपना दुःखड़ा रोया , राजा की सनक और उसके द्वारा किये गये कार्यो की आलोचना की। उसने खुदाबख्श की वकालत की। अली बहादुर ने गोदनामें पर भी चर्चा की।

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 ,पृ0 सं0 – 163 , 164 ।

रानी की दिनचर्या

गंगाधर राव के निधन के बाद रानी की दिनचर्या में भी बदलाव आ गया था। वे प्रातः चार बजे जगकर स्नानादि से निवृत्त होकर आठ बजे तक शिव – साधना करती थीं। वे ग्यारह बजे से महल के निकट के खुले आँगन में घुड़सवारी , तीरन्दाजी , भागते हुए घोड़े पर लगाम को दाँतों से पकड़कर दोनो हाथों से तलवार चलाना , बंदूक चलाना एवं मलखम्भ तथा कुश्ती इत्यादि का अभ्यास करती थीं। उसके बाद वे अपनी सहेलियों तथा नगर से आने वाली नारियों को भी सैन्य प्रशिक्षण देती थीं। वे तीन बजे तक ग्यारह सौ रामनाम लिखकर आटे की गोलियाँ बनाकर मछलियों को खिलाती थीं। , रानी बीच के काल में किसी से मिलती नहीं थीं , वे तीन बजे के बाद फिर व्यायाम करती थी , शरीर को सुदृढ़ करने की कयावद करती थीं। वे सन्ध्या वंदन बाद आठ बजे तक कथावर्ता , गीता के 18वें अध्याय तथा भजन को सुनती थीं। रानी एक घण्टा आगन्तुकों के लिए निर्धारित किए थीं। रानी सुन्दर , मुन्दर तथा काशीबाई से थोड़ी देर वार्ता करती थीं। रानी लक्ष्मीबाई समय की पाबन्द थीं।

झांसी - राज्य का विलीनीकरण

रानी की तमाम दलीलों को पढ़ने के बाद लार्ड डलहौजी ने मालकम को यह आदेश भेज दिया कि भारत सरकार की 07 मार्च 1854 की आज्ञानुसार झांसी को अंग्रेजी राज्य में मिलाया जाता है। मालकम ने गुप्त रूप से गवर्नर जनरल की घोषणा को एलिस के पास भेज दिया। 1.

एलिस ने गवर्नर जनरल की घोषण को महल में जाकर सुना दिया।

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 ,पृ0 सं0 – 255 , 256 ।

रानी ने गोरी सरकार के इस कदम का उत्तर देते हुए कहा कि मैं अपनी झांसी नहीं दूँगी। गोरों ने रानी को पाँच हजार रुपयों की मासिक पेंशन स्वीकृत कर दी थी। झांसी के विलीनीकरण का समाचार शीघ्र ही झांसी शहर में फैल गया। सारा शहर शोक में डूब गया। गवर्नर जनरल द्वारा गंगाधर राव द्वारा गोद लिए गए दत्तक पुत्र को नकारने के बाद झांसी की व्यवस्था में एलिस जुट गया। उधर रानी के दीवान , सहेलियाँ , जनता , साहूकार तथा अन्य गणमान्य नागरिक सभी उदास थे और रानी की तरफ टकटकी लगाये हुए देख रहे थे किन्तु रानी निराश नहीं थीं। उनके सामने अतीत के आदर्श थे , जो उनके पथ – प्रदर्शक थे। 1.

रानी की नियोजित - नीति

रानी ने सभी से और खास तौर पर अपनी सहेलियों से कहा कि ताराबाई को देखो , उसने मुगल सम्राट को कैसे परास्त किया ? उसने स्वराज्य को चिन्तन को कैसे आगे बढ़ाया ? जरा जीजाबाई के बारे में विचार करो , उसे पतिघात लगा , उसने छत्रपति शिवाजी का पालन –पोषण किया , उसने शिवा को सिर्फ सुविधा भोगी बनाने के लिए नहीं पाला – पोसा। उसने उसे संघर्षो से चलकर गद्दी नसीन होने के लिए पाला था।

रानी ने आगे कहा कि भगवान कृष्ण का उपदेश याद करो , जिसमें उन्होंने कहा था कि व्यक्ति को केवल कर्म का अधिकार है। रानी ने कहा कि हमें जिस स्वराज्य की शिक्षा मिली है , यदि उसे हिन्दुस्तान का कोई भी व्यक्ति आगे नहीं बढ़ाता तो न बढ़ाये किन्तु मैंने कृष्ण को साक्षी मानकर उसका बीड़ा उठाया है , मैं स्वराज्य के लिए करुँगी और फिर करुँगी।

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 258 ।

मैं यदि सफल नहीं हो पायी तो जिस स्वराज्य – चिन्तन को आगे बढ़ा जाऊँगी , वह अमिट रहेगा , सिर्फ कर्म निष्ठा को याद रखिये , जनता हमारे साथ है , जनता सब कुछ है , वह अमर है। जनता को स्वराज्य के सूत्र में बाँधना चाहिए। गोरे नरेशों को नेस्तनाबूद कर सकते हैं किन्तु जनता को नहीं। मैं एक दिन जनता के सामने ही स्वराज्य की पताका फहराऊँगी।

रानी युद्धारम्भ के पूर्व की तैयारियों पर जोर दे रही थीं , रानी मर्दाना या पुरुष वेश को धारण करने लगी थीं , किन्तु उन्हें साफा बाँधने में बाल या केश उनकी एक बाधा थी। उन्होंने मराठी – प्रथानुसार यह सोचा कि काशी जाकर मुण्डन करा लें किन्तु अंग्रेज अधिकारी गार्डन ने उन्हें काशी जाने की अनुमति नहीं दी। गोरों के इस अवरोध ने रानी की क्रोधग्नि में घी का काम किया।

स्वराज्य के बाद रानी का केश - मुण्डन का प्रण

गोरों की इस कार्यवाही से सारे झांसी शहर को चोट पहुँची। उधर रानी ने प्रण किया कि जब तक देश आजाद नहीं होगा , मैं केश–मुण्डन नहीं कराऊँगी , यदि सफल न हो पायी तो अंतिम संस्कार के समय अग्निदेव मुण्डन करेंगे।

रानी की इस प्रतिज्ञा पर उनकी सहेलियाँ बहुत प्रसन्न हुयीं। सहेलियाँ भी चाह रही थीं कि रानी के सुन्दर बालों के क्षय होने का अभी समय नहीं आया है , रानी दामोदर राव को बहुत चाहती थीं , उसकी इतनी सुन्दर परवरिश तो उसकी सगी माँ भी न करती। 1.

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 289 , 290।

रानी लक्ष्मीबाई अपनी योजना को निरन्तर बढ़ा रही थीं , वे युद्ध सामग्री पर समुचित ध्यान दे रही थीं। वे कुशल कारीगरों को एकत्र करने की योजना पर अमल कर रही थीं।

रानी के जासूस भी सक्रिय थे। उधर नाना साहब तथा उनके सहायक भी अपने – अपने अभीष्ट के लिए जुटे हुए थे। बिहार तथा बंगाल भी पीछे नहीं थे। रानी ने सोचा कि अब समय आ गया है कि लोगों को एकत्र किया जाय , इसके लिए किसी न किसी बहाने की आवश्यकता थी , रानी ने दामोदर राव का जनेऊ कराना सुनिश्चित किया। इस कार्य के लिए उन्हें एक लाख रूपयों की आवश्यकता थी , उस समय दामोदर राव की उम्र छः वर्ष की हो गयी थी , रानी ने सोचा था कि इस वर्ष जनेऊ भी होना चाहिए तथा एक महा सम्मेलन भी आयोजित होना चाहिए।

इधर रानी को मोतीबाई ने सूचना दी कि अंग्रेजों की देशी पल्टन में हिन्दुस्तानी सिपाहियों में गोरों के प्रति रोष उत्पन्न हो रहा है।

गार्डन के अहंकार की हद

रानी लक्ष्मीबाई ने पुरोहित को बुलवाकर यज्ञोपवीत–संस्कार का मुहुर्त निकलवाया , रानी ने गार्डन के यहाँ आवेदन पत्र प्रेषित कराया कि दामोदर राव के नाम सरकारी कोष में जो छः लाख रुपये जमा हैं , उनमें से एक लाख रुपये जनेऊ के लिए उपलबध करा दिया जाय। गार्डन तो तुरन्त उस आवेदन को निरस्त करना चाहता था किन्तु हिन्दुओं की रस्मों को ध्यान मे रखकर उसे स्थगित रखा। 1.

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 290।

नवाब अली बहादुर व अन्य लोंगो से जानकारी करने पर उसे पता चला कि ब्राम्हणों में यह रस्म जरूरी है। गार्डन ने कमिश्नर से , कमिश्नर ने ले0 गवर्नर से मशविरा किया , उन्होंने अन्त में गार्डन पर छोड़ दिया कि यदि वह चाहे तो झांसी के चार सम्भ्रान्त व्यक्तियों की जमानत पर धनराशि स्वीकृत करें। गार्डन ने रानी को अपने निर्णय से अवगत करा दिया। रानी को गार्डन के दम्भ से भारी आघात लगा। रानी ने सोचा कि खुद धनराशि के लिए चार भले आदमियों की जमानत! कितना बड़ा अन्याय है ? रानी की जमानत तो झांसी के 52 बड़े आदमी लेने को तैयार थे। रानी ने गार्डन के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। झांसी के लाला बीमा वाले , मगन गन्धी , मोती खत्री और श्याम चौधरी ने गार्डन से जमानत का प्रस्ताव किया। उसने जब जमानत दारों को हतोत्साहित करना चाहा तो उन्होंने कहा कि आप कहें तो हम नगद जमानत राशि पेश कर दें , इस पर गार्डन के पास कोई उत्तर नहीं था। उसने एक लाख रुपये रानी को दे दिया।

समारोह तो एक बहाना था

नियत समय पर समारोह सम्पन्न हुआ , दूर–दूर के लोग आये , समारोह में जनाधिक्य था , नवाब अली बहादुर ने भी सहभाग किया। दामोदर राव का शुभ मुहुर्त में जनेऊ हो गया। बहुत सारे लोगों ने भेंटे दीं , काफी धनराशि जमा हुयी , कार्यक्रम समापन के बाद चुनिंदा लोगों की बैठक हुयी , उस बैठक में तात्या , नाना , उसके भाई , रघुनाथ सिंह , जवाहर सिंह एवं खुदाबख्श जैसे प्रमुख लोग शामिल हुए। रानी ने बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि अब इस यज्ञ के बाद बड़े यज्ञ के लिए तैयार हो जायं।

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 291।

रघुनाथ सिंह जैसे वफादार बहादुर दीवान ने जब कहा कि हम बुन्देलखण्ड से युद्ध प्रारम्भ करने को तैयार हैं तो इस पर रानी की टिप्पणी सें अर्थगाम्भीर्य एवं भावी बोध की पुष्टि होती है। रानी ने कहा कि गोरों के विरूद्ध तभी युद्ध प्रारम्भ किया जाय , जब अपने पास मजबूत सैन्य संगठन हो , साथ ही जनता को संत्रास देने वाले डाकू तथा लूटमार करने वालों से भी निपटना होगा।

क्रांति की सुगबुगाहट

गोरों के विरूद्ध स्थितियाँ धीरे – धीरे विपरीत हो रही थीं , कारतूसों में चर्बी के प्रयोग ने अंग्रेजों के विरूद्ध एक नया माहौल बना दिया , इसके साथ ही नाना साहब , तात्या तथा अली मुल्ला खाँ जैसे लोग क्रांति–सूचना के माध्यम के रूप में कमल तथा रोटी या चपाती का चयन किया , कमल फूलों का राजा , साथ ही विशालता तथा महानता का प्रतीक है , इसके अतिरिक्त रोटी सुरक्षा की प्रतीक है , कमल और रोटी का दौर खत्म नहीं हुआ था कि मेरठ में क्रांति का विस्फोट हो गया।

04 जून 1857 को कानपुर तथा झांसी में क्रांति के लक्षण दिखायी पड़ने लगे , गुरु बख्श सिंह नामक हवलदार ने स्टार फोर्ट में हमला कर दिया , अंग्रेज वहाँ से अपने परिवारों को लेकर भागे , उन्हें संकट – काल में रानी याद आयीं , गार्डन रानी के पास पहुँचा , गार्डन ने रानी से मदद मांगी , जिस पर रानी ने अवसर को देखते हुए कहा कि मेरे पास योद्धा बहुत कम हैं , यदि अनुमति हो तो एक अच्छी सेना तैयार कर लूँ , डनलप हाँ कहकर चला गया। स्कीन , गार्डन तथा डनलप ने एक बैठक की , उन्हें विश्वास था कि सेना में सभी हिन्दुस्तानी बुरे नहीं हो सकते।

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 292।

डनलप इस भरोसे के आधार पर देशी पल्टन पहुँच गया , जहाँ पर सिपाहियों ने रिसालदार काले खाँ के नेतृत्व में डनलप को गोली मारकर क्रांति श्री गणेश किया। 1.

रानी की मानवता

देशी पल्टन में विद्रोहियों के उग्र तथा हिंसक हो जाने पर गोरों के होश उड़ गये। भयभीत गार्डन रानी के निकट पहुँचा , जिसने रानी से गोरे परिवारों की सुरक्षा की गुहार लगायी। रानी ने सहृदयता दिखाते हुए कहा कि स्त्रियों तथा बच्चों को महल में भेज दीजिए। रानी ने मुन्दर नामक अपनी सहेली को जवाब देते हुए दृढ़ स्वर में कहा कि हमारा संघर्ष अंग्रेज पुरुषों से है , उनके परिवारी जनों से नहीं। गार्डन ने स्त्रियों तथा बच्चों को रानी–महल में पहुँचा दिया , किन्तु स्कीन के हठ के कारण उन्हें किले में भेज दिया गया। सिपाहियों ने पहले छावनी को तहस–नहस किया फिर वे किले पर आक्रमण करने के लिए बढ़े। विद्रोहियों ने दिन भर किले पर आक्रमण किये , गोरे दिनभर पीछे हटते रहे। लड़ाई के दूसरे दिन गोरों के पास खाने को कुछ भी नहीं बचा था। गोरों ने किले से अपनी भूख का संदेश रानी के पास भेजा।

रानी ने दो मन की रोटियाँ बनवाकर काशी को यह जिम्मेदारी सौंपी कि वह सुन्दर तथा मुन्दर को लेकर गुप्त मार्ग से गोरों तक भोजन पहुँचा आये , उन लोगों ने भोजन पहुँचाया किन्तु उनके गुप्त रास्ते का भेद मार्टिन नामक अंग्रेज जान गया , जिसने उसका प्रयोग आगरा जाने के लिए किया। रानी की तीनों सहेलियाँ मार्टिन के इस कदम से बेखबर थीं।

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 295।

गार्डन की मौत

जो जैसा करता है , उसे कर्म फल मिलता है। उस दिन विद्रोहियों तथा अंग्रेजों के बीच घनघोर युद्ध हुआ। गार्डन किले से विद्रोहियों पर ताक – ताक करके निशाना लगा रहा था , सभी विद्रोही परेशान थे , तभी विद्रोहियों को शहर का एक श्रेष्ठ तीरन्दाज मिल गया , जिसके एक ही प्रहार से गार्डन के प्राण उड़ गये। गार्डन के मरते ही अंग्रेजों के होश उड़ गए।

स्कीन तथा उसके साथियों को सजाये मौत

विद्रोही झांसी के ऑग्ल कमिश्नर स्कीन तथा अन्य गोरों को कैद कर झोकन बाग ले गए। उस समय विद्रोही सरगना रिसालदार काले खाँ छावनी चला गया था। उस वक्त विद्रोहियों का नेतृत्व ऑग्ल काल का अपमानित दरोगा बख्शिश अली कर रहा था। उस समय घोड़े पर सवार एक सैनिक कैदी गोरों के पास आया। बख्शिश अली ने उस घुड़सवार तथा उपस्थित विद्रोहियों से कहा कि इस स्कीन नामक कमिश्नर ने मूझे जूतों से पीटा तथा भद्दी गालियाँ दीं , अब क्या देखते हो ? प्रतिशोध लो। उस घुड़सवार ने गोरों के समक्ष कहा कि रिलासदार साहब ने सभी गोरों के कत्ल का फरमान दिया है। दरोगा ने सबसे पहले स्कीन को मारा , उसके बाद सभी गोरे मार दिए गये। कुछ समय बाद जब रिसालदार आया तो उसने दरोगा के इस कदम पर अफसोस जाहिर किया।

रानी की दूरदर्शिता से शहर लुटते बचा

रिसालदार काले खाँ के नेतृत्व में सभी विद्रोही रानी के महल पहुँचे , विद्रोहियों में अनुशासन नहीं था , नेतृत्व का अभाव था। 1.

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 296।

विद्रोहियों द्वारा नारे लगाने पर रानी महल की ऊपरी मंजिल की खिड़की पर पहुँची , उन्होंने सभी का नमस्कार स्वीकार किया , रानी ने पूँछा कि विद्रोही प्रमुख तुम काले खाँ हो , उसने हाँ में उत्तर दिया। रानी ने तलवारों पर लगे रक्त के आधार पर माजरा जानना चाहा , जिसे काले खाँ ने विस्तार से बताया। रानी ने उन सबको बहुत फटकारा , उन्होंने कहा कि तुम लोगों ने घोर अपराध किया है , तुम लोग मानवता को भूल गये हो। सारे विद्रोही कायल हुए। सभी विद्रोहियों ने काले खाँ से बात की , दिल्ली चलने का प्रस्ताव रखा , किन्तु अर्थ प्रबन्ध का मुद्दा भी उठा। वे सभी शहर से उगाही करना चाहते थे , रानी समझ गयी कि शहर लुटने वाला है , काले खाँ ने उन्हें सिपाहियों के निर्णय से अवगत करा दिया , रानी ने स्थिति को भाँपकर अपने गले से हीरों का हार उतारकर काले खाँ को दे दिया और उनसे अनुशासित ढंग से दिल्ली जाने का निर्देश दिया , रानी की सूझ– बूझ से शहर लुटने से बच गया। 1.

झांसी में सत्तावनी क्रांति के बाद झांसी शहर में लूटपाट करने एवं अराजकता फैलाने वालों की बाढ़ सी आ गयी थी , इसके अतिरिक्त झांसी के आस–पास गाँवों में डकैतों की चहल – कदमी बढ़ गयी थी।

रानी का सदाशिव नेवालकर पर हमला

मोतीबाई ने रानी को सूचना दी कि सदाशिव ने करेरा के किले पर 13 जून 1857 को आक्रमण कर दिया है , उसके पास काफी सेना है। नेवालकर अपने को झांसी राज्य का वास्तविक उत्तराधिकारी मानता था , उसके साथ सेना के कुछ अनुशासन हीन युवा शामिल हो गये थे।

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 297।

सदाशिव ने करेरा में नियुक्त गोरों के थानेदार तथा तहसीलदार को मार भगाया था , उसने महाराज की पदवी धारण कर ली। रानी ने अपनी तीनों कर्नल सुन्दर , मुन्दर और काशी तथा सेना के साथ करेरा के लिए कूच किया , रानी ने इतनी त्वरा के साथ करेरा पहुँचकर किले को ऐसा घेरा कि नेवालकर को लड़ने के लिए अवसर ही नहीं मिला। वह अपनी जान बचाकर सिंधिया – राज्य के नरवर में पहुँचा। रानी ने उसे नरवर मे घेर कर पकड़ लिया , उसे कैद कर झांसी के किले में रख दिया गया।

रानी का सागरसिंह से दो हाथ

कुँवर सागर सिंह बहुत चतुर एवं चेतनाशील व्यक्ति था। उसका बरूआ सागर के आस–पास आतंक था। रानी उसका दमन करने के लिए अपने एक दीवान खुदाबख्श को भेजा , जो सागर सिंह के हमले में ख़ुद घायल हो गया। उसके सिपाही भी जख्मी हो गए। वे सागर सिंह को पकड़ नहीं पाये। सागर सिंह एक डकैत था। रानी को जब यह समाचार मिला कि उसे खुदाबख्श तथा सैनिक नहीं पकड़ पाये हैं तो वह स्वयं उसे पकड़ने के लिए तैयार हो गयी। उनके साथ महिला कर्नल भी थीं। वेत्रवती उफना रही थीं। रानी ने अपने घुड़सवारों को तुन्रत कूद जाने की आज्ञा दी , वे स्वयं नदी को आगे होकर पार कर रहीं थी। रानी अपने साथियों सहित नदीं पार कर गयी , दोनों ओर से संघर्ष हुआ। रानी ने बहुत चतुरता के साथ एक ही वार में सागर सिंह की तलवार के दो टुकड़े कर दिये। रानी ने जैसे ही सागर सिंह की कमर में हाथ डाला , वैसे ही मुन्दर समझ गयी कि मुझे क्या करना है।

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 298।

उसने भी अपना हाथ उसकी कमर में लगा दिया। सागर सिंह ने बहुत कोशिश की कि पकड़ ढीली हो जाय किन्तु ऐसा हुआ नहीं। रानी के साहस की सभी लोगों ने प्रशंसा की। सागर सिंह को रानी के समक्ष लाया गया , उसने अपना सारा हाल एवं समस्या बतायी। रानी ने उसे क्षमाकर दिया।

रानी और नत्थे खाँ का युद्ध

नत्थे खाँ बीस हजार सैनिकों के साथ ओरछा आ गया , उसने दूत द्वारा झांसी सन्देशा भिजवाया कि झांसी पहले ओरछा का एक हिस्सा थी , वह ओरछा को वापस प्राप्त होना चाहिए , यह समाचार सारे शहर में बिजली की तरह फैल गया , लोग घबरा उठे। नान भोपटकर ने रानी को कुछ सुझाव दिए , रानी ने नत्थे खाँ से निपटने की पूरी तैयारी की। उन्होंने अपनी महिला कर्नलों के साथ सारे सामरिक मोचों का निरीक्षण किया और तोपचियों तथा अन्य सैनिकों को उचित निर्देश दिया। रानी गुलाम गौस खाँ को तोपों के चलाने का आदेश दिया , उसने जिस तरीके से तोपों से प्रहार किया , उससे नत्थे खाँ के होश उड़ गए। वह सामान तथा तोपों को छोड़कर भागा। इस समर में रानी का एक कर्नल जमा खाँ शहीद हुआ।

गोरों की बुन्देल क्षेत्र पर काबिज होने की तैयारी

गोरी सेना के प्रधान सेनापति सरकोलिन कैम्बेल थे। वह जहाँ उत्तराखण्ड के दमन में व्यस्त था , वहीं जनरल ह्युरोज सागर तथा गढ़ाकोटा को हथियाने के बाद वह शाहगढ़ तथा मदनपुर को कुचलने के लिए आगे बढ़ा। शाहगढ़ नरेश बख्त बली सिंह के साथ मदनपुर गाँव में रोज का भीषण युद्ध हुआ , जिसमें बहुत सी गोरी सेना मारी गयी। अंग्रेज चाहते थे कि मर्दन सिंह तथा बखतबली दोनों मिलने न पायें।

जनरल रोज ने मदनपुर का संघर्ष केवल इस आधार पर जीत लिया था कि उसने अपनी चालों की चौपड़ बिछाकर मर्दन सिंह तथा शाहगढ़ के राजा बखतबली को एक जुट नहीं होने दिया था , अन्यथा वह कभी जीत नहीं सकता था। जनरल रोज क्रमशः मदनपुर , शाहगढ़ तथा मड़ावरा की गढ़ी को अपने अधिकार में लिया , उसने बानपुर के राज्य के बड़े अधिकारियों तथा कर्मचारियों को फाँसी पर लटका दिया। रोज 12 मार्च 1858 को तालवेहट पहुँच गया , उसने तालवेहट तथा चन्देरी पर भी कब्जा कर लिया , रोज झांसी की पूर्वी तहसील मऊ के एक छोटे से गढ़ पर अधिकार करने के पूर्व उसने रानी के पास अपना एक संदेश भेजा कि रानी अपने सैन्य प्रमुखों तक दीवानों के साथ अंग्रेजों के पास निशस्त्र चली आये अन्यथा परिणाम भयंकर होंगे। रानी ने भी दूत से रोज के संदेशा का उत्तर भिजवा दिया।

रानी का सैन्य तथा सुरक्षा प्रबन्धन

रानी ने झांसी की सुरक्षा का समुचित प्रबन्ध कर दिया था , उन्होंने सागर खिड़की पर पीर अली , ओर्छा फाटक पर दीवान दुल्हाजू , सैयर फाटक पर खुदाबख्श तथा कुँवर सागर सिंह को खण्डेराव फाटक तथा पूरन कोरी को उनाव फाटक पर तैनात कर दिया था। उन्होंने दीवान जवाहर सिंह प्रधान को सेनापति बनाया था , किले पर बड़ी – बड़ी इक्यावन तोंपे लगायी गयी थीं।

रानी लक्ष्मीबाई ने स्त्री सेना का गठन कर अंग्रेजों को हैरत में डाल दिया था। उन्होंने चार हजार सैनिक नियुक्त कर दिये थे। रानी की व्यवस्था चौक – चौबन्द थी। 1.

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 298।

जनरल रोज का झांसी पर आक्रमण

रोज ने 20 मार्च 1858 को लगभग तीन मील दूर पूर्वी दक्षिण छोर पर अपना सैन्य शिविर लगाया। नवाब अलीबहादुर के माध्यम से रोज को झांसी में एक महत्वपूर्ण भारतीय भितरघाती मिल गया था , जिसका नाम था – पीर अली। जनरल रोज ने 21 मार्च को अपने सहायकों के साथ झांसी का भ्रमण कर वहाँ का बारीकी से निरीक्षण किया। उसके बीस–पच्चीस घुड़सवार जब 22 मार्च को सैयर फाटक के पास निरीक्षण कि लिए पहुँचे तो उन पर किले से भीषण गोलियाँ दागी गयीं , मरा तो कोई नहीं किन्तु कई सैनिक घायल हो गये , रोज को उनका समाचार मिल गया था। उसने समझ लिया था कि झांसी में काँटे की टक्कर होगी। जनरल ह्युरोज ने 23 मार्च 1858 को झांसी पर आक्रमण का आदेश यिा , रोज की सेना सैयर तथा ओर्छा फाटक की ओर बढ़ी , रानी के तोपची खुदाबख्श तथा दुल्हाजू ने गोरी सेना को बढ़ने दिया , जैसे ही वह मार के भीतर आयी , दोनों तोपचियो ने सेना पर कहर बरपाया , अंग्रेजी तोपची मारे गये , जनरल रोज ने नये मोर्चे बनवाये। रानी ने दोहरा प्रबन्ध किया था। दिन और रात में सैन्य ड्युटी अलग– अलग रहती थी।

झांसी की रोज को कड़ी चुनौती

गुलाम गौस भी एक बेहतरीन तोपची था , उसने गोरों के दक्षिणी मोर्चे को विफलकर दिया , अंग्रेज तोपची मारे गये। भाऊ बख्शी ने गोरों के पूर्वी छोर के भी होश उड़ा दिए , कई अंग्रेज तोपची मोर गये। रानी ने सभी मोर्चे का निरीक्षण किया। 1.

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 300।

पीर अली का भितरघात

पीर अली झांसी की रानी की सारी सूचना रात में सुंरग से होकर रोज के सैन्य शिविर में जाकर जनरल रोज को प्रतिदिन दे आता था। यह उसका झांसी की रानी के प्रति बहुत बड़ा भितरघात था। रोज को वहाँ का पूरा सैन्य समाचार मिल जाता था। पीरअली ने रोज को भेद एवं उपाय बताया कि जहाँ से किला टूट सकता था और झांसी पराजित। पीर अली के द्वारा बताये गए भेद के अनुसार अगले दिन रोज ने तोपों से किले पर गोले बरसाये , जिसमें शहर का विनाश होने लगा।

झांसी की बलिदानी शुरुआत

रोज के दक्षिणी ब्रिगेड ने तोपों द्वारा भयंकर गोले बरसाये , जिसका दो टूक जवाब बख्शिन जी दे रही थीं , उसने बहुत सी गोरी फौज का काम तमाम तो कर दिया किन्तु युद्ध – वेदी में स्वयं की समिधा समर्पित कर रानी की महत्वपूर्ण स्त्री गोलन्दाज अमर होता हो गयी। रानी को इस समाचार का आघात लगा। उनका कंठ अवरूद्ध हो गया , भाऊ बख्शी ने बख्शिन की शहादत पर कहा कि इससे भी बढ़कर झांसी तथा झांसी की रानी है।

गुलाम गौस खाँ एक बहुत महत्वपूर्ण तोपची थे। उन्होंने रानी से प्रार्थना की कि आप दीवान खास जायं। मैं गोरों को मजा चखाता हूँ। उसने 'घनगरज' नामक तोप का मुँह सीधा कर गोरों पर निशाना साधा , तीन बार के आक्रमण से तोपखाना , तोपची तथा तोपों पर काम करने वाले सभी समाप्त हो गये।

---

1. डॉ० वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ० सं० – 301।

सागर सिंह ने खण्डेराव फाटक पर अद्भुत शौर्य का परिचय दिया , किले के पश्चिमी भाग की दीवाल गिर गयी थी , तोपखाना असुरक्षित हो गया था। उसने अपने सौ साथियों के साथ गोरों का मुकाबला किया , उस फाटक पर सागर सिंह के आक्रमण से गोरा – दस्ता नष्ट हो गया किन्तु वह भी अमर होता हो गया। इन वीरों के कारण उस दिन किला बच गया। रानी ने रात में ही टूटी दीवार की मरम्मत करा दी।

रानी की भूल

बरहामुद्दीन नाम सैनिक पठान ने रानी लक्ष्मीबाई से पीरअली तथा एक और दीवान के सम्बन्ध में कहा था कि वे झांसी के साथ द्रोह कर रहे हैं , विश्वातघात कर रहे हैं , उसने उनसे सावधान रहने के लिए कहा। रानी ने उसकी बात पर विचार तो किया किन्तु पूरे मन से नहीं , यही कारण है कि कालान्तर में पीर अली तथा दुल्हाजू ही झांसी के लिए काल साबित हुए। इन दोनों के कारण ही ओरछा फाटक गोरों के लिए खुला , यही द्रोह झांसी पराजय का मूल कारण बना। रानी की यह भूल झांसी विनाश की पूर्व पीठिका थी।

दुल्हाजू की दगा झांसी विनाश का कारण बनी

दुल्हाजू की ओरछा फाटक पर ड्यूटी थी ,उसके साथ रानी की कर्नल सुन्दर की भी ड्यूटी थी। दुल्हाजू को पीर अली सुरंग या गुप्त मार्ग द्वारा रोज के सैन्य शिविर ले जा चुका था , जहाँ पर उसकी रोज से वार्ता हो चुकी थी , युद्धकाल में पूर्व निर्धारित योजनानुसार उसने जैसे ही ओरछा फाटक खोलना चाहा , सुन्दर ने दगाबाज दुल्हाजू का मुकाबला किया किन्तु गोरे की एक गोली से वह शहीद हो गयी।

---

1. डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा , झांसी की रानी , झांसी, मयूर प्रकाशन , 1979 , पृ0 सं0 – 302।

दुल्हाजू की नमक हरामी ने झांसी का चैन छीन लिया। अंग्रेजों को किले में प्रवेश मिल गया।

झांसी संग्राम में बलिदानों का दौर

उसके बाद रानी का एक और खास तोपची सैयर फाटक पर शहीद हो गया। खुदाबख्श ने भी अपने को उत्सर्ग कर दिया। मोतीबाई ने गोरों का मुकाबला किया। उसने कुछ को मौत की नींद सुला दिया। रानी ने अद्‌भुत शौर्य का परिचय देते हुए अपने चुनिंदा सैन्य प्रमुखों के साथ किले के बाहर जाकर रण हुंकार भरी , उसने सैनिकों आह्वान करते हुए कहा कि आज सिद्ध कर दो कि एक हिन्दुस्तानी सैनिक की तलवार के सामने संसार का कोई योद्धा ठहर नहीं सकता।

रानी ने विकट युद्ध किया , उसके एक वफादार सैनिक बरहामुद्‌दीन ने भी घोर संग्राम किया। उसने कई गोरे सैनिकों को घायल कर दिया। अन्तत वही भी खेत रहा। उसको अन्तिम समय में रानी के दर्शन हो गये। वह धन्य हो गया। उसी वीर सैनिक ने रानी से क्षमा याचना की , रानी ने उसे सच्चे सिपाही की संज्ञा दी। उस वीर बाँकुड़े का नाम था– बरहामुद्‌दीन पठान।

उस दिन के युद्ध में झासी के बलिदानों का एक लम्बा सिलसिला रहा , अनेकों वीरों ने अपने को उत्सर्ग कर दिया। अंग्रेजों को शहर के एक–एक स्थान पर कब्जा करने में न जाने कितने सैनिकों की आहुति देनी पड़ी। महल की एक–एक इंच की भूमि पर अधिकार करने में अंग्रेजों को भारी युद्ध करना पड़ा। महल के सभी सैनिकों के शहीद हो जाने पर ही गोरों का महल पर अधिकार हो सका।

अंग्रेजो की बर्बरता के समक्ष पाशविकता भी काँप उठी। बड़े पैमाने पर आबाल वृद्ध को मौत के घाट उतार दिया गया। नर–संहार अतीत के पैमानों को पार कर गया। किले का पुस्तकालय जला दिया गया , जिस पर रानी लक्ष्मीबाई महल की चौखट पर बैठकर रोई।

रानी के सभी तोपची , सैन्य प्रमुख , वीर सैनिक एक–एक कर मारे गये। उनका प्रधान तोपची गुलाम गौस खाँ भी मारे गये। मोतीबाई ने भी अपना बलिदान कर दिया।

रानी का झांसी से प्रस्थान

रानी ने गोरों का नंगानाच अपनी आँखो से देखा , गोरों ने झांसी के तीन हजार निर्दोष लोगों का वध किया। रानी ने बचे हुए प्रमुखों से परामर्श कर झांसी छोड़ने का निश्चय किया। उसने तथा उनकी कर्नल मुन्दर ने पुरुष वेश धारण किया। रानी दामोदर राव को एक चादर से अपनी पीठ पर बांधा , उनके पीछे पचास सैनिक , मुन्दर , जवाहर सिंह तथा रघुनाथ सिंह इत्यादि थे। वे सब भाण्डेर फाटक की ओर गये। वहाँ पर गोरों से मुठभेड़ हो गयी। रानी गोरी सेना को चीरती हुई मुन्दर सहित निकल गयी। भाऊ बख्शी भी भाण्डेर फाटक पर लड़ते हुए शहीद हो गये। रानी निरन्तर आगे बढ़ती गयीं। रानी ने जब 20–25 किमी० की यात्रा तय कर ली तब जवाहर सिंह तथा रघुनाथ सिंह से लौट जाने को कहा। इस पर रघुनाथ सिंह ने कहा कि जवाहर सिंह आप द्वारा प्रदत्त कार्य को बेहतर कर सकते हैं। रानी ने जवाहर सिंह से कहा था कि सैन्य संगठन कर कालपी आकर मुझसे मिलें। जवाहर सिंह रानी के पैर छूकर लौट गये।

रानी लक्ष्मीबाई का महाप्रयाण

रानी लक्ष्मीबाई के झांसी से निकलने के बाद झलकारी बाई ने रानी का रूप धारण कर गोरों के शिविर में पहुँच कर कहा कि मैं रानी हूँ , मुझे गिरफ्तार कर लो , उसे रोज के सामने पेश किया गया , देशद्रोही और झांसी के पतन का जिम्मेदार दीवान दुल्हाजू शिविर में था , उसने उसे पहचानकर रोज से कहा कि सरकार यह रानी नहीं है , यह तो झलकारी कोरिन है। झलकारी ने दुल्हाजू को बहुत भला – बुरा कहा। इस तरह वह अंग्रेजों को जब तक उलझाये रही तब तक रानी दूर निकल चुकी थी। झलकारी को एक सप्ताह की कैद के बाद छोड़ दिया गया।

रानी झांसी से 102 मील का लम्बा सफर तय कर कालपी पहुँची। रोज ने झांसी से चलकर लुहानी के किले पर अधिकार कर लिया। उसके बाद पेशवायी सेना की अनुशासनहीनता के कारण रानी , तात्या एवं रघुनाथ सिंह जैसे समर विशारद तथा मुन्दर जैसी कर्नल एवं साहसी महिला सेनानी के होते हुए भी कोंच का समर भी अंग्रेजों के खाते में आया। उसके बाद इसी अव्यवस्था के चलते कालपी भी हाथ से चली गयी , वहाँ पर भी गोरी सत्ता स्थापित हो गयी।

रानी कालपी से ग्वालियर पहुँच गयी। उनके पास उनके पाँच नायक तथा लालकुर्ती के सैनिक बहुत महत्वपूर्ण थे। 18 जून 1858 का दिवस रानी के महाप्रयाण का दिवस था। इस भीषण युद्ध में पुनः पेशवायी लापवाही दिखायी दी , रानी के सैन्य प्रमुखों तथा लालकुर्ती सेना ने गजब ढ़ा दिया , रानी की प्रमुख महिला सेनानी जूही ने मातृभूमि के लिए अपना उच्छेद कर दिया।

रानी ने इस समर मे बेमिसाल वीरता का परिचय दिया। उसने अपना मार्ग बनाना प्रारम्भ किया , दक्षिण पश्चिम की ओर सोन रेखा नाला था , उसके आगे बाबा गंगा दास की कुटी थी , युद्ध करते करते रानी के साथ केवल चार सरदार रह गए। उनके पीछे दस – पन्द्रह गोरे सैनिक । रानी पर गोरी की एक हूल का वार पड़ा जो उनके सीने पर लगा। मुन्दर भी रानी – रक्षा में काल कवलित हो गयी। रानी ने रघुनाथ सिंह से कहा कि मेरे शरीर को गोरे छू न पायें। एक गोरे सैनिक की गोली रानी के सिर पर पड़ी , जिससे उनकी दायी आँख बाहर आ गयी , रानी मरने के पूर्व तक अपने आस – पास के गोरे सैनिकों का काम तमाम करती रहीं। उनका घोड़ा नाले पर न अड़ता तो शायद गोरे उनके पास फटक भी न पाते।

रानी को रामचन्द्र देशमुख तथा रघुनाथ सिंह ने सावधानी से बाबा गंगा दास की कुटी में ले गये। उन्होंने रानी के मुँह को धोया , गंगा जल की कुछ बूँदे मुँह में डाली। रानी को कुछ होश आया। उनके पीड़ित मुँह से हर हर महादेव के शब्द गुंजित हुए। उन दोनों ने मुन्दर तथा रानी के शवों का दाह संस्कार किया। रानी इस तरह भारतीय स्वराज्य के प्रासाद की नींव बन गयीं।

सन १८५७ के झांसी के कुछ अन्य सूरमा

महान वीरंगना रानी लक्ष्मीबाई के अतिरिक्त झांसी में अनेक वीर ऐसे वीर सेनानी हुए हैं , जिन्होंने 1857 के स्वातन्त्र्य समर में बढ़–चढ़कर भाग लिया है , उमें कुछ इस प्रकार थे।

स्वाधीनता - संघर्ष और शाहरसूल

शाह रसूल एक होनहार तथा साहसी युवा थे रसूल की जन्मभूमि

भले ही उज्जैन रही हो , किन्तु उसकी कर्म भूमि झांसी थी , वह अपने चाचा के साथ झांसी गया था , वहाँ पर अपने चाचा सरवर खाँ संस्तुति पर रानी के प्रधान सेनापति जवाहर सिंह उसे रानी के पास ले गए , उसकी जाँच – परख की गयी। रानी ने उसे सेना में भरती का आदेश दिया।

कुछ समय बाद उसे कठिन परीक्षा से गुजरना पड़ा , उसे जमादार सरवर खाँ की सेना में कर दिया गया , जनरल रोज ने जब झांसी पर आक्रमण तो उस समय शाह रसूल ने गजब के हाथ दिखाये , उसने झांसी की ओर से भयंकर युद्ध किया। उसकी बहादुरी की चारों ओर चर्चा होने लगी। वह सरवर खाँ के साथ मऊ रानीपुर की ओर वह गया , जब रानी ने झांसी से कूचकर दिया था , उसने वहाँ पर भी गोरी सेना के जवानों से भयानक संघर्ष किया फिर चाचा सरवर खाँ के कहने पर उनके साथ कालपी गया। रसूल खाँ ने वहाँ पर भी गोरी सेना का मुकाबला किया। रानी के ग्वालियर चले जाने पर रसूल वापस लौटा , उसे रास्ते में रामपुरा के जागीरदार तथा गाँव के अधिकारियों ने पकड़कर गोरों के हवाले कर दिया। उस पर मुकदमें का नाटक हुआ , शाह रसूल को 21 दिसम्बर 1859 को फाँसी पर लटका दिया गया। इस तरह से यदि देखा जाय तो रसूल का योगदान कम महत्वपूर्ण नहीं था।

स्वाधीनता संघर्ष और ठाकुर लम्पू सिंह

ठाकुर लम्पू सिंह पिछोर निवासी थे , ये रानी के वफादार सिपाही थे। रानी लक्ष्मीबाई ने जब झांसी से प्रस्थान किया , उस समय लम्पू सिंह ने रानी को झांसी से सकुशल निकालने में अहम् भूमिका निभायी थी। 1.

1. भगवान दास श्रीवास्तव , म0 प्र0 के युवा क्रांतिकारी , 1857 का स्वाधीनता आन्दोलन , भोपाल , रा0 प्रकाशन , 1992 , पृ0 सं0 – 11।

ठाकुर लम्पू सिंह ने रानी का पीछा कर रहे वाकर तथा उसकी सेना को बहुत देर तक रोक कर रखा। उनके साथ देश द्रोही दीवान दुल्हाजू भी था।

ठाकुर लम्पू सिंह ने दीवान दुल्हाजू को बहुत खरी – खोटी सुनायी। उसने गोरी सेना से संघर्ष करते हुए अद्‌भुत कौशल का परिचय दिया , उसने गोरी – फौज में मारकाट मचा दी , किसी सैनिक ने उसके घोड़े के पेट में तलवार भोंक दी , इस पर वह घोड़े से कूदकर पैदल ही गोरी सेना को रौंदने लगा। 1.

जब लम्पू सिह का कबन्ध आधे घण्टे तक लड़ा

उसी समय किसी सैनिक ने लम्पू सिंह का सिर काट दिया। उसके बाद लम्पू सिंह का कबन्ध आधे घण्टे तक तलवार भाँजकर गोरी सेना का कचूमर निकाल दिया। यह देखकर वाकर हैरत में पड़ गया। द्रोही दुल्हाजू छिपे–छिपे यह सब देख रहा था। उसने सोचा कि मैं इस कबन्ध को धक्का देकर गिरा दूँ किन्तु उसी समय आकाश में एक बड़े जोर का धमाका हुआ , कबन्ध धड़ाम से गिर गया , उसकी तलवार की नोक दुल्हाजू की नाक पर जाकर गिरी , उसकी नाक कट गयी , जो हुल्हाजू के कृत्य का प्रतिफल था। 2.

जनरल वाकर ने उस कबन्ध की भूरि – भूरि प्रशंसा की। उसने अपना टोप उताकर लम्पू सिंह के मृत शरीर पर रख दिया। उसने कहा कि झलकारी बाई तथा लम्पूसिंह सचमुच बहादुर हैं। इन पर किसी भी देश को गर्व हो सकता है , मेरे देश में यदि ये पैदा होते तो मैं इन्हें ईश्वर की तरह पूजता।

---

1. सत्यनारायण श्रीवास्तव (संपादक) , झांसी महोत्सव स्मारिका , झांसी , 1997 , पृ0 सं0 – 41 , 42।
2. वही , पृ0 सं0 – 44।

स्वाधीनता संघर्ष और झलकारी बाई

झलकारी बाई को कसरत , कुश्ती , मलखम्भ एवं अस्त्र – शस्त्रों के संचालन की शिक्षा बचपन में मिल गयी थी। भोजला में उस वीर कन्या का साहस विश्रुत था। 1857 के स्वातन्त्र्य समर में झलकारी ने एक महत्वपूर्ण कार्य किया था। उसकी शक्ल रानी लक्ष्मीबाई से मिलती थी। गोरों का झांसी ने डटकर मुकाबला किया था किन्तु उसे भितरघात के कारण भूलुण्ठित होना पड़ा था। रानी ने जब झांसी से प्रस्थान किया और झलकारी को जब यह पता चला तो उसने अपना सुन्दर श्रृगार कर एक घोड़े पर सवार होकर गोरी – छावनी की ओर चल पड़ी। उसने हथियार नहीं लिए थे। ऑग्ल – शिविर के अन्दर पहुँचने से पहले उसे टोका गया। इस पर उसने कहा कि हम तुम्हारे जंडेल के पास जाउता है। एक ऑग्ल सैनिक कुछ–कुछ हिन्दी जानता था। उसने कहा कौन ? झलकारी ने कहा झांसी की रानी लक्ष्मीबाई। गोरों ने उसे घेर लिया। उन्होंने परामर्श दिया कि इसे जनरल रोज के पास तुरन्त ले चलना चाहिए। शहर के सभी अंग्रेजों में यह सूचना बिजली की तरह फैल गयी कि झांसी की रानी पकड़ी गयी , सभी गोरे खुशी से पागल हुए जा रहे थे किन्तु उनसे भी बढ़कर खुशी से पागल झलकारी बाई थी। 1.

उसकी सोच थी कि जब तक मेरी जाँच –पड़ताल एवं हत्या होगी तब तक महारानी को झांसी से दूर निकल जाने के लिए काफी समय मिल जायेगा और वे बच जायेगी। उसका गोरे के शिविर में लक्ष्मीबाई बनकर जाने का यही एक मात्र उद्देश्य था।

---

1. सत्यनारायण श्रीवास्तव (संपादक) , झांसी महोत्सव स्मारिका , झांसी , 1997 , पृ0 सं0 – 60

जनरल रोज के सामने पहुँचाया गया , वह घोड़े से नहीं उतरी , उसकी रानी – सरीखी शान तथा हेकड़ी को देखकर रोज भी कुछ देर के लिए सकते में आ गया। रोज ने स्टुअर्ट से कहा कि यह कितनी सुन्दर है ? छावनी में उपस्थित दगाखोर दीवान दुल्हाजू ने उसे पहचान लिया। उसने कहा कि जनरल साहब यह रानी अपितु झलकारी कोरिन है। झलकारी ने दुल्हाजू को बहुत भला – बूरा कहा। रोज ने झलकारी बाई के बारे में कहा कि यह औरत पागल हो गयी है , उसने उसे घोड़े से नीचे उतरवाया और कहा कि तुम गोली की शिकार होगी। इस पर झलकारी ने कहा कि "मार दै, मैं का मरवे खों डरात हों" रोज ने झलकारी के इस पागलपन का जब कारण खोजा तो अवाक् रह गया स्टुअर्ट ने उसे पागल कहा , इस पर रोज ने कहा कि यदि भारतीय स्त्रियों में एक प्रतिशत भी ऐसी स्त्री पागल हो जायें , तो हमको हिन्दुस्तान से अपना सब कुछ छोड़कर चला जाना पड़ेगा। रोज ने आगे कहा कि उसने हम सभी को अपने में उलझाकर रानी के भाग निकलने के लिए समय दिलाने हेतु यह नाटक रचा है। इस तरह से यह सिद्व होता है कि झलकारी बाई एक बुद्धिमान तथा वीर महिला थी। उसे एक सफ्ताह की कैद के बाद छोड़ दिया गया।

स्वाधीनता संघर्ष और मास्टर रुद्रनारायण

मास्टर रुद्रनारायण की भले ही लखनऊ जन्मभूमि रही हो किन्तु कर्म एवं धर्म की धरा झांसी रही है। मास्टर साहब को झांसी के क्रांतिकारियों के पितामह कहा जाता है , उन्होंने 1920 , 21 , 30 – 31 में क्रांतिधर्मी आचरण के कारण कठिन जेलयातनाएँ झेली। क्रांति के महान सूरमा चन्द्रशेखर आजाद को यदि इनका संरक्षण न मिल पाता तो आजाद आजाद न रह पाते। 1.

---

1. जानकी शरण वर्मा , अमर बलिदानी , झांसी , 2000 , पृ0 सं0 – 26।

शचीन्द्र नाथ बख्शी ने जब झांसी में क्रांति का संगठन खड़ा किया तो उसमें मास्टर रुद्रनारायण ने मेरुदण्ड की भूमिका निभायी थी। उसके बाद झांसी के भगवान दास माहौर , सदाशिव मलकापुर , विश्वनाथ वैशम्पायन ने मास्टर साहब का ही निर्देशन लेकर क्रांति के मिशन को आगे बढ़ाते रहे। मास्टर साहब क्रांतिकारी होने के साथ –साथ एक सफल चित्रकार तथा मूर्तिकार भी थे। मास्टर साहब ने 10 अप्रैल 1958 को अपने जीवन की अंतिम सांस ली।

स्वाधीनता संघर्ष और भगवान दास माहौर

झांसी के क्रांतिकारियो मे भगवान दास माहौर एक ऐसा नाम है जो किसी परिचय का मोहताज नहीं है , उन्होंने सचमुच स्वातन्त्र्य संघर्ष में बढ़–चढ़कर भाग लिया था। भगवान दास माहौर का 27 फरवरी 1910 का दतिया जिले के छोटी बड़ौनी नामक गाँव में जन्म हुआ था , कुछ दिनों बाद माहौर के पिता जी झांसी मे आकर बस गये थे , तब से वे झांसी के ही होकर रह गये।

भगवान दास माहौर इन भावों को लेकर धरती पर आये थे–

वक्त आने दे बता देंगे तुझे एक आसमाँ
हम अभी से क्या बतायें , क्या हमारे दिल में है।

भगवान दास माहौर पर माता–पिता तथा मामा नाथूराम माहौर का प्रभावी असर पड़ा। उनका बाल और किशोर जीवन इस तथ्य की गवाही देता है कि वे धरती पर अपने आने से लेकर जीवन के सान्ध्यकाल मे कही भी इस तरह दिखायी नहीं पड़े , जिससे यह सिद्ध होता है कि उनमें कर्मठता नहीं है। वे अपने जीवन के 14वें बसन्त से ही बारूदी मानसिकता वाले बन गये। मास्टर रुद्रनारायण सरस्वती पाठशाला में कला शिक्षक थे। 1.

---

1. जानकी शरण वर्मा , अमर बलिदानी , झांसी , 2000 , पृ0 सं0 – 233।

माहौर को वहीं पर इनका सानिध्य मिला , तत्पश्चात शचीन्द्र नाथ बख्शी मास्टर साहब के यहाँ ठहरे थे। माहौर को भी उनके दर्शन हुए , फलतः भगवान दास माहौर एक पक्के क्रांतिकारी बन गये।

भगवान दास माहौर को मास्टर साहब के आवास में ही महान क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद के दर्शन हुए थे , 1924 से 1931तक 07 वर्षो के अन्तराल में भगवान दास माहौर ने क्रांति के क्षेत्र मे जितने भी बड़े काम किये , उन सबके मूल में चन्द्रशेखर आजाद का कहीं न कहीं हाथ अवश्य था। माहौर की भुसावल बल काण्ड तथा जलगाँव – अदालत काण्ड में केन्द्रीय भूमिका थी। माहौर को 1924–1947 के 23 वर्षो के स्वातन्त्र्य समर में प्रभावी सहभाग रहा। माहौर का मार्च 1979 मे निधन हो गया। 1.

स्वाधीनता संघर्ष और सदाशिव मलकापुर

झांसी के क्रांतिकारियों मे मलकापुर एक ऐसा नाम है , जिसका उल्लेख आते ही अनायास मलकापुर के अवदान का पूरा चित्रण उभर आता है , झांसी के क्रांतिकारी संघठन में मलकापुर के सहभाग का एक महत्व रहा है , मास्टर रुद्रनारायण वहाँ की क्रांति के प्रथम पंक्ति के सूरमा माने जाते रहे हैं। चन्द्रशेखर आजाद के साथ जो नाम झांसी में संश्लिष्ट रहे हैं , उनमें एक नाम मलकापुर भी है।

बबीना के जंगल में बम परीक्षण

सदाशिव राव मलकापुर का क्रांतिकारी आरेख ऊर्ध्वगामी रहा है। एक बार सदाशिव राव मलकापुर बबीना के निकट बम परीक्षण में आजाद तथा भगत सिंह के साथ गये थे।

---

1. जानकी शरण वर्मा , अमर बलिदानी , झांसी , 2000 , पृ0 सं0 – 26।

परीक्षण—स्थल में भयानक अंधकार तथा जंगल घना था। भगत सिंह तथा आजाद ने एक खैर के पेड़ पर बम दागा। , बम दागते ही एक भयानक विस्फोट हुआ। भगत सिंह बम के सफल विस्फोट से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने बुन्देलखण्ड के जंगलों की प्रशंसा की। आजाद मलकापुर पर बहुत विश्वास करते थे।

भुसावल बम काण्ड और सदाशिव राव मलकापुर

उत्तर भारत में भेदियों तथा कुछ क्रांतिकारी संगियों की शिथिलता के कारण आजाद ने मलकापुर तथा भगवान दास माहौर को दक्षिण भारत में क्रांतिकारी संगठन के विस्तार हेतु पूना भेजा था , जहाँ पर उनको राजगुरू से मिलकर क्रांति – विस्तार करना था किन्तु वे दोनों भुसावल स्टेशन पर विस्फोटक पदार्थ तथा माऊजर पिस्तौल सहित पकड़ लिए गए। मलकापुर तथा माहौर पर भुसावल बम केस के नाम से मुकदमा चला और सजा हुयी। इस तरह हर क्रांतिकारी गतिविधि में मलकापुरकर का सक्रिय सहभाग रहा , जिसे नकारा नहीं जा सकता । 1.

मलकापुर का एक और बहुत बड़ा अवदान आजाद की माँ जगरानी की सेवा करना था। उन्होंने आजाद की माँ की पूरी देखभाल की थी , मार्च 1951 में उनके निधन पर मलकापुर कर ने ही उनका अंतिम संस्कार किया था। उन्हें मलकापुर ने तीर्थ भ्रमण कराने में श्रवण कुमार की भूमिका निभायी थी।

स्वाधीनता संघर्ष और लक्ष्मण राव

लक्ष्मण राव कदम भी झांसी के जाने – माने स्वातन्त्र्य सेनानी थे। इनका झांसी के रक्सा गाँव में 1901 में जन्म हुआ था।

---

1. जानकी शरण वर्मा , अमर बलिदानी , झांसी , 2000 , पृ0 सं0 – 238।

इनके पिता का नाम नारायण राव कदम था। कदम रेलवे में नौकरी करते थे। इन्होंने 1922 में उसे छोड़कर देशसेवा के क्षेत्र में पदार्पण किया। इन्हें मेरठ षडयंत्र केस में गिरफ्तार कर लिया गया।

लक्ष्मण राव गांधीवादी आन्दोलनों में अगुवा रहे। ये गांधीवादी होते हुए भी क्रांतिकारी कार्य कलापों से जुड़े रहे। इनका प्रसिद्ध क्रांतिकारी पं0 राम प्रसाद बिस्मिल से सम्पर्क था। बिस्मिल की बहन शास्त्री देवी भी कदम को अच्छी तरह जानती थीं , बिस्मिल की बहन क्रांतिकारियों की मदद करती थीं , वे अपनी टांगो में हथियार बांधकर क्रांतिकारियों तक पहुँचाती थीं।

पं0 राम प्रसाद बिस्मिल को सजाये मौत मिलने के बाद बिस्मिल की बहन जब – जब अपने को असहाय एवं असमर्थ महसूस करती थीं , तब–तब वे कदम को पत्र लिखती थीं और लक्ष्मण राव कदम उन्हें पत्र का उत्तर देते थे , साथ ही उनकी मदद भी करते थे। इस तरह से यदि देखा जाय तो लक्ष्मण राव कदम का लोकसेवा तथा देशभक्तों के परिवार के सदस्यों के प्रति कितना बड़ा योगदान रहा है।

इस तरह से यदि देखा जाय तो झांसी जनपद में क्रांतिकारियों की काफी बड़ी संख्या रही है , जिन्होंने स्वाधीनता संघर्ष में बढ़–चढ़कर किस्सा लिया है। उन स्वातन्त्र्य शूरों में पं0 रघुनाथ विनायक घुलेकर , पं0 सीताराम भास्कर भागवत , कुंज बिहारी लाल शिवानी , कालीचरण निगम , कृष्ण चन्द्र पेंगोरिया , रणपति सिंह परिहार , सीताराम टेंगशे एवं बाबूलाल उदैनिया का नाम उल्लेखनीय हैं , जिन्होंने – स्वातन्त्र्य संघर्ष के हर चरण अपनी शानदार पारी खेली।

निष्कर्ष

1857 से लेकर 1947 तक के 90 वर्षो के स्वातन्त्र्य संघर्ष में झांसी जनपद किसी परिचय का मोहताज नहीं हैं।

1857 के प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष में झांसी के योगदान के बारे में जितना अधिक उल्लेख किया जाय , वह उतना ही कम है। गोरों द्वारा झांसी राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लेने की घोषणा के बाद रानी लक्ष्मीबाई का यह उद्घोष "मै झांसी नहीं दूँगी" के सन्दर्भ में रानी में नियोज और निष्ठा का जो संगम दिखा , वह अपने आपमें बेमिसाल था , रानी लक्ष्मीबाई ने गोरों के झांसी में आक्रमण करने के पूर्व से जो स्त्री सैन्य संगठन किया , वह तत्कालीन विश्व सैन्य संगठन के इतिहास में अपनी तरह का पहला प्रमाण था। रानी लक्ष्मीबाई में सांगठनिक क्षमता भी बहुत थीं।

जनरल ह्युरोज ने झांसी में 25 मार्च 1858 को आक्रमण किया था , कुल मिलाकर गोरों तथा झांसी के बीच 10 दिनों का महासमर हुआ , वे हर मोर्चे पर विफल रहे किन्तु गोरों की जब तक साजिशों , षडयंत्रों एवं चालों की चाल सफल नहीं हुयी , तब तक वे झांसी का बाल – बांका नहीं कर पाये। रोज को पीरअली तथा दुल्हाजू दो भितरघाती मिल गये। दीवान दुल्हाजू की भितर घात रंग लायी। उसने रानी की बहादुर महिला कर्नल सुन्दर को मार कर ओरछा फाटक खोल दिया , उसी बीच घुस कर गोरी सेना ने झांसी का विनाश किया। झांसी–पतन के नेपथ्य में पीर अली तथा दीवान दुल्हाजू ये ही दो देशद्रोही थे।

जिन्होंने यदि देश द्रोह न किया होता तो रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगना की समारिक व सैन्य नीति तथा प्रजा वत्सलता का जनरल रोज कुछ न बिगाड़ पाता और देश 90 वर्ष पहले ही दासता से मुक्त हो गया होता।

इतना ही नहीं कोंच , कालपी तथा ग्वालियर के समर में यदि रानी के सुझावों को राव साहब तथा अन्य सैन्य प्रमुख मान लेते तो भी 1858–89 के उस स्वातन्त्र्य समर की तस्वीर कुछ और ही होती। सत्तावनी समर की तस्वीर कुछ और ही होती। सत्तावनी समर के बाद भी झांसी के क्रांतिकारियों की स्वातन्त्र्य संघर्ष में सराहनीय भूमिका रही।

अष्टम् अध्याय

स्वाधीनता संघर्ष और ललितपुर के क्रांतिकारी

स्वाधीनता संघर्ष और ललितपुर के क्रांतिकारी

स्वातन्त्र्य संघर्ष काल में ललितपुर झांसी जनपद का एक उप जिला था , इसके नामकरण के सम्बन्ध में भी मत विभिन्नता है , इसे मालवा (म0प्र0) के राजा सुमेर सिंह ने बसाया था। एक दन्त कथानुसार राजा सुमेर सिंह चर्म रोग से ग्रस्त था। गंगा के पवित्र जल में चर्मरोग निवारणकी क्षमता कितनी है , का आकलन की दृष्टि से उन्होंने गंगा स्नान के उद्देश्य से प्रस्थान किया। राजा मार्ग में अत्यधिक अस्वस्थ हो गये , वे ललितपुर जिले की वर्तमान सीमा में एक शिविर लगाकर रुक गये। उनकी पत्नी ललिता को स्वप्न में यह निर्देश मिला कि राजा जहाँ पर ठहरे हैं , वहीं के तालाब में स्नान कर लें , वे रोग मुक्त हो जायेंगे। सुमेर सिंह ने उस तालाब में स्नान किया और उन्हें चर्म रोग से छुटकारा मिल गया। राजा उसके बाद उस स्थान का नाम अपनी पत्नी के नाम पर ललितपुर रखा। इस तरह से जनपद का नाम ललितपुर पड़ा। 1.

इस जनपद में ललितपुर , तालबेहट व महरौनी नाम की तीन तहसीले हैं और छः विकास खण्ड हैं। ललित का अर्थ सुन्दर होता है , फलतः ललितपुर को यदि प्राकृतिक सुषमा का समृद्व क्षेत्र कहा जाय तो कोई अतिरेक नहीं होगा। यहाँ के देवत्व पूरित कला–तीर्थो का अपना एक अलग महत्व है , इस जनपद के बानपुर के दो विशाल जैन मंदिरों का वास्तु वैभव अपनी एक अलग छटा बिखेरता है। 2.

---

1. डॉ0 वीरेन्द्र सिंह , (प्रमुख संपादक) , उ0 प्र0 जिला गजेटिसर्य , ललितपुर , लखनऊ , 1997 , पृ0 सं0 – 01
2. कैलाश मड़बैया , बानपुर , टीकमगढ़ , मनीष प्रकाशन , 1978 , पृ0 सं0 – 01।

इसलिए यह कहा जा सकता है यह क्षेत्र प्रकृति का दुलारा क्षेत्र है।

१८५७ का स्वातन्त्र्य संघर्ष और ललितपुर

बुन्देलखण्ड का विस्तृत वैभव – बानपुर नामक कृति के रचयिता कैलाश मडबैया की इन पक्तियों से ललितपुर के 1857 के स्वातन्त्र्य समर में योगदान का आकलन किया जा सकता है।

सूरज शौर्य सराहे निशि दिन , छवि मे छिति छाँटी है ,
प्रकृति – वधू ने प्यार उड़ेला , त्रिविध गन्ध बाँटी है।
बुन्देलखण्ड के मुख्य पृष्ठ पर तुम स्वर्णिम हस्ताक्षर।
भारत के स्वातन्त्र्य प्रणेता , सुदृढ़ नींव के पत्थर।।

1857 के स्वातन्त्र्य संग्राम में ललितपुर जनपद के बानपुर क्षेत्र का प्रशंसनीय प्रतिभाग रहा। बानपुर कस्बा ललितपुर से 48 किमी0 , महरौनी से 14 किमी0 तथा टीकमगढ़ से 09 किमी0 की दूरी पर बसा है। 1.

बानपुर का नामकरण

जहाँ तक इसके नामकरण का प्रश्न है तो इस सम्बन्ध में एक पौराणिक मान्यतानुसार बाणासुर नामक एक दैत्य यहाँ का शासक था , उसी के नाम पर संभवतः इस कस्बे का नाम बाणापुर पड़ा जो कालान्तर में बानपुर के रूप में परिवर्तित हो गया। बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध राज्य ओरछा के शासक मधुकर शाह थे , जिनके आठ पुत्र थे। उन्होंने आठों पुत्रों को जागीरें बाँट दी थीं , रामशाह को ओरछा राज्य मिला। वीर सिंह देव को बड़ौनी की जागीर प्राप्त हुई थी , जिससे वह सन्तुष्ट नहीं था। 2.

---

1. कैलाश मड़बैया , बानपुर , टीकमगढ़ , मनीष प्रकाशन , 1978 , पृ0 सं0 – 06।
2. वही , पृ0 सं0 – 7 , 8।

वीरसिंह देव तथा सलीम

वीर सिंह देव ने अकबर के शाहजादा सलीम के कहने पर उसके विरोधी अब्बुल फजल को मार डाला , जिसके कारण वीर सिंह देव को सम्राट अकबर का कोप भाजन बनना पड़ा। , वीर सिंह देव को जंगलों में शरण लेनी पड़ी। सम्राट अकबर की मृत्यु के बाद सलीम दिल्ली की गद्‌दी पर आसीन हुए , उसने जहाँगीर की उपाधि धारण की। उसने वीरसिंह देव को इनाम स्वरूप सारे बुन्देलखण्ड का शासनधिकारी बना दिया। उसे ओरछा राज्य भी प्राप्त हो गया। ओरछा के तत्कालीन नरेश रामशाह को मुगल साम्राज्य में चन्देरी का राज्य दिया गया था , जिसमें ललितपुर तथा बानपुर नगर सम्मिलित थे। राजा रामशाह ने चन्देरी तथा ओरछा में 35 वर्षों तक शासन किया। 1.

मर्दन सिंह का पूर्ववर्ती काल

राजा रामशाह के पाँच पुत्र थे , जिनमें से एक का नाम भारत शाह था। भारत शाह चन्देरी में सिंहासनारूढ हुए , भारत शाह के बाद देवी सिंह राजा हुए। उसके दो पुत्र थे – दुर्ग सिंह तथा दुर्जन सिंह। दुर्जन सिंह चंदेरी के राजा हुए। राजा दुर्जन सिंह पाँच पुत्रों के पिता थे। उनके एक पुत्र मानसिंह चन्देरी के शासक हुए। इनके एक पुत्र धीरज सिंह को बानपुर की जागीर दी गयी। राजा मानसिंह के एक पुत्र अनुरूद्ध सिंह ने 30 वर्षो तक चंदेरी में शासन किया। अनुरुद्ध सिंह के दो पुत्र थे। उनके एक पुत्र रामचन्द्र जू देव 1774 में राजा बने। उनके चार पुत्र थे , जिनमें से ज्येष्ठ पुत्र प्रजापाल चंदेरी के राजा बने , शेष को अन्य जागीरें दी गयी , कुछ दिनों बाद ये आपस में लड़ गये। मोद प्रहलाद 1802 में चन्देरी के राजा बने।

---

1. कैलाश मड़बैया , बानपुर , टीकमगढ़ , मनीष प्रकाशन , 1978 , पृ0 सं0 – 8 , 9।

राजा मोद प्रहलाद विलासी प्रवृति के थे। इस कारण राज्य अव्यवस्थित एवं शिथिल था। प्रमुख लोग नाराज थे। राज्य के विरोधियों ने अवसर को देखकर तत्कालीन अंग्रेज सेना नायक कर्नल जान वैप्टिस को चंदेरी पर आक्रमण के लिए संदेशा भेजा , उसने चंदेरी पर 1811 में आक्रमण कर दिया। चंदेरी के दो सौ सैनिकों ने तीन माह तक संघर्ष किया किन्तु स्थानीय भेदियों के कारण उन्हें दुर्ग से भागना पड़ा। वैप्टिस ने सिधिंया का झण्डा तालवेहट के किले पर फहरा दिया। 1. चन्देरी के राजा मोद प्रहलाद , जान वैप्टिस की खबर सुनकर कि वह आक्रमण करने आ रहा है , सपरिवार जंगलों की ओर भाग गया। राजा सिधिंया ने चंदेरी पर अधिकार कर लिया और मोद प्रहलाद के उदर – पोषण के लिए मात्र दो गाँव दे दिए , जिससे उसका गुजारा नहीं होता था।

मर्दन सिंह का सिंहासनरूढ होना

राजा मोद प्रहलाद के तीन पुत्र थे , जिनमें से एक मर्दन सिंह थे। मर्दन सिंह एक वीर साहसी तथा दूरदर्शी बुन्देला थे। मर्दन सिंह बालकाल से ही ऑग्ल विरोधी थे। वे स्वराज्य के समर्थक थे किन्तु वे बिना तैयारी के ऑग्ल साम्राज्य से टकराकर अपने को नष्ट नहीं करना चाहते थे। मोद प्रहलाद तो पहले गोरों से समझौत के पक्ष में थे किन्तु उनके द्वारा अनसुनी कर देने से उनके पास मर्दन सिंह के प्रस्ताव को स्वीकार करने के अलावा कोई चारा नहीं था।

राजा मोद प्रहलाद तथा वैप्टिस में समझौता

उपद्रव प्रारम्भ हुए , सिधिंया ने अंग्रेजों से शिकायत की , जिससे समझौता की चर्चा हुई।

---

1. कैलाश मड़बैया , बानपुर , टीकमगढ़ , मनीष प्रकाशन , 1978 , पृ0 सं0 – 12।

फलतः मोद प्रहलाद तथा जॉन वैप्टिस सुनवाहा गाँव में मिले , उस समय चंदेरी राज्य की आय 5,27,880=00 थी , उस आय के तीन भाग हुए , दो तिहाई भाग ग्वालियर तथा एक तिहाई भाग मोद प्रहलाद को दिए जाने सम्बन्धी समझौता हो गया। चंदेरी राज्य में तीन दुर्ग थे , जिनमें से बानपुर का दुर्ग मोद प्रहलाद को मिला। 1.

बानपुर को राजधानी बनाना

मर्दन सिंह एक कुशल तथा नीतिज्ञ नरेश थे। उन्होंने बानपुर को 1830 में राजधानी बनाया , उस समय बानपुर के किले में जागीरदार खेत सिंह का अधिकार था , मोद प्रहलाद के बानपुर आने पर खेतसिंह को वहाँ से हटना पड़ा , मोद प्रहलाद का 1842 में निधन हो गया , मर्दन सिंह के दो भाई गजसिंह तथा रनजीत सिंह पहले से ही मर्दन सिंह के विरोध में थे, वे पिता की चिता में कुछ लकड़ियाँ डालकर वापस हो गये , उधर ओरछा के राजा का भी मर्दन सिंह से मतभेद था। मोद प्रहलाद ने ओरछा नरेश को बानपुर नगर देने का वायदा किया था। जिसे उन्होंने निभाया नहीं था , ओरछा नरेश की मदद से ही मोद प्रहलाद ने चंदेरी राज्य पुनः प्राप्त किया था।

राजा मर्दन सिंह के समक्ष चुनौतियाँ

राजा मर्दन सिंह ने विषम काल में 1842 मे बानपुर की राज गद्दी प्राप्त की। राजा सिंधिया राज्यभिषेक के समय भी दाँव लगाने से नहीं चूके। सिंधिया ने कहा कि राज्यारोहण से पहले जॉन वैप्टिस की अनुमति ले लेनी चाहिए , किन्तु राजा मर्दन सिंह इस दलील को नहीं माने। 2.

---

1. कैलाश मड़बैया , बानपुर , टीकमगढ़ , मनीष प्रकाशन , 1978 , पृ0 सं0 – 13 , 14।

2. वही , पृ0 सं0 – 14।

उन्होंने कहा कि यह राजाराम का पवित्र राज सिंहासन है , जिस पर बैठने पर जनता खुद अभिषेक करती है। इसके लिए किसी की अनुमति की आवश्यकता नहीं है।

मर्दन सिंह के प्रति बढ़ता ऑग्ल - विश्वास

उस समय ऑग्ल – क्षेत्रों में बागी के रूप में कुख्यात कुछ राजसी नेता डाका डालते थे। इस क्षेत्र में डोंगरा वाले भोले जू , कटेरा के प्रताप सिंह तथा जुझार सिंह इत्यादि लूट पाट के नेता थे। मर्दन सिंह ने इनको अपने साहस से नष्ट कर दिया। उस समय सिंधिया ने भी भितरघातियों के द्वारा लाभ लेना चाहा किन्तु वह सफल न हो सका।

राजा मर्दन सिंह ने नारहट घाटी के बुन्देला ठाकुर मधुकर शाह गुढ़ा के ठाकुर गणेश जू , नानकपुर के ठा0 उमराव सिंह एवं जवाहर सिंह का दमन कर दिया , जिससे उनके प्रति गोरों का विश्वास बढ़ने लगा। ललितपुर के डिप्टी कमिश्नर हैमिल्टन ने चंदेरी राज्य में व्यवस्था बनाये रखने के लिए उसके भूभाग के प्रबन्धन के लिए मर्दन सिंह को अधिकृत कर दिया , जिसका झांसी के डिप्टी कमिश्नर ने अपने 13 अक्टूबर 1844 के पत्र द्वारा समर्थन कर दिया।

ग्वालियर राज्य का चौदह लाख का विस्तृत क्षेत्र जब अंग्रेजी राज्य में समाहित हो गया तो झांसी के तत्कालीन कमिश्नर स्लीमन ने 1846 मे प्रसन्न होकर मर्दन सिंह को भसौरा गाँव दे दिया , जिसको लेकर अक्सर ग्वालियर तथा बानपुर के बीच झगड़ा होता रहता था। 1.

---

1. कैलाश मड़बैया , बानपुर , टीकमगढ़ , मनीष प्रकाशन , 1978 , पृ0 सं0 – 15 , 16 ।

उस समय के कुछ ऑग्ल अधिकारी भी राजा मर्दन सिंह की बुद्धि के कायल थे। राजा मर्दन सिंह से उनके निकटस्थ राज्य परामर्श करते थे।

विरोध का अंकुरण

एक छोटी सी घटना ने विरोधाग्नि में घृत का काम किया , एक बार ललितपुर का असिस्टेण्ट कमिश्नर मेजर आर्सकाइन किसी कार्यवश राजा मर्दन सिंह से मिलने गया , जिस पर मर्दन सिंह ने उससे यह कहकर मिलने से मना कर दिया कि मैं किसी भी मामले पर कमिश्नर से नीचे के किसी भी सहायक से मिलना पसन्द नहीं करता। इस घटना के बाद वह ऑग्ल अधिकारी मर्दन सिंह का प्रबल विरोधी बन गया। इसी तरह मर्दन सिंह ने अपने आन्तरिक प्रबन्ध में अंग्रेजों का कभी भी हस्तक्षेप नहीं माना। इससे गोरों के सामने मर्दन सिंह की विरोधी छवि उभरने लगी थी , साथ ही राजा भी ऑग्ल नीति से परिचित हो गया था। वे मर्दन सिंह सिर्फ इसलिए चुप थे कि आपसी कलह के कारण बुन्देलखण्ड में संगठन मजबूत नहीं था। 1.

झांसी की मदद

राजा गंगाधर की मृत्यु के बाद रानी लक्ष्मीबाई वैधव्य – वारिधि मे डूब गयी थीं , राजा ने आखिरी समय में दामोदर राव को गोद लिया , जिसे अंग्रेजों ने स्वीकार नहीं किया था। इतने से भी अंग्रेजों का रोष खत्म नहीं हुआ था। उन्होंने 1854 में झांसी को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया था। रानी को किला छोड़कर शहर के महल में शरण लेनी पड़ी थी , रानी के विपत्ति काल में राजा मर्दन सिंह ने ही सबसे अधिक रानी को सान्त्वना एवं सहयोग प्रदान किया था। रानी तथा राजा मर्दन सिंह में परामर्श भी प्रारम्भ हो गया था।

---

1. कैलाश मड़बैया , बानपुर , टीकमगढ़ , मनीष प्रकाशन , 1978 , पृ0 सं0 – 23।

मर्दन सिंह ने स्पष्ट रूप से झांसी का समर्थन किया था, उन्होंने यह कहा था कि रानी के प्रति अंग्रेजों ने अन्याय किया तो झांसी उनके लिए फाँसी साबित होगी। 1.

नरेशों की सभा में मर्दन सिंह के ऑग्ल विरोधी स्वर

मार्च 1857 में गोरी सरकार ने कलकत्ता में देशी राजाओं की एक बैठक बुलायी थी। राजा मर्दन सिंह ने अपना विरोध कुछ इस प्रकार प्रकट किया, "यह हिन्दुस्तान भरत खण्ड जम्बू द्वीप है, इसे कर्म भूमि कहते हैं, बस इस भूमि से लगे हुए बाकी सब सिंघल आदि द्वीप है, परन्तु हिन्दुओं का मुख्य यही है, अतः जिनको अपने देवी – देवताओं पर श्रृद्वा न हो, उनके लिए साहबों द्वारा प्रदर्शित यह मार्ग है, नहीं तो फिर जो होना है, वही होगा, यदि एक सार्वभौम राजा भी प्रजा को अधर्म के आचरण की अनुमति प्रदान करे तो प्रजा उसे भी अस्वीकार कर सकती है, इसलिए यदि सरकार के इन 84 सूत्रीय कार्यक्रमों का कार्यान्वयन हुआ तो धार्मिक विद्रोह पूरी तरह संभव है।"

ऑग्लों की चाल सफल न हो सकी, 'माझा प्रवास' का यह प्रकरण इस पुष्टि के लिए पर्याप्त है कि राजा मर्दन सिंह ने गदराम्भ के पहले ही ऑग्लों के प्रति मुखरित होने का स्पष्ट संकेत दे दिया था।

१८५७ के विद्रोह की शुरुआत

महारानी लक्ष्मीबाई तथा मर्दन सिंह ने मिलकर सैन्य सांगठनिक कार्य प्रारम्भ किया। 2.

---

1. कैलाश मड़बैया, बानपुर, टीकमगढ़, मनीष प्रकाशन, 1978, पृ0 सं0 – 25।
2. वही पृ0 सं0 – 26।

जनजागरण का अभियान चलाया , विद्रोह की कार्य – योजना तैयार की गयी। उनके उस मिशन में नाना साहब , तात्या टोपे तथा शाहगढ़ के नरेश बखत बली सिंह का प्रभावी सहयोग रहा।

रानी ने 01 अप्रैल 1857 को बानपुर नरेश मर्दन सिंह को जो पत्र लिखा , उससे बुन्देल धरा के विद्रोही संगठन की तैयारी का आभास मिलता है–

श्री महाराज कोमार श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा मर्दन सिंह बहादुर जू देव एते श्री महारानी श्री रानी लक्ष्मीबाई जू देवी के बाँचने आपर अपुन के समाचार भले चाहिजें इंहाँ समाचार भले हैं आपर अपनी पाती लाल दुलारे लाल के हाथ आई , सो हाल मालूम भओ अपुन ने लिखी कै फौज की तैयारी में लगे हौ सो मन कौ खुशी भयी हमारी राय है कै विदेशियों का सासन भारत पर न भऔ चाहिजें और हमको कौ बडौ भरोसौ है और हम फौज की तैयारी कर रहे है सो अंगरेजन सें लड़वौ बहुत जरुरी है , पाती समाचार देवै में आवै चैत सुदी ०७ सं० १६१४ मुकाम झांसी

मुहर

रानी और मर्दन सिंह के बीच के आपसी पत्र व्यवहार से यह सिद्ध होता है कि दोनों के मध्य वैचारिक एवं राजैनिक सामंजस्य था। झांसी में विद्रोह हो जाने पर तथा अंग्रेज अधिकारियों की माँग पर रानी को दुःख हुआ था, विद्रोहियों की माँग पर रानी ने झांसी का शासन अपने हाथ पर ले लिया , 12 तथा 13 जून 1857 को ललितपुर में भी विद्रोहियों ने विद्रोह कर दिया , उन्होंने वहाँ के शस्त्रागार तथा खजाने पर अधिकार कर लिया। 1.

---

1. कैलाश मड़बैया , बानपुर , टीकमगढ़ , मनीष प्रकाशन , 1978 , पृ0 सं0 – 30।

राजा मर्दन सिंह साहसी होने के साथ ही साथ सहृदय भी थे। उनकी शरण में विद्रोह – काल में जितने भी अंग्रेज अधिकारी आये। उन्होंने उन्हें सागर तथा जबलपुर सुरक्षित भिजवा दिया , इससे उनके प्रति ऑग्ल विश्वास में वृद्धि हुयी। कुछ समय बाद यह भी स्पष्ट हो गया कि राजा मर्दन सिंह का विद्रोहियों को पूरा समर्थन प्राप्त था। 01 जूलाई 1857 को सागर में भी विद्रोह हो गया। 1.

नरेश बखतबली सिंह

बानपुर के नरेश मर्दन सिंह तथा शाहगढ़ के बखतबली सिंह दोनों ने संयुक्त रूप से ऑग्ल सत्ता को खत्म करने का प्रयास किया। उन दोनों ने विद्रोही योजना तैयार की। बखत बली सिंह तथा मर्दन सिंह ने 09 जुलाई 1857 को क्रमशः खुरई तथा बिनैका गाँव पर अधिकार कर लिया। इस पर जबलपुर कमिश्नर ने मर्दन सिंह से चंदेरी तथा ललितपुर का शासन प्रबन्ध छीन लिया , जिस पर मर्दन सिंह ने चंदेरी के गोरों को कैद वहाँ पर अपनी सत्ता स्थापित कर दी।

राजा मर्दन सिंह ने 25 जूलाई के तीसरे सप्ताह में सागर पहुँच कर बखत बली सिंह की मदद की। उन्होंने सागर छावनी पर हमला कर दिया , दोनों के बीच युद्ध हुआ , मर्दन सिंह ने 17 सितम्बर 1857 को सागर पर पुनः हमला बोला। मर्दनसिंह ने अद्भुत रणकौशल का परिचय देते हुए गोरों पर अचानक धावा बोल दिया , भयंकर युद्ध हुआ , बहुत से गोरे मारे गये , सेनापति कै० डैलेस भी काल कवलित हो गया , अंग्रेजों की भारी हार हुई। मर्दन सिंह ने भोपाल कर हमला कर वहाँ से गोरों को भगाया।

---

1. डॉ० वीरेन्द्र सिंह (प्र० सं०) , उ० प्र० जिला गजेटियर्स ललितपुर , लखनऊ , 1997 , पृ० सं० – 33 , 34।

भितरघात की भौंहे

भारत का यह दुर्भाग्य ही रहा है कि जब–जब यहाँ की मजबूत भित्तियों को भितरघातियों ने भेदा है तब–तब वह भूमिसात हुआ है। ओरछा राज्य की लड़ई सरकार ने भी इसी प्रकार का देशद्रोह किया था। उसने अपने मुख्त्यार नत्थे खाँ को झांसी भेजकर आक्रमण कराया , रानी तथा नत्थे खाँ के बीच भीषण संग्राम हुआ। नत्थे खाँ पराजित हुआ , वह अपने अपमान का बदला लेने के लिए इंदौर जाकर गोरों से मिल गया। अंग्रेज जनरल ह्युरोज को लक्ष्मीबाई तथा मर्दन सिंह के खिलाफ खूब उल्टा सीधा भरा। उधर मर्दन सिंह का कामदार बृजलाल बख्शी भी नत्थे खाँ से मिल गया। इस तरह भितरघात की भौंहे चढ़ गयी , जिन्होंने कालान्तर में रानी लक्ष्मीबाई तथा मर्दन सिंह दोनों को नेस्तनाबूद करवाने में अहम् भूमिका निभायी। 1.

सागर - संग्राम

06 जनवरी 1858 को जनरल रोज ने पूरी तैयारी के साथ सागर की ओर कूच किया।उसने 24 जनवरी 1858 को पहले राहतगढ़ में हमला किया , जिसमें विद्रोही किले में घिर गये किन्तु मर्दन सिंह ने गोरों पर पीछे से आक्रमण कर उन्हें सकते में डाल दिया। गोरों ने आमापानी के नवाब का नृशसता के साथ वध कर दिया था , जिसे सुनकर मर्दन सिंह आग बबूला हो उठे थे , उन्होंने सेना को आदेशित किया था कि जहाँ पर गोरे मिलें , उन्हें मार दिया जाय। 30 जनवरी 1858 को जनरल रोज तथा मर्दन सिंह पुनः टकराये , जिसमें गोरों को फिर क्षति उठानी पड़ी किन्तु मर्दन सिंह को जीत की आशा न दिखने पर वे जंगलों की ओर चले गये।

---

1. कैलाश मड़बैया , बानपुर , टीकमगढ़ , मनीष प्रकाशन , 1978 , पृ0 सं0 – 31।

रोज का इससे सागर तथा झांसी जाने का मार्ग खुल गया। रोज ने गढ़ा कोटा पर 9 फरवरी 1858 को कब्जा कर लिया।

फिर भितरघाती चाल

मर्दन सिंह इससे चिन्तित हुए , उन्होंने पूरी तैयारी के साथ जनरल रोज पर आक्रमण करने की योजना बनायी किन्तु भितरघाती चाल का उन्हें भी शिकार होना पड़ा। बृजलाल बख्शी ने उनके साथ द्रोह किया। उनकी रणनीति काम न आयी। उन्हें नारहट घाटी पर गोरों की एक छोटी टुकड़ी उलझाये रही। उधर रोज मार्ग पर पड़ने वाले स्थानों को जीतता हुआ , बानपुर आ पहुँचा , उसने बानपुर को बरबाद कर दिया , रोज का 10 मार्च 1858 को बानपुर पर अधिकार हो गया। मर्दन सिंह इससे सन्न रह गये। उन्होंने रानी को भितरघात की सूचना दी। उसने तालबेहट तथा चंदेरी पर भी अधिकार कर लिया। 1.

झांसी का पूरे मनोयोग से सहयोग

मर्दन सिंह रानी लक्ष्मीबाई के सबल सहयोगी थे। जनरल रोज ने जब झांसी पर आक्रमण किया तो मर्दन सिंह ने रानी का पूरे मनोयोग से साथ दिया , यह एक अलग बात है कि वे सफल न हो पाये। मर्दन सिंह ने जनरल रोज पर उरई में जोरदार आक्रमण किया किन्तु वे वहाँ पर भी सफल न हो सके।

मर्दन सिंह की मन:स्थिति और गिरफ्तारी

मर्दन सिंह की सैन्य शक्ति कमजोर पड़ गयी थी , उन्हें जब गोरों की विजय , झांसी का पतन एवं रानी के निधन का समाचार मिला तो वे लगभग टूट गये।

---

1. कैलाश मड़बैया , बानपुर , टीकमगढ़ , मनीष प्रकाशन , 1978 , पृ0 सं0 – 32।

मर्दन सिंह के हितैषी उन्हें गोरों के समक्ष आत्मसमर्पण करने पर जोर दे रहे थे किन्तु वे समझ रहे थे कि गोरों से अपने प्रति अच्छे व्यवहार की आशा नहीं है। वे तथा बखत बली सिंह जब ग्वालियर जा रहे थे , तभी मुरार में दोनों 22 सितम्बर 1858 को गोरों द्वारा बंदी बना लिए गये। उन्हें लाहौर जेल मे बंद कर दिया गया। गोरों ने उनकी पेंशन एक हजार रुपये प्रतिमाह निर्धारित कर दी।

राजा मर्दन सिंह पर अनवरत विपत्तियाँ आयीं , उनके छोटे पुत्र गिरवर सिंह तथा पौत्र माधों सिंह की मृत्यु हो गयी। वे पूरी तरह निराश हो गये , अन्ततः बुन्देलखण्ड के इस वीर साहसी नरेश का 22 जूलाई 1879 को मथुरा वृदावन कुंज में निधन हो गया।

सत्तावनेत्तर सूरमा

पराधीनता काल में ललितपुर झांसी का ही एक भाग था , वहाँ सूरमाओं ने केवल 1857 के स्वातन्त्र्य समर में भाग नहीं लिया अपितु सत्तावन से इतर भी उनकी प्रमुख भूमिका रही। 1857 के बाद ललितपुर के जिन वीरों ने आजादी के युद्ध में भाग लिया , उनमें गुलई तिवारी , हरचंदी तेली , नंदकिशोर किलेदार , रामदास दुबे , बृजनंदन शर्मा , गोविंद दास व्यास , विश्वेश्वर सिंह , ठाकुर चन्दन सिंह , भैरो प्रसाद एवं शहीद सुमेरु के नाम उल्लेखनीय हैं।

यहाँ के बहुत से युवाओं का क्रांतिधर्मी धमाल भी स्मरणीय रहा , यहाँ के बहुत से किशोर वीर चन्द्रशेखर आजाद तथा शंभूनाथ आजाद जैसे क्रांतिपुत्रों से सम्बन्ध रखते थे।

निष्कर्ष

1857 से 1947 तक के काल में ललितपुर झांसी जनपद का एक प्रमुख हिस्सा था। वहाँ के स्वातन्त्र्य शूर झांसी जिले के ही वीर कहलाते थे। 1857 के स्वातन्त्र्य समर मे ललितपुर की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। सत्तावनी क्रांति में ललितपुर के बानपुर का सहभाग किसी भी दृष्टि से कमजोर नहीं था।

बानपुर के राजा मर्दन सिंह एक अग्निधर्मा ऊर्जा के नरेश थे। वे मार्च 1857 में कलकत्ते में गोरों द्वारा बुलायी गयी नरेशों की बैठक में जिस ढंग से गोरों के विरूद्ध मुखरित हुए थे , उससे उनके राष्ट्रप्रेम का सहज अनुमान लग जाता है।

राजा मर्दन सिंह एक वीर , साहसी तथा बुद्धिमान राजा थे। उनमें रण चातुर्य की कमी नहीं थी। जनरल ह्युरोज जैसे सफल ऑग्ल सेनापति को उन्होंने दो बार धूल चटायी थी किन्तु यदि उनका कामदार बृजलाल बख्शी उनके साथ द्रोह न करता तो संभवतः देश से 90 वर्षों पहले ही गोरों के पैर भारत से उखड़ गये होते। देश नौं दशक पहले ही आजाद हो गया होता। वे भी मुखबिरी से हारे , अंग्रेजों से नहीं।

जनरल ह्युरोज को यदि नत्थे खाँ एवं बृजलाल बख्शी जैसे भितरघाती का सहयोग न मिल पाता तो वह न तो सागर जीत पाता और न ही झांसी। बुन्देलखण्ड से अंग्रेजों का सफाया हो गया होता।

ललितपुर के वीरों ने केवल 1857 की क्रांति में ही भाग नहीं लिया अपितु वे गदर के बाद भी आजादी के आन्दोलन में अग्रसर रहे। ललितपुर के जिन वीरों ने 1857 के बाद की आजादी की लड़ाई में भाग लिया , उनमें से गुलई तिवारी , हरचंदी तेली , नंद किशोर किलेदार , रामदास दुबे तथा ,बृजनंदन शर्मा के नाम उल्लेखनीय हैं। नंद किशोर का क्रांतिधर्मी अनुदाय स्मरणीय रहेगा।

नवम् अध्याय

उपसंहार

9

उपसंहार

स्वाधीनता – संघर्ष में हमीरपुर जनपद के सहभाग का आरेख बहुत ऊँचा रहा है। इस जनपद के लगभग 450 स्वातन्त्र्य शूरों ने स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया , जिसमें कम से कम 30–40 महिला सेनानी रही हैं , दीवान शत्रुघ्न सिंह की पत्नी राजी राजेन्द्र कुमारी ने , जिन्हें बुन्देलखण्ड की रानी लक्ष्मीबाई कहा गया , 1930 के कुलपहाड़ में बहिष्कार आन्दोलन का बहुत की वीरता के साथ नेतृत्व किया। उन्हें जनपद का अधिनायक बनाया गया था।

पं0 परमानंद ने हमीरपुर , बुन्देल क्षेत्र , प्रान्त एवं राष्ट्र में ही नहीं अपितु विदेशों में भी भारतीय स्वाधीनता – समर के लिए आवश्यक जमीन तैयार की। 1915 के गदर आन्दोलन तथा सिंगापुर विद्रोह में पं0 परमानंद की केन्द्रीय भूमिका थी , जिसे नकारा नहीं जा सकता है। पं0 परमानंद का पुरोधत्व का ग्राफ बहुत ऊँचा था। ये अन्तराष्ट्रीय स्तर के स्वातन्त्र्य शूर थे। पं0 परमानंद ने ही हमीरपुर जनपद में क्रांतिकारी आन्दोलन की आधारशिला रखी थी। पण्डित जी से ही हमीरपुर के युवा क्रांतिकारियों को नव प्रेरणा मिली थी।

पं0 परमानंद ने ही हमीरपुर के दीवान शत्रुघ्न सिंह , श्रीपति सहाय रावत , पं0 राधेश्याम व श्याम बिहारी मिश्र एवं डॉ0 राजाराम अग्रवाल जैसे युवा वीरों को प्रेरित कर पुरोधत्व का अग्निधर्मा पाठ पढ़ाया था। दीवान शत्रुघ्न सिंह ने पं0 परमानंद से ही प्रेरणा प्राप्त कर मगरौठ में क्रांतिदल का गठन किया था , श्री पति सहाय रावत पर भी पण्डित जी का प्रभाव था।

वे एक सच्चे क्रांतिकारी थे। हमीरपुर के क्रांतिकारियों का राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य समर में श्रेष्ठ सहभाग रहा , जिसे भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास के पृष्ठ भी स्वीकार करते हैं।

1857 से लेकर 1947 तक 90 वर्षों के स्वातन्त्र्य समर में महोबा के अनेक क्रांतिशूरों ने प्रतिभाग किया। इस जनपद से लगभग 20 महिला सेनानी और लगभग 200 स्वातन्त्र्य सेनानियों ने आजादी के संघर्ष में बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

1857 के स्वातन्त्र्य युद्ध में महोबा जनपद की सराहनीय भूमिका रही , यहाँ के झींझन तथा उसके पास के गाँव के वीर सपूतों ने गोरों से डटकर मुकाबला किया। दिमान देशपत , नन्हें दिमान , रघुनाथ सिंह , कुन्जल शाह तथा जैतपुर की रानी फत्तमवीर का संघर्ष 1857 के स्वातन्त्र्य संघर्ष के इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ हैं। 1857 से लेकर 1868 तक लगभग 11 वर्षों तक बुन्देलखण्ड में इन वीरों ने गोरों को जमने नहीं दिया। दिमान देशपत अंग्रेजों के लए भय का पर्याय बन चुका था , बुन्देल धरा में तैनात गोरी फौज के लिए देशपत खौफ बन गया था। गोरी सरकार के लिए देशपत बुन्देला एक चिन्तनीय विषय बन चुका था।

ख

दिमान देशपत के बाद उसके भाई नन्हें दिमान , भतीजा रघुनाथ सिंह तथा भान्जा कुंजल शाह का क्रांतिकारी संघर्ष कम महत्वपूर्ण नहीं था। देशपत के बाद रघुनाथ सिंह ने पूरे बुन्देलखण्ड में तहलका मचा दिया था। इस तरह से यह कहा जा सकता है कि सत्तावनी समर में महोबा के सहभाग को भुलाया नहीं जा सकता।

प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष में महोबा के रणबाँकुरों के साथ यदि भितरघात न होता तो निश्चित रूप से बुन्देल क्षेत्र से गोरों के शासन का अन्त हो जाता और भारत से उनके पैर उखड़ जाते।

1842 से लेकर 1868 तक लगभग ढाई दशकों तक बुन्देलखण्ड में महाराज पारीछत , दिमान देशपत , नन्हें दिमान , कुंजलशाह , रघुनाथ सिंह तथा महारानी लक्ष्मीबाई और ताईबाई सहित बहुत से पुरोधाओं ने गोरों से घनघोर युद्ध किया , किन्तु ये वीर गोरों की साजिश एवं चाल की चौपड़ में हार गये।

महोबा के क्रांतिकारियों का सत्तावन के समर के बाद भी आजादी के लिए सराहनीय योगदान रहा।

बांदा का स्वातन्त्र्य संघर्ष का आरेख बहुत ऊँचा रहा , 1857 के स्वातन्त्र्य संघर्ष में बांदा के बागी नवाब अलीबहादुर द्वितीय का योगदान कम महत्वपूर्ण नहीं रहा , उसने उस काल में कई नामचीन देशभक्तों को आजादी के संघर्ष में सहयोग के लिए पत्र लिखे। किन्तु उन्हें सकारात्मक उत्तर नहीं मिले , इतना ही नहीं देशी रियासतों के राजाओं का सहयोग भी नवाब को वांछित रूप में नहीं मिला। पन्ना नरेश , चरखारी नरेश , रतन सिंह तथा छतरपुर की रानी पूरी तरह अंग्रेज परस्त थीं। छतरपुर रानी ने ऑग्ल सरकार को फौजी मदद भी प्रदान की थी। छतरपुर रानी की सेना तथा ऑग्ल फौज का सेनापति कै0 गिरफिन था , जो क्रांतिकारियों के खात्मे के लिए आठ महीने तक अनवरत प्रयास करता रहा।

बांदा के गुंसाईयों में विभाजन हो गया था। एक गुंसाई गुट नवाब के साथ था , दूसरा अंग्रेज परस्त था। इस तरह की अनेक विसगतियों तथा वैषम्य रहे , जिन्होंने नवाब की शक्ति को क्षीण किया , उसके मिशन को विफल किया , अन्यथा सत्तावन का समर बुन्देलखण्ड को ऑग्ल विहीन कर देता।

19 अप्रैल 1858 का नवाब तथा अंग्रेजों के बीच का भीषण संग्राम निर्णायक सिद्ध हुआ , नवाब की सेना ने गोरों से जबरदस्त टक्कर ली किन्तु आधुनिकतम हथियारों से लैस गोरी सेना के सामने देशी फौज अधिक समय तक रुक न सही। इस घनघोर युद्ध में विद्रोहियों का सर्वाधिक नुकसान हुआ। गोरी फौज की विजय हुई।

नवाब को यदि देशी राज्य के नरेशों का वांछित सहयोग मिल जाता तो देश लगभग 09 दशक पहले ही आजाद हो जाता। संघर्ष के बाद बांदा में कई ऐसे रणबाँकुरे हुए है , जिनका भारतीय स्वातन्त्र्य संघर्ष में सराहनीय सहभाग रहा है।

बांदा के सत्तावनेत्तर शूरों में पं0 लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री , कुँवर हर प्रसाद सिंह , मिथला शरण , राजाराम रूपौलिया , महादेव भाई , गोकुल भाई एवं रामसेवक खरे जैसे अनेक क्रांतिकारी हुए है , जिन्होंने बांदा के गौरव को बढ़ाने में अहम् भूमिका निभायी।

स्वाधीनता आन्दोलन में वामदेव की नगरी में केवल पुरुष नाहर ही नहीं हुए है अपितु बांदा की वीरांगना शीला देवी ने एक सौ महिला सेनानियों के

साथ अंग्रेजों से टक्कर ली थी , जिसमें सभी महिला क्रांतिकारी शहीद हो गयी थीं। सत्तावन के संघर्ष में महिलाओं के इस योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है।

चित्रकूट (कर्वी) एक नवसृजित जनपद हैं , यहाँ के स्वातन्त्र्य शूर वस्तुतः बांदा के ही पुरोधा थे। कर्वी के पेशवा नारायण राव तथा माधव राव ने सत्तावन के समर में स्वातन्त्र्य संग्राम में सहभाग करने में कोई कोर कसर उठा नहीं रखी , उन्होंने गोरी सेना के सेनापतियों का जमकर मुकाबला किया।

उनके सहायकों में राधागोविंद ऐस प्रमुख़ सहयोगी थे जो गोरों के घोर विरोधी थे। नारायण राव पेशवा की छतरसिंह , रणमत सिंह तथा फरजंद अली पहले से मदद कर रहे थे। नारायण राव ने नवाब बांदा से भी मदद मांगी थी , जो नहीं मिल पायी थी , यदि जनरल विटलॉक का मिलकर सामना किया जाता तो उस संग्राम का परिणाम कुछ और होता किन्तु ऐसा हो न सका।

बांदा का सत्तावन के संघर्ष के बाद भी स्वातन्त्र्य संग्राम में कम योगदान नहीं रहा। इस जनपद के करवरिया परिवार ने मातृभूमि के मुक्ति मिशन में कई स्वातन्त्र्य शूरों को प्रदान किया।

जिनमें रामबहोरी करवरिया , जगन्नाथ प्रसाद करवरिया , जुगुल किशोर करवरिया एवं दीनदयाल करवरिया के नाम उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त गुलाबचन्द्र अग्रवाल , रामनेवाज मारकुण्डी , गोदीन शर्मा , हीरालाल मिश्र व्युर , रामलाल स्वर्णकार , बाबा दीन और वृंदावन इत्यादि ने भी आजादी के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

चित्रकूट जनपद के वीरों का फारेस्ट एक्ट की धारा 25 के उल्लघंन मे भी सराहनीय सहभाग रहा। इस कार्यक्रम के अर्न्तगत चित्रकूट के स्वातन्त्र्य शूर सरकार संरक्षित वनों में से नजदीक के वन में जाकर वृक्ष काटते थे और सरकारी कानून की अवज्ञा करते थे। इस आन्दोलन में पाठा के पुरोधाओं का विशेष योगदान रहा। इस अभियान के अन्तर्गत हीरालाल , रामकिशोर , विश्वम्भर शिवकुमार , बद्री प्रसाद , जयनारायण , गया प्रसाद और कलकैंया की विशेष भूमिका थी।

पं0 परमानंद तथा चन्द्रशेखर के कर्वी – चित्रकूट प्रवास काल में उनसे यहाँ के कई क्रांतिकारी जुड़े और आजादी के युद्ध में अपने को आगे रखा। उन क्रांतिकारियों में से महन्तराम रमन दास , गणेश दास एवं मंगली प्रसाद रिछारिया इत्यादि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

इस तरह से अन्त कहा जा सकता कि कर्वी भी स्वातन्त्र्य आन्दोलन एक प्रमुख स्थान रहा है। इस नवोदित जनपद का स्वातन्त्र्य संघर्ष में सराहनीय सहयोग रहा है , जिसे नकारा नहीं जा सकता।

बुन्देलखण्ड के जनपदों में जालौन (उरई) एक ऐसा जिला रहा है , जिसका 1857 से लेकर 1947 तक के हर संघर्षी अभियान में शानदार भूमिका रही , 1857 के स्वातन्त्र्य समर में जालौन और हमीरपुर दो ऐसे जिले रहे।

जहाँ पर सत्तावन का संघर्ष तब तक उद्दीप्त रहा , जब बुन्देलखण्ड के अन्य क्षेत्रों में सत्तावनी स्वातन्त्र्य का सूर्य अस्तातल में चला गया था। जालौन (उरई) ऐसा जनपद है , जहाँ पर झांसी के बाद यहाँ के वीरों ने सर्वाधिक सत्तावन की क्रांति में सहभाग किया।

06 जून 1857 को झांसी तथा कानपुर में हुई सत्तावनी क्रांति की सूचना उरई आ गयी थी , उसके बाद से यहाँ पर विद्रोहियों ने क्रांति की अलख जगा दी थी। कोंच तथा कोंच से लगभग तीस किमी0 की दूरी पर क्रांतिकारियों तथा जनरल ह्यूरोज की आँग्ल सेना के बीच लोहारी में 07 मई 1857 को घमासान युद्ध हुआ था।

लोहारी में सारे क्रांतिकारी वीरगति को प्राप्त हुए थे। कोंच समर में तांत्या टोपे तथा रानी लक्ष्मीबाई ने भी सहभाग किया था किन्तु कोंच के संग्राम में यदि क्रांतिकारियों की रणनीति जनरल के रण–व्यूह को समझ पाती तथा क्रांतिकारियों के पास यदि तोपों की संख्या अधिक होती।
तो निश्चित रूप से कोंच का युद्ध स्वातन्त्र्य समर के इतिहास में एक नया अध्याय लिख देता। उरई से उत्तर में लगभग 60 किमी0 दूरी पर भदेख रियासत है , जहाँ के राजा परीक्षित ने 1857 के सत्तावनी – समर में यादगार भूमिका निभायी थी।

राजा भदेख रियासत में एक लोकप्रिय राजा थे। उनके प्रति गोरों का व्यवहार राजोचित नहीं था। गोरे उनके प्रति सतही व्यवहार करते थे। गोरों द्वारा कानपुर में पुनः अधिकार कर लेने की सूचना तथा क्रांतिकारियों की लगातार पराजय की खबर से राजा परीक्षित हताश हो गये थे।

उन्होंने इसी अवसाद के चलते आत्महत्या कर ली थी। उनके निधन के बाद उनकी विधवा रानी चन्देलन जू ने सत्तावनी समर में सराहनीय प्रतिभाग किया था।

1857 की क्रांति में जालौन जिले की प्रथम वीरांगना ताईबाई का सहभाग भी कम सराहनीय नहीं रहा , ताईबाई ने सत्तावनी क्रांति में तांत्या टोपे को आर्थिक तथा सैनिक सहायता दी थी। कोंच तथा कालपी में क्रांतिकारियों की पराजय तथा तांत्या टोपे का सीधे ग्वालियर जाने की खबर ने ताईबाई को भी निराशा की निशा में धकेल दिया था। ताईबाई ने जनसंहार को रोकने के लिए स्वयं अपना बलिदान करने की सोची , उन्होंने 10 मई 1858 को उरई में नव नियुक्त उपायुक्त मि0 टरनन के समक्ष आत्म समर्पण कर दिया। उन्हें तथा उनके परिवार को गोरी सरकार की यातना का शिकार होना पड़ा। ताईबाई की निर्वासित जीवन में मुँगेर (बिहार) में 1870 में मृत्यु हो गयी।

1857 के स्वातन्त्र्य शूरों में एक और ऐसा सूरमा हुआ है , जिसने जालौन में एक दशक तक गोरों की नाक में दम किए रहा।

उस वीर पुरुष का नाम था– बिलायाँ के ठाकुर बरजोर सिंह। अंग्रेजों ने लाख कोशिशें की किन्तु बरजोर सिंह को गिरफ्तार नहीं कर सके।

गोरों ने बरजोर सिंह को बदनाम करने के लिए कई षडयंत्र रचे , उन्हें डाकू तथा आतंकी भी कहा।

बरजोर सिंह को उसके परिवार के सदस्यों का गोरों द्वारा किया गया दमन भी दबा नहीं सका। बरजोर सिंह को सत्तावन की क्रांति में अपने पुत्र चन्द्रहांस को भी खोना पड़ा। उनके पुत्र तथा पुत्री को गोरों ने बहुत यातना दी किन्तु बरजोर सिंह देशप्रेम के पथ से विचलित नहीं हुए।

विद्रोहियों के पास प्रशिक्षित सुसंगठन नहीं था , उनमें वांछित अनुशासन भी नहीं था। भितरघात की मार अलग से थी , उनके पास गोरों की तुलना में तोंपे बहुत कम थी। इन सब अभावों के बावजूद उनमें गजब की आयुधी भावना थी। इस प्रकार अन्ततः कहा जा सकता है कि जालौन जनपद की सत्तावन तथा सत्तानवेत्तर संग्राम में स्मरणीय भूमिका रही।

1857 से लेकर 1947 तक के 90 वर्षो के स्वातन्त्र्य संघर्ष में झांसी जनपद किसी परिचय का मोहताज नहीं हैं।

1857 के प्रथम स्वातन्त्र्य संघर्ष में झांसी के योगदान के बारे में जितना अधिक उल्लेख किया जाय , वह उतना ही कम है। गोरों द्वारा झांसी राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लेने की घोषणा के बाद रानी लक्ष्मीबाई का यह उद्‌घोष "मै झांसी नहीं दूँगी" के सन्दर्भ में रानी में नियोजन और निष्ठा का जो संगम दिखा , वह अपने आपमें बेमिसाल था , रानी लक्ष्मीबाई ने गोरों के झांसी में आक्रमण करने के पूर्व से जो स्त्री सैन्य संगठन किया , वह तत्कालीन विश्व सैन्य संगठन के इतिहास में अपनी तरह का पहला प्रमाण था। रानी लक्ष्मीबाई में सांगठनिक क्षमता भी बहुत थीं।

जनरल ह्युरोज ने झांसी में 25 मार्च 1858 को आक्रमण किया था , कुल मिलाकर गोरों तथा झांसी के बीच 10 दिनों का महासमर हुआ , वे हर मोर्चे पर विफल रहे किन्तु गोरों की जब तक साजिशों , षडयंत्रों एवं चालों की चाल सफल नहीं हुयी , तब तक वे झांसी का बाल – बांका नहीं कर पाये। रोज को पीरअली तथा दुल्हाजू दो भितरघाती मिल गये। दीवान दुल्हाजू की भितर घात रंग लायी। उसने रानी की बहादुर महिला कर्नल सुन्दर को मार कर ओरछा फाटक खोल दिया , उसी बीच घुस कर गोरी सेना ने झांसी का विनाश किया। झांसी–पतन के नेपथ्य में पीर अली तथा दीवान दुल्हाजू ये ही दो देशद्रोही थे। जिन्होंने यदि देश द्रोह न किया होता तो रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगना की समारिक व सैन्य नीति तथा प्रजा वत्सलता का जनरल रोज कुछ न बिगाड़ पाता और देश 90 वर्ष पहले ही दासता से मुक्त हो गया होता।

इतना ही नहीं कोंच , कालपी तथा ग्वालियर के समर में यदि रानी के सुझावों को राव साहब तथा अन्य सैन्य प्रमुख मान लेते तो भी 1858–89 के उस स्वातन्त्र्य समर की तस्वीर कुछ और ही होती।

सत्तावनी समर की तस्वीर कुछ और ही होती। सत्तावनी समर के बाद भी झांसी के क्रांतिकारियों की स्वातन्त्र्य संघर्ष में सराहनीय भूमिका रही।

1857 से 1947 तक के काल में ललितपुर झांसी जनपद का एक प्रमुख हिस्सा था। वहाँ के स्वातन्त्र्य शूर झांसी जिले के ही वीर कहलाते थे। 1857 के स्वातन्त्र्य समर मे ललितपुर की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। सत्तावनी क्रांति में ललितपुर के बानपुर का सहभाग किसी भी दृष्टि से कमजोर नहीं था।

बानपुर के राजा मर्दन सिंह एक अग्निधर्मा ऊर्जा के नरेश थे। वे मार्च 1857 में कलकत्ते में गोरों द्वारा बुलायी गयी नरेशों की बैठक में जिस ढंग से गोरों के विरूद्ध मुखरित हुए थे , उससे उनके राष्ट्रप्रेम का सहज अनुमान लग जाता है।

राजा मर्दन सिंह एक वीर , साहसी तथा बुद्धिमान राजा थे। उनमें रण चातुर्य की कमी नहीं थी। जनरल ह्युरोज जैसे सफल ऑंग्ल सेनापति को उन्होंने दो बार धूल चटायी थी किन्तु यदि उनका कामदार बृजलाल बख्शी उनके साथ द्रोह न करता तो संभवतः देश से 90 वर्षों पहले ही गोरों के पैर भारत से उखड़ गये होते। देश नौं दशक पहले ही आजाद हो गया होता। वे भी मुखबिरी से हारे , अंग्रेजों से नहीं।

जनरल ह्युरोज को यदि नत्थे खाँ एवं बृजलाल बख्शी जैसे भितरघाती का सहयोग न मिल पाता तो वह न तो सागर जीत पाता और न ही झांसी। बुन्देलखण्ड से अंग्रेजों का सफाया हो गया होता।

ललितपुर के वीरों ने केवल 1857 की क्रांति में ही भाग नहीं लिया अपितु वे गदर के बाद भी आजादी के आन्दोलन में अग्रसर रहे। ललितपुर के जिन वीरों ने 1857 के बाद की आजादी की लड़ाई में भाग लिया , उनमें से गुलई तिवारी , हरचंदी तेली , नंद किशोर किलेदार , रामदास दुबे तथा ,बृजनंदन शर्मा के नाम उल्लेखनीय हैं। नंद किशोर का क्रांतिधर्मी अनुदाय स्मरणीय रहेगा।

परिशिष्ट

प्रमुख क्रांतिकारियों की सूची

क्रमांक	नाम	स्थान/जनपद
1.	भगवान दास	हमीरपुर
2.	पं0 परमानंद	हमीरपुर
3.	स्वामी ब्रह्मानंद	हमीरपुर
4.	श्रीपति सहाय रावत	हमीरपुर
5.	राधेश्याम मिश्र	हमीरपुर
6.	रामगोपाल गुप्त	हमीरपुर
7.	सुरेन्द्र दत्त बाजपेई	हमीरपुर
8.	दिमान देशपत बुन्देला	महोबा
9.	नन्हे दिमान	महोबा
10.	रघुनाथ सिंह	महोबा
11.	कुंजल शाह	महोबा
12.	भगवान दास बालेन्दु अरजरिया	महोबा
13.	बैजनाथ तिवारी	महोबा
14.	श्रीराम पचौरी	महोबा
15.	चुन्नीलाल जैन	महोबा
16.	रज्जब अली आजाद	महोबा
17.	नवाब अली बहादुर द्वितीय	बांदा

18.	शीला	बांदा
19.	लक्ष्मीनारायण अग्निहोत्री	बांदा
20.	कुँवर हर प्रसाद सिंह	बांदा
21.	मिथिला शरण	बांदा
22.	राजाराम रूपौलिया	बांदा
23.	महादेव भाई	बांदा
24.	गोकुल भाई	बांदा
25.	रामसेवक	बांदा
26.	राधागोविंद	चित्रकूट(कर्वी)
27.	नारायण राव पेशवा	चित्रकूट(कर्वी)
28.	रणमत सिंह	चित्रकूट(कर्वी)
29.	फरजंद अली	चित्रकूट(कर्वी)
30.	रामबहोरी करवरिया	चित्रकूट(कर्वी)
31.	जगन्नाथ प्रसाद करवरिया	चित्रकूट(कर्वी)
32.	जुगुल किशोर करवरिया	चित्रकूट(कर्वी)
33.	गोदीन शर्मा	चित्रकूट(कर्वी)
34.	भदेख नरेश परीक्षत	जालौन(उरई)
35.	रानी चन्देलन जू	जालौन(उरई)
36.	ताईबाई	जालौन(उरई)
37.	बरजोर सिंह	जालौन(उरई)
38.	मन्नीलाल पाण्डेय	जालौन(उरई)

39.	झन्नीलाल पाण्डेय	जालौन(उरई)
40.	बेनी माधव तिवारी	जालौन(उरई)
41.	चतुर्भुज शर्मा	जालौन(उरई)
42.	महारानी लक्ष्मीबाई	झांसी
43.	सागर सिंह	झांसी
44.	झलकारी बाई	झांसी
45.	सुन्दर , मुन्दर	झांसी
46.	जूही	झांसी
47.	मोतीबाई	झांसी
48.	रघुनाथ सिंह	झांसी
49.	खुदाबख्श	झांसी
50.	गुलाम गौस खाँ	झांसी
51.	ठाकुर लम्पू सिंह	झांसी
52.	बख्शिन जू	झांसी
53.	पूरन कोरी	झांसी
54.	मास्टर रुद्रनारायण	झांसी
55.	भगवान दास माहौर	झांसी
56.	सदाशिव राव मलकापुरकर	झांसी
57.	लक्ष्मण राव कदम	झांसी
58.	रघुनाथ विनायक धूलेकर	झांसी
59.	बानपुर के राजा मर्दन सिंह	ललितपुर

60.	गुलई तिवारी	ललितपुर
61.	हरचंदी तेली	ललितपुर
62.	नंद किशोर किलेदार	ललितपुर
63.	रामदास दुबे	ललितपुर
64.	बृजनंदन शर्मा	ललितपुर

साक्षात्कार सूची

स्वातन्त्र्य सेनानियों तथा परिवारीजनों से लिए गये साक्षातकार

1. क्रांति कुमार – जराखर
2. वतीबाबू – महोबा
3. शांति कुमार पटेरिया – महोबा
4. एहसान आवारा – बांदा
5. वीरेन्द्र मोहन तिवारी – महोबा
6. कर्नल प्रेम प्रताप सिंह – करगवाँ
7. कृष्णपाल सिंह – झींझन
8. पुष्पराज सिंह – झींझन
9. मोतीलाल सक्सेना – झींझन

सन्दर्भ–ग्रंथ

हिन्दी सन्दर्भ–ग्रंथ

1. जैन , दशरथ उत्सर्ग , चरण पादुका , छतरपुर , 10वाँ म0 प्र0 स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ अधिवेशन , 1978।

2. मड़वैया , कैलाश , बुन्देलखण्ड का विस्मृत वैभव बानपुर , टीकमगढ़ , 1970।

3. तिवारी , गोरेलाल , बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास , 1933।

4. सिंह , दीवान प्रतिपाल , बुन्देलखण्ड का इतिहास , 1929।

5. अवस्थी , डॉ0 कृष्णदत्त , (प्रधान संपादक) , कामद – क्रांति , बांदा , 1972।

6. सरल , श्री कृष्ण , क्रांति कथाएं , उज्जैन (म0प्र0) , 1985।

7. वर्मा , डॉ0 वृदावन लाल , झांसी की रानी लक्ष्मीबाई झांसी , मयूर प्रकाशन , 1979।

10. सुन्दरलाल , भारत में अंगरेजी राज , नई दिल्ली , प्रकाशन विभाग , सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय , 1982।

11. ताराचंद , भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास , नई दिल्ली , प्रकाशन विभाग , सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय , भारत सरकार , प्रथम खण्ड , 1977 , द्वितीय खण्ड , 1982।

12. डॉ0 भवानीदीन , प्राचीरें बोलती हैं , सुमेरपुर , 2001।

13. रावत , श्रीपति सहाय , समरगाथा , महोबा , बसंत प्रकाशन , 1995।

14. श्रीवास्तव , भगवानदास , 1857 की क्रांतिकारी महारानी बैजाबाई सिंधिया , भोपाल , 1998।

15. वालिंबे वि0 स0 , 1857 का संग्राम , नई दिल्ली नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इण्डिया , 2000 ।

16. सिंह , देवेन्द्र कुमार , 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन , उरई , 2000 ।

17. श्रीवास्तव , भगवान दास , बघेलाखण्ड में स्वाधीनता आन्दोलन (1857–60) , भोपाल , शांति प्रकाशन , 1998

18. श्रीवास्तव , भगवान दास , 1857 की क्रांति और विद्रोही राजा बखत बली , भोपाल , 1995

19. वर्मा , वृंदावनलाल , 1857 के अमरवीर , झांसी , 1989 ।

20. शकुन , सत्य , तात्या टोपे , दिल्ली , भारती प्रकाशन , 1997

21. शेवड़े , इंदुमती तात्या टोपे , नई दिल्ली , N. B. T. 1989 ।

22. सिंह , अयोध्या , भारत का मुक्ति संग्राम , नई दिल्ली मैकमिलन कम्पनी , 1977 ।

23. श्री वास्तव , भगवान दास , मध्य प्रदेश के युवा क्रांतिकारी , भोपाल , राष्ट्रीय प्रकाशन मंदिर , प्रथम भाग , 1992 , द्वितीय भाग – 1992 ।

24. सावरकर , विनायक दामोदर , 1857 का भारतीय स्वातन्त्र्य समर , नई दिल्ली , राजधानी ग्रंथागार , 1987 ।

25. शर्मा , रामविलास , स्वाधीनता संग्राम , दिल्ली हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय , 1992 ।

26. श्रीवास्तव , रमेशचन्द्र बुन्देलखण्ड (साहि0 , ऐति0 , सांस्कृतिक वैभव) बांदा , बुन्देलखण्ड प्रकाशन , 1997 ।

27. माहौर , भगवान दास , वर्मा , शिव मलकारपुरकर सदाशिव राव , यश की धरोहर , दिल्ली , आत्माराम एण्ड संस , 1999।

28. जैन , कैलाशचन्द , अगस्त क्रांति के विद्रोही नेता , दिल्ली , 1999

29 जैन , दशरथ (प्र0 संपादक) बुन्देलाखण्ड का स्वतंत्रता संग्राम , छतरपुर , 1995।

30. आरोही , डॉ0 विश्वंभर भगवान दास माहौर अभिनंदन ग्रंथ , ग्वालियर , 1972।

31. चौरसिया , वासुदेव , चन्देलकालीन , महोबा और जनपद हमीरपुर के पुरावशेष , महोबा , 1994।

32. श्रीवास्तव , भगवान दास , बांदा का बागी नवाब अली बहादुर द्वितीय , बांदा , बर्ग अकादमी , 1997

33. बादल , श्याम सुन्दर , (संपादक) दीवान शत्रुघ्न सिंह अभिनंदन ग्रंथ , राठ , 1960

34. सिंह , वीरेन्द्र , उ0 प्र0 जिला गजेटियर्स ललितपुर लखनऊ , 1997।

35. वर्मा , जानकी शरण , अमर बलिदानी , झांसी , 1999।

36. माताप्रसाद , वीरांगना झलकारी बाई , वाराणसी , 1997।

37 गुप्त मन्मथनाथ , भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास , दिल्ली , आत्माराम एण्ड संस , 1999।

38. मेहरोत्रा , डॉ0 एन0 सी0 , उत्तर प्रदेश में क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास , दिल्ली , आत्माराम एण्ड संस , 1999।

39. शर्मा , चतुर्भुज , विद्रोही की आत्मकथा , दिल्ली , आत्माराम एण्ड संस 1970 ।

40. श्रीवास्तव , भगवान दास , बुन्देलखण्ड में स्वाधीनता आन्दोलन , भोपाल , 1995 ।

41. वर्मा , शिव , संस्मृतियाँ , लखनऊ 1991 ।

42. श्रीवास्तव , भगवान दास , 1857 का महान क्रांतिकारी दिमान देशपत बुन्देला , बांदा बर्ग अकादमी , 2000 ।

43. सान्याल , शचीन्द्र नाथ , दिल्ली , आत्माराम एण्ड संस , 2001

44. उपाध्याय , विश्वमित्र , शचीन्द्र नाथ सान्याल और उनका युग , नई दिल्ली , 1993 ।

45. चतुर्वेदी , जगदीश प्रसाद , हमारा स्वाधीनता संग्राम , इलाहाबाद , 1989 ।

46. पाठक , लक्ष्मीप्रसाद , महान क्रांतिकारी पं0 परमानंद अभिनंदन ग्रंथ राठ 1969 ।

47. सेठ , भगवान दास , झांसी का शेर , मेरठ , 1989 ।

अंग्रेजी सन्दर्भ ग्रंथ–सूची

1. Gupta , Manmath Nath , they lived Dangerously , Hyderabad , Hindi Prachar Shabha , 1983.

2. Majumdar , R. C. History of freedom movement , part – 1, Culcatta firlma K. L. Ganguli street , 1977.

3. Rizvi] S.A.A. freedom struggle in U.P. Part – 1&5 . Lucknow Pub. Deptt U.P. 1957.

4. Sharma , S.R. freedom movement , Delhi , B.R. Publishing Corporation 1988.

5. Singh Balwant I.A.S. U.P. , Distt. Gazetteers Hamirpur , Govt. of U.P. Allahabad 1988.

स्मारिका , पत्र , पत्रिकायें , पाण्डुलिपियाँ एवं अन्य रिपोर्ट्स

1. अग्रवाल , डोरीलाल एवं अन्य (सं0 मण्डल) स्मारिका , आगरा , शहीद भगत सिंह स्मारक समिति , 4, 5, 6, अप्रैल , 1986।

2. अवस्थी राजेन्द्र (संपा0) साप्ताहिक हिन्दुस्तान , स्वाधीनता दिवस विशेषांक , दिल्ली , हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन , 17 से 23 अगस्त 1986।

3. चतुर्वेदी , पं0 बनारसी दास एवं अन्य , (संपा0 मण्डल) स्मारिका , आगरा , शहीद भगत सिंह स्मारक समिति , 9, 10 अप्रैल , 1985।

4. गणेश मंत्री , (कार्यकारी संपादक) , धर्मयुग (सम्पूर्ण स्वतंत्रता संग्राम भाग –दो) बम्बई , टाइम्स ऑफ इण्डिया प्रेस , 14 से 20 अगस्त 1988।

5. रावत , श्रीपति सहाय , महान स्वतंत्रता सेनानी , हस्तलिखित अप्रकाशित अभिलेख , हमीरपुर , जराखर , भाग – 1, 2, 3, 4, 5, ।

6. पटेरिया , विश्वेश्वरदयाल , स्वतंत्रता सेनानी , हस्तलिखित अप्रकाशित अभिलेख महोबा।

7. अग्रवाल , अनिल कुमार (प्र0 संपादक) अमर उजाला , आगरा , 15 अगस्त , 1989।

स्वातन्त्र्य संघर्ष कालीन शूरों एवं स्थलों की चित्रावलि
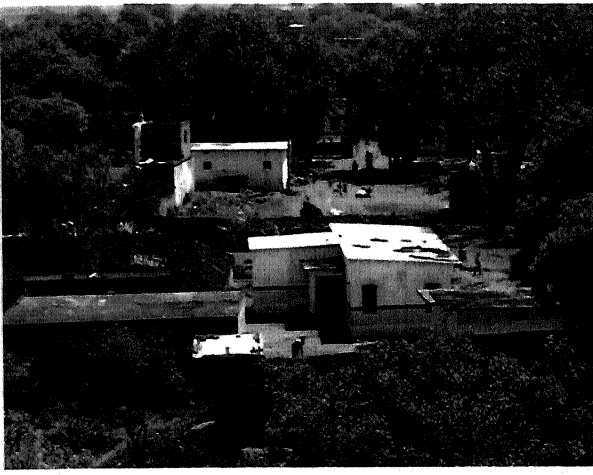
पौरुष का प्रतीक : लुहारी गाँव
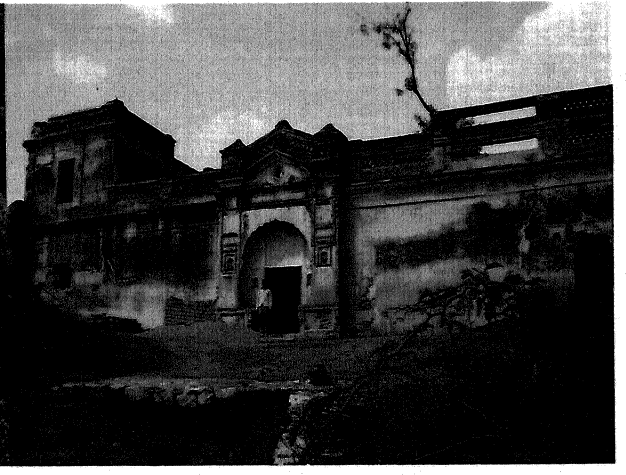
लुहारी दुर्ग
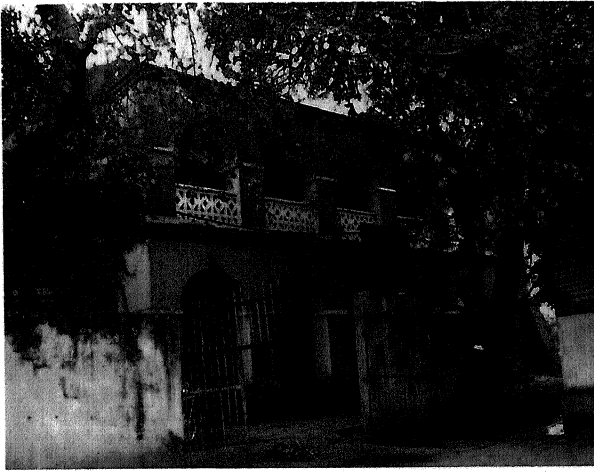
1857 की महान वीरांगना ताईबाई (जालौन) का आवास
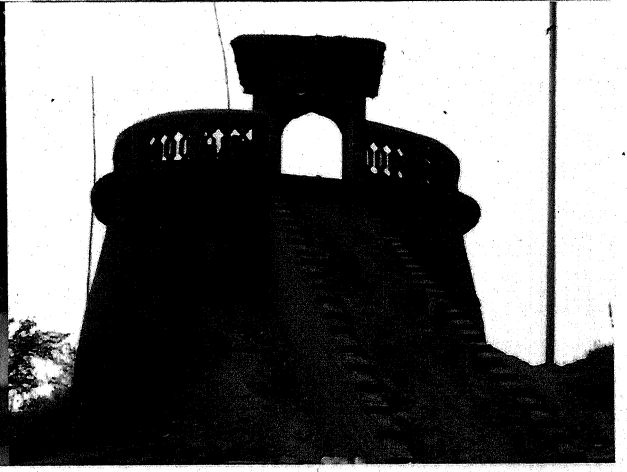
बलिदानों का गवाह लुहारी का मजार

जालौन स्थित नाना साहब का सभा–कक्ष
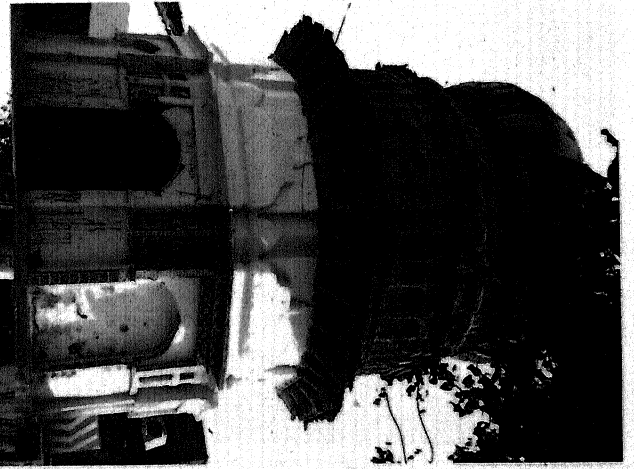
हरदोई गूजर का मठ

रानी फत्तमवीर के महल का एक और दृश्य

झींझन सरोवर का एक और दृश्य
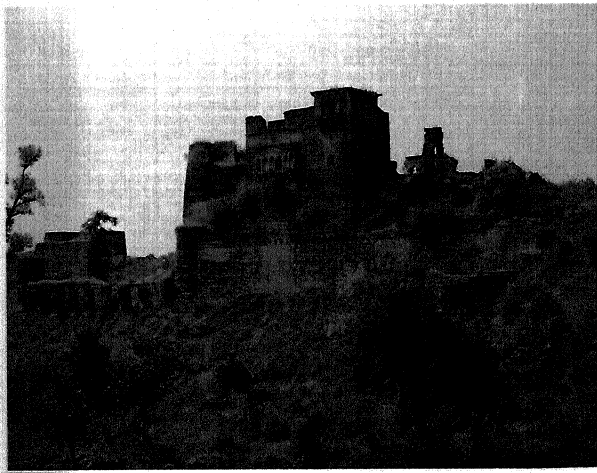
जैतपुर दुर्ग के भग्न अवशेष

जैतपुर दुर्ग के भग्नावशेषो का दूसरा दृश्य

जैतपुर दुर्ग का मुख्य द्वार
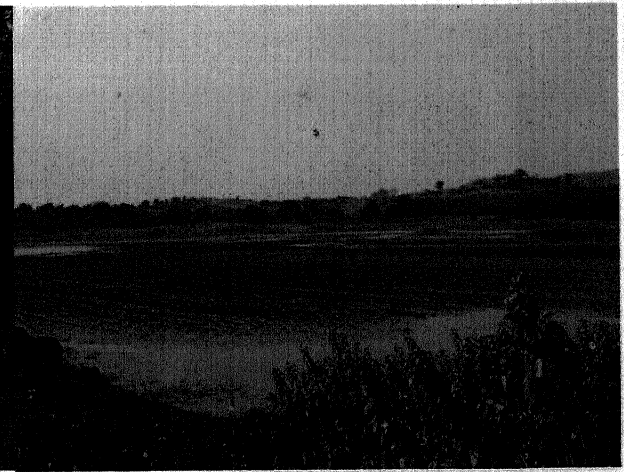
दिमान देशपत के विचरण की पहाडिया

पुरा पुरुषार्थ का प्रतीक : जैतपुर किला
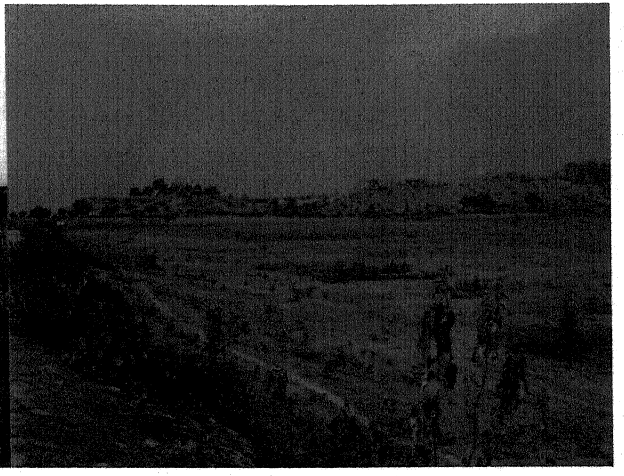
झींझन टोरिया की पहाड़ियाँ

दिमान देशपत की शरणदात्री पहाड़ियाँ

झींझन का वह सरोवर जहाँ पर दिमान देशपत कभी – कभी ठहरता था
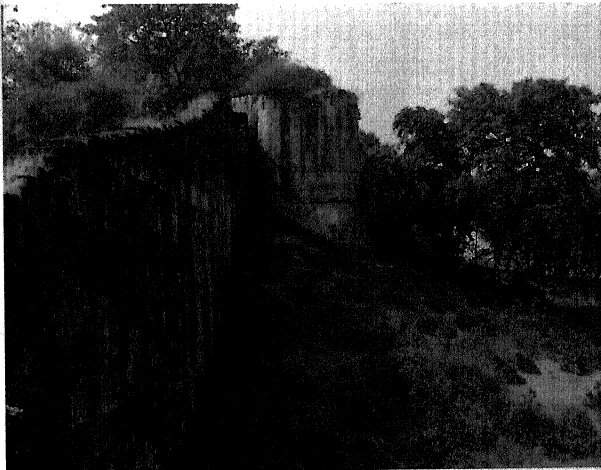
जैतपुर किले का एक और दृश्य

जैतपुर की वीरांगना रानी फत्तमवीर का महल
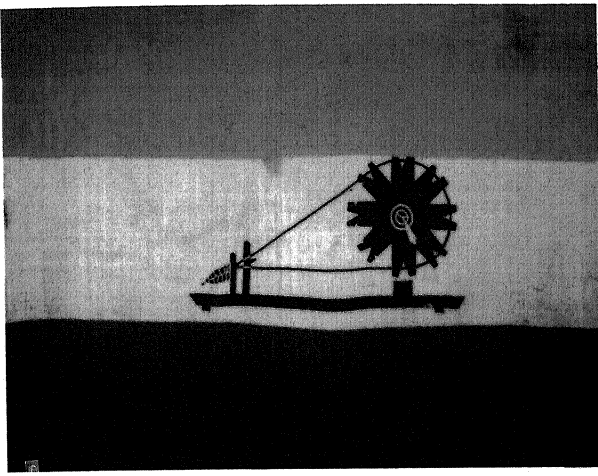
वह ध्वज जो आजादी की लड़ाई में प्रयुक्त होता था

1857 का महान क्रांतिकारी बरजोर सिंह

कोंच की बारादरी

महान वीरांगना ताईबाई का व्यक्तिगत कक्ष

महान क्रांतिनेत्री रानी लक्ष्मीबाई का एक दुर्लभ चित्र
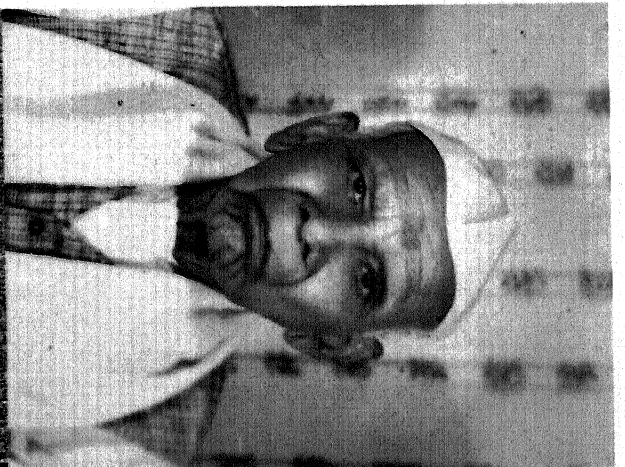
प्रजामंडल आन्दोलन के योद्धा विश्वनाथ व्यास
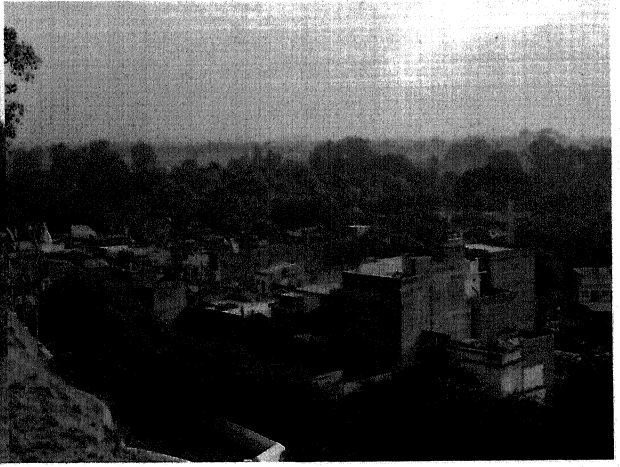
दिमान देशपत का अभयारण्य : झींझन का जंगल

श्रीनगर

1857 के महान क्रांतिकारी बिलायां के बरजोर सिंह का स्मारक

बिलायां के बरजोर सिंह के आवास का ऊपरी दृश्य

लुहारी दुर्ग का एक दृश्य

हरदोई गूजर नामक वह गाँव जहाँ पर अंग्रेजों और क्रांतिकारियों के बीच भीषण संग्राम हुआ था

पुरुष वेश में रानी लक्ष्मीबाई
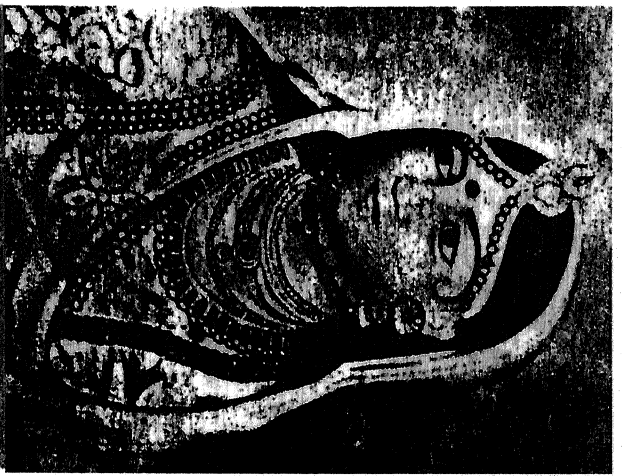
राजसी वेशभूषा में रानी का एक दुर्लभ चित्र
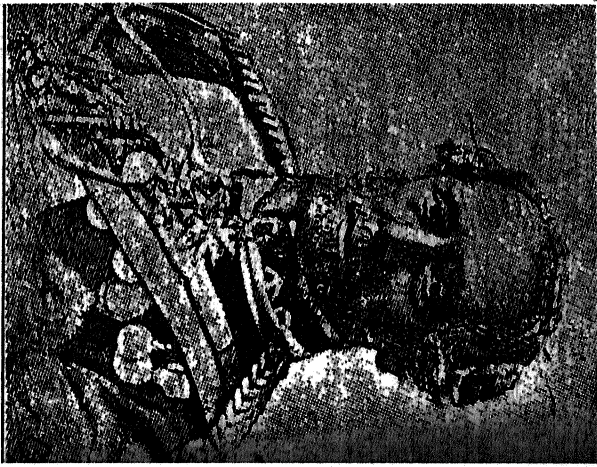
जनरल ह्युरोज

वह अभागा सोन रेखा नाला जहाँ पर रानी का घोड़ा अड़ गया था

रानी लक्ष्मीबाई के पति गंगाधर राव

1857 के संग्राम की प्रमुख तोप घन गर्जन (कड़क बिजली)
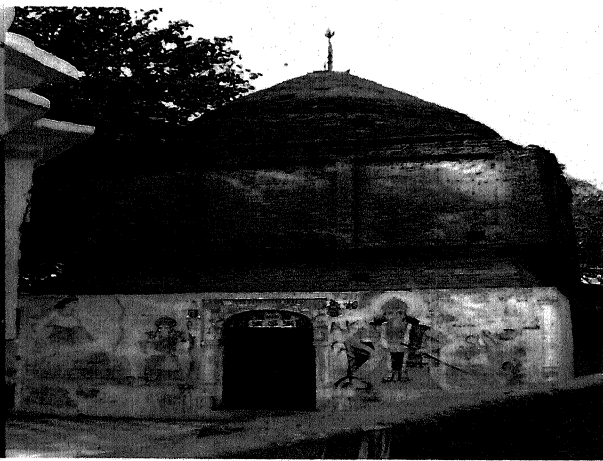
लुहारी का वह दुर्ग जहाँ पर 1857 के संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई की सुरक्षा के लिए पठानो ने भीषण युद्ध किया

हरदोई गूजर का मठ
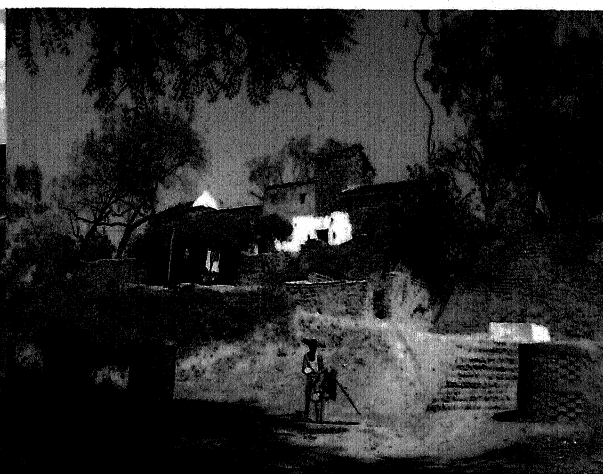
लुहारी दुर्ग का एक और दृश्य

बरजोर सिंह के आवास का बाह्य दृश्य

लुहारी गाँव का एक विहंगम दृश्य

कोंच स्थित वह सुरंग जिस गुप्त मार्ग से रानी लक्ष्मीबाइ क्रांतिकारियों से मिलने और गुप्त मंत्रणा करने आती थी